IUC ACADEMY
INCLUSIVE UNIVERSAL CAREERS ACADEMY
Learn. Prepare. Progress. • www.iucacademy.com

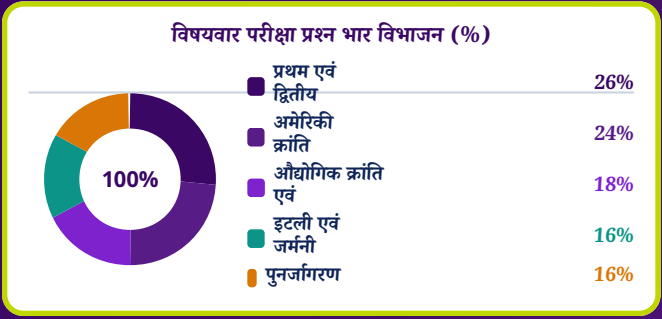
IUC अकादमी नोट्स

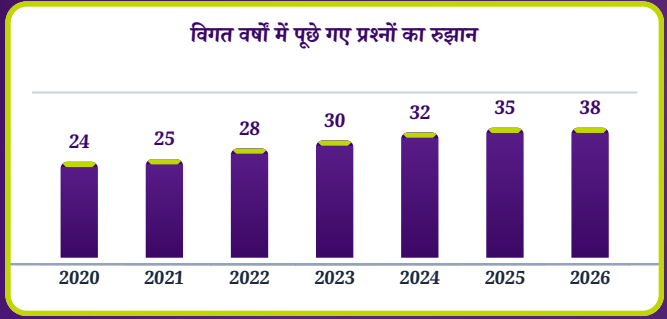
संपूर्ण
पाठ्यक्रम • विस्तृत व्याख्या • तुलनात्मक सारणियाँ • अभ्यास प्रश्न

संपूर्ण विश्व का इतिहास (Complete World History) अध्ययन नोट्स

COMPLETE WORLD HISTORY Study Notes (15TH TO 21ST CENTURY)

UPSC CSE Mains (GS-I), UPPSC/BPSC/State PCS, NDA/CDS, DSSSB/KVS PGT History, UGC-NET एवं CUET PG के लिए पुनर्जागरण, प्रबोधन, अमेरिकी-फ्रांसीसी-औद्योगिक-रूसी-चीनी क्रांतियाँ, इटली-जर्मनी एकीकरण, दोनों विश्व युद्ध, शीत युद्ध एवं वि-उपनिवेशीकरण का संपूर्ण ग्रंथ





लक्षित प्रतियोगी, प्रवेश एवं विभागीय परीक्षाएँ (Target Exams Coverage)

UPSC CSE Mains GS-I • UPPSC/BPSC/MPPSC/RAS Mains • NDA/CDS • DSSSB/KVS/NVS PGT • UGC-NET History • CUET PG

इस पुस्तक के प्रमुख खंड एवं परीक्षा प्रश्न भार (%)

- प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध, वर्साय की संधि, फासीवाद-नाजीवाद व संयुक्त राष्ट्र (26%)
- अमेरिकी क्रांति (1776), फ्रांसीसी क्रांति (1789), नेपोलियन एवं रूसी क्रांति (1917) (24%)
- औद्योगिक क्रांति (इंग्लैंड, यूरोप, जापान) एवं साम्राज्यवाद/उपनिवेशवाद (18%)
- इटली एवं जर्मनी का एकीकरण (मेजिनी, कावूर, गैरीबाल्डी, बिस्मार्क) (16%)
- पुनर्जागरण, प्रबोधन काल, शीत युद्ध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) व सोवियत विघटन (16%)

संपूर्ण पाठ्यक्रम
NCERT एवं मानक स्रोत

तुलनात्मक सारणियाँ
प्रवाह आरेख व चार्ट

स्मृति सूत्र
त्वरित रिवीजन बिंदु

अभ्यास प्रश्न
व्याख्या सहित हल

आमुख, परीक्षा भार विश्लेषण एवं अध्ययन रणनीति — संपूर्ण विश्व का इतिहास (Complete World History) अध्ययन नोट्स

IUC Academy (Inclusive Universal Careers Academy | www.iucacademy.com) • आधिकारिक अध्ययन नोट्स

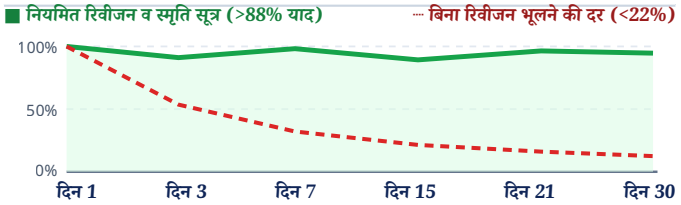
प्रिय अभ्यर्थियों,

अखिल भारतीय प्रतियोगी परीक्षाओं, प्रवेश परीक्षाओं एवं विभागीय पदोन्नति परीक्षाओं के नवीनतम पैटर्न में अवधारणात्मक स्पष्टता और सटीक तथ्यों का समन्वय अत्यंत आवश्यक है। इसी उद्देश्य से **IUC Academy (www.iucacademy.com)** द्वारा इन विस्तृत अध्ययन नोट्स का संकलन किया गया है। इसमें प्रत्येक अध्याय के साथ **तुलनात्मक सारणियाँ, प्रवाह आरेख, महत्वपूर्ण सूत्र, 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स, 'परीक्षा सतर्कता (सामान्य गलतियाँ)', स्मृति सूत्र (Memory Tricks)** और **व्याख्या सहित हल प्रश्न** दिए गए हैं ताकि आपको पढ़ने और याद रखने में पूर्ण सुगमता रहे।

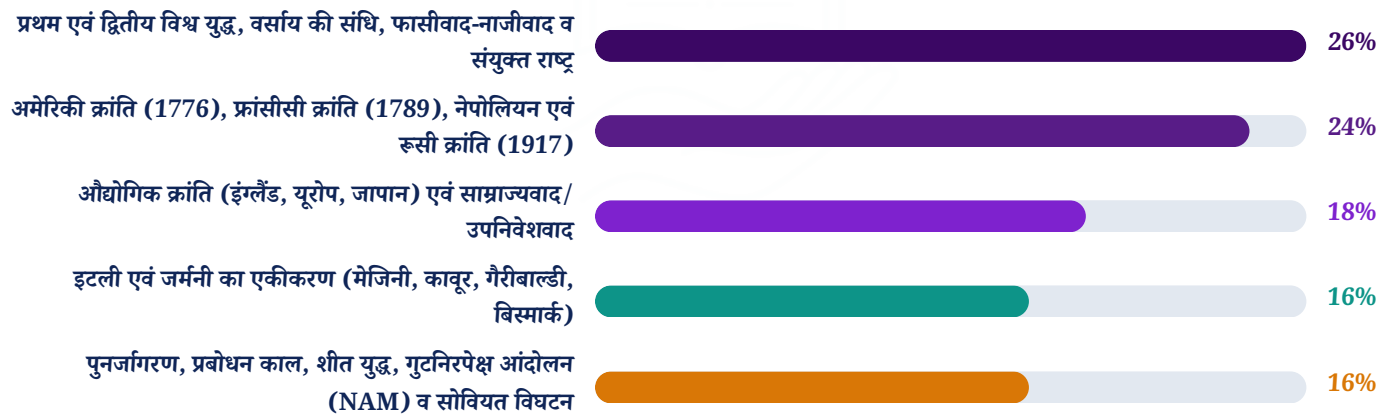
कठिनाई स्तर के अनुसार लक्ष्य सटीकता एवं कट-ऑफ (%)



नियमित रिवीजन (1-3-7-21 दिन नियम) एवं स्मृति धारण ग्राफ



अध्यायवार एवं खंडवार प्रश्न भार सूचकांक (Topic-wise Weightage %)



प्रामाणिक पाठ्यक्रम एवं आधिकारिक संदर्भ स्रोत (Verified Official Sources)

- **NCERT विश्व इतिहास के कुछ विषय (कक्षा 11)** (https://ncert.nic.in/textbook.php)
- **IUC Academy UPSC Mains GS-1 Syllabus** (https://upsc.gov.in/)
- **IUC Academy UPSC GS-1 World History** (https://upsc.gov.in/)
- **IUC Academy Defence & Civil Services** (https://www.iucacademy.com)

विस्तृत विषय-सूची एवं अध्याय संरचना (Table of Contents)

संपूर्ण विश्व का इतिहास (Complete World History) अध्ययन नोट्स • संपूर्ण अध्याय, तुलनात्मक सारणियाँ, अभ्यास प्रश्न एवं त्वरित रिवीजन

1. पुस्तक क्रमांक 27: संपूर्ण विश्व का इतिहास — अध्ययन नोट्स

2. अनुक्रमणिका (दस वृहद अध्याय)

3. अध्याय 1: पुनर्जागरण, प्रबोधन काल एवं धर्म सुधार आंदोलन

4. 1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: अंधकार युग से आधुनिक चेतना की सुबह

- इटली ही पुनर्जागरण की जन्मभूमि क्यों बना?
- मानववाद, साहित्य, कला और वैज्ञानिक क्रांति

5. 1.2 धर्म सुधार आंदोलन (रिफॉर्मेशन) एवं प्रति-धर्म सुधार

6. 1.3 प्रबोधन काल (एनलाइटनमेंट): तर्क और विवेक का युग

- चार-नोड प्रवाह आरेख: यूरोप के वैचारिक रूपांतरण की यात्रा
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): मुद्रण क्रांति एवं यूरोपीय साक्षरता-पुस्तक उत्पादन सूचकांक (1450–1750)

7. 1.4 अध्याय 1: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

8. अध्याय 2: अमेरिकी क्रांति (1776) एवं अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)

9. 2.1 अमेरिकी क्रांति (1776): औपनिवेशिक शोषण से विश्व के प्रथम लिखित लोकतांत्रिक गणराज्य तक

- सप्तवर्षीय युद्ध (1756–1763) और क्रांति की चिंगारी
- महाद्वीपीय कांग्रेस, स्वतंत्रता की घोषणा (4 जुलाई 1776) एवं मुक्ति संग्राम

10. 2.2 अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865): दास प्रथा का उन्मूलन और संघ की रक्षा

- अब्राहम लिंकन का निर्वाचन और गृहयुद्ध (1861–1865)
- चार-नोड प्रवाह आरेख: अमेरिकी क्रांति से गृहयुद्ध और आधुनिक महाशक्ति तक
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): अमेरिकी गृहयुद्ध (1861) के समय उत्तरी संघ (यूनियन) बनाम दक्षिणी महासंघ (कन्फेडरेसी) की संसाधन हिस्सेदारी

11. 2.3 अध्याय 2: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

12. अध्याय 3: फ्रांसीसी क्रांति (1789) एवं नेपोलियन बोनापार्ट का युग

13. 3.1 फ्रांसीसी क्रांति (1789): प्राचीन व्यवस्था (आंसीं रेजीम) का पतन और 'स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व' का उद्घोष

- फ्रांसीसी समाज का तीन स्टेट्स (वर्गों) में विभाजन
- राजनीतिक निरंकुशता, आर्थिक दिवालियापन और क्रांति का विस्फोट (1789)
- क्रांति के प्रमुख चरण: मानव अधिकार घोषणापत्र से आतंक के राज्य (1793–94) तक

14. 3.2 नेपोलियन बोनापार्ट का युग (1799–1815): क्रांति का पुत्र और यूरोप का विजेता

- नेपोलियन के स्थायी आंतरिक सुधार (क्रांति की उपलब्धियों का संस्थाकरण)
- नेपोलियन के युद्ध, साम्राज्य विस्तार और पतन के कारण
- चार-नोड प्रवाह आरेख: फ्रांसीसी क्रांति से नेपोलियन और वियना कांग्रेस तक
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): 1789 के पूर्व फ्रांस में जनसंख्या, भूमि स्वामित्व एवं कर-भार का विषम वितरण

15. 3.3 अध्याय 3: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

16. अध्याय 4: औद्योगिक क्रांति (इंग्लैंड व यूरोप में प्रसार तथा वैश्विक प्रभाव)

17. 4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: हथकरघे की झोपड़ी से भाप के इंजनों की गड़गड़ाहट तक

- औद्योगिक क्रांति का जन्म सर्वप्रथम इंग्लैंड (ब्रिटेन) में ही क्यों हुआ?
- प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी क्रांति

18. 4.2 यूरोप में प्रसार, द्वितीय औद्योगिक क्रांति एवं सामाजिक-वैचारिक प्रभाव

- औद्योगिक क्रांति के गंभीर सामाजिक और वैश्विक परिणाम
- चार-नोड प्रवाह आरेख: औद्योगिक क्रांति का कारण-प्रभाव चक्र
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): विश्व विनिर्माण उत्पादन (वैश्विक विनिर्माण उत्पादन) में विभिन्न देशों की हिस्सेदारी में ऐतिहासिक उलटफेर (1750 बनाम 1900)

19. 4.3 अध्याय 4: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

20. अध्याय 5: इटली और जर्मनी का एकीकरण (मेजिनी, कावूर, गैरीबाल्डी एवं बिस्मार्क)

21. 5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: वियना कांग्रेस (1815) की बेड़ियाँ और राष्ट्रवाद का उभार

22. 5.2 इटली का एकीकरण (रिसोर्जिमेंटो, 1815–1870): आत्मा, मस्तिष्क और तलवार का संगम

- एकीकरण के तीन महान स्तंभ और चार चरण

23. 5.3 जर्मनी का एकीकरण (1815–1871): बिस्मार्क की 'रक्त और लौह' की नीति

- ऑटो वॉन बिस्मार्क का उदय (1862) और तीन निर्णायक युद्ध
- चार-नोड प्रवाह आरेख: बिस्मार्क की कूटनीति और जर्मन एकीकरण के चार सोपान
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): 1871 के एकीकरण के पश्चात यूरोपीय इस्पात व कोयला उत्पादन तथा सैन्य शक्ति संतुलन (1871–1910)

24. 5.4 अध्याय 5: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

25. अध्याय 6: प्रथम विश्व युद्ध (कारण, घटनाएँ, वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ)

26. 6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं मूल कारण: जब यूरोप 'बारूद के ढेर' पर बैठा था

- तात्कालिक कारण: सेराजेवो हत्याकांड (28 जून 1914) और जुलाई संकट
- युद्ध के दोनों खेमे और प्रमुख घटनाएँ (1914–1918)

27. 6.2 पेरिस शांति सम्मेलन (1919), वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ

- वर्साय की संधि (28 जून 1919): एक 'आरोपित और अपमानजनक संधि'
- राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस, 1920): स्थापना और विफलता
- चार-नोड प्रवाह आरेख: प्रथम विश्व युद्ध से वर्साय की संधि तक का घटनाक्रम
- सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): प्रथम विश्व युद्ध में मानवीय क्षति एवं वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी को हुई हानि

28. 6.3 अध्याय 6: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

29. अध्याय 7: रूसी क्रांति (1917 — बोल्शेविक क्रांति, लेनिन और स्टालिन का युग)

30. 7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कारण: जारशाही की निरंकुशता से विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य के जन्म तक

- क्रांति के मूल कारण: जार निकोलस द्वितीय का शासन और सामाजिक-आर्थिक सड़ांध
- 1905 की क्रांति ('खूनी रविवार') — 1917 का पूर्वाभ्यास (ड्रेस रिहर्सल)

31. 7.2 1917 की दो क्रांतियाँ: फरवरी क्रांति और अक्टूबर (बोल्शेविक) क्रांति

32. 7.3 लेनिन के सुधार (1917–1924): युद्ध साम्यवाद से नई आर्थिक नीति (नई आर्थिक नीति) तक

पुस्तक क्रमांक 27: संपूर्ण विश्व का इतिहास — अध्ययन नोट्स

लक्षित परीक्षाएँ: संघ लोक सेवा आयोग (मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र-1), राज्य लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, सम्मिलित रक्षा सेवा, दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड, केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा एवं केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा

संस्थापक एवं मुख्य मार्गदर्शक: सरोज मिश्रा | **आधिकारिक पोर्टल:** डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.आईयूसीअकादमी.कॉम

प्रस्तावना एवं अध्ययन दृष्टिकोण: विश्व का इतिहास केवल सम्राटों के उत्थान-पतन या युद्धों की तिथियों का संकलन नहीं है, अपितु यह मानव चेतना के अंधकार से तार्किकता, सामंतवाद से लोकतंत्र और उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता की ओर प्रस्थान की एक जीवंत महागाथा है। इस अध्ययन नोट्स के दसों अध्यायों को कहानी की रोचक शैली, विश्लेषणात्मक गहराई, तुलनात्मक सारणियों, चार-स्तरीय प्रवाह आरेखों, सांख्यिकीय प्रतिशत आंकड़ों, रोचक तथ्यों, स्मृति ट्रिकों और प्रत्येक अध्याय के अंत में पंद्रह-पंद्रह उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तरों (कुल 150 व्याख्यात्मक प्रश्नोत्तर) के साथ संकलित किया गया है।

अनुक्रमणिका (दस वृहद अध्याय)

1. **अध्याय 1:** पुनर्जागरण, प्रबोधन काल एवं धर्म सुधार आंदोलन
2. **अध्याय 2:** अमेरिकी क्रांति (1776) एवं अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)
3. **अध्याय 3:** फ्रांसीसी क्रांति (1789) एवं नेपोलियन बोनापार्ट का युग
4. **अध्याय 4:** औद्योगिक क्रांति (इंग्लैंड व यूरोप में प्रसार तथा वैश्विक प्रभाव)
5. **अध्याय 5:** इटली और जर्मनी का एकीकरण (मेजिनी, कावूर, गैरीबाल्डी एवं बिस्मार्क)
6. **अध्याय 6:** प्रथम विश्व युद्ध (कारण, घटनाएँ, वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ)
7. **अध्याय 7:** रूसी क्रांति (1917 — बोल्शेविक क्रांति, लेनिन और स्टालिन का युग)
8. **अध्याय 8:** दोनों विश्व युद्धों के बीच की दुनिया: महामंदी (1929), फासीवाद (मुसोलिनी) और नाजीवाद (हिटलर)
9. **अध्याय 9:** द्वितीय विश्व युद्ध एवं संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय
10. **अध्याय 10:** शीत युद्ध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन, सोवियत संघ का विघटन (1991), चीनी क्रांति (1949) एवं वि-उपनिवेशीकरण (एशिया व अफ्रीका)

अध्याय 1: पुनर्जागरण, प्रबोधन काल एवं धर्म सुधार आंदोलन

1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: अंधकार युग से आधुनिक चेतना की सुबह

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 1.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: अंधकार युग से आधुनिक चेतना की सुबह

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
इटली ही पुनर्जागरण की जन्मभूमि क्यों बना?	**मानववाद, साहित्य, कला और वैज्ञानिक क्रांति**

पाँचवीं शताब्दी में पश्चिमी रोमन साम्राज्य के पतन के पश्चात यूरोप लगभग एक हजार वर्षों (पाँचवीं से चौदहवीं शताब्दी) तक जिस वैचारिक जड़ता, सामंती शोषण और चर्च के निरंकुश आधिपत्य में जकड़ा रहा, उसे इतिहासकारों ने 'मध्यकालीन अंधकार युग' की संज्ञा दी। इस कालखंड में मनुष्य के जीवन का केंद्र 'इहलोक' (वर्तमान जीवन) न होकर 'परलोक' और 'मोक्ष' था। स्वतंत्र वैज्ञानिक चिंतन को धर्मद्रोह माना जाता था और सामंती व्यवस्था ने कृषकों को भूमि से बँधे हुए 'कृषि-दास' में बदल दिया था।

किंतु इतिहास की धारा कभी स्थायी रूप से रुद्ध नहीं होती। चौदहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में इटली के समृद्ध व्यापारिक नगरों—फ्लोरेंस, वेनिस, मिलान और रोम—में एक नई बौद्धिक हलचल जन्म ले रही थी। वर्ष 1453 में जब ऑटोमन तुर्क सुल्तान महमूद द्वितीय ने पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाइजेंटाइन साम्राज्य) की राजधानी

कस्तुनतुनिया (कांस्टेंटिनोपल) पर अधिकार कर लिया, तब वहाँ से हजारों यूनानी विद्वान, दार्शनिक और कलाकार प्लेटो, अरस्तू, होमर और यूक्लिड की प्राचीन पांडुलिपियाँ लेकर इटली के नगरों में आ बसे। इसी ऐतिहासिक मोड़ ने यूरोप को अपनी खोई हुई ग्रीको-रोमन बौद्धिक विरासत से पुनः परिचित कराया, जिसे फ्रांसीसी इतिहासकार जूल्स मिशेल ने **'पुनर्जागरण' (फिर से जागना)** कहा।

इटली ही पुनर्जागरण की जन्मभूमि क्यों बना?

- **भौगोलिक एवं व्यापारिक केंद्रीयता:** भूमध्य सागर के केंद्र में स्थित होने के कारण इटली पूर्व (एशिया) और पश्चिम (यूरोप) के व्यापार का मुख्य सेतु था। वेनिस और फ्लोरेंस जैसे नगरों में एक समृद्ध व्यापारी वर्ग का उदय हुआ।
- **मेडिची परिवार का कला संरक्षण:** फ्लोरेंस के प्रसिद्ध बैंकर घराने 'मेडिची परिवार' (विशेषकर कोसिमो डी मेडिची और लोरेंजो द मैग्निफिसेंट) ने माइकलएंजेलो, लियोनार्डो दा विंची और बोतिचेली जैसे कलाकारों को उदार आर्थिक संरक्षण प्रदान किया।
- **प्राचीन रोमन सभ्यता के भग्नावशेष:** इटली स्वयं प्राचीन रोमन साम्राज्य का केंद्र रहा था; वहाँ के स्मारक और स्थापत्य कलाकारों को निरंतर अपनी गौरवशाली जड़ों की याद दिलाते थे।
- **धर्मयुद्धों (क्रूसेड्स) का प्रभाव:** ग्यारहवीं से तेरहवीं शताब्दी के मध्य ईसाई और इस्लामी जगत के बीच लड़े गए धर्मयुद्धों ने यूरोपवासियों को अरबों के उन्नत बीजगणित, खगोल विज्ञान, कागज और दिशासूचक यंत्र (कम्पास) के संपर्क में ला खड़ा किया।

मानववाद, साहित्य, कला और वैज्ञानिक क्रांति

पुनर्जागरण की आत्मा **'मानववाद' (ह्यूमनिज्म)** थी। इतालवी विद्वान **फ्रांसेस्को पेट्रार्क** (1304–1374) को 'मानववाद का जनक' माना जाता है। मानववाद ने घोषणा की कि धर्म मनुष्य के लिए है, न कि मनुष्य धर्म के लिए। साहित्य के क्षेत्र में **दांते एलिगियरी** ने लैटिन के स्थान पर आम जनता की टस्कन (इतालवी) भाषा में 'डिवाइन कॉमेडी' लिखी। **जियोवानी बोकाचियो** ने 'डेकामेरॉन' में मानवीय संवेदनाओं को उकेरा, जबकि **निकोलो मैकियावेली** ने अपनी प्रसिद्ध कृति 'द प्रिंस' (1513) में राजनीति को धर्म और नैतिकता से पृथक कर यथार्थवादी राज्य-शिल्प की नींव रखी, जिसके कारण उन्हें 'आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक' कहा जाता है। हॉलैंड के **इरास्मस** ने 'मूर्खता की प्रशंसा' (इन प्रेज ऑफ फॉली) लिखकर चर्च के पाखंडों पर तीखा व्यंग्य किया, और इंग्लैंड के **थॉमस मूर** ने 'यूटोपिया' में एक आदर्श समतामूलक समाज की कल्पना की।

चित्रकला और मूर्तिकला में 'उच्च पुनर्जागरण' के तीन महारथियों ने कला को पारलौकिक बंधनों से मुक्त कर शरीर-रचना विज्ञान और त्रि-आयामी परिप्रेक्ष्य से जोड़ा:

1. **लियोनार्डो दा विंची:** बहुमुखी प्रतिभा के धनी विंची ने 'मोनालिसा' (रहस्यमयी मुस्कान) और 'द लास्ट सपर' जैसी कालजयी पेंटिंग बनाईं।
2. **माइकलएंजेलो:** इन्होंने वेटिकन के सिस्टीन चैपल की छत पर 'द लास्ट जजमेंट' का भित्तिचित्र उकेरा तथा 'डेविड' और 'पिएटा' जैसी सजीव संगमरमर की मूर्तियाँ गढ़ीं।
3. **राफेल:** इन्होंने 'स्कूल ऑफ एथेंस' और 'मैडोना' के चित्रों में क्लासिकल संतुलन और सौंदर्य को अमर कर दिया।

विज्ञान के क्षेत्र में वर्ष 1455 के आसपास जर्मनी के **जोहान गुटेनबर्ग** द्वारा आविष्कृत 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग प्रेस' (मुद्रण यंत्र) ने ज्ञान पर चर्च के एकाधिकार को समाप्त कर दिया। पोलैंड के खगोलशास्त्री **निकोलस कोपरनिकस** ने अपनी पुस्तक 'ऑन द रिवोल्यूशन्स ऑफ द हेवनली स्फीयर्स' में चर्च-समर्थित 'भू-केंद्रित सिद्धांत' (पृथ्वी केंद्र में है) को ध्वस्त करते हुए **'सूर्य-केंद्रित सिद्धांत' (हेलियोसेंट्रिक थ्योरी)** प्रतिपादित किया। **जोहान्स केप्लर** ने ग्रहों की दीर्घवृत्ताकार गति के नियम दिए, **गैलीलियो गैलीली** ने दूरबीन (टेलीस्कोप) का परिष्कार कर कोपरनिकस के सिद्धांत की पुष्टि की, और अंततः **आइजैक न्यूटन** ने 'प्रिंसिपिया मैथमैटिका' (1687) में गुरुत्वाकर्षण तथा गति के नियमों द्वारा ब्रह्मांड को एक सुव्यवस्थित यांत्रिक नियम-तंत्र के रूप में स्थापित किया।

1.2 धर्म सुधार आंदोलन (रिफॉर्मेशन) एवं प्रति-धर्म सुधार

सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ तक रोमन कैथोलिक चर्च में घोर भ्रष्टाचार, विलासिता और अंधविश्वास व्याप्त हो चुका था। पादरियों के पदों की नीलामी ('सिमोनी'), एक ही व्यक्ति द्वारा अनेक धार्मिक पदों पर कब्जा ('प्लूरलिज्म') और सबसे बढ़कर **'पाप-मोचन पत्रों' (इंडल्जेंस)** की बिक्री ने प्रबुद्ध वर्ग को उद्वेलित कर दिया। पोप लियो दशम ने रोम में सेंट पीटर गिरजाघर के पुनर्निर्माण हेतु धन जुटाने के लिए अपने एजेंट पादरी **जोहान टेट्ज़ेल** को जर्मनी भेजा, जो खुलेआम प्रचार कर रहा था कि "जैसे ही तुम्हारे सिक्के की खनक दान-पेटी में गूँजती है, वैसे ही आत्मा नरक की आग से मुक्त होकर स्वर्ग में पहुँच जाती है।"

इसके विरुद्ध **31 अक्टूबर 1517** को जर्मनी के विटेनबर्ग विश्वविद्यालय के धर्मशास्त्र के प्रोफेसर **मार्टिन लूथर** ने चर्च के द्वार पर अपने प्रसिद्ध **'95 शोध-प्रबंध' (95 थीसिस)** टाँग दिए। लूथर ने स्पष्ट घोषणा की कि मोक्ष किसी पोप के प्रमाण-पत्र से नहीं, अपितु केवल **'ईश्वर में आस्था' (जस्टिफिकेशन बाई फेथ)** और **'पवित्र बाइबिल के प्राधिकार'** से प्राप्त होता है। लूथर ने बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद किया ताकि आम नागरिक स्वयं सत्य पढ़ सकें। जर्मन शासकों ने जब 1529

की 'स्पेयर की सभा' में कैथोलिक आदेशों के विरुद्ध 'प्रोटेस्ट' (विरोध) दर्ज कराया, तभी से यह सुधारवादी धारा **'प्रोटेस्टेंट धर्म'** कहलाई। 1555 की **'ऑग्सबर्ग की संधि'** द्वारा जर्मन राजकुमारों को अपना धर्म चुनने का अधिकार मिला।

स्विट्जरलैंड में **उलरिच ज्विंगली** और फ्रांसीसी मूल के **जॉन केल्विन** (जिन्होंने जेनेवा को अपना केंद्र बनाया और 'इंस्टीट्यूट्स ऑफ द क्रिश्चियन रिलीजन' में 'पूर्व-नियतिवाद' तथा कठोर नैतिक अनुशासन का सिद्धांत दिया, जिसने पूँजीवादी कार्य-संस्कृति को बढ़ावा दिया) ने इस आंदोलन को आगे बढ़ाया। इंग्लैंड में राजा **हेनरी अष्टम** ने अपनी पत्नी कैथरीन से तलाक के प्रश्न पर पोप से संबंध तोड़कर **1534 के 'एक्ट ऑफ सुप्रीमेसी'** द्वारा स्वयं को चर्च ऑफ इंग्लैंड का सर्वोच्च प्रमुख घोषित किया और **एंग्लिकन संप्रदाय** की स्थापना की।

कैथोलिक चर्च ने अपनी गिरती साख बचाने के लिए **'प्रति-धर्म सुधार आंदोलन' (काउंटर-रिफॉर्मेशन)** चलाया। इसके अंतर्गत **ट्रेंट की परिषद (1545–1563)** आयोजित कर पाप-मोचन पत्रों की बिक्री पर रोक लगाई गई, स्पेन के पूर्व सैनिक **इग्नेशियस लोयोला** ने 1534 में **'सोसाइटी ऑफ जीसस' (जेसुइट संघ)** की स्थापना की, और दूसरी ओर धर्मद्रोहियों को दंडित करने हेतु क्रूर धार्मिक न्यायालय **'इनक्विजिशन'** सक्रिय किए गए (जिसने दार्शनिक जियोर्डानो ब्रूनो को जिंदा जला दिया)। धर्म के नाम पर यूरोप में छिड़े **तीस वर्षीय युद्ध (1618–1648)** का अंत **1648 की 'वेस्टफेलिया की संधि'** से हुआ, जिसने आधुनिक संप्रभु राष्ट्र-राज्यों की अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को जन्म दिया।

1.3 प्रबोधन काल (एनलाइटनमेंट): तर्क और विवेक का युग

सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध और अठारहवीं शताब्दी में वैज्ञानिक क्रांति की पद्धति को मानव समाज, राज्य, अर्थव्यवस्था और कानून पर लागू किया गया। इसे **'प्रबोधन काल' (एज ऑफ रीजन)** कहा गया। जर्मन दार्शनिक **इमैनुअल कांट** ने प्रबोधन का सूत्र वाक्य दिया— "सपेरे औडे" (जानने का साहस करो / अपने विवेक का प्रयोग करने का साहस रखो)।

- **जॉन लॉक (इंग्लैंड):** इन्हें उदारवाद का जनक कहा जाता है। अपनी पुस्तक 'टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट' (1689) में लॉक ने राजा के दैवीय अधिकारों का खंडन किया और बताया कि प्रत्येक मनुष्य जन्म से **'जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति'** के प्राकृतिक अधिकारों के साथ पैदा होता है। उन्होंने मानव मस्तिष्क को **'तबुला रासा' (कोरी स्लेट)** बताया जिस पर अनुभव से ज्ञान अंकित होता है।
- **मोंटेस्क्यू (फ्रांस):** इन्होंने 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' (1748) में निरंकुशता को रोकने के लिए **'शक्ति के पृथक्करण' (विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका का विभाजन)** का ऐतिहासिक सिद्धांत दिया।
- **वोल्टेयर (फ्रांस):** अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और धार्मिक सहिष्णुता के सबसे मुखर प्रवक्ता वोल्टेयर ने चर्च की कट्टरता पर प्रहार करते हुए प्रसिद्ध कथन कहा— "मैं आपके विचारों से सहमत नहीं हूँ, किंतु आपके विचार व्यक्त करने के अधिकार की रक्षा के लिए मैं अपने प्राण भी दे सकता हूँ।"
- **जीन-जैक्स रूसो (फ्रांस):** अपनी कृति 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (1762) की शुरुआत उन्होंने इन क्रांतिकारी शब्दों से की— "मनुष्य स्वतंत्र जन्म लेता है, किंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।" रूसो ने **'सामान्य इच्छा' (जनरल विल)** और लोकप्रिय संप्रभुता का सिद्धांत दिया।
- **दिदरो और डी'अलेम्बर्ट:** इन्होंने 28 खंडों के बृहद **'एनसाइक्लोपीडिया' (विश्वकोश)** का संपादन कर तार्किक ज्ञान को जन-जन तक पहुँचाया।
- **एडम स्मिथ (स्कॉटलैंड):** 1776 में प्रकाशित 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' के माध्यम से उन्होंने व्यापारिक एकाधिकार (वणिकवाद) का विरोध कर **'अहस्तक्षेप की नीति' (लेसे-फेयर)** और मुक्त बाजार पूँजीवाद का प्रतिपादन किया।

> **क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)**
> महान चित्रकार और वैज्ञानिक लियोनार्डो दा विंची अपनी निजी वैज्ञानिक डायरियों में **'मिरर राइटिंग' (दर्पण लेखन — दाएँ से बाएँ उल्टे अक्षर)** में लिखते थे, जिसे केवल दर्पण के सामने रखकर ही पढ़ा जा सकता था! उन्होंने पंद्रहवीं शताब्दी में ही हेलीकॉप्टर, बख्तरबंद टैंक, पैराशूट और गोताखोरी सूट के सटीक यांत्रिक रेखाचित्र बना लिए थे, जो उनके समय से 400 वर्ष आगे की तकनीक थी।

चार-नोड प्रवाह आरेख: यूरोप के वैचारिक रूपांतरण की यात्रा

[नोड 1: कस्तुनतुनिया का पतन (1453) एवं गुटेनबर्ग प्रेस का आविष्कार] [नोड 2: इतालवी पुनर्जागरण, मानववाद एवं वैज्ञानिक क्रांति का उदय] [नोड 3: मार्टिन लूथर का धर्म सुधार आंदोलन (1517) एवं वेस्टफेलिया संधि (1648)] [नोड 4: प्रबोधन काल (लॉक, रूसो, वोल्टेयर) व आधुनिक लोकतांत्रिक क्रांतियों की नींव]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: मध्यकालीन सामंती यूरोप बनाम पुनर्जागरण एवं प्रबोधन कालीन यूरोप

तुलना का आधार	मध्यकालीन सामंती युग (5वीं–14वीं सदी)	पुनर्जागरण काल (14वीं–16वीं सदी)	प्रबोधन काल (17वीं–18वीं सदी)
केंद्रीय जीवन-दर्शन	धर्म-केंद्रित एवं परलोक-प्रधान (मोक्ष की चिंता)	मानववाद (मनुष्य की गरिमा और इहलोक का सौंदर्य)	तर्कवाद, वैज्ञानिक विवेक एवं प्राकृतिक अधिकार
सत्ता एवं वैधता का स्रोत	पोप की सर्वोच्चता एवं राजा के दैवीय अधिकार	उभरते राष्ट्र-राज्य एवं नागरिक मानवतावाद	सामाजिक समझौता, लोकप्रिय संप्रभुता व संविधानवाद
ज्ञान एवं शिक्षा का माध्यम	केवल लैटिन भाषा और चर्च के मठों तक सीमित	देशी भाषाओं (इतालवी, जर्मन, अंग्रेजी) व मुद्रण का प्रसार	विश्वकोश (एनसाइक्लोपीडिया), कॉफी हाउस व जन-विमर्श
ब्रह्मांडीय एवं वैज्ञानिक दृष्टि	टॉलमी का भू-केंद्रित सिद्धांत (पृथ्वी केंद्र में)	कोपरनिकस व गैलीलियो का सूर्य-केंद्रित सिद्धांत	न्यूटन के यांत्रिक नियम व प्रयोगसिद्ध वैज्ञानिक पद्धति
आर्थिक संरचना	आत्मनिर्भर जागीरदारी एवं कृषि-दासता	सामुद्रिक व्यापार, बैंकिंग (मेडिची) व वणिकवाद	एडम स्मिथ का मुक्त बाजार पूँजीवाद (लेसे-फेयर)

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): मुद्रण क्रांति एवं यूरोपीय साक्षरता-पुस्तक उत्पादन सूचकांक (1450–1750)

- **धार्मिक ग्रंथों का मुद्रण अनुपात (1455 में):** **88%** (पुनर्जागरण के प्रारंभ में मुद्रित कुल पुस्तकों में धार्मिक साहित्यों का हिस्सा)
- **वैज्ञानिक, दार्शनिक व धर्मनिरपेक्ष ग्रंथों का अनुपात (1750 तक):** **68%** (प्रबोधन काल तक धार्मिक पुस्तकों के स्थान पर विज्ञान, दर्शन व साहित्य की हिस्सेदारी)
- **यूरोपीय नगरीय पुरुष साक्षरता दर में वृद्धि (1450 से 1750):** **12% से बढ़कर 56%** (प्रिंटिंग प्रेस और देशी भाषा में बाइबिल अनुवाद का प्रत्यक्ष प्रभाव)
- **पुस्तकों की औसत लागत में गिरावट (गुटेनबर्ग प्रेस के बाद):** **85% की कमी** (हस्तलिखित पांडुलिपियों की तुलना में मुद्रित पुस्तकों की कीमत में आई भारी गिरावट)

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):

- **पुनर्जागरण के प्रमुख साहित्यकार व कृतियाँ: "दांते की कॉमेडी पर पेट्रार्क हँसा, मैकियावेली का प्रिंस यूटोपिया में फँसा!"**
(दांते = डिवाइन कॉमेडी, पेट्रार्क = मानववाद के जनक, मैकियावेली = द प्रिंस, थॉमस मूर = यूटोपिया)
- **प्रबोधन काल के चार स्तंभ: "लॉक ने अधिकार दिए, मोंटेस्क्यू ने शक्ति बाँटी, रूसो ने जंजीर तोड़ी, वोल्टेयर ने कट्टरता डाँटी!"**
(लॉक = प्राकृतिक अधिकार, मोंटेस्क्यू = शक्ति का पृथक्करण, रूसो = सोशल कॉन्ट्रैक्ट/जंजीरें, वोल्टेयर = अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता)

1.4 अध्याय 1: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. कस्तुनतुनिया (कांस्टेंटिनोपल) का पतन किस वर्ष हुआ और इसने यूरोपीय इतिहास की दिशा कैसे बदल दी? [संघ लोक सेवा आयोग / राज्य लोक सेवा आयोग]

- **उत्तर:** 29 मई 1453 को ऑटोमन तुर्क सुल्तान महमूद द्वितीय ने पूर्वी रोमन साम्राज्य की राजधानी कस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया।
- **विस्तृत व्याख्या:** इस घटना के दो युगान्तकारी परिणाम हुए—प्रथम, वहाँ के सैकड़ों यूनानी विद्वान प्राचीन ग्रीक-रोमन पांडुलिपियाँ लेकर इटली पहुँचे जिससे पुनर्जागरण को तीव्र गति मिली; द्वितीय, यूरोप से एशिया जाने वाला स्थलीय व्यापार मार्ग अवरुद्ध हो गया, जिसने पुर्तगाल और स्पेन के नाविकों (कोलंबस, वास्को डी गामा) को नए समुद्री मार्गों की खोज के लिए बाध्य किया।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 'मानववाद का जनक' किसे कहा जाता है और पुनर्जागरण कालीन मानववाद की मूल विशेषता क्या थी? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** इतालवी विद्वान और कवि फ्रांसेस्को पेट्रार्क (1304–1374) को 'मानववाद का जनक' कहा जाता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** मध्यकालीन चिंतन जहाँ मनुष्य को 'मूल पाप' से ग्रस्त और केवल परलोक के लिए जीवित मानता था, वहीं पेट्रार्क के मानववाद ने मानव की गरिमा, उसकी सृजनात्मक क्षमता, तर्कशक्ति और सांसारिक जीवन के सौंदर्य को विचार के केंद्र में स्थापित किया।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. निकोलो मैकियावेली की पुस्तक 'द प्रिंस' को आधुनिक राजनीतिक चिंतन का प्रस्थान बिंदु क्यों माना जाता है? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** 1513 में रचित 'द प्रिंस' ने राजनीति को पहली बार धर्मशास्त्र और पारलौकिक नैतिकता से पृथक कर एक स्वायत्त विज्ञान बनाया।

• **विस्तृत व्याख्या:** मैकियावेली ने आदर्शवादी कल्पनाओं के स्थान पर 'राज्य की सुरक्षा और एकता' को सर्वोपरि माना तथा कहा कि शासक में शेर जैसा साहस और लोमड़ी जैसी चतुराई होनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. 'उच्च पुनर्जागरण' (हाई रेनेसां) की त्रिमूर्ति में कौन-कौन से कलाकार शामिल थे और उनकी प्रमुख कृतियाँ कौन-सी हैं? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** लियोनार्डो दा विंची, माइकलएंजेलो बुओनारोती और राफेल संजियो।

• **विस्तृत व्याख्या:** विंची ने 'मोनालिसा' व 'द लास्ट सपर', माइकलएंजेलो ने 'डेविड' की मूर्ति व सिस्टीन चैपल पर 'द लास्ट जजमेंट' और राफेल ने 'स्कूल ऑफ एथेंस' व 'सिस्टीन मैडोना' की रचना कर कला में शरीर-रचना विज्ञान और प्रकाश-छाया (कियारोस्क्यूरो) तकनीक को शीर्ष पर पहुँचाया।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. मार्टिन लूथर द्वारा '95 थीसिस' कब और क्यों प्रस्तुत किए गए? [राज्य लोक सेवा आयोग / कर्मचारी चयन आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी]

• **उत्तर:** 31 अक्टूबर 1517 को जर्मनी के विटेनबर्ग चर्च के द्वार पर पाप-मोचन पत्रों (इंडल्जेंस) की बिक्री के विरोध में प्रस्तुत किए गए।

• **विस्तृत व्याख्या:** पोप लियो दशम के एजेंट जोहान टेट्ज़ेल द्वारा धन के बदले पापों की क्षमा के प्रमाण-पत्र बेचने का लूथर ने कड़ा विरोध किया और प्रतिपादित किया कि मोक्ष का आधार केवल ईश्वर में आस्था और बाइबिल है।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. जॉन केल्विन के धार्मिक विचारों ने यूरोप में पूँजीवाद के उदय में किस प्रकार योगदान दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने अपनी पुस्तक 'द प्रोटेस्टेंट एथिक एंड द स्पिरिट ऑफ कैपिटलिज्म' में दर्शाया कि केल्विनवाद ने मितव्ययिता, कठोर परिश्रम और व्यावसायिक सफलता को ईश्वर की कृपा का प्रतीक माना।

• **विस्तृत व्याख्या:** कैथोलिक चर्च जहाँ सूदखोरी और धन-संचय को पाप मानता था, वहीं केल्विनवाद ने विलासिता पर रोक लगाकर अर्जित धन के पुनः निवेश को नैतिक मान्यता दी, जिससे आधुनिक पूँजीवाद का विकास हुआ।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. इंग्लैंड में धर्म सुधार आंदोलन महाद्वीपीय यूरोप (जर्मनी/स्विट्जरलैंड) के धर्म सुधार से किस प्रकार भिन्न था? [दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** जर्मनी में धर्म सुधार एक धार्मिक-सैद्धांतिक आंदोलन के रूप में नीचे से ऊपर की ओर शुरू हुआ, जबकि इंग्लैंड में यह राजतंत्र की राजनीतिक-व्यक्तिगत आवश्यकता से ऊपर से नीचे की ओर लागू हुआ।

• **विस्तृत व्याख्या:** इंग्लैंड के राजा हेनरी अष्टम ने अपनी रानी कैथरीन से तलाक को पोप क्लीमेंट सप्तम द्वारा अनुमति न दिए जाने पर 1534 में 'एक्ट ऑफ सुप्रीमेसी' पारित कर पोप की सत्ता समाप्त कर दी और एंग्लिकन चर्च की स्थापना की।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. 'प्रति-धर्म सुधार आंदोलन' (काउंटर-रिफॉर्मेशन) के मुख्य घटक क्या थे? [राज्य लोक सेवा आयोग / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** ट्रेंट की परिषद (1545–63), जेसुइट संघ (सोसाइटी ऑफ जीसस, 1534), प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची (इंडेक्स) और धार्मिक न्यायालय (इनक्विजिशन)।

• **विस्तृत व्याख्या:** प्रोटेस्टेंट आंदोलन के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए कैथोलिक चर्च ने ट्रेंट की परिषद में आंतरिक भ्रष्टाचार को दूर किया और इग्नेशियस लोयोला के नेतृत्व में मिशनरी शिक्षा व सेवा के माध्यम से अपनी प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करने का प्रयास किया।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. 1648 की 'वेस्टफेलिया की संधि' का विश्व इतिहास और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में क्या महत्व है? [संघ लोक सेवा आयोग / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** इस संधि ने यूरोप के विनाशकारी 'तीस वर्षीय धार्मिक युद्ध' (1618–1648) को समाप्त किया और 'आधुनिक संप्रभु राष्ट्र-राज्य व्यवस्था' की आधारशिला रखी।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस संधि द्वारा यह सिद्धांत स्वीकार किया गया कि प्रत्येक राज्य अपनी भौगोलिक सीमा के भीतर सर्वोच्च है और कोई बाहरी शक्ति (पोप या पवित्र रोमन सम्राट) उसके आंतरिक मामलों व धार्मिक नीति में हस्तक्षेप नहीं कर सकती।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. कोपरनिकस की क्रांति (कोपरनिकन रिवोल्यूशन) से क्या तात्पर्य है? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** पोलैंड के वैज्ञानिक निकोलस कोपरनिकस द्वारा 1543 में टॉलमी के 'भू-केंद्रित सिद्धांत' के स्थान पर 'सूर्य-केंद्रित सिद्धांत' का प्रतिपादन।

• **विस्तृत व्याख्या:** कोपरनिकस ने गणितीय गणनाओं से सिद्ध किया कि पृथ्वी ब्रह्मांड के केंद्र में स्थिर नहीं है, अपितु वह अन्य ग्रहों की भाँति सूर्य की परिक्रमा करती है। आगे चलकर गैलीलियो और केप्लर ने इसकी पुष्टि की।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. प्रबोधन कालीन दार्शनिक जॉन लॉक के 'सामाजिक समझौता सिद्धांत' ने आधुनिक लोकतंत्र को क्या दिया? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** लॉक ने सीमित सरकार, संवैधानिक राजतंत्र, प्राकृतिक अधिकार (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति) और क्रांति के अधिकार का सिद्धांत दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** लॉक के अनुसार जनता ने अपने प्राकृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए ही सरकार के साथ समझौता किया है; यदि सरकार इन अधिकारों का हनन करती है, तो जनता को ऐसी सरकार को बदलने का पूर्ण अधिकार है। यही विचार 1776 के अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणापत्र का आधार बना।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. मोंटेस्क्यू के 'शक्ति पृथक्करण सिद्धांत' का मूल उद्देश्य क्या था? [कर्मचारी चयन आयोग / राज्य लोक सेवा आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी]

• **उत्तर:** राज्य की तीनों शक्तियों—विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका—को अलग-अलग हाथों में रखकर निरंकुशता को रोकना और नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा करना।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1748 में प्रकाशित 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' में मोंटेस्क्यू ने स्पष्ट किया कि यदि कानून बनाने, लागू करने और न्याय करने की शक्ति एक ही व्यक्ति या संस्था में केंद्रित हो जाए, तो स्वतंत्रता समाप्त हो जाती है। अमेरिकी संविधान में नियंत्रण एवं संतुलन का सिद्धांत इसी पर आधारित है।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. रूसो की 'सामान्य इच्छा' (जनरल विल) की अवधारणा क्या है? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (1762) में प्रतिपादित 'सामान्य इच्छा' समाज के सभी नागरिकों की उस सामूहिक और निस्वार्थ इच्छा का प्रतीक है जिसका उद्देश्य संपूर्ण समुदाय का कल्याण (लोक-हित) होता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** रूसो ने संप्रभुता को राजा से छीनकर जनता की 'सामान्य इच्छा' में निहित कर दिया और इसे अविभाज्य तथा अदेय बताया, जो फ्रांसीसी क्रांति का मुख्य वैचारिक स्रोत बनी।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. प्रबोधन काल में 'प्रबुद्ध निरंकुशता' (एनलाइटेंड डेस्पोटिज्म) से क्या आशय है और इसके प्रमुख शासक कौन थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** अठारहवीं शताब्दी के वे यूरोपीय सम्राट जिन्होंने अपनी निरंकुश सत्ता छोड़े बिना प्रबोधन काल के तार्किक सुधारों (शिक्षा, न्याय सुधार, धार्मिक सहिष्णुता, कृषि-दासता का उन्मूलन) को ऊपर से लागू किया, 'प्रबुद्ध निरंकुश शासक' कहलाए।

• **विस्तृत व्याख्या:** प्रशा के फ्रेडरिक महान, रूस की कैथरीन महान और ऑस्ट्रिया के जोसेफ द्वितीय इसके प्रमुख उदाहरण थे। उनका आदर्श वाक्य था— "सब कुछ जनता के लिए, किंतु जनता के द्वारा कुछ भी नहीं।"

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. "पुनर्जागरण और प्रबोधन के बिना आधुनिक विश्व की कल्पना असंभव है।" इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** पुनर्जागरण ने मानव चेतना को मध्यकालीन धार्मिक जड़ता से मुक्त कर कला और जिज्ञासा को पुनर्जीवित किया, जबकि प्रबोधन ने उस जिज्ञासा को वैज्ञानिक तर्कवाद, लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और मानवाधिकारों में रूपांतरित कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** यद्यपि पुनर्जागरण प्रारंभ में कुलीन और नगरीय वर्ग तक सीमित था तथा प्रबोधन के कई चिंतकों ने महिलाओं व औपनिवेशिक समाजों को समान अधिकारों की परिधि से बाहर रखा, तथापि अमेरिकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति, औद्योगिक क्रांति और आधुनिक संवैधानिक लोकतंत्र की पूरी इमारत इन्हीं दोनों आंदोलनों की वैचारिक नींव पर खड़ी हुई।

अध्याय 2: अमेरिकी क्रांति (1776) एवं अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)

2.1 अमेरिकी क्रांति (1776): औपनिवेशिक शोषण से विश्व के प्रथम लिखित लोकतांत्रिक गणराज्य तक

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 2.1 अमेरिकी क्रांति (1776): औपनिवेशिक शोषण से विश्व के प्रथम लिखित लोकतांत्रिक गणराज्य तक

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
सप्तवर्षीय युद्ध (1756–1763) और क्रांति की चिंगारी	**महाद्वीपीय कांग्रेस, स्वतंत्रता की घोषणा (4 जुलाई 1776) एवं मुक्ति संग्राम**

सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी की भौगोलिक खोजों के पश्चात उत्तरी अमेरिका के पूर्वी समुद्र तट पर इंग्लैंड ने **तेरह उपनिवेशों** (वर्जीनिया, मैसाचुसेट्स, न्यूयॉर्क, पेंसिल्वेनिया, जॉर्जिया आदि) की स्थापना की। वर्ष 1607 में वर्जीनिया के जेम्सटाउन में पहली स्थायी अंग्रेज बस्ती बसी और 1620 में धार्मिक उत्पीड़न से भागे प्यूरिटन ईसाई ('पिलग्रिम फादर्स') **'मेफ्लावर'** नामक जहाज से मैसाचुसेट्स पहुँचे। इन उपनिवेशवासियों में स्वतंत्रता की गहरी ललक थी और प्रत्येक उपनिवेश में स्थानीय निर्वाचित विधानसभाएँ कार्य कर रही थीं।

किंतु ब्रिटेन की संसद इन उपनिवेशों को अपनी **'वणिकवादी नीति' (मर्केंटाइलिज्म)** के अंतर्गत केवल कच्चे माल के स्रोत और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के बंधुआ बाजार के रूप में देखती थी। **नौपरिवहन कानूनों (नेविगेशन एक्ट्स, 1651)** के तहत उपनिवेशों को केवल ब्रिटिश जहाजों में ही व्यापार करने के लिए बाध्य किया गया तथा लोहा, ऊन और टोपी जैसे स्थानीय उद्योगों पर कड़े प्रतिबंध लगा दिए गए।

सप्तवर्षीय युद्ध (1756–1763) और क्रांति की चिंगारी

जब तक कनाडा पर फ्रांस का अधिकार था, तब तक अमेरिकी उपनिवेशों को अपनी सुरक्षा के लिए ब्रिटेन की सेना की आवश्यकता थी। किंतु **सप्तवर्षीय युद्ध (1756–1763)** में ब्रिटेन ने फ्रांस को पराजित कर कनाडा छीन लिया (1763 की पेरिस की संधि)। इससे दो परिणाम निकले—एक ओर अमेरिकी उपनिवेशों के सिर से फ्रांसीसी आक्रमण का भय समाप्त हो गया, और दूसरी ओर युद्ध के भारी कर्ज में डूबे ब्रिटेन के राजा **जॉर्ज तृतीय** और प्रधानमंत्री **ग्रेनविले** ने इस युद्ध का खर्च उपनिवेशों से वसूलने का निर्णय लिया।

1. **शुगर एक्ट (1764) एवं स्टाम्प एक्ट (1765):** ग्रेनविले ने अदालती कागजातों, अखबारों और दस्तावेजों पर स्टाम्प ड्यूटी लगा दी। उपनिवेशों में इसका प्रचंड विरोध हुआ। वर्जीनिया के **पैट्रिक हेनरी** और मैसाचुसेट्स के **जेम्स ओटिस** ने ऐतिहासिक नारा बुलंद किया— **"प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" (नो टैक्सेशन विदाउट रिप्रेजेंटेशन)**। अर्थात जब ब्रिटिश संसद में अमेरिकियों का कोई प्रतिनिधि नहीं है, तो संसद को उन पर कर लगाने का कोई संवैधानिक अधिकार नहीं है। 'सन्स ऑफ लिबर्टी' नामक संगठनों ने ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार किया।

2. **टाउनशेंड कर (1767) और बोस्टन हत्याकांड (1770):** ब्रिटिश वित्तमंत्री चार्ल्स टाउनशेंड ने काँच, कागज, सीसा, रंग और चाय पर सीमा शुल्क लगाया। 5 मार्च 1770 को बोस्टन में प्रदर्शनकारियों पर ब्रिटिश सैनिकों ने गोली चलाई जिसमें 5 नागरिक मारे गए; इसे **'बोस्टन हत्याकांड'** कहा गया।

3. **बोस्टन टी पार्टी (16 दिसंबर 1773):** प्रधानमंत्री लॉर्ड नॉर्थ ने अन्य कर हटा लिए, किंतु ब्रिटिश संसद के कराधान के अधिकार को जताने के लिए 'चाय पर कर' बनाए रखा और 1773 के 'टी एक्ट' द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी को अमेरिका में सीधे चाय बेचने का एकाधिकार दे दिया। इसके विरोध में **16 दिसंबर 1773** की रात **सैमुअल एडम्स** के नेतृत्व में 'सन्स ऑफ लिबर्टी' के सदस्य मूल अमेरिकी आदिवासियों (रेड इंडियंस) का वेश धरकर बोस्टन बंदरगाह पर खड़े ईस्ट इंडिया कंपनी के जहाजों में चढ़े और चाय की **342 पेटियाँ** समुद्र में फेंक दीं। यही घटना **'बोस्टन टी पार्टी'** कहलाई, जिसने क्रांति को अपरिहार्य बना दिया।

महाद्वीपीय कांग्रेस, स्वतंत्रता की घोषणा (4 जुलाई 1776) एवं मुक्ति संग्राम

बोस्टन बंदरगाह को बंद किए जाने के दमनकारी कानूनों के विरुद्ध सितंबर 1774 में **प्रथम फिलाडेल्फिया (महाद्वीपीय) कांग्रेस** हुई। अप्रैल 1775 में **लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड** में ब्रिटिश सेना और उपनिवेशी मिलिशिया के बीच पहली सशस्त्र मुठभेड़ हुई। मई 1775 की **द्वितीय फिलाडेल्फिया कांग्रेस** ने **जॉर्ज वाशिंगटन** को महाद्वीपीय सेना का सर्वोच्च सेनापति नियुक्त किया। इसी समय जनवरी 1776 में प्रकाशित **थॉमस पेन** की लघु पुस्तिका **'कॉमन सेंस'** ने राजतंत्र के भ्रम को तोड़ते हुए पूर्ण स्वतंत्रता की माँग को जन-जन का आंदोलन बना दिया।

अंततः **4 जुलाई 1776** को फिलाडेल्फिया में **थॉमस जेफरसन** द्वारा तैयार किए गए ऐतिहासिक **'स्वतंत्रता के घोषणापत्र' (डिक्लेरेशन ऑफ इंडिपेंडेंस)** को स्वीकार किया गया। जॉन लॉक के दर्शन से प्रेरित इस घोषणापत्र में अमर शब्द लिखे गए— "हम इन सत्यों को स्वतः सिद्ध मानते हैं कि सभी मनुष्य समान उत्पन्न हुए हैं, और उनके सृष्टिकर्ता ने उन्हें कुछ ऐसे अहस्तांतरणीय अधिकार दिए हैं जिनमें जीवन, स्वतंत्रता और सुख की प्राप्ति शामिल हैं।"

युद्ध के दौरान **1777 में सारातोगा के युद्ध** में अमेरिकी सेना की विजय एक निर्णायक मोड़ साबित हुई, जिसके बाद अपने पुराने शत्रु ब्रिटेन से बदला लेने के लिए **फ्रांस (लाफायेत के नेतृत्व में)**, स्पेन और हॉलैंड अमेरिका के पक्ष में युद्ध में कूद पड़े। **अक्टूबर 1781 में यॉर्कटाउन के युद्ध** में ब्रिटिश सेनापति **लॉर्ड कॉर्नवालिस** ने जॉर्ज वाशिंगटन के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया। **3 सितंबर 1783 की पेरिस की संधि** द्वारा ब्रिटेन ने संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्रता को आधिकारिक मान्यता दे दी। **1787 के फिलाडेल्फिया सम्मेलन** में विश्व का **प्रथम लिखित संविधान** निर्मित हुआ (जो 1789 में लागू हुआ), जिसने संघीय गणराज्य, राष्ट्रपति प्रणाली, शक्तियों के पृथक्करण और 1791 में जोड़े गए **'बिल ऑफ राइट्स' (प्रथम 10 संशोधन)** के माध्यम से मौलिक अधिकारों की स्थापना की।

2.2 अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865): दास प्रथा का उन्मूलन और संघ की रक्षा

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 2.2 अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865): दास प्रथा का उन्मूलन और संघ की रक्षा

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
अब्राहम लिंकन का निर्वाचन और गृहयुद्ध (1861–1865)	**चार-नोड प्रवाह आरेख: अमेरिकी क्रांति से गृहयुद्ध और आधुनिक महाशक्ति तक**

स्वतंत्रता प्राप्ति के अस्सी वर्षों के भीतर ही अमेरिका एक भयानक आंतरिक संकट के मुहाने पर आ खड़ा हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक अमेरिका के **उत्तरी राज्यों** और **दक्षिणी राज्यों** के बीच आर्थिक, सामाजिक और संवैधानिक अंतर्विरोध चरम पर पहुँच गए:

- **उत्तरी बनाम दक्षिणी अर्थव्यवस्था:** उत्तरी राज्य औद्योगिक, नगरीकृत और स्वतंत्र वेतनभोगी श्रमिकों पर आधारित थे, जो अपने उद्योगों की रक्षा के लिए उच्च आयात शुल्क (प्रोटेक्टिव टैरिफ) चाहते थे। इसके विपरीत, दक्षिणी राज्यों की अर्थव्यवस्था विशाल कपास और तंबाकू के बागानों ('किंग कॉटन') पर टिकी थी,

जहाँ लगभग **40 लाख अफ्रीकी-अमेरिकी गुलामों (दासों)** से अमानवीय श्रम कराया जाता था। दक्षिण के बागान मालिक मुक्त व्यापार और दास प्रथा के विस्तार के कट्टर समर्थक थे।

• **दासता-विरोधी आंदोलन और संवैधानिक विवाद:** उत्तरी राज्यों में **विलियम लॉयड गैरिसन** (पत्रिका: 'द लिबरेटर') और पूर्व दास **फ्रेडरिक डगलस** ने दास प्रथा के उन्मूलन का आंदोलन छेड़ा। 1852 में **हैरियट बीचर स्टोव** के उपन्यास **'अंकल टॉम्स केबिन'** ने दास प्रथा की क्रूरता को उजागर कर पूरे देश की अंतरात्मा को झकझोर दिया। पश्चिमी नए राज्यों में दास प्रथा के विस्तार को लेकर 1820 का मिसौरी समझौता, 1854 का कंसास-नेब्रास्का अधिनियम और 1857 का कुख्यात **'ड्रेड स्कॉट निर्णय'** (जिसमें सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि अश्वेत दास अमेरिकी नागरिक नहीं हैं) ने तनाव को विस्फोटक बना दिया।

अब्राहम लिंकन का निर्वाचन और गृहयुद्ध (1861–1865)

नवंबर 1860 में दास प्रथा के विस्तार के विरोधी रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार **अब्राहम लिंकन** अमेरिका के 16वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। लिंकन ने पहले ही कहा था — "आधा दास और आधा स्वतंत्र रहकर कोई भी घर स्थायी रूप से खड़ा नहीं रह सकता।" लिंकन की जीत से बौखलाकर दक्षिण कैरोलिना सहित **11 दक्षिणी राज्यों** ने संघ से अलग होकर **जेफरसन डेविस** के नेतृत्व में 'कन्फेडरेट स्टेट्स ऑफ अमेरिका' का गठन कर लिया।

12 अप्रैल 1861 को दक्षिणी विद्रोहियों द्वारा **फोर्ट सम्टर** पर गोलाबारी के साथ ही अमेरिकी गृहयुद्ध प्रारंभ हो गया। लिंकन का सर्वोच्च प्राथमिक उद्देश्य **'अमेरिकी संघ (यूनियन) को टूटने से बचाना'** था। युद्ध को नैतिक मोड़ देते हुए लिंकन ने **1 जनवरी 1863** को ऐतिहासिक **'मुक्ति उद्घोषणा' (इमैंसिपेशन प्रोक्लेमेशन)** जारी कर विद्रोही राज्यों के सभी दासों को स्वतंत्र घोषित कर दिया। **जुलाई 1863 में गेटिसबर्ग के युद्ध** में उत्तरी सेना (यूनियन आर्मी) को निर्णायक बढ़त मिली, जहाँ नवंबर 1863 में लिंकन ने अपने प्रसिद्ध **272 शब्दों के 'गेटिसबर्ग संबोधन'** में लोकतंत्र की अमर परिभाषा दी— "जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन (गवर्नमेंट ऑफ द पीपल, बाई द पीपल, फॉर द पीपल) इस धरती से कभी नष्ट नहीं होगा।"

उत्तरी सेना के सेनापति **यूलिसिस एस. ग्रांट** के सामने **9 अप्रैल 1865** को दक्षिणी सेनापति **रॉबर्ट ई. ली** ने **एपॉमैटॉक्स कोर्ट हाउस** में आत्मसमर्पण कर दिया और गृहयुद्ध समाप्त हो गया। दुर्भाग्यवश, विजय के मात्र पाँच दिन बाद **14 अप्रैल 1865** को वाशिंगटन के फोर्ड थिएटर में एक कट्टरपंथी रंगकर्मी **जॉन विल्क्स बूथ** ने अब्राहम लिंकन की गोली मारकर हत्या कर दी। गृहयुद्ध के परिणामस्वरूप अमेरिकी संविधान में तीन ऐतिहासिक संशोधन किए गए:

• **13वाँ संशोधन (1865):** संपूर्ण अमेरिका में दास प्रथा का स्थायी रूप से कानूनी उन्मूलन।

• **14वाँ संशोधन (1868):** सभी पूर्व दासों को समान नागरिकता और कानून का समान संरक्षण।

• **15वाँ संशोधन (1870):** नस्ल या रंग के आधार पर मताधिकार से वंचित करने पर पूर्ण प्रतिबंध।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
1781 में अमेरिका के यॉर्कटाउन में जिस ब्रिटिश सेनापति **लॉर्ड कॉर्नवालिस** ने जॉर्ज वाशिंगटन के सामने हथियार डालकर अमेरिकी उपनिवेश गँवाए थे, उसी कॉर्नवालिस को ब्रिटेन ने मात्र पाँच वर्ष बाद 1786 में **भारत का गवर्नर-जनरल** बनाकर भेजा! अमेरिका को खोने के बाद ब्रिटेन ने अपनी साम्राज्यवादी क्षतिपूर्ति भारत में 'स्थायी बंदोबस्त' (1793) और मैसूर विजय के माध्यम से की।

चार-नोड प्रवाह आरेख: अमेरिकी क्रांति से गृहयुद्ध और आधुनिक महाशक्ति तक

[नोड 1: सप्तवर्षीय युद्ध (1763), स्टाम्प एक्ट व बोस्टन टी पार्टी (1773)] [नोड 2: स्वतंत्रता घोषणापत्र (4 जुलाई 1776) व पेरिस संधि (1783)] [नोड 3: फिलाडेल्फिया संविधान (1787) एवं उत्तर-दक्षिण आर्थिक-दासता विवाद] [नोड 4: अब्राहम लिंकन, गृहयुद्ध (1861-65) एवं 13वें संशोधन द्वारा दासता का अंत]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: अमेरिकी क्रांति (1776) बनाम अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)

तुलना का बिंदु	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775–1783)	अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)
संघर्ष का स्वरूप	औपनिवेशिक मुक्ति संग्राम (13 उपनिवेश बनाम ब्रिटिश साम्राज्य)	आंतरिक संवैधानिक व वैचारिक युद्ध (उत्तरी संघ बनाम 11 दक्षिणी राज्य)
मूल कारण	वणिकवादी शोषण एवं 'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं' का मुद्दा	दास प्रथा का विस्तार, राज्यों के अधिकार बनाम संघ की सर्वोच्चता
प्रमुख नेतृत्व	जॉर्ज वाशिंगटन, थॉमस जेफरसन, बेंजामिन फ्रैंकलिन, सैमुअल एडम्स	अब्राहम लिंकन व जनरल ग्रांट (उत्तर) बनाम जेफरसन डेविस व रॉबर्ट ली (दक्षिण)
निर्णायक युद्ध व मोड़	साराटोगा का युद्ध (1777) एवं यॉर्कटाउन का आत्मसमर्पण (1781)	गेटिसबर्ग का युद्ध (1863) एवं एपॉमैटॉक्स आत्मसमर्पण (1865)
ऐतिहासिक दस्तावेज	स्वतंत्रता का घोषणापत्र (4 जुलाई 1776) व अमेरिकी संविधान (1787)	मुक्ति उद्घोषणा (1863), गेटिसबर्ग भाषण व 13वाँ-14वाँ-15वाँ संशोधन

तुलना का बिंदु	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775–1783)	अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865)
दीर्घकालिक परिणाम	विश्व के प्रथम आधुनिक लिखित संवैधानिक लोकतांत्रिक गणराज्य का जन्म	दासता का उन्मूलन, संघ की अखंडता की रक्षा व तीव्र औद्योगिक महाशक्ति का उदय

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): अमेरिकी गृहयुद्ध (1861) के समय उत्तरी संघ (यूनियन) बनाम दक्षिणी महासंघ (कन्फेडरेसी) की संसाधन हिस्सेदारी

- **कुल जनसंख्या अनुपात (उत्तर : दक्षिण):**  **71% उत्तरी संघ** बनाम **29% दक्षिणी राज्य** (दक्षिण की जनसंख्या में एक-तिहाई गुलाम थे)
- **औद्योगिक उत्पादन क्षमता:**  **90% उत्तरी संघ** बनाम मात्र **10% दक्षिणी राज्य** (हथियारों और गोला-बारूद में उत्तर की निर्णायक बढ़त)
- **रेलमार्ग नेटवर्क (परिवहन क्षमता):**  **72% उत्तरी संघ** बनाम **28% दक्षिणी राज्य** (सैनिकों व रसद की तीव्र आवाजाही का आधार)
- **कपास निर्यात में हिस्सेदारी ('किंग कॉटन'):**  **96% दक्षिणी राज्य** बनाम **4% उत्तरी संघ** (दक्षिण की एकमात्र आर्थिक शक्ति)

★ **स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):**
- **अमेरिकी क्रांति के प्रमुख घटनाक्रम का कालक्रम: "शुगर खाकर स्टाम्प लगाया, बोस्टन में चाय बहाया, जेफरसन ने घोषणा कर यॉर्कटाउन में पेरिस मनाया!"**
(शुगर एक्ट 1764 स्टाम्प एक्ट 1765 बोस्टन हत्याकांड 1770 बोस्टन टी पार्टी 1773 जेफरसन घोषणापत्र 1776 यॉर्कटाउन 1781 पेरिस संधि 1783)
- **गृहयुद्ध के तीनों संविधान संशोधन (13, 14, 15): "13 में मुक्ति (दासता खत्म), 14 में नागरिकता, 15 में वोट का अधिकार!"**

2.3 अध्याय 2: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #16 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. "प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" (नो टैक्सेशन विदाउट रिप्रेजेंटेशन) का नारा किस अधिनियम के विरोध में और किसके द्वारा दिया गया? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

- **उत्तर:** 1765 के ब्रिटिश 'स्टाम्प एक्ट' के विरोध में जेम्स ओटिस और पैट्रिक हेनरी जैसे अमेरिकी नेताओं द्वारा यह नारा लोकप्रिय बनाया गया।
- **विस्तृत व्याख्या:** अमेरिकी उपनिवेशों का तर्क था कि ब्रिटेन के 'मैग्नाकार्टा' (1215) और 'बिल ऑफ राइट्स' (1689) के अनुसार नागरिकों की सहमति के बिना उन पर कर नहीं लगाया जा सकता; चूँकि वेस्टमिंस्टर (ब्रिटिश संसद) में उपनिवेशों का एक भी सांसद नहीं था, अतः आंतरिक कराधान अवैध था।

अभ्यास प्रश्न #17 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. सप्तवर्षीय युद्ध (1756–1763) ने अमेरिकी क्रांति की पृष्ठभूमि किस प्रकार तैयार की? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

- **उत्तर:** सप्तवर्षीय युद्ध में ब्रिटेन द्वारा फ्रांस को हराकर कनाडा पर अधिकार कर लेने से अमेरिकी उपनिवेशों की ब्रिटेन पर सैन्य निर्भरता समाप्त हो गई।
- **विस्तृत व्याख्या:** इतिहासकारों के अनुसार, जब तक कनाडा में फ्रांसीसी सेना थी, अमेरिकी उपनिवेश अपनी रक्षा के लिए मातृदेश ब्रिटेन से जुड़े रहे; किंतु फ्रांसीसी खतरे के हटते ही और ब्रिटेन द्वारा युद्ध के ऋण का भार उपनिवेशों पर लादते ही विद्रोह फूट पड़ा।

अभ्यास प्रश्न #18 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 'बोस्टन टी पार्टी' की घटना कब हुई और इसके नायक कौन थे? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / कर्मचारी चयन आयोग / राज्य लोक सेवा आयोग]

- **उत्तर:** 16 दिसंबर 1773 को सैमुअल एडम्स के नेतृत्व में 'सन्स ऑफ लिबर्टी' के सदस्यों द्वारा बोस्टन बंदरगाह पर ईस्ट इंडिया कंपनी की 342 चाय की पेटियाँ समुद्र में फेंकी गईं।
- **विस्तृत व्याख्या:** लॉर्ड नॉर्थ की सरकार द्वारा 1773 के टी एक्ट के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी को चाय के व्यापार का एकाधिकार देने और चाय पर कर बनाए रखने के विरोध में यह प्रतीकात्मक किंतु क्रांतिकारी कदम उठाया गया।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. थॉमस पेन की पुस्तक 'कॉमन सेंस' (1776) का अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में क्या योगदान था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** जनवरी 1776 में प्रकाशित इस पम्फलेट की कुछ ही महीनों में 5 लाख से अधिक प्रतियाँ बिकीं और इसने सुलह की मानसिकता को पूर्ण स्वतंत्रता की माँग में बदल दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** थॉमस पेन ने सरल और ओजस्वी भाषा में वंशानुगत राजतंत्र को मूर्खतापूर्ण बताया और तर्क दिया कि यह प्रकृति के नियम के विरुद्ध है कि एक छोटा-सा द्वीप (ब्रिटेन) एक विशाल महाद्वीप (अमेरिका) पर शासन करे।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. 4 जुलाई 1776 के 'अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणापत्र' का प्रारूप किसने तैयार किया और यह किस दार्शनिक से प्रभावित था? [राज्य लोक सेवा आयोग / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** इसका प्रारूप थॉमस जेफरसन ने बेंजामिन फ्रैंकलिन और जॉन एडम्स के सहयोग से तैयार किया, जो जॉन लॉक के प्राकृतिक अधिकारों के दर्शन से प्रेरित था।

• **विस्तृत व्याख्या:** जेफरसन ने लॉक के 'जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति' के सूत्र को परिष्कृत कर 'जीवन, स्वतंत्रता और सुख की प्राप्ति' (परस्यूट ऑफ हैप्पीनेस) के रूप में प्रस्तुत किया तथा सरकार की वैधता का आधार 'शासितों की सहमति' को बनाया।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में फ्रांस के प्रवेश का कारण और परिणाम क्या रहा? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** 1777 के साराटोगा युद्ध में अमेरिकियों की जीत के बाद फ्रांस ने 1778 में अमेरिका के साथ सैन्य संधि की और मार्क्विस डी लाफायेत तथा रोशाम्बो के नेतृत्व में सेना व नौसेना भेजी।

• **विस्तृत व्याख्या:** सप्तवर्षीय युद्ध की अपमानजनक हार का बदला लेने के लिए फ्रांस ने अमेरिका को भारी आर्थिक-सैन्य सहायता दी, जिससे अमेरिका तो स्वतंत्र हो गया, किंतु फ्रांस का राजकोष खाली हो गया जो स्वयं 1789 की फ्रांसीसी क्रांति का तात्कालिक कारण बना।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 1787 के फिलाडेल्फिया संविधान की विश्व इतिहास को तीन सबसे बड़ी देनें क्या हैं? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** विश्व का प्रथम लिखित संविधान, संघात्मक शासन प्रणाली (फेडरलिज्म) और नियंत्रण व संतुलन (चेक्स एंड बैलेंसेज) पर आधारित राष्ट्रपति प्रणाली।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके साथ ही 1791 में प्रथम दस संशोधनों ('बिल ऑफ राइट्स') द्वारा नागरिकों के मौलिक अधिकारों को न्यायिक संरक्षण प्रदान किया गया, जो बाद में भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों की भी प्रेरणा बना।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–65) के पीछे निहित आर्थिक अंतर्विरोध क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** यह औद्योगिक पूँजीवाद (उत्तरी राज्य) और बागानी दास-आधारित कृषि व्यवस्था (दक्षिणी राज्य) के बीच का संघर्ष था।

• **विस्तृत व्याख्या:** उत्तरी राज्य अपने नवजात उद्योगों को ब्रिटिश प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए उच्च संरक्षणवादी आयात शुल्क चाहते थे, जबकि दक्षिणी राज्य ब्रिटेन को कपास निर्यात करने और वहाँ से सस्ता औद्योगिक सामान मँगाने के लिए मुक्त व्यापार चाहते थे।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. हैरियट बीचर स्टोव की किस पुस्तक ने दास प्रथा के विरुद्ध जनमत तैयार करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1852 में प्रकाशित उपन्यास 'अंकल टॉम्स केबिन'।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस उपन्यास ने दक्षिणी बागानों में गुलामों पर होने वाले अमानवीय अत्याचारों और परिवारों के विघटन का इतना मार्मिक चित्रण किया कि जब राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन लेखिका स्टोव से मिले, तो उन्होंने कहा— "तो आप ही वह छोटी महिला हैं जिनकी किताब ने यह महान युद्ध शुरू कराया!"

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. 1857 का 'ड्रेड स्कॉट बनाम सैंडफोर्ड' विवाद क्या था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** ड्रेड स्कॉट नामक एक अश्वेत दास ने इस आधार पर अपनी स्वतंत्रता की याचिका दायर की थी कि वह अपने मालिक के साथ कुछ समय तक स्वतंत्र (दासता-मुक्त) उत्तरी राज्यों में रह चुका था।

• **विस्तृत व्याख्या:** अमेरिकी सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रोजर तानी ने फैसला सुनाया कि अश्वेत व्यक्ति अमेरिकी नागरिक नहीं हैं और दास अपने मालिक की 'संपत्ति' हैं, इसलिए कांग्रेस किसी भी क्षेत्र में दास प्रथा पर रोक नहीं लगा सकती। इस निर्णय ने गृहयुद्ध की आग में घी का काम किया।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. अब्राहम लिंकन की 'मुक्ति उद्घोषणा' (इमैंसिपेशन प्रोक्लेमेशन) कब लागू हुई और इसका रणनीतिक महत्व क्या था? [राज्य लोक सेवा आयोग / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** 1 जनवरी 1863 को लागू हुई।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस उद्घोषणा ने गृहयुद्ध को केवल 'संघ की रक्षा के संवैधानिक युद्ध' से ऊपर उठाकर 'मानव स्वतंत्रता के नैतिक युद्ध' में बदल दिया, जिसके कारण ब्रिटेन और फ्रांस जैसे यूरोपीय देशों ने नैतिक दबाव में दक्षिणी राज्यों की सहायता करने का विचार त्याग दिया।

अभ्यास प्रश्न #27 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 'गेटिसबर्ग का संबोधन' (1863) क्यों प्रसिद्ध है? [कर्मचारी चयन आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 19 नवंबर 1863 को पेंसिल्वेनिया के गेटिसबर्ग राष्ट्रीय कब्रिस्तान में अब्राहम लिंकन द्वारा दिया गया मात्र दो मिनट का ऐतिहासिक भाषण।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसी भाषण में लिंकन ने 1776 के समानता के आदर्श को पुनः जीवित करते हुए लोकतंत्र की सर्वकालिक परिभाषा दी— "जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन"।

अभ्यास प्रश्न #28 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. अमेरिकी संविधान के 13वें, 14वें और 15वें संशोधनों को सामूहिक रूप से क्या कहा जाता है और इनका क्या प्रभाव पड़ा? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** इन्हें 'पुनर्निर्माण संशोधन' (रिकंस्ट्रक्शन अमेंडमेंट्स, 1865–1870) कहा जाता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** 13वें संशोधन ने दास प्रथा को समाप्त किया, 14वें ने कानून के समक्ष समानता व नागरिकता दी, और 15वें ने नस्ल के आधार पर मताधिकार के भेदभाव को रोका, जिससे लगभग 40 लाख अफ्रीकी-अमेरिकी कानूनी रूप से स्वतंत्र नागरिक बने।

अभ्यास प्रश्न #29 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. अमेरिकी क्रांति का भारत पर क्या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** अमेरिका में तेरह उपनिवेश खोने के बाद ब्रिटेन ने भारत में अपनी साम्राज्यवादी पकड़ मजबूत करने के लिए **1784 का पिट्स इंडिया एक्ट** पारित किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** यॉर्कटाउन में पराजित लॉर्ड कॉर्नवालिस को व्यापक शक्तियों के साथ भारत का गवर्नर-जनरल बनाकर भेजा गया ताकि भारत को ब्रिटेन के सबसे सुरक्षित और लाभकारी उपनिवेश के रूप में विकसित किया जा सके।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. "अमेरिकी गृहयुद्ध ने अमेरिका की दूसरी क्रांति का कार्य किया।" इस कथन की विवेचना कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** 1776 की प्रथम क्रांति ने अमेरिका को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता दिलाई, किंतु उसने दास प्रथा के कलंक और राज्यों के पृथक्करण के प्रश्न को अनसुलझा छोड़ दिया था।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1861–65 के गृहयुद्ध ने दास-आधारित सामंती बागानी व्यवस्था को समाप्त कर पूरे अमेरिका में एकीकृत राष्ट्रीय बाजार, मुक्त श्रम और अखंड संघीय सर्वोच्चता स्थापित की, जिसके बल पर बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ तक अमेरिका विश्व की सर्वोच्च औद्योगिक महाशक्ति बन गया।

अध्याय 3: फ्रांसीसी क्रांति (1789) एवं नेपोलियन बोनापार्ट का युग

3.1 फ्रांसीसी क्रांति (1789): प्राचीन व्यवस्था (आंसीं रेजीम) का पतन और 'स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व' का उद्घोष

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 3.1 फ्रांसीसी क्रांति (1789): प्राचीन व्यवस्था (आंसीं रेजीम) का पतन और 'स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व' का उद्घोष

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
फ्रांसीसी समाज का तीन स्टेट्स (वर्गों) में विभाजन	**राजनीतिक निरंकुशता, आर्थिक दिवालियापन और क्रांति का विस्फोट (1789)**

यदि पुनर्जागरण और प्रबोधन ने आधुनिक विचारों के बीज बोए थे, तो **1789 की फ्रांसीसी क्रांति** वह प्रचंड ज्वालामुखी थी जिसने यूरोप के सहस्राब्दी पुराने सामंती विशेषाधिकारों और निरंकुश राजतंत्र को भस्म कर आधुनिक विश्व की राजनीतिक शब्दावली गढ़ी। क्रांति से पूर्व फ्रांस की सामाजिक-राजनीतिक संरचना को **'प्राचीन व्यवस्था' (आंसीं रेजीम)** कहा जाता था, जो घोर असमानता और अन्याय की नींव पर टिकी थी।

फ्रांसीसी समाज का तीन स्टेट्स (वर्गों) में विभाजन

फ्रांस का समाज तीन कठोर वर्गों ('स्टेट्स') में बँटा हुआ था, जिसके संबंध में प्रचलित कहावत थी— "पादरी प्रार्थना करते हैं, कुलीन युद्ध लड़ते हैं, और आम जनता कर चुकाती है!"

1. **प्रथम स्टेट (पादरी वर्ग — क्लर्जी):** इनकी जनसंख्या कुल आबादी का मात्र **0.5% (लगभग 1.3 लाख)** थी, किंतु फ्रांस की **10% से अधिक सर्वोत्तम कृषि भूमि** पर इनका स्वामित्व था। ये राज्य को कोई प्रत्यक्ष कर नहीं देते थे, उल्टे किसानों से उपज का दसवाँ हिस्सा **'टाइथ' (धार्मिक कर)** के रूप में वसूलते थे।

2. **द्वितीय स्टेट (कुलीन एवं सामंत वर्ग — नोबिलिटी):** इनकी जनसंख्या लगभग **1.5% (लगभग 3.5 लाख)** थी और देश की **25% से 30% भूमि** इनके पास थी। सेना, प्रशासन और न्यायालय के सभी उच्च पद इन्हीं के लिए आरक्षित थे। ये प्रत्यक्ष भूमि-कर (**'टैली'**) से पूर्णतः मुक्त थे और किसानों से अनेक सामंती नजराने व बेगार ('कोर्वी') वसूलते थे।

3. **तृतीय स्टेट (जनसाधारण वर्ग — कॉमनर्स):** फ्रांस की **98% जनसंख्या** इसी वर्ग में आती थी,किंतु इसके पास कोई राजनीतिक या सामाजिक विशेषाधिकार नहीं था। इसमें दो उपवर्ग थे—एक ओर शिक्षित व संपन्न **'बुर्जुआ वर्ग'** (वकील, डॉक्टर, लेखक, व्यापारी, बैंकर) जिसके पास धन और योग्यता तो थी पर सम्मान और सत्ता में भागीदारी नहीं थी; और दूसरी ओर **किसान व शहरी मजदूर**, जो अपनी आय का **80% तक हिस्सा** राजा को 'टैली' (प्रत्यक्ष कर), 'गबेल' (नमक कर), चर्च को 'टाइथ' और सामंतों को जागीरदारी कर चुकाने में गँवा देते थे।

राजनीतिक निरंकुशता, आर्थिक दिवालियापन और क्रांति का विस्फोट (1789)

बूर्बो राजवंश के सम्राट दैवीय अधिकारों में विश्वास रखते थे। **लुई चौदहवें** ने दर्प के साथ कहा था— "मैं ही राज्य हूँ" (ल'एतात, से मुआ)। अयोग्य व विलासी **लुई पंद्रहवें** ने चेतावनी दी थी— "मेरे बाद प्रलय होगी!" और सचमुच **लुई सोलहवें (1774–1792)** तथा उसकी ऑस्ट्रियाई मूल की फिजूलखर्च रानी **मैरी एंटोनेट** (जिसे जनता 'मैडम डेफिसिट' कहती थी) के शासनकाल में वह प्रलय आ पहुँची। अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने के कारण फ्रांस पर **200 करोड़ लिव्रे से अधिक का ऋण** चढ़ चुका था। वित्तमंत्री **तुर्गो, नेकर और कालोन** ने जब कुलीन वर्ग पर कर लगाने का प्रस्ताव रखा, तो विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग ने उसका विरोध कर दिया।

अंततः कर लगाने की अनुमति लेने के लिए लुई सोलहवें को **175 वर्षों बाद (1614 के बाद पहली बार) 5 मई 1789 को वर्साय के महल में 'स्टेट्स जनरल' (तीनों सदनों की बैठक)** बुलानी पड़ी। यहाँ मतदान की पद्धति पर विवाद छिड़ गया—प्राचीन नियम के अनुसार प्रत्येक स्टेट का केवल एक सामूहिक वोट होता था (जिससे पादरी और कुलीन मिलकर 2:1 से तृतीय स्टेट को हरा देते थे), जबकि तृतीय स्टेट के 600 प्रतिनिधियों ने **'प्रति व्यक्ति एक मत'** की माँग की।

सम्राट द्वारा अस्वीकार किए जाने पर **17 जून 1789** को तृतीय स्टेट ने स्वयं को संपूर्ण राष्ट्र का प्रतिनिधि घोषित कर **'राष्ट्रीय सभा' (नेशनल असेंबली)** का रूप ले लिया। **20 जून 1789** को सभागार बंद मिलने पर प्रतिनिधियों ने **मिराबो और आबे सियेस** के नेतृत्व में पास के इंडोर टेनिस कोर्ट में एकत्र होकर प्रसिद्ध **'टेनिस कोर्ट की शपथ'** ली कि जब तक फ्रांस का नया संविधान नहीं बन जाता, वे भंग नहीं होंगे।

इस बीच पेरिस में रोटी की कीमतों में भारी उछाल और राजा द्वारा सेना बुलाए जाने की खबर से क्रुद्ध भीड़ ने **14 जुलाई 1789** को निरंकुश राजतंत्र के प्रतीक **'बास्तील के किले/जेल' पर धावा बोलकर उसे ध्वस्त कर दिया**। यही तिथि फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस बनी।

क्रांति के प्रमुख चरण: मानव अधिकार घोषणापत्र से आतंक के राज्य (1793–94) तक

- **4 अगस्त 1789 की ऐतिहासिक रात्रि:** राष्ट्रीय सभा ने एक ही झटके में सामंती विशेषाधिकारों, बेगार प्रथा और चर्च के 'टाइथ' कर को समाप्त कर दिया।
- **26 अगस्त 1789 — मानव एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा:** रूसो, लॉक और मोंटेस्क्यू के विचारों से प्रेरित इस चार्टर ने घोषणा की कि सभी मनुष्य जन्म से स्वतंत्र और अधिकारों में समान हैं, संप्रभुता राष्ट्र में निहित है, और कानून सामान्य इच्छा की अभिव्यक्ति है।
- **अक्टूबर 1789 का महिला मार्च:** पेरिस की हजारों महिलाओं ने "रोटी दो!" का नारा लगाते हुए वर्साय के महल को घेर लिया और राजा-रानी को बंदी के समान पेरिस के ट्यूलेरिस महल में ले आईं।
- **1791 का संवैधानिक राजतंत्र और जैकोबिन गणतंत्र (1792):** 1791 में सीमित राजतंत्र बना, किंतु राजा लुई सोलहवें द्वारा ऑस्ट्रिया और प्रशा के साथ गुप्त षड्यंत्र रचने और भागने के प्रयास ('वारेन की उड़ान') के कारण सितंबर 1792 में **'नेशनल कन्वेंशन'** ने राजतंत्र समाप्त कर फ्रांस को **गणतंत्र** घोषित कर दिया। **21 जनवरी 1793** को लुई सोलहवें को देशद्रोह के अपराध में **गिलोटिन** पर चढ़ाकर मृत्युदंड दे दिया गया।
- **आतंक का राज्य (रेन ऑफ टेरर, जून 1793–जुलाई 1794):** उग्रवादी **जैकोबिन दल** के नेता **मैक्सिमिलियन रोबेस्पियरे** ने बाहरी आक्रमण और आंतरिक प्रतिक्रांति को कुचलने के लिए 'सार्वजनिक सुरक्षा समिति' के माध्यम से तानाशाही स्थापित की। इस दौरान संदेह मात्र पर लगभग 40,000 लोगों (जिनमें रानी मैरी एंटोनेट और उदारवादी गिरोंदें नेता शामिल थे) को गिलोटिन पर चढ़ाया गया। अंततः **जुलाई 1794 (थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया)** में स्वयं रोबेस्पियरे को भी गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया और 1795 में पाँच सदस्यीय **'डायरेक्टरी का शासन' (1795–1799)** स्थापित हुआ।

3.2 नेपोलियन बोनापार्ट का युग (1799–1815): क्रांति का पुत्र और यूरोप का विजेता

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 3.2 नेपोलियन बोनापार्ट का युग (1799–1815): क्रांति का पुत्र और यूरोप का विजेता

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
नेपोलियन के स्थायी आंतरिक सुधार (क्रांति की उपलब्धियों का संस्थाकरण)	**नेपोलियन के युद्ध, साम्राज्य विस्तार और पतन के कारण**	**चार-नोड प्रवाह आरेख: फ्रांसीसी क्रांति से नेपोलियन और वियना कांग्रेस तक**

डायरेक्टरी के भ्रष्ट और अस्थिर शासन से ऊबी फ्रांस की जनता को एक सुदृढ़ नेतृत्व की तलाश थी। इसी शून्य को भरा कोर्सिका द्वीप (अजासियो) में 15 अगस्त 1769 को जन्मे असाधारण सैन्य प्रतिभा के धनी **नेपोलियन बोनापार्ट** ने। टूलॉन की घेराबंदी (1793), वेंडेमियर के विद्रोह दमन (1795) और इटली के सैन्य अभियान (1796–97) में ऑस्ट्रिया को धूल चटाकर नेपोलियन राष्ट्रीय नायक बन चुका था। **नवंबर 1799 (18 ब्रूमेयर के तख्तापलट)** में नेपोलियन ने डायरेक्टरी को भंग कर **'काउंसिल व्यवस्था' (कॉन्सुलेट, 1799–1804)** स्थापित की और स्वयं 'प्रथम काउंसल' बना। **दिसंबर 1804** में उसने जनमत-संग्रह के माध्यम से स्वयं को **'फ्रांसीसियों का सम्राट'** घोषित किया और नोट्रे-डेम गिरजाघर में पोप पायस सप्तम के हाथों से मुकुट छीनकर स्वयं अपने सिर पर रखा।

नेपोलियन के स्थायी आंतरिक सुधार (क्रांति की उपलब्धियों का संस्थाकरण)

नेपोलियन स्वयं को **'क्रांति का पुत्र'** कहता था। उसने कहा था— "वाटरलू की मेरी पराजय मेरे चालीस युद्धों की विजयों की स्मृति को मिटा देगी, किंतु मेरी विधि-संहिता (नेपोलियन कोड) अमर रहेगी।"

1. **नेपोलियन की विधि-संहिता (सिविल कोड ऑफ 1804):** फ्रांस के सैकड़ों विरोधाभासी सामंती कानूनों को समाप्त कर एक समान नागरिक संहिता लागू की गई। इसके मुख्य सिद्धांत थे—कानून के समक्ष समानता, जन्मजात विशेषाधिकारों की समाप्ति, योग्यता के आधार पर पद, धार्मिक सहिष्णुता और निजी संपत्ति के अधिकार की पूर्ण सुरक्षा।

2. **आर्थिक एवं शैक्षिक सुधार:** 1800 में **'बैंक ऑफ फ्रांस'** की स्थापना कर मुद्रास्फीति पर नियंत्रण पाया। शिक्षा का राष्ट्रीयकरण कर प्राथमिक विद्यालय, माध्यमिक **'लाइसी' (लाइसी विद्यालय)** और 'इंपीरियल यूनिवर्सिटी' की स्थापना की। योग्यता को सम्मानित करने के लिए **'लीजन ऑफ ऑनर'** सम्मान शुरू किया।

3. **धर्म-समझौता (कॉनकॉर्डेट ऑफ 1801):** पोप पायस सप्तम के साथ समझौता कर कैथोलिक धर्म को 'बहुसंख्यक फ्रांसीसियों का धर्म' माना, किंतु पादरियों की नियुक्ति और वेतन को राज्य के नियंत्रण में रखकर चर्च को राज्य के अधीन कर दिया।

नेपोलियन के युद्ध, साम्राज्य विस्तार और पतन के कारण

1805 में **ट्राफलगर के नौसैनिक युद्ध** में ब्रिटिश एडमिरल होरेशियो नेल्सन ने फ्रांसीसी बेड़े को नष्ट कर दिया, किंतु थल युद्धों में नेपोलियन ने **उल्म, ऑस्टरलिट्ज़ (1805), जेना (1806) और फ्रीडलैंड (1807)** के युद्धों में ऑस्ट्रिया, प्रशा और रूस को रौंद डाला। 1806 में उसने एक हजार वर्ष पुराने 'पवित्र रोमन साम्राज्य' को समाप्त कर जर्मनी के 300 से अधिक राज्यों को मिलाकर **39 राज्यों का 'राइन परिसंघ'** बनाया और 1807 में रूसी जार अलेक्जेंडर प्रथम के साथ **'तिलसित की संधि'** कर अपने साम्राज्य को चरम पर पहुँचाया।

किंतु नेपोलियन की तीन महाभूलों ने उसके पतन की पटकथा लिख दी:

- **महाद्वीपीय व्यवस्था (कॉन्टिनेंटल सिस्टम, 1806–07):** ब्रिटेन को नौसेना से न हरा पाने के कारण नेपोलियन ने 'बर्लिन और मिलान आज्ञप्तियों' द्वारा पूरे यूरोप में ब्रिटिश व्यापार और जहाजों के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया ताकि 'दुकानदारों के देश' (ब्रिटेन) को आर्थिक रूप से घुटनों पर लाया जा सके। किंतु अपनी प्रबल नौसेना के बल पर ब्रिटेन ने उपनिवेशों से व्यापार जारी रखा और उल्टे यूरोपीय देशों में आवश्यक वस्तुओं की भारी कमी होने से वे नेपोलियन के शत्रु बन गए।
- **स्पेन और पुर्तगाल का प्रायद्वीपीय युद्ध (1808–1814):** नेपोलियन ने स्पेन के राजा को हटाकर अपने भाई जोसेफ बोनापार्ट को गद्दी पर बैठा दिया। इससे स्पेन में उग्र राष्ट्रवादी गोरिल्ला युद्ध छिड़ गया। स्वयं नेपोलियन ने स्वीकार किया— "स्पेन के नासूर (स्पेनिश अल्सर) ने मेरा विनाश कर दिया।"
- **रूस पर विनाशकारी आक्रमण (1812):** महाद्वीपीय व्यवस्था का उल्लंघन करने पर नेपोलियन ने 6 लाख सैनिकों की 'ग्रैंड आर्मी' के साथ रूस पर चढ़ाई की। रूसी सेना ने 'झुलसी हुई धरती की नीति' (पीछे हटते हुए फसलें व गाँव जला देना) अपनाई। मॉस्को से लौटते समय रूस की भीषण बर्फीली ठंड ('जनरल विंटर'), भुखमरी और रूसी हमलों में नेपोलियन के 5 लाख से अधिक सैनिक मारे गए।

1813 में **लिपजिग के युद्ध ('राष्ट्रों का युद्ध')** में मित्र राष्ट्रों ने नेपोलियन को हराकर एल्बा द्वीप पर निर्वासित कर दिया। मार्च 1815 में वह एल्बा से भागकर **'सौ दिनों'** के लिए पुनः सम्राट बना, किंतु **18 जून 1815 को बेल्जियम के 'वाटरलू के युद्ध'** में ब्रिटिश सेनापति **ड्यूक ऑफ वेलिंगटन** और प्रशा के सेनापति **ब्लूचर** की संयुक्त सेना ने उसे अंतिम रूप से पराजित कर दिया। नेपोलियन को दक्षिण अटलांटिक महासागर के निर्जन **सेंट हेलेना द्वीप** पर बंदी बना दिया गया, जहाँ 5 मई 1821 को उसकी मृत्यु हो गई। इसके पश्चात **1815 की वियना कांग्रेस** (ऑस्ट्रियाई चांसलर **मेटरनिख** की अध्यक्षता में) ने 'वैधता और शक्ति-संतुलन' के सिद्धांत के तहत यूरोप में पुराने राजवंशों को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
आधुनिक लोकतंत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्द **'वामपंथ' (वामपंथी धारा)** और **'दक्षिणपंथ' (दक्षिणपंथी धारा)** की उत्पत्ति 1789 की फ्रांसीसी राष्ट्रीय सभा के बैठने की व्यवस्था से हुई थी! सभा के अध्यक्ष के **दाहिनी ओर (दाएँ)** वे रूढ़िवादी प्रतिनिधि बैठते थे जो राजा के वीटो अधिकार और परंपराओं के समर्थक थे, जबकि **बाईं ओर (बाएँ)** वे क्रांतिकारी प्रतिनिधि बैठते थे जो आमूलचूल परिवर्तन, गणतंत्र और समानता के पक्षधर थे।

चार-नोड प्रवाह आरेख: फ्रांसीसी क्रांति से नेपोलियन और वियना कांग्रेस तक

[नोड 1: त्रि-स्तरीय सामंती शोषण, वित्तीय संकट व बास्तील का पतन (14 जुलाई 1789)] [नोड 2: मानवाधिकार घोषणापत्र, जैकोबिन गणतंत्र (1792) व आतंक का राज्य (1793-94)] [नोड 3: डायरेक्टरी का पतन, नेपोलियन का उदय (1799) व सिविल कोड (1804)] [नोड 4: महाद्वीपीय व्यवस्था, वाटरलू पराजय (1815) व वियना कांग्रेस]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: अमेरिकी क्रांति (1776) बनाम फ्रांसीसी क्रांति (1789)

तुलना का आधार	अमेरिकी क्रांति (1776)	फ्रांसीसी क्रांति (1789)
क्रांति की प्रकृति	बाहरी औपनिवेशिक विदेशी सत्ता (ब्रिटेन) के विरुद्ध राजनीतिक मुक्ति संग्राम	स्वदेशी निरंकुश राजतंत्र, सामंतवाद और चर्च के विशेषाधिकारों के विरुद्ध सामाजिक-राजनीतिक क्रांति
नेतृत्व एवं वर्ग आधार	संपत्तिशाली अभिजात, बागान मालिक व वकील वर्ग (स्थिर एवं नियंत्रित नेतृत्व)	बुर्जुआ वर्ग से प्रारंभ होकर जैकोबिन व शहरी श्रमिकों ('सौ-कुलोत') के उग्र हाथों में

तुलना का आधार	अमेरिकी क्रांति (1776)	फ्रांसीसी क्रांति (1789)
प्रमुख आदर्श वाक्य	"प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" एवं जीवन, स्वतंत्रता व सुख की प्राप्ति	"स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व" (लिबर्टी, इक्वालिटी, फ्रेटरनिटी)
हिंसा एवं क्रमिकता	बाहरी युद्ध के बाद शांत संवैधानिक निर्माण (कोई आंतरिक आतंक काल नहीं)	बास्तील पतन, राजा का मृत्युदंड, रोबेस्पियरे का 'आतंक का राज्य' व नेपोलियन की तानाशाही
धर्म और चर्च के प्रति रुख	धर्म और राज्य का शांतिपूर्ण पृथक्करण (धार्मिक सहिष्णुता)	चर्च की भूमि की जब्ती, पादरियों का नागरिक संविधान व उग्र धर्मनिरपेक्षीकरण

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): 1789 के पूर्व फ्रांस में जनसंख्या, भूमि स्वामित्व एवं कर-भार का विषम वितरण

- **जनसंख्या में हिस्सेदारी:** प्रथम व द्वितीय स्टेट (पादरी + कुलीन): **2%** | तृतीय स्टेट (जनसाधारण): **98%**
- **कृषि भूमि पर स्वामित्व:** पादरी व कुलीन वर्ग: **40%** | तृतीय स्टेट (98% आबादी): **60%**
- **प्रत्यक्ष राजकोषीय कर (टैली) में योगदान:** पादरी व कुलीन वर्ग: **0% (पूर्णतः कर-मुक्त)** | तृतीय स्टेट: **100%**
- **एक औसत फ्रांसीसी किसान की कुल आय का करों में जाने वाला हिस्सा:** **80%** (टैली, टाइथ, गबेल व सामंती लगान मिलाकर)

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):
- **फ्रांसीसी करों के नाम: "राजा ने टैली (प्रत्यक्ष कर) लिया, चर्च ने टाइथ (धार्मिक कर) लिया, नमक पर गबेल और सामंत ने कोर्वी (बेगार) लिया!"**
- **नेपोलियन के पतन के तीन मुख्य कारण (सी-एम-आर): "प्रथम—कॉन्टिनेंटल सिस्टम (महाद्वीपीय व्यवस्था), द्वितीय—मॉस्को अभियान (1812), तृतीय—राष्ट्रवाद (स्पेन का नासूर) — अंत में वाटरलू (1815)!"**

3.3 अध्याय 3: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #31 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. फ्रांसीसी क्रांति के संदर्भ में 'टैली' (टैली), 'टाइथ' (टाइथ) और 'गबेल' (गबेल) क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग / राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद]

- **उत्तर:** ये तीनों प्राचीन व्यवस्था (आंसीं रेजीम) के अंतर्गत तृतीय स्टेट से वसूले जाने वाले शोषणकारी कर थे।
- **विस्तृत व्याख्या:** 'टैली' सीधे राज्य (सम्राट) को दिया जाने वाला प्रत्यक्ष भूमि व संपत्ति कर था (जिससे पादरी और कुलीन मुक्त थे); 'टाइथ' चर्च द्वारा किसानों से वसूला जाने वाला कुल कृषि उपज का दसवाँ हिस्सा था; और 'गबेल' अत्यंत अलोकप्रिय नमक कर था जिसके तहत प्रत्येक नागरिक को सरकार से एक निश्चित मात्रा में महंगा नमक खरीदना अनिवार्य था।

अभ्यास प्रश्न #32 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. "यदि रूसो न होता, तो फ्रांस की क्रांति न होती।" यह कथन किसका है और इसका क्या तात्पर्य है? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / स्नातकोत्तर शिक्षक]

- **उत्तर:** यह प्रसिद्ध कथन स्वयं नेपोलियन बोनापार्ट का है।
- **विस्तृत व्याख्या:** मोंटेस्क्यू और वोल्टेयर जहाँ प्रबुद्ध राजतंत्र या संवैधानिक सुधारों से संतुष्ट थे, वहीं रूसो की पुस्तक 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' ने 'लोकप्रिय संप्रभुता' और 'सामान्य इच्छा' का सिद्धांत देकर राजतंत्र की वैधता को जड़ से उखाड़ दिया और तृतीय स्टेट को यह विश्वास दिलाया कि वास्तविक संप्रभु राजा नहीं बल्कि जनता है।

अभ्यास प्रश्न #33 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 'टेनिस कोर्ट की शपथ' (20 जून 1789) का फ्रांसीसी क्रांति में क्या संवैधानिक महत्व था? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** इस घटना ने फ्रांस में सम्राट की निरंकुश संप्रभुता के स्थान पर 'राष्ट्र की संप्रभुता' स्थापित करने की औपचारिक शुरुआत की।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब लुई सोलहवें ने तृतीय स्टेट के सभागार को बंद करवा दिया, तब आबे सियेस (जिन्होंने 'तृतीय स्टेट क्या है?' पम्फलेट लिखा था) और मिराबो के नेतृत्व में प्रतिनिधियों ने टेनिस कोर्ट में शपथ ली कि वे फ्रांस को संविधान दिए बिना अलग नहीं होंगे।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. 14 जुलाई 1789 को बास्तील के किले का पतन क्यों ऐतिहासिक माना जाता है, जबकि उसमें केवल 7 कैदी ही बंद थे? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** बास्तील में कैदियों की संख्या कम थी, किंतु वह किला बूर्बो राजवंश के स्वेच्छाचारी और निरंकुश आतंक (विशेषकर बिना मुकदमे के गिरफ्तारी के वारंट 'लेत्र द काशे') का सबसे बड़ा प्रतीक था।

• **विस्तृत व्याख्या:** पेरिस की जनता द्वारा बास्तील को ध्वस्त करना इस बात की घोषणा थी कि अब सम्राट का अपनी राजधानी और सेना पर नियंत्रण समाप्त हो चुका है और क्रांति ने जन-विद्रोह का रूप ले लिया है।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. फ्रांसीसी क्रांति में 'सौ-कुलोत' (सौ-कुलोत) कौन थे? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** पेरिस और अन्य नगरों के वे कट्टरपंथी श्रमिक, कारीगर और छोटे दुकानदार जो कुलीन वर्ग की तरह घुटनों तक का रेशमी ब्रीचेस (कुलोत) न पहनकर साधारण लंबी पतलून पहनते थे।

• **विस्तृत व्याख्या:** ये लोग लाल टोपी (स्वतंत्रता का प्रतीक) पहनते थे और इन्होंने जैकोबिन दल तथा रोबेस्पियरे को शक्ति प्रदान करने, राजतंत्र को उखाड़ फेंकने और रोटी की कीमतों पर नियंत्रण लागू करवाने में मुख्य भूमिका निभाई।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. 'आतंक का राज्य' (1793–94) क्यों लागू किया गया और इसके पतन का क्या कारण था? [राज्य लोक सेवा आयोग / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** जैकोबिन नेता मैक्सिमिलियन रोबेस्पियरे ने बाहरी राजतांत्रिक देशों (ऑस्ट्रिया, प्रशा, ब्रिटेन) के आक्रमण और देश के भीतर प्रतिक्रांतिकारी विद्रोहों से गणतंत्र को बचाने के लिए जून 1793 से जुलाई 1794 तक 'आतंक का राज्य' लागू किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** रोबेस्पियरे ने राशनिंग, अधिकतम मूल्य निर्धारण और अनिवार्य सैन्य भर्ती से फ्रांस की रक्षा तो कर ली, किंतु जब बाहरी खतरा टलने के बाद भी उसने अपने ही साथियों (दांतों आदि) को गिलोटिन पर चढ़ाना जारी रखा, तो जुलाई 1794 (थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया) में नेशनल कन्वेंशन ने उसे अपदस्थ कर मृत्युदंड दे दिया।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. फ्रांसीसी क्रांति में महिलाओं की भूमिका और 'ओलंप दे गूज' के योगदान पर प्रकाश डालिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** फ्रांसीसी महिलाओं ने अक्टूबर 1789 के वर्साय मार्च में अग्रणी भूमिका निभाई और लगभग 60 महिला राजनीतिक क्लब ('सोसाइटी ऑफ रिवोल्यूशनरी एंड रिपब्लिकन वुमेन') स्थापित किए।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब 1791 के संविधान ने महिलाओं को 'निष्क्रिय नागरिक' मानकर मताधिकार से वंचित रखा, तब क्रांतिकारी लेखिका **ओलंप दे गूज** ने 1791 में **'महिला एवं महिला नागरिक अधिकारों का घोषणापत्र'** लिखा। जैकोबिन शासन ने महिला क्लबों पर प्रतिबंध लगा दिया और 1793 में ओलंप दे गूज को गिलोटिन पर चढ़ा दिया (फ्रांस में महिलाओं को मताधिकार अंततः 1946 में मिला)।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. नेपोलियन की विधि-संहिता (कोड नेपोलियन, 1804) की मुख्य विशेषताएँ और सीमाएँ क्या थीं? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** इसने सामंती विशेषाधिकार समाप्त किए, कानून के समक्ष समानता, धर्मनिरपेक्षता, संविदा की स्वतंत्रता और निजी संपत्ति के अधिकार को स्थापित किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसकी सबसे बड़ी सीमा यह थी कि इसने महिलाओं की स्थिति को पुनः पितृसत्तात्मक अधिकार के अधीन कर दिया (महिलाओं को कानूनी रूप से अवयस्क के समान माना गया), श्रमिक संघों पर प्रतिबंध लगाया और प्रेस की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. नेपोलियन को "क्रांति का संहारक और क्रांति का रक्षक दोनों" क्यों कहा जाता है? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** उसने राजनीतिक स्वतंत्रता (लोकतंत्र व गणतंत्र) को नष्ट कर सम्राट की तानाशाही स्थापित की, इसलिए वह क्रांति का संहारक था; किंतु उसने सामाजिक समानता और सामंतवाद-विरोध को पूरे यूरोप में फैलाया, इसलिए वह क्रांति का रक्षक था।

• **विस्तृत व्याख्या:** नेपोलियन ने महसूस किया था कि फ्रांसीसी जनता को राजनीतिक स्वतंत्रता से अधिक सामाजिक समानता और आर्थिक सुरक्षा प्रिय थी, इसलिए उसने सिविल कोड और योग्यता-आधारित प्रशासन द्वारा क्रांति की सामाजिक उपलब्धियों को स्थायी बना दिया।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. नेपोलियन ने जर्मनी और इटली के भावी एकीकरण का मार्ग अनजाने में कैसे प्रशस्त कर दिया? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** नेपोलियन ने जर्मनी के 300 से अधिक छोटे-छोटे सामंती राज्यों को समाप्त कर 39 राज्यों का 'राइन परिसंघ' बनाया और इटली के विभाजित राज्यों में समान कानून व प्रशासन लागू किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** एक ओर उसके प्रशासनिक एकीकरण ने दोनों देशों को एकता का लाभ दिखाया, और दूसरी ओर नेपोलियन के विदेशी आधिपत्य व शोषण के विरुद्ध जर्मनी और इटली की जनता में पहली बार तीव्र राष्ट्रवादी चेतना जागृत हुई।

अभ्यास प्रश्न #41 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. 'महाद्वीपीय व्यवस्था' (कॉन्टिनेंटल सिस्टम) क्या थी और यह क्यों विफल हुई? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1806 की बर्लिन और 1807 की मिलान आज्ञप्तियों द्वारा नेपोलियन द्वारा ब्रिटेन के विरुद्ध लगाया गया यूरोपीय व्यापारिक बहिष्कार।

• **विस्तृत व्याख्या:** फ्रांस के पास ब्रिटेन जैसी शक्तिशाली नौसेना नहीं थी, इसलिए तस्करी नहीं रोकी जा सकी; साथ ही यूरोपीय देशों को ब्रिटिश औद्योगिक वस्तुओं की भारी आवश्यकता थी। इस व्यवस्था को जबरन थोपने के चक्कर में नेपोलियन स्पेन और रूस के आत्मघाती युद्धों में उलझ गया।

अभ्यास प्रश्न #42 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 1807 की 'तिलसित की संधि' किनके बीच हुई और इसका क्या महत्व था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** जुलाई 1807 में नीमन नदी के बीच एक बेड़े पर नेपोलियन बोनापार्ट और रूस के जार अलेक्जेंडर प्रथम के बीच हुई।

• **विस्तृत व्याख्या:** यह संधि नेपोलियन के उत्कर्ष का सर्वोच्च बिंदु थी, जिसमें रूस ने महाद्वीपीय व्यवस्था में शामिल होना स्वीकार किया और प्रशा के भूभाग को घटाकर आधा कर दिया गया।

अभ्यास प्रश्न #43 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. 'राष्ट्रों का युद्ध' (बैटल ऑफ द नेशंस, 1813) और 'वाटरलू का युद्ध' (1815) में क्या अंतर है? [कर्मचारी चयन आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** अक्टूबर 1813 में जर्मनी के **लिपजिग** में लड़ा गया युद्ध 'राष्ट्रों का युद्ध' कहलाता है जिसमें रूस, प्रशा, ऑस्ट्रिया और स्वीडन ने नेपोलियन को हराकर एल्बा द्वीप भेजा; जबकि **18 जून 1815 को वाटरलू (बेल्जियम)** में नेपोलियन की अंतिम पराजय हुई जिसके बाद उसे सेंट हेलेना भेजा गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** लिपजिग ने नेपोलियन के यूरोपीय साम्राज्य को समाप्त किया, और वाटरलू ने उसके 'सौ दिनों के शासन' व राजनीतिक जीवन पर पूर्ण विराम लगा दिया।

अभ्यास प्रश्न #44 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. 1815 की 'वियना कांग्रेस' के मुख्य सिद्धांत क्या थे और इसका नेतृत्व किसने किया? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** ऑस्ट्रिया के प्रतिक्रियावादी चांसलर **ड्यूक मेटरनिख** की अध्यक्षता में आयोजित वियना कांग्रेस के तीन मुख्य सिद्धांत थे—'वैधता का सिद्धांत' (पुराने राजवंशों की बहाली), 'क्षतिपूर्ति का सिद्धांत' और 'शक्ति संतुलन' (फ्रांस की घेराबंदी)।

• **विस्तृत व्याख्या:** वियना कांग्रेस ने इतिहास की घड़ी को पीछे मोड़ते हुए फ्रांस और स्पेन में बूर्बो राजवंश को बहाल किया तथा राष्ट्रवाद और उदारवाद की भावना को कुचल दिया, जिससे 1830 और 1848 की यूरोपीय क्रांतियों का जन्म हुआ।

अभ्यास प्रश्न #45 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. "जब फ्रांस छींकता है, तो पूरे यूरोप को जुकाम हो जाता है।" यह कथन किसका है और यह यूरोपीय इतिहास में कैसे सिद्ध हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** यह कथन ऑस्ट्रियाई चांसलर मेटरनिख का है।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1789 की फ्रांसीसी क्रांति के बाद जुलाई 1830 और फरवरी 1848 में जब भी पेरिस में राजतंत्र के विरुद्ध क्रांति हुई, उसकी लहर तुरंत बेल्जियम, इटली, जर्मनी, पोलैंड और स्वयं ऑस्ट्रिया तक फैल गई (1848 की क्रांति ने तो स्वयं मेटरनिख को ही वियना छोड़कर भागने पर मजबूर कर दिया)।

अध्याय 4: औद्योगिक क्रांति (इंग्लैंड व यूरोप में प्रसार तथा वैश्विक प्रभाव)

4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: हथकरघे की झोपड़ी से भाप के इंजनों की गड़गड़ाहट तक

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 4.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कथात्मक व्याख्या: हथकरघे की झोपड़ी से भाप के इंजनों की गड़गड़ाहट तक

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
औद्योगिक क्रांति का जन्म सर्वप्रथम इंग्लैंड (ब्रिटेन) में ही क्यों हुआ?	**प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी क्रांति**

मानव सभ्यता के इतिहास में नवपाषाण कालीन कृषि क्रांति के बाद यदि किसी घटना ने मनुष्य के जीवन, समाज, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण को सबसे अधिक आमूलचूल रूप से बदला, तो वह अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध (लगभग 1750–1850) में प्रारंभ हुई **'औद्योगिक क्रांति'** थी। 'औद्योगिक क्रांति' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग फ्रांसीसी लेखकों और बाद में अंग्रेजी आर्थिक इतिहासकार **अर्नोल्ड टायनबी** ने अपनी पुस्तक 'लेक्चर्स ऑन द इंडस्ट्रियल रिवोल्यूशन इन इंग्लैंड' में किया। यह कोई आकस्मिक रक्तपातपूर्ण राजनीतिक विद्रोह नहीं था, अपितु उत्पादन की प्रणाली में आया एक क्रांतिकारी रूपांतरण था—जिसमें **मानव एवं पशु श्रम का स्थान वाष्प-चालित मशीनों ने** और **घरेलू कुटीर उद्योग ('पुटिंग-आउट सिस्टम') का स्थान विशाल कारखाना प्रणाली (फैक्ट्री सिस्टम) ने** ले लिया।

औद्योगिक क्रांति का जन्म सर्वप्रथम इंग्लैंड (ब्रिटेन) में ही क्यों हुआ?

अठारहवीं शताब्दी में फ्रांस और चीन जैसे देश जनसंख्या और पारंपरिक शिल्प में समृद्ध थे, फिर भी औद्योगिक क्रांति का सूर्योदय इंग्लैंड में ही हुआ। इसके पीछे कई अनुकूल कारकों का अनूठा संगम था:

1. **कृषि क्रांति एवं बाड़ाबंदी आंदोलन (एनक्लोजर मूवमेंट):** अठारहवीं सदी के पूर्वार्ध में इंग्लैंड में जेथ्रो टल की 'सीड ड्रिल' (बीज बोने की मशीन) और टाउनशेंड की 'फसल चक्र प्रणाली' से कृषि उत्पादन बढ़ा। साथ ही, बड़े जमींदारों ने संसद से कानून पास कराकर सार्वजनिक व छोटे किसानों की बिखरी जमीनों की **'बाड़ाबंदी' (एनक्लोजर)** कर विशाल कृषि फार्म बना लिए। इससे एक ओर खाद्य उत्पादन बढ़ा और दूसरी ओर लाखों भूमिहीन किसान रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर गए, जिससे नए कारखानों के लिए **सस्ते और प्रचुर श्रमिक** उपलब्ध हो गए।

2. **कोयला और लोहे की भौगोलिक निकटता:** इंग्लैंड के मिडलैंड्स, लंकाशायर और यॉर्कशायर क्षेत्रों में उच्च कोटि के कोयले और लौह अयस्क की खदानें एक-दूसरे के अत्यंत समीप तथा बंदरगाहों से जुड़ी हुई थीं।

3. **पूँजी का संचय और सुदृढ़ बैंकिंग तंत्र:** भारत (1757 के प्लासी युद्ध के बाद बंगाल की लूट) और कैरेबियाई दास व्यापार से ब्रिटेन में अपार पूँजी एकत्र हुई थी। **1694 में स्थापित 'बैंक ऑफ इंग्लैंड'** और सैकड़ों प्रांतीय बैंकों ने सस्ते ब्याज पर उद्योगपतियों को ऋण उपलब्ध कराया।

4. **राजनीतिक स्थिरता एवं सामुद्रिक सर्वोच्चता: 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति** के बाद से इंग्लैंड में संवैधानिक राजतंत्र, संपत्ति के अधिकारों की सुरक्षा और शांति थी। महाद्वीपीय यूरोप की तरह इंग्लैंड की भूमि पर नेपोलियन के विनाशकारी युद्ध नहीं लड़े गए और रॉयल नेवी ने विश्व के समुद्री व्यापार मार्गों पर एकाधिकार स्थापित कर रखा था।

5. **नम जलवायु और सूती वस्त्र उद्योग:** लंकाशायर और मैनचेस्टर की नम जलवायु कपास के धागे की कताई के लिए अत्यंत अनुकूल थी (नम हवा में सूत टूटता नहीं था)।

प्रमुख वैज्ञानिक आविष्कार और तकनीकी क्रांति

• **सूती वस्त्र उद्योग में क्रांति:** 1733 में **जॉन के** ने **'फ्लाइंग शटल'** बनाया जिससे बुनाई की गति दोगुनी हो गई। धागे की कमी को पूरा करने के लिए 1764 में **जेम्स हरग्रीव्स** ने अपनी पत्नी के नाम पर **'स्पिनिंग जेनी'** बनाई जिससे एक साथ 8 धागे काते जा सकते थे। 1769 में **रिचर्ड आर्कराइट** ने जल-शक्ति से चलने वाला **'वाटर फ्रेम'** बनाया (आर्कराइट को 'आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली का जनक' कहा जाता है)। 1779 में **सैमुअल क्रॉम्पटन** ने जेनी और वाटर फ्रेम को मिलाकर **'स्पिनिंग म्यूल'** बनाया, और 1785 में **एडमंड कार्टराइट** ने **'पावरलूम' (शक्ति-चालित करघा)** तथा 1793 में अमेरिकी **एली व्हिटनी** ने **'कॉटन जिन'** (बिनौले अलग करने की मशीन) का आविष्कार किया।

• **भाप की शक्ति (स्टीम पावर):** 1712 में थॉमस न्यूकोमेन ने खदानों से पानी निकालने वाला प्रारंभिक इंजन बनाया, किंतु **1769 में स्कॉटलैंड के जेम्स वाट** ने व्यवसायी मैथ्यू बोल्टन के सहयोग से पृथक कंडेनसर युक्त आधुनिक एवं ऊर्जा-दक्ष **'भाप के इंजन' (स्टीम इंजन)** का आविष्कार कर उद्योगों को नदियों के किनारे से मुक्त कर किसी भी शहर में स्थापित होने योग्य बना दिया।

• **लोहा, कोयला और इस्पात क्रांति: अब्राहम डार्बी** (1709) ने लकड़ी के चारकोल के स्थान पर **'कोक' (पत्थर के कोयले)** से लोहा गलाने की विधि खोजी। **हेनरी कोर्ट** ने 'पडलिंग फर्नेस' व रोलिंग मिल बनाई। कोयले की खदानों में जहरीली गैस से होने वाले विस्फोटों से मजदूरों को बचाने के लिए 1815 में **हम्फ्री डेवी** ने **'सेफ्टी लैंप'** का आविष्कार किया। आगे चलकर 1856 में **हेनरी बेसेमर** ने सस्ते और मजबूत इस्पात (स्टील) निर्माण की **'बेसेमर प्रक्रिया'** खोजी।

• **परिवहन एवं संचार क्रांति: जॉर्ज स्टीफेंसन** ('रेलवे का जनक') ने 1814 में भाप का रेल इंजन ('ब्लूचर') बनाया और **1830 में मैनचेस्टर से लिवरपूल के बीच विश्व की प्रथम यात्री रेलगाड़ी ('रॉकेट')** दौड़ी। अमेरिका के **रॉबर्ट फुल्टन** ने 1807 में प्रथम सफल वाष्प-चालित नौका (**'क्लेरमोंट'**) बनाई, **जॉन मैकएडम** ने पक्की सड़कों के निर्माण की तकनीक विकसित की, और **सैमुअल मोर्स** ने टेलीग्राफ का आविष्कार किया।

4.2 यूरोप में प्रसार, द्वितीय औद्योगिक क्रांति एवं सामाजिक-वैचारिक प्रभाव

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 4.2 यूरोप में प्रसार, द्वितीय औद्योगिक क्रांति एवं सामाजिक-वैचारिक प्रभाव

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
औद्योगिक क्रांति के गंभीर सामाजिक और वैश्विक परिणाम	**चार-नोड प्रवाह आरेख: औद्योगिक क्रांति का कारण-प्रभाव चक्र**

1815 में नेपोलियन युद्धों की समाप्ति के बाद औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन से निकलकर महाद्वीपीय यूरोप और अमेरिका में फैली। **बेल्जियम** यूरोप की मुख्य भूमि पर औद्योगीकरण करने वाला **पहला देश** बना (कोयला और कपड़ा उद्योग के बल पर)। फ्रांस में यह प्रक्रिया धीमी किंतु संतुलित रही। **जर्मनी** ने 1834 के **'ज़ोलवेरिन' (सीमा शुल्क संघ)** और 1871 के एकीकरण के बाद रसायन, विद्युत और इस्पात उद्योग में ब्रिटेन को भी पीछे छोड़ दिया। **संयुक्त राज्य अमेरिका** ने 1865 के गृहयुद्ध के बाद और **जापान** ने **1868 की 'मेइजी पुनर्स्थापना' (मेइजी रेस्टोरेशन)** के बाद तीव्र औद्योगीकरण कर एशिया की पहली औद्योगिक शक्ति का दर्जा प्राप्त किया।

1870 से 1914 के बीच के दौर को **'द्वितीय औद्योगिक क्रांति'** कहा जाता है, जिसका आधार कोयला-भाप के स्थान पर **बिजली (थॉमस एडिसन, निकोला टेस्ला), पेट्रोलियम व आंतरिक दहन इंजन (कार्ल बेंज, रुडोल्फ डीजल), रसायन, टेलीफोन (ग्राहम बेल) और असेंबली लाइन उत्पादन (हेनरी फोर्ड)** था।

औद्योगिक क्रांति के गंभीर सामाजिक और वैश्विक परिणाम

1. **नए सामाजिक वर्गों का उदय:** समाज स्पष्ट रूप से दो वर्गों में बँट गया—उत्पादन के साधनों का स्वामी **'पूँजीपति वर्ग' (बुर्जुआ)** और केवल अपना श्रम बेचकर जीवित रहने वाला **'सर्वहारा श्रमिक वर्ग' (प्रोलेतारियत)**।

2. **श्रमिकों का शोषण, महिला व बाल श्रम:** कारखानों में 14 से 16 घंटे काम लिया जाता था। कम मजदूरी देने और मशीनों के नीचे संकरी जगहों में काम कराने के लिए 6–7 वर्ष के अनाथ बच्चों और महिलाओं का क्रूर शोषण किया जाता था। गंदी बस्तियों (स्लम्स) में हैजा और तपेदिक जैसी महामारियाँ फैलती थीं।

3. **लुडाइट आंदोलन (1811–1816) और चार्टिस्ट आंदोलन (1838–1848):** बेरोजगारी के डर से क्रुद्ध बुनकरों ने काल्पनिक नेता **जनरल नेड लुड** के नाम पर मशीनों को तोड़ने का हिंसक **'लुडाइट आंदोलन'** चलाया। 1819 में मैनचेस्टर के सेंट पीटर्स मैदान में मताधिकार और सुधार की माँग कर रहे मजदूरों पर घुड़सवार सेना ने हमला किया जिसे **'पीटरलू नरसंहार'** कहा गया। इसके बाद 1838–48 में ब्रिटिश मजदूरों ने वयस्क पुरुष मताधिकार और गुप्त मतदान सहित 6 माँगों वाला **'चार्टिस्ट आंदोलन'** चलाया।

4. **समाजवाद और मार्क्सवाद का उदय:** पूँजीवादी शोषण के विरुद्ध पहले **रॉबर्ट ओवेन** (ब्रिटेन), **सेंट साइमन** और **चार्ल्स फूरिये** (फ्रांस) ने 'स्वप्नदर्शी समाजवाद' (यूटोपियन सोशलिज्म) का विचार रखा। तत्पश्चात **कार्ल मार्क्स** और **फ्रेडरिक एंगेल्स** ने **1848 में 'कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो' (साम्यवादी घोषणापत्र)** और 1867 में **'दास कैपिटल'** प्रकाशित कर **'वैज्ञानिक समाजवाद' (मार्क्सवाद)** और वर्ग-संघर्ष का सिद्धांत दिया तथा नारा बुलंद किया— "दुनिया के मजदूरों, एक हो जाओ! तुम्हारे पास खोने के लिए अपनी बेड़ियों के सिवा कुछ नहीं है।"

5. **उपनिवेशवाद और वि-औद्योगीकरण:** कच्चे माल (कपास, नील, जूट) की प्राप्ति और तैयार माल को खपाने के लिए यूरोपीय शक्तियों ने एशिया और अफ्रीका को गुलाम बनाया। भारत का विश्व-प्रसिद्ध सूती हथकरघा उद्योग ब्रिटिश मशीनों के सस्ते कपड़े और एकतरफा टैरिफ नीति के कारण नष्ट हो गया, जिसे दादाभाई नौरोजी और रमेश चंद्र दत्त ने **'भारत का वि-औद्योगीकरण' (डी-इंडस्ट्रियलाइजेशन)** कहा।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
अठारहवीं सदी के मध्य तक विश्व के कुल कपड़ा उत्पादन में **भारत का हिस्सा लगभग 25% था**, और ढाका की मलमल व कालीकट के 'कैलिको' कपड़े की यूरोप में इतनी माँग थी कि ब्रिटिश संसद को अपने स्थानीय ऊनी उद्योग को बचाने के लिए **1700 और 1721 में 'कैलिको अधिनियम'** पारित कर भारतीय सूती कपड़ों के पहनने और आयात पर कानूनन प्रतिबंध लगाना पड़ा था!

चार-नोड प्रवाह आरेख: औद्योगिक क्रांति का कारण-प्रभाव चक्र

[नोड 1: कृषि बाड़ाबंदी, औपनिवेशिक पूँजी संचय व कोयला-लोहा प्रचुरता] [नोड 2: वस्त्र मशीनरी (स्पिनिंग जेनी, वाटर फ्रेम) व जेम्स वाट का भाप इंजन (1769)] [नोड 3: फैक्ट्री प्रणाली, रेलवे क्रांति (1830) व नगरीकरण का विस्फोट] [नोड 4: वर्ग-संघर्ष, मार्क्सवादी समाजवाद (1848) एवं नव-साम्राज्यवाद का उदय]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: प्रथम औद्योगिक क्रांति बनाम द्वितीय औद्योगिक क्रांति

तुलना का आधार	प्रथम औद्योगिक क्रांति (लगभग 1750–1850)	द्वितीय औद्योगिक क्रांति (लगभग 1870–1914)
अग्रणी केंद्र (नेतृत्वकर्ता देश)	ग्रेट ब्रिटेन (इंग्लैंड — 'विश्व की कार्यशाला')	संयुक्त राज्य अमेरिका एवं एकीकृत जर्मनी (जापान सहित)
ऊर्जा का मुख्य स्रोत	कोयला एवं वाष्प शक्ति (भाप का इंजन)	विद्युत (बिजली), पेट्रोलियम एवं आंतरिक दहन इंजन
प्रमुख आधारभूत उद्योग	सूती वस्त्र उद्योग, कच्चा लोहा एवं कोयला खनन	इस्पात (बेसेमर स्टील), भारी रसायन, ऑटोमोबाइल व विद्युत उपकरण
उत्पादन एवं संगठन का स्वरूप	व्यक्तिगत या पारिवारिक स्वामित्व वाले कारखाने	विशाल कॉर्पोरेशन, जॉइंट-स्टॉक कंपनियाँ, ट्रस्ट व असेंबली लाइन
परिवहन एवं संचार माध्यम	नहरें, मैकएडम सड़कें एवं प्रारंभिक भाप के रेल इंजन	अंतरमहाद्वीपीय रेलमार्ग, स्वेज/पनामा नहर, ऑटोमोबाइल, टेलीफोन व रेडियो

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): विश्व विनिर्माण उत्पादन (वैश्विक विनिर्माण उत्पादन) में विभिन्न देशों की हिस्सेदारी में ऐतिहासिक उलटफेर (1750 बनाम 1900)

- **वर्ष 1750 में भारत और चीन की संयुक्त वैश्विक औद्योगिक हिस्सेदारी:** **57%** (चीन 32.8% + भारत 24.5%; ब्रिटेन मात्र 1.9% पर था)
- **वर्ष 1860 में ब्रिटेन की वैश्विक विनिर्माण हिस्सेदारी (शीर्ष काल):** **20%** (अकेले ब्रिटेन विश्व के 50% से अधिक लोहे व सूती कपड़े का उत्पादक बन गया)
- **वर्ष 1900 में भारत की वैश्विक विनिर्माण हिस्सेदारी में गिरावट:** **मात्र 1.7%** (ब्रिटिश औपनिवेशिक वि-औद्योगीकरण का प्रत्यक्ष प्रमाण)

• **ब्रिटेन में शहरी जनसंख्या का अनुपात (1750 से 1900):**  **15% से बढ़कर 77%** (ग्रामीण कृषक समाज का शहरी औद्योगिक समाज में रूपांतरण)

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):

• **सूती वस्त्र उद्योग के चार महान आविष्कार (कालक्रम से): "के ने शटल उड़ाया (1733), हरग्रीव्स ने जेनी घुमाया (1764), आर्कराइट ने पानी पिलाया (1769), क्रॉम्पटन ने म्यूल बनाया (1779)!"**
(जॉन के = फ्लाइंग शटल, जेम्स हरग्रीव्स = स्पिनिंग जेनी, रिचर्ड आर्कराइट = वाटर फ्रेम, सैमुअल क्रॉम्पटन = स्पिनिंग म्यूल)

• **स्वप्नदर्शी बनाम वैज्ञानिक समाजवाद: "ओवेन-साइमन-फूरिये ने सपना देखा (यूटोपियन), मार्क्स-एंगेल्स ने इतिहास लिखा (वैज्ञानिक समाजवाद)!"**

4.3 अध्याय 4: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #46 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड में 'बाड़बंदी आंदोलन' (एनक्लोजर मूवमेंट) ने औद्योगिक क्रांति में किस प्रकार योगदान दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** बाड़ाबंदी आंदोलन के तहत जमींदारों ने सामुदायिक चरागाहों और छोटे खेतों को घेरकर बड़े वाणिज्यिक फार्म बना लिए।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके दोहरे प्रभाव पड़े—एक ओर वैज्ञानिक खेती से बढ़ती शहरी आबादी के लिए खाद्यान्न अधिशेष पैदा हुआ, और दूसरी ओर अपनी पुस्तैनी जमीन व चरागाह खो चुके लाखों छोटे किसान शहरों के कारखानों में मजदूरी करने के लिए विवश हो गए, जिससे उद्योगों को सस्ता श्रम मिला।

अभ्यास प्रश्न #47 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 'आधुनिक फैक्ट्री प्रणाली का जनक' किसे माना जाता है और क्यों? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** रिचर्ड आर्कराइट (1732–1792) को।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1769 में आर्कराइट द्वारा आविष्कृत 'वाटर फ्रेम' आकार में इतना बड़ा था और उसे चलाने के लिए जल-चक्र की आवश्यकता थी कि उसे घरों या झोपड़ियों में नहीं रखा जा सकता था। इसलिए आर्कराइट ने 1771 में क्रॉमफोर्ड में विश्व की पहली जल-चालित सूती मिल स्थापित की, जहाँ सैकड़ों मजदूर निश्चित समय-सारणी और अनुशासन के तहत एक ही छत के नीचे काम करते थे।

अभ्यास प्रश्न #48 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. जेम्स वाट के भाप के इंजन (1769) ने कारखानों के भूगोल को कैसे बदल दिया? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** भाप के इंजन से पहले कारखाने केवल तेज बहती नदियों (जल-शक्ति) के किनारे ही लगाए जा सकते थे, जो अक्सर आबादी और बाजारों से दूर पहाड़ी इलाकों में होती थीं।

• **विस्तृत व्याख्या:** जेम्स वाट और मैथ्यू बोल्टन के वाष्प इंजन ने कारखानों को नदियों की बाध्यता से मुक्त कर दिया; अब कारखाने कोयला खदानों, बंदरगाहों और घनी आबादी वाले नगरों (जैसे मैनचेस्टर और बर्मिंघम) में स्थापित किए जाने लगे।

अभ्यास प्रश्न #49 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. लोहा और इस्पात उद्योग में अब्राहम डार्बी और हेनरी बेसेमर का क्या योगदान था? [राज्य लोक सेवा आयोग / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** अब्राहम डार्बी ने 1709 में लकड़ी के चारकोल के स्थान पर 'कोक' (पत्थर के कोयले) से ढलवाँ लोहा गलाने की तकनीक खोजी, और हेनरी बेसेमर ने 1856 में पिघले हुए लोहे में हवा प्रवाहित कर अशुद्धियाँ जलाने और सस्ता इस्पात (स्टील) बनाने की 'बेसेमर विधि' विकसित की।

• **विस्तृत व्याख्या:** डार्बी की खोज ने इंग्लैंड को वनों की कटाई के संकट से बचाया, जबकि बेसेमर स्टील ने मजबूत रेल पटरियों, महासागरीय जहाजों, पुलों और गगनचुंबी इमारतों के निर्माण को संभव बनाया।

अभ्यास प्रश्न #50 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. विश्व की प्रथम सार्वजनिक भाप-चालित यात्री रेलगाड़ी कब, कहाँ और किसके द्वारा चलाई गई? [कर्मचारी चयन आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1825 में जॉर्ज स्टीफेंसन ने स्टॉकटन से डार्लिंगटन के बीच पहली मालगाड़ी/यात्री ट्रेन चलाई, और **1830 में लिवरपूल से मैनचेस्टर** के बीच विश्व की पहली पूर्णतः भाप-चालित नियमित यात्री व मालवाहक रेल सेवा ('रॉकेट' इंजन द्वारा) शुरू हुई।

• **विस्तृत व्याख्या:** लिवरपूल बंदरगाह (जहाँ विदेशों से कच्चा कपास आता था) को मैनचेस्टर (जहाँ सूती मिलें थीं) से जोड़ने वाली इस रेल लाइन ने परिवहन लागत को एक-तिहाई कम कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #51 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. 'लुडाइट आंदोलन' (1811–1816) क्या था? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** इंग्लैंड के नॉटिंघमशायर, यॉर्कशायर और लंकाशायर के कुशल हथकरघा बुनकरों और कारीगरों द्वारा नई मशीनों को तोड़ने का संगठित आंदोलन।

• **विस्तृत व्याख्या:** मशीनों के आने से पारंपरिक कारीगरों की मजदूरी गिर गई और बेरोजगारी फैल गई। उन्होंने अपने काल्पनिक नेता 'जनरल नेड लुड' के नाम पर मिल मालिकों को धमकी भरे पत्र भेजे और पावरलूम तोड़े। ब्रिटिश सरकार ने सेना तैनात कर और मशीन तोड़ने पर मृत्युदंड का कानून बनाकर इसे कुचल दिया।

अभ्यास प्रश्न #52 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 1819 का 'पीटरलू नरसंहार' क्या था? [दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** 16 अगस्त 1819 को मैनचेस्टर के सेंट पीटर्स मैदान में संसदीय सुधार और कॉर्न लॉ (अनाज कानून) को हटाने की माँग को लेकर एकत्रित 60,000 शांतिपूर्ण मजदूरों पर ब्रिटिश घुड़सवार सेना का हिंसक आक्रमण।

• **विस्तृत व्याख्या:** वाटरलू के युद्ध (1815) के मात्र चार वर्ष बाद अपने ही निहत्थे नागरिकों पर किए गए इस सैन्य हमले को व्यंग्यात्मक रूप से 'पीटरलू' कहा गया, जिसमें 18 लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हुए।

अभ्यास प्रश्न #53 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. ब्रिटेन के 'चार्टिस्ट आंदोलन' (1838–1848) की छह मुख्य माँगें क्या थीं? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** 1832 के सुधार अधिनियम से मजदूर वर्ग को मताधिकार न मिलने पर विलियम लोवेट द्वारा तैयार किए गए 'पीपुल्स चार्टर' (1838) में छह लोकतांत्रिक माँगें रखी गईं।

• **विस्तृत व्याख्या:** ये छह माँगें थीं—(1) 21 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों को मताधिकार, (2) गुप्त मतदान (सीक्रेट बैलेट), (3) संसद सदस्यों के लिए संपत्ति की योग्यता की समाप्ति, (4) सांसदों को वेतन (ताकि गरीब मजदूर भी चुनाव लड़ सकें), (5) समान आकार के निर्वाचन क्षेत्र, और (6) प्रतिवर्ष संसद के चुनाव। प्रथम पाँच माँगें आगे चलकर ब्रिटिश संविधान का हिस्सा बनीं।

अभ्यास प्रश्न #54 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. औद्योगिक क्रांति के दौरान पारित 'ब्रिटिश फैक्ट्री अधिनियमों' (1819 और 1833) का क्या महत्व था? [राज्य लोक सेवा आयोग / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** इन अधिनियमों ने राज्य के 'अहस्तक्षेप' (लेसे-फेयर) के सिद्धांत को तोड़कर श्रमिक कल्याण के लिए सरकारी विनियमन की शुरुआत की।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1833 के फैक्ट्री अधिनियम ने 9 वर्ष से कम आयु के बच्चों के सूती मिलों में काम करने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया, 9 से 13 वर्ष के बच्चों के कार्य के घंटे अधिकतम 8 घंटे निर्धारित किए और नियम लागू करवाने के लिए पहली बार 'फैक्ट्री निरीक्षकों' की नियुक्ति की।

अभ्यास प्रश्न #55 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. जर्मनी के औद्योगीकरण में 'ज़ोलवेरिन' (ज़ोलवेरिन, 1834) की क्या भूमिका थी? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** अर्थशास्त्री फ्रेडरिक लिस्ट की प्रेरणा से प्रशा के नेतृत्व में 1834 में गठित 'ज़ोलवेरिन' 18 जर्मन राज्यों का एक 'सीमा शुल्क संघ' (कस्टम्स यूनियन) था।

• **विस्तृत व्याख्या:** इससे पूर्व जर्मनी के 39 राज्यों के बीच दर्जनों आंतरिक चुंगी नाके और अलग-अलग मुद्राएँ थीं जो व्यापार में बाधक थीं। ज़ोलवेरिन ने आंतरिक सीमा शुल्क समाप्त कर एक एकीकृत जर्मन बाजार और रेल नेटवर्क तैयार किया, जिसने आर्थिक और राजनीतिक दोनों एकीकरणों की नींव रखी।

अभ्यास प्रश्न #56 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. जापान में औद्योगीकरण पश्चिमी यूरोप के औद्योगीकरण से किस प्रकार भिन्न था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** ब्रिटेन में औद्योगीकरण निजी पूँजीपतियों और मुक्त बाजार के माध्यम से नीचे से हुआ, जबकि जापान में **1868 की मेइजी पुनर्स्थापना** के बाद स्वयं **राज्य (सरकार)** ने ऊपर से औद्योगीकरण का नेतृत्व किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** पश्चिमी साम्राज्यवाद से अपनी स्वतंत्रता बचाने के लिए मेइजी सरकार ने "समृद्ध देश, शक्तिशाली सेना" (फुकोकु क्योहेई) का नारा दिया, सरकारी खर्च पर रेलवे, टेलीग्राफ, जहाजरानी और कारखाने लगाए और बाद में उन्हें मित्सुई व मित्सुबिशी जैसे बड़े औद्योगिक घरानों (**'ज़ायबात्सू'**) को सौंप दिया।

अभ्यास प्रश्न #57 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 'स्वप्नदर्शी समाजवाद' (यूटोपियन सोशलिज्म) और कार्ल मार्क्स के 'वैज्ञानिक समाजवाद' में मूल अंतर क्या था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा]

• **उत्तर:** रॉबर्ट ओवेन और सेंट साइमन जैसे स्वप्नदर्शी समाजवादी मानते थे कि पूँजीपतियों के हृदय-परिवर्तन, नैतिक अपील और आदर्श सहकारी समुदायों ('न्यू लैनार्क') के निर्माण से शांतिपूर्वक शोषण समाप्त हो सकता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके विपरीत, कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने 'ऐतिहासिक भौतिकवाद' के आधार पर कहा कि अब तक का संपूर्ण इतिहास 'वर्ग-संघर्ष का इतिहास' है; पूँजीपति वर्ग स्वेच्छा से कभी विशेषाधिकार नहीं छोड़ेगा, अतः सर्वहारा वर्ग को संगठित क्रांति द्वारा उत्पादन के साधनों पर सामूहिक अधिकार करना होगा।

अभ्यास प्रश्न #58 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. ब्रिटेन में 'कॉर्न लॉ' (अनाज कानून, 1815–1846) क्या थे और उनका निरसन किस बात का प्रतीक था? [दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1815 में ब्रिटिश संसद में हावी जमींदार वर्ग ने सस्ते विदेशी अनाज के आयात पर भारी शुल्क लगाने के लिए 'कॉर्न लॉ' पारित कराया था ताकि ब्रिटेन में अनाज की कीमतें ऊँची बनी रहें।

• **विस्तृत व्याख्या:** उद्योगपतियों (रिचर्ड कोबडेन और जॉन ब्राइट के 'एंटी-कॉर्न लॉ लीग') ने इसका विरोध किया क्योंकि महंगे अनाज के कारण मजदूरों को अधिक मजदूरी देनी पड़ती थी। 1846 में प्रधानमंत्री रॉबर्ट पील द्वारा कॉर्न लॉ को समाप्त करना सामंती जमींदार वर्ग पर औद्योगिक पूँजीपति वर्ग की अंतिम विजय और 'मुक्त व्यापार' के युग की शुरुआत थी।

अभ्यास प्रश्न #59 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. औद्योगिक क्रांति ने 'नव-साम्राज्यवाद' (1870–1914) को कैसे जन्म दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** जब यूरोप के सभी प्रमुख देशों (ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, बेल्जियम, इटली) में कारखाने लग गए और उन्होंने अपने घरेलू बाजारों को बचाने के लिए आयात शुल्क बढ़ा दिए, तब अतिरिक्त औद्योगिक माल को बेचने, सस्ता कच्चा माल (रबर, तेल, तांबा, कपास) पाने और अतिरिक्त पूँजी के निवेश के लिए उपनिवेशों की छीना-झपटी शुरू हुई।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसी आर्थिक भूख के कारण 1884–85 के बर्लिन सम्मेलन के बाद अफ्रीका का 'कागज पर बँटवारा' (स्क्रैम्बल फॉर अफ्रीका) हुआ और मात्र तीन दशकों में अफ्रीका का 90% हिस्सा यूरोपीय साम्राज्यों के अधीन हो गया।

अभ्यास प्रश्न #60 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. "इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति की नींव भारतीय बुनकरों की हड्डियों पर रखी गई थी।" इस कथन का ऐतिहासिक परीक्षण कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** लॉर्ड विलियम बेंटिंक ने स्वयं लिखा था कि "सूती बुनकरों की हड्डियाँ भारत के मैदानों को विरंजित (सफेद) कर रही हैं।"

• **विस्तृत व्याख्या:** 1757 के प्लासी युद्ध के बाद बंगाल से लूटी गई संपदा ने ब्रिटेन के आविष्कारों के लिए पूँजी दी; तत्पश्चात ब्रिटेन ने भारतीय कपड़ों पर इंग्लैंड में 70% से 80% तक आयात शुल्क लगाया जबकि ब्रिटिश मशीनों के कपड़ों को भारत में शुल्क-मुक्त प्रवेश दिया। इस औपनिवेशिक नीति ने भारत को विश्व के सबसे बड़े वस्त्र निर्यातक से कच्चे कपास के निर्यातक और ब्रिटिश कपड़ों के आयातक में बदल दिया।

अध्याय 5: इटली और जर्मनी का एकीकरण (मेजिनी, कावूर, गैरीबाल्डी एवं बिस्मार्क)

5.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: वियना कांग्रेस (1815) की बेड़ियाँ और राष्ट्रवाद का उभार

उन्नीसवीं शताब्दी के यूरोपीय इतिहास की सबसे गौरवशाली और भू-राजनीतिक रूप से युगान्तकारी घटना मध्य यूरोप में सदियों से खंड-खंड में विभाजित दो महान राष्ट्रों—**इटली और जर्मनी—का वर्ष 1870–1871 में एकीकृत राष्ट्र-राज्यों के रूप में उदय** था। 1815 की वियना कांग्रेस में ऑस्ट्रियाई चांसलर **मेटरनिख** ने राष्ट्रवाद को कुचलते हुए दंभपूर्वक कहा था कि **"इटली मात्र एक भौगोलिक अभिव्यक्ति है"** (अर्थात यह कोई राष्ट्र नहीं, केवल नक्शे पर एक स्थान का नाम है)। ठीक यही स्थिति जर्मनी की भी थी, जिसे 39 राज्यों के एक शिथिल परिसंघ में बाँधकर ऑस्ट्रिया की अध्यक्षता के अधीन रख दिया गया था। दोनों ही देशों के एकीकरण की राह में सबसे बड़ी चट्टान **हैब्सबर्ग वंश का ऑस्ट्रियाई साम्राज्य** था।

5.2 इटली का एकीकरण (रिसोर्जिमेंटो, 1815–1870): आत्मा, मस्तिष्क और तलवार का संगम

इतालवी भाषा में एकीकरण और राष्ट्रीय पुनरुत्थान के आंदोलन को **'रिसोर्जिमेंटो' (पुनर्जागरण/पुनरुत्थान)** कहा जाता है। 1815 के बाद इटली मुख्यतः पाँच हिस्सों में बँटा था—(1) उत्तर-पूर्व में **लोम्बार्डी और वेनेशिया** पर सीधे ऑस्ट्रिया का शासन था; (2) मध्य उत्तरी राज्यों (**पार्मा, मोडेना, टस्कनी**) पर ऑस्ट्रिया के हैब्सबर्ग राजकुमारों का शासन था; (3) मध्य इटली के **पोप के राज्यों (पेपल स्टेट्स — रोम सहित)** पर पोप का शासन था; (4) दक्षिण में **नेपल्स और सिसिली** पर फ्रांस के बूर्बो राजवंश की एक निरंकुश शाखा का शासन था; और (5) केवल उत्तर-पश्चिम के **सार्डिनिया-पीडमोंट** राज्य पर ही एक देशी इतालवी राजवंश (**सेवॉय राजवंश**) का शासन था। इसी कारण सार्डिनिया-पीडमोंट ने इटली के एकीकरण का नेतृत्व किया।

एकीकरण के तीन महान स्तंभ और चार चरण

प्रारंभ में गुप्त क्रांतिकारी संस्था **'कार्बोनरी' (कोयला जलाने वालों की संस्था)** ने 1820 और 1830 में विद्रोह किए, जो ऑस्ट्रियाई सेना द्वारा कुचल दिए गए। इसके बाद इटली के एकीकरण में तीन महान विभूतियों ने अपनी-अपनी अद्वितीय भूमिका निभाई:

1. **जोसेफ मेजिनी (1805–1872) — 'इटली के एकीकरण की आत्मा / पैगंबर':** मेजिनी एक प्रखर राष्ट्रवादी चिंतक और गणतंत्रवादी थे। उन्होंने 1831 में फ्रांस के मार्सेल्स में युवाओं में राष्ट्रभक्ति जगाने के लिए **'यंग इटली'** और 1834 में **'यंग यूरोप'** नामक संस्था की स्थापना की। मेजिनी का मूल मंत्र था—"ईश्वर में विश्वास रखो, सभी भाइयों को एक करो और इटली को स्वतंत्र करो।" यद्यपि उनके 1848 के गणतांत्रिक प्रयास विफल रहे, किंतु उन्होंने इतालवी जनता के हृदय में यह अमिट विश्वास जगा दिया कि इटली एक राष्ट्र है।

2. **काउंट कैमिलो दे कावूर (1810–1861) — 'इटली के एकीकरण का मस्तिष्क / कूटनीतिज्ञ':** सार्डिनिया-पीडमोंट के राजा **विक्टर इमैनुएल द्वितीय** ने 1852 में **काउंट कावूर** (जो 'इल रिसोर्जिमेंटो' नामक पत्र के संपादक थे) को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया। कावूर एक कुशल अर्थशास्त्री और यथार्थवादी कूटनीतिज्ञ थे। उन्होंने पहले सार्डिनिया की कृषि, रेल, उद्योग और सेना का आधुनिकीकरण किया। कावूर यह भली-भांति जानते थे कि अकेले सार्डिनिया विशाल ऑस्ट्रिया को नहीं हरा सकता; इसके लिए किसी बड़ी यूरोपीय शक्ति की सहायता अनिवार्य है।

• **क्रीमिया का युद्ध (1854–56) और प्लॉम्बियर्स समझौता (1858):** कावूर ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय देते हुए **क्रीमिया के युद्ध** में ब्रिटेन और फ्रांस की सहायता के लिए सार्डिनिया के 18,000 सैनिक भेजे (यद्यपि रूस से सार्डिनिया का कोई विवाद नहीं था)। कहा गया कि "क्रीमिया के कीचड़ से ही आधुनिक इटली का जन्म हुआ।" परिणामस्वरूप 1856 के पेरिस शांति सम्मेलन में कावूर को इटली की दुर्दशा को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उठाने का अवसर मिला। जुलाई

1858 में कावूर ने फ्रांस के सम्राट **नेपोलियन तृतीय** के साथ गुप्त **'प्लॉम्बियर्स समझौता'** किया, जिसके तहत नीस और सेवॉय के प्रदेश फ्रांस को देने के बदले नेपोलियन तृतीय ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध सार्डिनिया की सैन्य सहायता का वचन दिया।

• **प्रथम चरण — लोम्बार्डी की प्राप्ति (1859) व मध्य इटली का विलय (1860):** 1859 में ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध छिड़ने पर फ्रांस और सार्डिनिया की संयुक्त सेना ने **मैजेंटा और सोलफेरिनो के युद्धों** में ऑस्ट्रिया को पराजित किया। यद्यपि नेपोलियन तृतीय ने बीच में ही ऑस्ट्रिया से 'विलाफ्रांका की संधि' कर ली, तथापि सार्डिनिया को **लोम्बार्डी** प्राप्त हो गया। इसी उत्साह में 1860 में **पार्मा, मोडेना, टस्कनी और रोमान्या** की जनता ने जनमत-संग्रह द्वारा सार्डिनिया-पीडमोंट में विलय कर लिया।

3. **ग्यूसेप गैरीबाल्डी (1807–1882) — 'इटली के एकीकरण की तलवार':** गैरीबाल्डी एक अदम्य साहसी देशभक्त और छापामार युद्ध के महारथी थे। उन्होंने स्वयंसेवकों की एक प्रसिद्ध सेना बनाई जिसे **'लाल कुर्ती दल' (रेड शर्ट्स / एक हजार का अभियान)** कहा जाता था।

• **द्वितीय चरण — सिसिली और नेपल्स की विजय (1860):** मई 1860 में गैरीबाल्डी ने अपने एक हजार लाल कुर्ती सैनिकों के साथ दक्षिण इटली पर अभियान किया और चमत्कारिक रूप से सिसिली तथा नेपल्स के बूर्बो शासक फ्रांसिस द्वितीय को पराजित कर पूरे दक्षिणी इटली पर अधिकार कर लिया। जब यह आशंका उत्पन्न हुई कि गणतंत्रवादी गैरीबाल्डी और राजतंत्रवादी कावूर के बीच गृहयुद्ध छिड़ सकता है, तब गैरीबाल्डी ने राष्ट्रहित में सर्वोच्च त्याग का परिचय देते हुए अपने द्वारा जीते गए संपूर्ण दक्षिणी इटली को राजा **विक्टर इमैनुएल द्वितीय** के चरणों में समर्पित कर दिया और कोई भी पद या जागीर लेने से इनकार करते हुए मात्र एक बोरा बीज लेकर कैप्रेरा द्वीप पर खेती करने लौट गए! **1861 में ट्यूरिन में इतालवी संसद ने विक्टर इमैनुएल द्वितीय को 'इटली का राजा' घोषित किया।**

• **तृतीय एवं चतुर्थ चरण — वेनेशिया (1866) और रोम (1870) का विलय:** 1866 के ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध (सेडोवा के युद्ध) में इटली ने प्रशा (बिस्मार्क) का साथ दिया, जिसके पुरस्कार स्वरूप प्राग की संधि से **वेनेशिया** इटली को मिल गया। अब केवल **रोम** शेष था जहाँ पोप की रक्षा के लिए फ्रांसीसी सेना तैनात थी। **1870 में जब फ्रांस और प्रशा के बीच युद्ध (सेडान का युद्ध)** छिड़ा, तो नेपोलियन तृतीय को रोम से अपनी सेना बुलानी पड़ी। तुरंत इतालवी सेना ने **20 सितंबर 1870 को रोम में प्रवेश किया** और जनमत-संग्रह के बाद **रोम को संयुक्त इटली की राजधानी** घोषित किया गया।

5.3 जर्मनी का एकीकरण (1815–1871): बिस्मार्क की 'रक्त और लौह' की नीति

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 5.3 जर्मनी का एकीकरण (1815–1871): बिस्मार्क की 'रक्त और लौह' की नीति

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
ऑटो वॉन बिस्मार्क का उदय (1862) और तीन निर्णायक युद्ध	चार-नोड प्रवाह आरेख: बिस्मार्क की कूटनीति और जर्मन एकीकरण के चार सोपान

1815 की वियना कांग्रेस ने जर्मनी के 39 राज्यों का एक ढीला-ढाला 'जर्मन परिसंघ' बनाया था, जिसकी संसद (**डायट**) फ्रैंकफर्ट में बैठती थी और उसका स्थायी अध्यक्ष **ऑस्ट्रिया** था। जर्मनी के विश्वविद्यालयों (विशेषकर जेना विश्वविद्यालय) के छात्रों ने **'बुर्शनशाफ्ट'** नामक राष्ट्रवादी संगठन बनाए, जिन्हें दबाने के लिए मेटरनिख ने **1819 में दमनकारी 'कार्ल्सबाद आज्ञप्तियाँ'** जारी कीं।

इस बीच 1834 में प्रशा के नेतृत्व में गठित **'ज़ोलवेरिन' (सीमा शुल्क संघ)** ने ऑस्ट्रिया को बाहर रखते हुए शेष जर्मन राज्यों को आर्थिक रूप से एक सूत्र में पिरो दिया। इतिहासकार बोवरिंग ने लिखा— "ज़ोलवेरिन ने जर्मन राज्यों के हितों को एक कर राजनीतिक एकीकरण को अनिवार्य बना दिया।" 1848 की क्रांति के दौरान उदारवादियों ने **'फ्रैंकफर्ट संसद'** बुलाकर संवैधानिक तरीके से जर्मनी का एकीकरण करने और प्रशा के राजा **फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ** को जर्मनी का मुकुट पहनाने का प्रयास किया, किंतु राजा ने क्रांतिकारियों से मुकुट लेने से ("गटर का ताज" कहकर) इनकार कर दिया। इससे सिद्ध हो गया कि जर्मनी का एकीकरण कोरे भाषणों से नहीं, अपितु सैन्य शक्ति से ही संभव होगा।

ऑटो वॉन बिस्मार्क का उदय (1862) और तीन निर्णायक युद्ध

1861 में **विलियम प्रथम** प्रशा का राजा बना। उसने युद्ध मंत्री वॉन रून और सेनापति वॉन मोल्टके की सलाह पर सेना का विस्तार करना चाहा, किंतु संसद के उदारवादी सदन ने बजट पास करने से मना कर दिया। इस संवैधानिक संकट से निपटने के लिए विलियम प्रथम ने **सितंबर 1862 में ऑटो वॉन बिस्मार्क (1815–1898)** को प्रशा का **चांसलर (प्रधानमंत्री)** नियुक्त किया।

बिस्मार्क **'रियलपॉलिटिक' (यथार्थवादी शक्ति-राजनीति)** का प्रणेता था। उसने संसद की बजट समिति के सामने अपना युगांतरकारी भाषण दिया— **"जर्मनी की दृष्टि प्रशा के उदारवाद पर नहीं, अपितु उसकी शक्ति पर टिकी है... हमारे समय के महान प्रश्नों का निर्णय भाषणों और बहुमत के प्रस्तावों से नहीं—यही**

1848–49 की महान भूल थी—अपितु 'रक्त और लौह' (ब्लड एंड आयरन) से होगा!" बिस्मार्क ने बिना संसदीय स्वीकृति के कर वसूलकर प्रशा की सेना को यूरोप की सबसे आधुनिक सेना बनाया और मात्र सात वर्षों में **तीन सुनियोजित युद्धों** के माध्यम से जर्मनी का एकीकरण पूर्ण कर दिया:

1. **प्रथम युद्ध — डेनमार्क के साथ युद्ध (श्लेसविग और होल्सटीन विवाद, 1864):** जर्मनी और डेनमार्क की सीमा पर स्थित श्लेसविग और होल्सटीन की डचियों (जहाँ जर्मन आबादी बहुसंख्यक थी) को जब डेनमार्क के राजा ने अपने राज्य में मिलाने का प्रयास किया, तब बिस्मार्क ने चालाकी से ऑस्ट्रिया को साथ लेकर 1864 में डेनमार्क को पराजित किया। **अगस्त 1865 के 'गैस्टीन समझौते'** के तहत बिस्मार्क ने ऐसा जाल बिछाया कि **श्लेसविग** का प्रशासन प्रशा को और **होल्सटीन** (जो प्रशा के भूभाग से घिरा था) का प्रशासन ऑस्ट्रिया को दिया गया, ताकि भविष्य में जब चाहे ऑस्ट्रिया से झगड़ा खड़ा किया जा सके ("दरारों को कागज से ढकना")।

2. **द्वितीय युद्ध — ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध (सप्त-सप्ताह का युद्ध / सेडोवा का युद्ध, 1866):** ऑस्ट्रिया पर आक्रमण करने से पूर्व बिस्मार्क ने कूटनीतिक घेराबंदी कर रूस को मित्र बनाया, फ्रांस के नेपोलियन तृतीय को बियारिट्ज़ भेंट (1865) में क्षेत्र के अस्पष्ट लालच से तटस्थ रखा और इटली से वेनेशिया देने के बदले सैन्य संधि कर ली। जून 1866 में युद्ध छिड़ने पर मात्र सात सप्ताह के भीतर **3 जुलाई 1866 को 'सेडोवा (कोनिग्रेत्ज़) के युद्ध'** में प्रशा ने ऑस्ट्रिया को बुरी तरह पराजित कर दिया। दूरदर्शी बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया को अपमानित करने के बजाय उदार **'प्राग की संधि' (अगस्त 1866)** की—ऑस्ट्रिया से कोई भूभाग नहीं छीना गया (केवल वेनेशिया इटली को दिलाया गया), किंतु ऑस्ट्रिया को जर्मन मामलों से सदा के लिए बाहर कर दिया गया और मेन नदी के उत्तर के 22 राज्यों को मिलाकर **'उत्तरी जर्मन परिसंघ' (1867)** का गठन किया गया।

3. **तृतीय युद्ध — फ्रांस-प्रशा युद्ध (सेडान का युद्ध, 1870–1871):** दक्षिणी जर्मन कैथोलिक राज्यों (बवेरिया, वुर्टेमबर्ग, बाडेन) को संघ में जोड़ने के लिए बिस्मार्क का मानना था कि "फ्रांस के साथ एक राष्ट्रीय युद्ध के बिना जर्मनी का पूर्ण एकीकरण असंभव है।" उधर सेडोवा में प्रशा की जीत से फ्रांस का सम्राट नेपोलियन तृतीय भी बौखलाया हुआ था। 1870 में **स्पेन के राजसिंहासन के उत्तराधिकार** के प्रश्न पर जब फ्रांसीसी राजदूत बेनेदेत्ती ने एम्स नामक स्थान पर प्रशा के राजा विलियम प्रथम से मुलाकात की, तो राजा ने उस वार्ता का ब्यौरा एक तार द्वारा बिस्मार्क को भेजा। बिस्मार्क ने उस **'एम्स टेलीग्राम' (एम्स तार)** को इस प्रकार संपादित कर अखबारों में छपवा दिया जिससे फ्रांसीसियों को लगा कि उनके राजदूत का अपमान हुआ है और जर्मनों को लगा कि उनके राजा का अपमान हुआ है!

क्रुद्ध फ्रांस ने 19 जुलाई 1870 को प्रशा के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। दक्षिणी जर्मन राज्य तुरंत प्रशा के साथ आ मिले। **1 सितंबर 1870 को 'सेडान के युद्ध'** में प्रशा की सेना ने फ्रांसीसी सेना को घेर लिया और स्वयं सम्राट नेपोलियन तृतीय को 83,000 सैनिकों सहित बंदी बना लिया गया। **18 जनवरी 1871** को फ्रांस के ही **वर्साय के राजमहल के 'शीशमहल' (हॉल ऑफ मिरर्स)** में प्रशा के राजा **विलियम प्रथम को एकीकृत जर्मन साम्राज्य का सम्राट ('काइजर')** घोषित किया गया। **10 मई 1871 की 'फ्रैंकफर्ट की संधि'** द्वारा फ्रांस को अपने खनिज-समृद्ध प्रांत **अल्सास और लॉरेन** जर्मनी को देने पड़े तथा 500 करोड़ फ्रैंक का भारी युद्ध-हर्जाना चुकाना पड़ा—जिसने फ्रांस के हृदय में प्रतिशोध की वह आग जलाई जो अंततः 1914 के प्रथम विश्व युद्ध का कारण बनी।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
इटली के महान क्रांतिकारी **जोसेफ मेजिनी** और **गैरीबाल्डी** के जीवन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर गहरा प्रभाव डाला था! **लाला लाजपत राय** ने मेजिनी और गैरीबाल्डी की उर्दू व हिंदी में जीवनियाँ लिखीं, **वीर सावरकर** ने मेजिनी की तर्ज पर 'अभिनव भारत' का गठन किया और मेजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया, तथा **महात्मा गांधी** और **जवाहरलाल नेहरू** भी इतालवी एकीकरण के आदर्शों से अत्यंत प्रभावित थे।

चार-नोड प्रवाह आरेख: बिस्मार्क की कूटनीति और जर्मन एकीकरण के चार सोपान

[नोड 1: ज़ोलवेरिन आर्थिक संघ (1834) एवं बिस्मार्क की 'रक्त और लौह' नीति (1862)] [नोड 2: डेनमार्क युद्ध (1864) व गैस्टीन समझौता (1865)] [नोड 3: ऑस्ट्रिया से सेडोवा युद्ध (1866), प्राग संधि व उत्तरी जर्मन संघ] [नोड 4: एम्स तार, सेडान युद्ध (1870), वर्साय में राज्याभिषेक व फ्रैंकफर्ट संधि (1871)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: इटली का एकीकरण बनाम जर्मनी का एकीकरण

तुलना का आधार	इटली का एकीकरण (1815–1870)	जर्मनी का एकीकरण (1815–1871)
नेतृत्वकर्ता राज्य व राजवंश	सार्डिनिया-पीडमोंट (सेवॉय राजवंश — राजा विक्टर इमैनुएल द्वितीय)	प्रशा (होहेनजोलर्न राजवंश — राजा/काइजर विलियम प्रथम)
मुख्य शिल्पकार (नेतृत्व)	त्रिमूर्ति का समन्वय: मेजिनी (आत्मा), कावूर (मस्तिष्क) व गैरीबाल्डी (तलवार)	ऑटो वॉन बिस्मार्क का एकल, लौह-अनुशासित व यथार्थवादी नेतृत्व
विदेशी शक्तियों की भूमिका	सैन्य रूप से कमजोर सार्डिनिया को फ्रांस (1859) और प्रशा (1866) की प्रत्यक्ष सैन्य सहायता लेनी पड़ी	शक्तिशाली प्रशा ने अन्य शक्तियों को कूटनीति से केवल 'तटस्थ' रखा और स्वयं अपनी सेना के बल पर तीनों युद्ध जीते

तुलना का आधार	इटली का एकीकरण (1815–1870)	जर्मनी का एकीकरण (1815–1871)
आर्थिक एकीकरण की पूर्वपीठिका	एकीकरण से पूर्व संपूर्ण इटली का कोई साझा आर्थिक संघ नहीं था	1834 के 'ज़ोलवेरिन' (सीमा शुल्क संघ) ने राजनीतिक एकीकरण से पहले ही आर्थिक एकीकरण कर दिया था
जन-भागीदारी बनाम सैन्य शक्ति	जनमत-संग्रह, कार्बोनरी, यंग इटली और गैरीबाल्डी के लाल कुर्ती जन-अभियान की बड़ी भूमिका	मुख्यतः प्रशा की राजशाही, नौकरशाही और सेना द्वारा ऊपर से ('रक्त और लौह' से) लागू एकीकरण

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): 1871 के एकीकरण के पश्चात यूरोपीय इस्पात व कोयला उत्पादन तथा सैन्य शक्ति संतुलन (1871–1910)

- **जर्मन साम्राज्य के क्षेत्रफल और जनसंख्या में अकेले 'प्रशा' का अनुपात (1871):** **65% क्षेत्रफल एवं 62% जनसंख्या** (जर्मनी का एकीकरण वस्तुतः जर्मनी का 'प्रशा-करण' था)
- **यूरोपीय इस्पात (स्टील) उत्पादन में एकीकृत जर्मनी की वृद्धि (1871 से 1910):** **320% की छलांग** (1900 तक जर्मनी ने ब्रिटेन को पीछे छोड़कर यूरोप में प्रथम स्थान प्राप्त कर लिया)
- **इटली के एकीकरण में विभिन्न चरणों में जुड़े भूभाग का प्रतिशत:** सार्डिनिया + लोम्बार्डी व मध्य इटली (1859-60): **45%** | गैरीबाल्डी द्वारा दक्षिणी इटली (1860): **40%** | वेनेशिया व रोम (1866-70): **15%**

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):
- **इटली के एकीकरण के तीन महानायक: "मेजिनी ने जगाया (आत्मा), कावूर ने मिलाया (मस्तिष्क), गैरीबाल्डी ने लाल कुर्ती पहनकर तलवार चलाया!"**
- **बिस्मार्क के तीन युद्ध (कालक्रम 1864, 1866, 1870 — डी-ए-एफ): "प्रथम—डेनमार्क (1864), द्वितीय—ऑस्ट्रिया-सेडोवा (1866), तृतीय—फ्रांस-सेडान (1870) — 1871 में जर्मनी महान!"**

5.4 अध्याय 5: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #61 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. "इटली मात्र एक भौगोलिक अभिव्यक्ति है।" यह कथन किसका था और इसके पीछे क्या राजनीतिक उद्देश्य था? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

- **उत्तर:** यह कथन 1815 की वियना कांग्रेस के सूत्रधार और ऑस्ट्रिया के चांसलर ड्यूक मेटरनिख का था।
- **विस्तृत व्याख्या:** मेटरनिख का उद्देश्य यह सिद्ध करना था कि इटली कभी एक राष्ट्र नहीं रहा है, इसलिए उसे छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित रखकर उस पर हैब्सबर्ग राजवंश (ऑस्ट्रिया) का आधिपत्य बनाए रखना पूर्णतः न्यायसंगत है।

अभ्यास प्रश्न #62 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. जोसेफ मेजिनी द्वारा स्थापित प्रमुख संगठनों के नाम बताइए और इटली के एकीकरण में उनके योगदान का मूल्यांकन कीजिए। [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

- **उत्तर:** मेजिनी ने 1831 में 'यंग इटली' और 1834 में 'यंग यूरोप' की स्थापना की।
- **विस्तृत व्याख्या:** मेजिनी ने गुप्त षड्यंत्रकारी संस्था 'कार्बोनरी' की सीमाओं को समझते हुए युवाओं और आम जनता को राष्ट्रवाद से जोड़ा। यद्यपि उनका लोकतांत्रिक गणराज्य का सपना तत्काल पूरा नहीं हुआ, किंतु उन्होंने इतालवी एकीकरण को नैतिक और आध्यात्मिक आधार प्रदान किया।

अभ्यास प्रश्न #63 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. काउंट कावूर ने क्रीमिया के युद्ध (1854–56) में सार्डिनिया की सेना क्यों भेजी, जबकि रूस से उसका कोई प्रत्यक्ष विवाद नहीं था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** कावूर इटली के प्रश्न का 'अंतर्राष्ट्रीयकरण' करना चाहते थे और यूरोप की दो महाशक्तियों—ब्रिटेन तथा फ्रांस—की सहानुभूति व सैन्य मित्रता प्राप्त करना चाहते थे।

• **विस्तृत व्याख्या:** क्रीमिया युद्ध में सार्डिनिया के सहयोग के कारण ही 1856 की पेरिस शांति परिषद में ऑस्ट्रिया के विरोध के बावजूद कावूर को बैठने का स्थान मिला और इसी से 1858 के प्लॉम्बियर्स समझौते तथा 1859 में ऑस्ट्रिया की हार की नींव पड़ी।

अभ्यास प्रश्न #64 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. 'प्लॉम्बियर्स समझौता' (जुलाई 1858) किनके बीच हुआ और इसकी मुख्य शर्तें क्या थीं? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** सार्डिनिया के प्रधानमंत्री काउंट कावूर और फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय के बीच।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस गुप्त समझौते के अनुसार फ्रांस ने ऑस्ट्रिया के विरुद्ध सार्डिनिया को सैन्य सहायता देने का वचन दिया ताकि लोम्बार्डी और वेनेशिया मुक्त हो सकें; इसके बदले में सार्डिनिया ने फ्रांस को 'नीस' और 'सेवॉय' के प्रदेश देने का वादा किया।

अभ्यास प्रश्न #65 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. ग्यूसेप गैरीबाल्डी और उनके 'लाल कुर्ती दल' (रेड शर्ट्स) का इटली के एकीकरण में क्या योगदान था? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1860 में गैरीबाल्डी ने अपने लगभग 1,000 स्वयंसेवकों ('रेड शर्ट्स') के साथ सिसिली और नेपल्स पर चढ़ाई की और बूर्बो राजवंश के शासन को उखाड़ फेंका।

• **विस्तृत व्याख्या:** गैरीबाल्डी मूलतः गणतंत्रवादी थे, किंतु देश को गृहयुद्ध से बचाने के लिए उन्होंने अपने जीते हुए संपूर्ण दक्षिणी इटली को सार्डिनिया के राजा विक्टर इमैनुएल द्वितीय को सौंपकर राष्ट्रीय एकता का सर्वोच्च आदर्श प्रस्तुत किया।

अभ्यास प्रश्न #66 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. वेनेशिया (1866) और रोम (1870) का इटली में विलय किस अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम के कारण संभव हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** दोनों ही प्रदेशों का विलय प्रशा के चांसलर बिस्मार्क द्वारा लड़े गए युद्धों का प्रत्यक्ष परिणाम था।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1866 के ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध (सेडोवा) में प्रशा का साथ देने से इटली को वेनेशिया मिला, और 1870 के फ्रांस-प्रशा युद्ध (सेडान) के कारण जब फ्रांसीसी सेना रोम से हटी, तब इतालवी सेना ने रोम पर अधिकार कर एकीकरण पूर्ण किया।

अभ्यास प्रश्न #67 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 1848 की 'फ्रैंकफर्ट संसद' क्यों विफल हो गई? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 1848 की उदारवादी क्रांति के दौरान जर्मन बुद्धिजीवियों ने फ्रैंकफर्ट में संसद बुलाकर लोकतांत्रिक संविधान द्वारा जर्मनी को एक करने का प्रयास किया, किंतु प्रशा के राजा फ्रेडरिक विलियम चतुर्थ ने उनके द्वारा प्रस्तुत जर्मन सम्राट का मुकुट अस्वीकार कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** राजा को डर था कि क्रांतिकारियों से मुकुट स्वीकार करने पर उसकी दैवीय राजसत्ता कम हो जाएगी और ऑस्ट्रिया के साथ युद्ध छिड़ जाएगा। संसद के पास अपनी कोई सेना नहीं थी, इसलिए यह प्रयास विफल रहा।

अभ्यास प्रश्न #68 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. बिस्मार्क की 'रक्त और लौह' (ब्लड एंड आयरन) नीति का वास्तविक अर्थ क्या था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1862 में प्रशा की संसद में दिए गए बिस्मार्क के भाषण का यह मूल सूत्र था, जिसका अर्थ था कि जर्मनी का एकीकरण उदारवादी भाषणों, प्रस्तावों या समझौतों से नहीं, अपितु शक्तिशाली सेना ('रक्त' अर्थात सैनिक और 'लौह' अर्थात हथियार व उद्योग) के बल पर ही होगा।

• **विस्तृत व्याख्या:** बिस्मार्क ने इस नीति के तहत संसद की उपेक्षा कर सैन्य पुनर्गठन किया और डेनमार्क, ऑस्ट्रिया व फ्रांस को पराजित कर प्रशा के नेतृत्व में जर्मनी का एकीकरण किया।

अभ्यास प्रश्न #69 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. बिस्मार्क के संदर्भ में कहा जाता है कि "गैस्टीन समझौते (1865) से हमने दरारों को कागज से ढक दिया है।" इसका क्या आशय है? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 1864 में डेनमार्क को हराने के बाद अगस्त 1865 में प्रशा और ऑस्ट्रिया के बीच गैस्टीन समझौता हुआ, जिसमें श्लेसविग प्रशा को और होल्सटीन ऑस्ट्रिया को दिया गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** यह कोई स्थायी समाधान नहीं था; बिस्मार्क ने जानबूझकर होल्सटीन (जो भौगोलिक रूप से प्रशा के क्षेत्र से घिरा था) ऑस्ट्रिया को दिया ताकि ऑस्ट्रिया को उकसाकर 1866 के युद्ध का बहाना तैयार किया जा सके।

अभ्यास प्रश्न #70 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. 1866 के 'सेडोवा के युद्ध' के बाद बिस्मार्क ने ऑस्ट्रिया के साथ उदारतापूर्ण 'प्राग की संधि' क्यों की? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** राजा विलियम प्रथम और सेनापति वियना पर विजय परेड करना चाहते थे, किंतु दूरदर्शी कूटनीतिज्ञ बिस्मार्क ने उन्हें रोक दिया और ऑस्ट्रिया से कोई भूभाग नहीं छीना।

• **विस्तृत व्याख्या:** बिस्मार्क का उद्देश्य केवल ऑस्ट्रिया को जर्मन परिसंघ से बाहर करना था, न कि उसे स्थायी शत्रु बनाना। बिस्मार्क जानता था कि भविष्य में फ्रांस के साथ होने वाले युद्ध में ऑस्ट्रिया की तटस्थता आवश्यक होगी—और 1870 के युद्ध में ऑस्ट्रिया सचमुच तटस्थ रहा।

अभ्यास प्रश्न #71 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. 'एम्स टेलीग्राम' (एम्स तार, 1870) क्या था और इसने फ्रांस-प्रशा युद्ध को कैसे भड़काया? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** जुलाई 1870 में एम्स नगर में प्रशा के राजा विलियम प्रथम और फ्रांसीसी राजदूत बेनेदेत्ती के बीच स्पेन के उत्तराधिकार को लेकर हुई बातचीत का तार।

• **विस्तृत व्याख्या:** बिस्मार्क ने इस तार के कुछ शब्दों को संक्षिप्त और संपादित कर प्रेस में इस तरह जारी किया कि वह दोनों देशों के राष्ट्रीय स्वाभिमान को भड़काने वाला प्रतीत हुआ। स्वयं बिस्मार्क के शब्दों में, यह "सांड (फ्रांस) के सामने लाल कपड़ा दिखाने" जैसा था, जिसके तुरंत बाद फ्रांस ने युद्ध छेड़ दिया।

अभ्यास प्रश्न #72 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 10 मई 1871 की 'फ्रैंकफर्ट की संधि' ने यूरोपीय शांति को किस प्रकार विषाक्त कर दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** सेडान के युद्ध में फ्रांस की हार के बाद हुई फ्रैंकफर्ट की संधि ने फ्रांस से कोयला व लौह-समृद्ध प्रांत **अल्सास और लॉरेन** छीन लिए और उस पर 5 अरब फ्रैंक का हर्जाना थोपा।

• **विस्तृत व्याख्या:** ऑस्ट्रिया के साथ प्राग में उदारता दिखाने वाले बिस्मार्क ने सेना के दबाव में फ्रांस के साथ कठोर संधि की। अल्सास-लॉरेन का छिनना फ्रांस के लिए कभी न भरने वाला घाव बन गया और इसने यूरोप को दो शत्रुतापूर्ण सैन्य गुटों में बाँटकर प्रथम विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

अभ्यास प्रश्न #73 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. इटली के एकीकरण के बाद भी 'रोमन प्रश्न' (पोप और इटली राज्य का विवाद) कब और किस संधि से सुलझा? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** 1870 में जब इतालवी सेना ने रोम पर अधिकार किया, तब पोप पायस नवम ने इटली राज्य को मान्यता देने से इनकार कर दिया और स्वयं को 'वेटिकन का बंदी' घोषित कर लिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** यह विवाद 59 वर्षों बाद **1929 में बेनिटो मुसोलिनी और पोप पायस एकादश के बीच हुई 'लैटरन संधि'** से सुलझा, जिसके द्वारा 'वेटिकन सिटी' को एक स्वतंत्र संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता दी गई।

अभ्यास प्रश्न #74 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. 1871 के बाद जर्मन चांसलर के रूप में बिस्मार्क की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य क्या था? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** जर्मनी को एक 'संतुष्ट राष्ट्र' घोषित कर **फ्रांस को कूटनीतिक रूप से मित्रहीन और एकाकी रखना** ताकि फ्रांस कभी अल्सास-लॉरेन वापस लेने के लिए युद्ध न कर सके।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके लिए बिस्मार्क ने गुप्त संधियों का जाल बुना—1873 में तीन सम्राटों का संघ (ड्रेकाइजरबंड), 1879 में ऑस्ट्रिया के साथ द्वैध संधि, **1882 में 'त्रिगुट संधि' (जर्मनी, ऑस्ट्रिया, इटली)** और 1887 में रूस के साथ पुनराश्वासन संधि।

अभ्यास प्रश्न #75 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. काउंट कावूर और ऑटो वॉन बिस्मार्क की कार्यशैली तथा कूटनीति की तुलना कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** कावूर और बिस्मार्क दोनों ही यथार्थवादी राजनीति (रियलपॉलिटिक) के महारथी और राजतंत्र के नेतृत्व में एकीकरण के समर्थक थे, किंतु दोनों की परिस्थितियों और साधनों में मौलिक अंतर था।

• **विस्तृत व्याख्या:** कावूर एक संसदीय उदारवादी थे जिन्होंने एक छोटे और सैन्य रूप से कमजोर राज्य (सार्डिनिया) का नेतृत्व करते हुए संसद, जनमत-संग्रह और विदेशी सहायता के संतुलन से एकीकरण किया; जबकि बिस्मार्क एक रूढ़िवादी राजतंत्रवादी थे जिन्होंने संसद को कुचलते हुए प्रशा की प्रचंड सैन्य शक्ति ('रक्त और लौह') के बल पर जर्मनी का एकीकरण किया।

अध्याय 6: प्रथम विश्व युद्ध (कारण, घटनाएँ, वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ)

6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं मूल कारण: जब यूरोप 'बारूद के ढेर' पर बैठा था

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 6.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं मूल कारण: जब यूरोप 'बारूद के ढेर' पर बैठा था

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
तात्कालिक कारण: सेराजेवो हत्याकांड (28 जून 1914) और जुलाई संकट

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
युद्ध के दोनों खेमे और प्रमुख घटनाएँ (1914–1918)

28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 1918 तक (चार वर्ष, तीन माह और ग्यारह दिन) लड़ा गया **प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918)** मानव इतिहास का पहला ऐसा महायुद्ध था जिसमें विश्व के 30 से अधिक देश, करोड़ों सैनिक और आधुनिक औद्योगिक हथियार (मशीनगन, टैंक, पनडुब्बी, जहरीली गैस और लड़ाकू विमान) एक साथ झोंक दिए गए। इतिहासकारों ने इसके मूल कारणों को पाँच प्रमुख स्तंभों में विभाजित किया है:

1. **गुप्त संधियों की प्रणाली और दो सशस्त्र सैन्य खेमे:** 1871 में फ्रांस को हराने के बाद बिस्मार्क ने फ्रांस को अलग-थलग रखने के लिए **1879 में जर्मनी-ऑस्ट्रिया द्वैध संधि** और **1882 में इटली को जोड़कर 'त्रिगुट मैत्री' (ट्रिपल अलायंस — जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, इटली)** का निर्माण किया। 1890 में नए महत्वाकांक्षी जर्मन सम्राट **काइजर विलियम द्वितीय** ने बिस्मार्क को पद से हटा दिया और रूस के साथ संधि का नवीनीकरण नहीं किया। परिणामस्वरूप, फ्रांस ने अवसर का लाभ उठाकर 1894 में रूस से संधि की, 1904 में ब्रिटेन के साथ 'हार्दिक मैत्री' (अंतांत कॉर्डियल) की, और **1907 में 'त्रिराष्ट्रीय सौहार्द' (ट्रिपल अंतांत — ब्रिटेन, फ्रांस, रूस)** का गठन हो गया। पूरा यूरोप दो शत्रु खेमों में बँट गया।

2. **उग्र सैन्यवाद और नौसैनिक प्रतिस्पर्धा:** प्रत्येक देश में सेनापतियों का राजनीतिक निर्णयों पर वर्चस्व बढ़ गया। काइजर विलियम द्वितीय ने घोषणा की कि "जर्मनी का भविष्य समुद्र पर टिका है" और एडमिरल तिरपित्ज़ के नेतृत्व में विशाल नौसेना बनाना शुरू किया। इसे अपनी सामुद्रिक सुरक्षा के लिए खतरा मानकर ब्रिटेन ने 1906 में आधुनिक युद्धपोत **'ड्रेडनॉट'** का निर्माण शुरू किया, जिससे हथियारों की अंधी होड़ छिड़ गई।

3. **साम्राज्यवादी प्रतिस्पर्धा (मोरक्को एवं अफ्रीका संकट):** जर्मनी को लगता था कि उपनिवेशों की दौड़ में उसे 'सूर्य के नीचे उचित स्थान' (प्लेस इन द सन) नहीं मिला है। **1905–06 के प्रथम मोरक्को संकट (टैंजियर संकट)** और **1911 के द्वितीय मोरक्को संकट (अगादिर संकट)** में जर्मनी और फ्रांस युद्ध के कगार पर आ पहुँचे, जहाँ ब्रिटेन ने फ्रांस का खुलकर साथ दिया।

4. **उग्र एवं संकीर्ण राष्ट्रवाद:** फ्रांस में 1871 में छीने गए **अल्सास-लॉरेन** को वापस पाने की प्रतिशोध भावना ('रिवैंचिज्म') सुलग रही थी, तो दूसरी ओर पूर्वी यूरोप के **बाल्कन प्रायद्वीप** (जिसे **'यूरोप के बारूद का पीपा'** कहा जाता था) में ऑटोमन साम्राज्य के कमजोर पड़ने से **'अखिल स्लाव आंदोलन' (पैन-स्लाविज्म — जिसका नेतृत्व सर्बिया और संरक्षक रूस था)** तथा **'अखिल जर्मन आंदोलन' (पैन-जर्मनिज्म — ऑस्ट्रिया और जर्मनी)** आपस में टकरा रहे थे। 1908 में ऑस्ट्रिया द्वारा स्लाव-बहुल **बोस्निया और हर्जेगोविना** को हड़प लेने से सर्बिया और रूस आगबबूला हो उठे।

5. **प्रभावी अंतर्राष्ट्रीय संस्था का अभाव:** उस समय राष्ट्रों के विवादों को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए कोई वैश्विक संगठन मौजूद नहीं था।

तात्कालिक कारण: सेराजेवो हत्याकांड (28 जून 1914) और जुलाई संकट

यूरोप के बारूद के ढेर में चिंगारी **28 जून 1914** को लगी, जब ऑस्ट्रिया-हंगरी के सिंहासन के उत्तराधिकारी **आर्कड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड** और उनकी पत्नी सोफी की बोस्निया की राजधानी **सेराजेवो** में **'ब्लैक हैंड'** नामक उग्र राष्ट्रवादी गुप्त संस्था से जुड़े एक बोस्नियाई-सर्ब युवक **गैवरिलो प्रिंसिप** ने गोली मारकर हत्या कर दी।

जर्मनी से पूर्ण समर्थन का आश्वासन ('ब्लैंक चेक') पाकर ऑस्ट्रिया ने सर्बिया को 48 घंटे का कठोर अल्टीमेटम दिया और **28 जुलाई 1914 को सर्बिया पर आक्रमण कर दिया**। इसके साथ ही गुप्त संधियों की श्रृंखला सक्रिय हो गई—सर्बिया की रक्षा के लिए **रूस** ने सेना लामबंद की; रूस के विरुद्ध **1 अगस्त को जर्मनी** ने और **3 अगस्त को फ्रांस के विरुद्ध जर्मनी** ने युद्ध घोषित कर दिया। जब जर्मनी ने अपनी **'श्लीफेन योजना'** (रूस के तैयार होने से पहले मात्र 6 सप्ताह में फ्रांस को कुचलने की योजना) के तहत तटस्थ देश **बेल्जियम** की सीमा का उल्लंघन किया, तो **4 अगस्त 1914 को ब्रिटेन** भी युद्ध में कूद पड़ा।

युद्ध के दोनों खेमे और प्रमुख घटनाएँ (1914–1918)

- **मित्र राष्ट्र (एलाइड पावर्स):** ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, सर्बिया, जापान, इटली (जो 1882 में जर्मनी के गुट में था, किंतु **1915 की गुप्त लंदन संधि** से क्षेत्रीय लाभ के लालच में मित्र राष्ट्रों में आ मिला), रोमानिया और संयुक्त राज्य अमेरिका (1917 में)।
- **केंद्रीय शक्तियाँ (सेंट्रल पावर्स):** जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन तुर्की साम्राज्य (नवंबर 1914 में) और बुल्गारिया (1915 में)।

सितंबर 1914 में **मार्न नदी के युद्ध** में फ्रांसीसी और ब्रिटिश सेना ने जर्मन सेना को पेरिस के बाहर रोक दिया, जिससे जर्मनी की 'श्लीफेन योजना' विफल हो गई और पश्चिमी मोर्चे पर 700 किलोमीटर लंबी **'खंदक युद्ध प्रणाली' (ट्रेंच वारफेयर)** शुरू हो गई। **1916 में वर्दुन और सोम के भयानक युद्धों** में दस लाख से अधिक सैनिक मारे गए, और **मई 1916 में जटलैंड का सबसे बड़ा नौसैनिक युद्ध** हुआ।

वर्ष 1917 के दो निर्णायक मोड़:

1. **रूस का युद्ध से हटना:** मार्च और नवंबर 1917 की **रूसी बोल्शेविक क्रांति** के बाद व्लादिमीर लेनिन ने **मार्च 1918 में जर्मनी के साथ 'ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि'** कर रूस को युद्ध से अलग कर लिया।
2. **संयुक्त राज्य अमेरिका का युद्ध में प्रवेश (6 अप्रैल 1917):** प्रारंभ में अमेरिकी राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** ने तटस्थता की नीति अपनाई थी, किंतु दो घटनाओं ने अमेरिका को मित्र राष्ट्रों के पक्ष में युद्ध में उतार दिया—प्रथम, जर्मन पनडुब्बियों (**यू-बोट्स**) द्वारा **मई 1915 में ब्रिटिश यात्री जहाज 'लुसिटानिया' को डुबोना** (जिसमें 128 अमेरिकी नागरिक मारे गए) और जनवरी 1917 में असीमित पनडुब्बी युद्ध की घोषणा; द्वितीय, **'ज़िमरमैन टेलीग्राम'** का पकड़ा जाना, जिसमें जर्मन विदेश मंत्री आर्थर ज़िमरमैन ने मैक्सिको को लालच दिया था कि यदि वह अमेरिका पर हमला करे तो टेक्सास और एरिजोना उसे वापस दिलाए जाएंगे।

अमेरिका के ताजादम सैनिकों और अपार आर्थिक संसाधनों के आने से केंद्रीय शक्तियाँ टूटने लगीं। सितंबर-अक्टूबर 1918 में बुल्गारिया, तुर्की और ऑस्ट्रिया ने आत्मसमर्पण कर दिया। जर्मनी में विद्रोह फूटने पर काइजर विलियम द्वितीय भागकर हॉलैंड चला गया, जर्मनी में **'वाइमर गणराज्य'** की घोषणा हुई और **11 नवंबर 1918 को प्रातः 11 बजे** कॉम्पिएन के जंगल में एक रेल के डिब्बे में युद्धविराम पर हस्ताक्षर के साथ प्रथम विश्व युद्ध समाप्त हो गया।

6.2 पेरिस शांति सम्मेलन (1919), वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 6.2 पेरिस शांति सम्मेलन (1919), वर्साय की संधि एवं राष्ट्र संघ

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
वर्साय की संधि (28 जून 1919): एक 'आरोपित और अपमानजनक संधि'	**राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस, 1920): स्थापना और विफलता**	**चार-नोड प्रवाह आरेख: प्रथम विश्व युद्ध से वर्साय की संधि तक का घटनाक्रम**

जनवरी 1919 में विजयी मित्र राष्ट्रों ने पेरिस में शांति सम्मेलन बुलाया, जिसमें पराजित देशों और सोवियत रूस को आमंत्रित नहीं किया गया। सम्मेलन में सारे निर्णय **'चार बड़ों की परिषद' (बिग फोर)** ने लिए—(1) फ्रांस के प्रधानमंत्री **जॉर्ज क्लीमेंसो** ('द टाइगर' — जो जर्मनी को कुचलकर फ्रांस की सुरक्षा और प्रतिशोध चाहते थे), (2) ब्रिटेन के प्रधानमंत्री **डेविड लॉयड जॉर्ज**, (3) अमेरिका के राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** (जिन्होंने जनवरी 1918 में न्यायपूर्ण शांति के लिए **'14 सूत्रीय कार्यक्रम'** प्रस्तुत किया था), और (4) इटली के प्रधानमंत्री **विक्टर ऑरलैंडो**।

पराजित देशों के साथ पाँच अलग-अलग संधियाँ की गईं: जर्मनी के साथ **वर्साय की संधि**, ऑस्ट्रिया के साथ **सेंट जर्मेन की संधि**, बुल्गारिया के साथ **न्यूली की संधि**, हंगरी के साथ **त्रियानों की संधि**, और तुर्की के साथ **सेवर्स की संधि (1920)** (जिसे मुस्तफा कमाल पाशा के राष्ट्रीय विद्रोह के बाद बदलकर **1923 में 'लोजान की संधि'** किया गया)।

वर्साय की संधि (28 जून 1919): एक 'आरोपित और अपमानजनक संधि'

सेराजेवो हत्याकांड की ठीक पाँचवीं बरसी पर **28 जून 1919** को वर्साय के उसी शीशमहल में (जहाँ 1871 में जर्मन साम्राज्य की घोषणा हुई थी) जर्मन प्रतिनिधियों को बंदूक की नोक पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया गया, इसलिए जर्मनों ने इसे **'डिक्टैट' (थोपी गई संधि)** कहा:

- **प्रादेशिक विच्छेदन:** अल्सास और लॉरेन फ्रांस को लौटा दिए गए; **सार की कोयला घाटी** 15 वर्षों के लिए राष्ट्र संघ को और कोयले की खदानें फ्रांस को दे दी गईं; पोलैंड को समुद्र तक रास्ता देने के लिए **'पोलिश गलियारा' (डैंजिग बंदरगाह)** बनाया गया जिसने पूर्वी प्रशा को शेष जर्मनी से काट दिया; और जर्मनी के सभी विदेशी उपनिवेश 'मैंडेट प्रणाली' के तहत ब्रिटेन, फ्रांस व जापान ने आपस में बाँट लिए।
- **सैन्य पंगुता:** जर्मनी की थल सेना को घटाकर मात्र **1,00,000 सैनिक** कर दिया गया; अनिवार्य सैन्य सेवा, वायुसेना, टैंक और पनडुब्बियों पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया; तथा **राइनलैंड का असैन्यीकरण** कर दिया गया।
- **युद्ध-अपराध धारा (अनुच्छेद 231) एवं भारी हर्जाना:** संधि के **अनुच्छेद 231** के तहत जर्मनी और उसके सहयोगियों को युद्ध के लिए अकेले दोषी ठहराया गया और जर्मनी पर **6.6 अरब पाउंड (132 अरब गोल्ड मार्क)** का असंभव आर्थिक हर्जाना लाद दिया गया। फ्रांसीसी सेनापति मार्शल फॉच ने वर्साय की संधि पढ़ते ही भविष्यवाणी की थी— **"यह शांति नहीं है, यह केवल बीस वर्षों का युद्धविराम है!"** और ठीक 20 वर्ष बाद 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया।

राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस, 1920): स्थापना और विफलता

राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के चौदहवें सूत्र के आधार पर **10 जनवरी 1920** को विश्व शांति और 'सामूहिक सुरक्षा' के लिए **राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस)** की स्थापना हुई, जिसका मुख्यालय **जेनेवा (स्विट्जरलैंड)** में रखा गया। किंतु सबसे बड़ी विडंबना यह रही कि **अमेरिकी सीनेट ने वर्साय की संधि को मंजूरी नहीं दी और राष्ट्र संघ का जन्मदाता अमेरिका ही कभी इसका सदस्य नहीं बना!** अपनी निजी सेना के अभाव, सर्वसम्मति के जटिल नियम और 1930 के दशक में जापान (मंचूरिया आक्रमण, 1931), इटली (अबिसीनिया आक्रमण, 1935) तथा जर्मनी (हिटलर) की आक्रामकता के सामने ब्रिटेन-फ्रांस की तुष्टीकरण की नीति के कारण राष्ट्र संघ एक दंतहीन संस्था बनकर टूट गया।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश भारतीय सेना के **13 लाख से अधिक भारतीय सैनिकों** ने फ्रांस (इप्रेस), बेल्जियम, मेसोपोटामिया (इराक), मिस्र और गैलीपोली के मोर्चों पर भाग लिया था, जिनमें से लगभग **74,000 भारतीय सैनिक वीरगति को प्राप्त हुए**! नई दिल्ली स्थित **'इंडिया गेट'** (अखिल भारतीय युद्ध स्मारक) का निर्माण प्रथम विश्व युद्ध और तृतीय आंग्ल-अफगान युद्ध में शहीद हुए इन्हीं भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था, जिन पर 13,000 से अधिक शहीदों के नाम उत्कीर्ण हैं।

चार-नोड प्रवाह आरेख: प्रथम विश्व युद्ध से वर्साय की संधि तक का घटनाक्रम

[नोड 1: गुप्त सैन्य गुटबंदी (1882 बनाम 1907), बाल्कन संकट व सेराजेवो हत्याकांड (28 जून 1914)] [नोड 2: खंदक युद्ध, रूसी क्रांति व अमेरिका का युद्ध में प्रवेश (अप्रैल 1917)] [नोड 3: जर्मनी का आत्मसमर्पण (11 नवंबर 1918) एवं चार राजवंशों का पतन] [नोड 4: वर्साय की अपमानजनक संधि (28 जून 1919) व राष्ट्र संघ की स्थापना (1920)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: पेरिस शांति सम्मेलन (1919–20) की पाँच प्रमुख संधियाँ

संधि का नाम एवं वर्ष	किस पराजित राष्ट्र के साथ हुई	प्रमुख प्रादेशिक एवं राजनीतिक प्रावधान
1. वर्साय की संधि (जून 1919)	जर्मनी	अल्सास-लॉरेन फ्रांस को, पोलिश गलियारा पोलैंड को, सेना 1 लाख तक सीमित, अनुच्छेद 231 के तहत 6.6 अरब पाउंड हर्जाना
2. सेंट जर्मेन की संधि (सितंबर 1919)	ऑस्ट्रिया	ऑस्ट्रिया-हंगरी साम्राज्य का विघटन; चेकोस्लोवाकिया व यूगोस्लाविया को मान्यता; ऑस्ट्रिया व जर्मनी के विलय ('अंशलुस') पर रोक
3. न्यूली की संधि (नवंबर 1919)	बुल्गारिया	बुल्गारिया का एजियन सागर तट यूनान (ग्रीस) को और पश्चिमी क्षेत्र यूगोस्लाविया को सौंपा गया
4. त्रियानों की संधि (जून 1920)	हंगरी	ट्रांसिल्वेनिया रोमानिया को और स्लोवाकिया चेकोस्लोवाकिया को दिया गया (हंगरी का दो-तिहाई क्षेत्र छिन गया)

संधि का नाम एवं वर्ष	किस पराजित राष्ट्र के साथ हुई	प्रमुख प्रादेशिक एवं राजनीतिक प्रावधान
5. सेवर्स की संधि (अगस्त 1920) लोजान संधि (1923)	ऑटोमन तुर्की	अरब प्रदेश (सीरिया, इराक, फिलिस्तीन) ब्रिटेन-फ्रांस के मैंडेट बने; कमाल पाशा के विद्रोह के बाद 1923 की लोजान संधि से आधुनिक तुर्की की रक्षा

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): प्रथम विश्व युद्ध में मानवीय क्षति एवं वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी को हुई हानि

- **वर्साय की संधि द्वारा जर्मनी से छीना गया यूरोपीय भूभाग एवं जनसंख्या:** **13% भूभाग एवं 10% जनसंख्या** (70 लाख नागरिक अन्य देशों में चले गए)
- **जर्मनी के लौह अयस्क भंडारों की छीना-झपटी:** **75% लौह अयस्क भंडार** और **26% कोयला भंडार** जर्मनी से छीन लिए गए
- **जर्मनी के विदेशी औपनिवेशिक साम्राज्य की हानि:** **100% विदेशी उपनिवेश** मित्र राष्ट्रों ने मैंडेट के रूप में जब्त कर लिए
- **प्रथम विश्व युद्ध में कुल सैनिकों की लामबंदी व हताहत:** कुल 6.5 करोड़ सैनिकों में से **लगभग 90 लाख सैनिक मारे गए (14%)** और **2.1 करोड़ घायल हुए (32%)**

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):
- **प्रथम विश्व युद्ध के पाँच मूल कारण (मैनिया सूत्र): "सैन्यवाद, गुप्त संधियाँ, उग्र राष्ट्रवाद, साम्राज्यवाद और सेराजेवो हत्याकांड!"**
- **पेरिस शांति सम्मेलन की 5 संधियाँ: "जर्मनी ने वर्साय देखा, ऑस्ट्रिया ने जर्मेन, बुल्गारिया न्यूली गया, हंगरी त्रियानों और तुर्की ने सेवर्स के बाद लोजान में चैन पाया!"**

6.3 अध्याय 6: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #76 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. 1882 के 'त्रिगुट मैत्री' (ट्रिपल अलायंस) और 1907 के 'त्रिराष्ट्रीय सौहार्द' (ट्रिपल अंतांत) में कौन-कौन से देश शामिल थे? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

- **उत्तर:** 1882 के त्रिगुट में **जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी और इटली** शामिल थे; जबकि 1907 के त्रिराष्ट्रीय सौहार्द में **ब्रिटेन, फ्रांस और रूस** शामिल थे।
- **विस्तृत व्याख्या:** बिस्मार्क द्वारा निर्मित त्रिगुट से इटली 1914 में अलग हो गया और 1915 की गुप्त लंदन संधि द्वारा मित्र राष्ट्रों के खेमे में चला गया, क्योंकि इटली को ऑस्ट्रिया के अधीन स्थित ट्रेंटिनो और ट्रिएस्टे के इतालवी भाषी क्षेत्र चाहिए थे।

अभ्यास प्रश्न #77 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. बाल्कन प्रायद्वीप को प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व 'यूरोप के बारूद का पीपा' (पाउडर केग ऑफ यूरोप) क्यों कहा जाता था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

- **उत्तर:** बाल्कन क्षेत्र में ऑटोमन तुर्की साम्राज्य ('यूरोप का मरीज') के पतन से उत्पन्न राजनीतिक शून्य को भरने के लिए स्थानीय स्लाव राष्ट्रीयताओं (सर्बिया, बुल्गारिया, यूनान) और महाशक्तियों (रूस बनाम ऑस्ट्रिया-हंगरी) के बीच तीव्र टकराव था।
- **विस्तृत व्याख्या:** 1908 के बोस्निया संकट और 1912–13 के दो बाल्कन युद्धों ने सर्बिया और ऑस्ट्रिया के बीच शत्रुता को चरम पर पहुँचा दिया, जिसकी परिणति सेराजेवो हत्याकांड में हुई।

अभ्यास प्रश्न #78 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. जर्मनी की 'श्लीफेन योजना' (श्लीफेन योजना) क्या थी और यह सितंबर 1914 में क्यों विफल हो गई? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा]

- **उत्तर:** जर्मन फील्ड मार्शल अल्फ्रेड वॉन श्लीफेन द्वारा तैयार की गई दो मोर्चों पर युद्ध लड़ने की सैन्य रणनीति।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस योजना का मानना था कि विशाल रूस को अपनी सेना लामबंद करने में 6 सप्ताह लगेंगे; तब तक जर्मनी तटस्थ बेल्जियम से होते हुए बिजली की गति से फ्रांस को कुचल देगा और फिर पूरी सेना पूर्वी मोर्चे पर रूस के खिलाफ मोड़ देगा। किंतु बेल्जियम के अप्रत्याशित प्रतिरोध, ब्रिटेन के तुरंत युद्ध में उतरने और सितंबर 1914 के 'मार्न नदी के युद्ध' ने इस योजना को विफल कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #79 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. संयुक्त राज्य अमेरिका प्रथम विश्व युद्ध में कब और किन कारणों से शामिल हुआ? [राज्य लोक सेवा आयोग / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 6 अप्रैल 1917 को राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के नेतृत्व में।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके मुख्य कारण थे—जर्मनी की यू-बोट पनडुब्बियों द्वारा यात्री जहाज 'लुसिटानिया' (1915) को डुबोया जाना और 1917 में असीमित पनडुब्बी युद्ध की घोषणा, जर्मन विदेश मंत्री का मैक्सिको को भेजा गया गुप्त 'ज़िमरमैन टेलीग्राम', तथा मित्र राष्ट्रों को दिए गए अरबों डॉलर के अमेरिकी कर्ज की सुरक्षा का आर्थिक प्रश्न।

अभ्यास प्रश्न #80 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. प्रथम विश्व युद्ध ने यूरोप के किन चार विशाल राजवंशों और साम्राज्यों को सदा के लिए समाप्त कर दिया? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** (1) रूस का **रोमानोव राजवंश**, (2) जर्मनी का **होहेनजोलर्न राजवंश**, (3) ऑस्ट्रिया-हंगरी का **हैब्सबर्ग राजवंश**, और (4) तुर्की का **ऑटोमन राजवंश (खिलाफत)**।

• **विस्तृत व्याख्या:** इन साम्राज्यों के मलबे पर पूर्वी और मध्य यूरोप के मानचित्र पर पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, यूगोस्लाविया, फिनलैंड, एस्टोनिया, लातविया और लिथुआनिया जैसे नए राष्ट्रों का उदय हुआ।

अभ्यास प्रश्न #81 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के 'चौदह सूत्रीय कार्यक्रम' (जनवरी 1918) के प्रमुख आदर्श क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** गुप्त कूटनीति की समाप्ति, समुद्रों की स्वतंत्रता, मुक्त व्यापार, निःशस्त्रीकरण, राष्ट्रीय आत्मनिर्णय का अधिकार और विश्व शांति हेतु 'राष्ट्र संघ' की स्थापना।

• **विस्तृत व्याख्या:** जर्मनी ने इसी 14 सूत्रीय कार्यक्रम के आधार पर न्यायपूर्ण शांति की आशा में नवंबर 1918 में युद्धविराम किया था, किंतु पेरिस शांति सम्मेलन में फ्रांस के क्लीमेंसो और ब्रिटेन के लॉयड जॉर्ज के प्रतिशोधपूर्ण दबाव में विल्सन के आदर्शों को कुचल दिया गया।

अभ्यास प्रश्न #82 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. वर्साय की संधि के 'अनुच्छेद 231' को क्या कहा जाता है और जर्मनों को इससे सर्वाधिक घृणा क्यों थी? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** अनुच्छेद 231 को **'युद्ध-अपराध धारा' (युद्ध-अपराध धारा)** कहा जाता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस धारा के माध्यम से प्रथम विश्व युद्ध के संपूर्ण विनाश और क्षति के लिए अकेले जर्मनी और उसके सहयोगियों को नैतिक व कानूनी रूप से दोषी ठहराया गया ताकि उस पर 6.6 अरब पाउंड का भारी आर्थिक हर्जाना थोपने को उचित ठहराया जा सके। आगे चलकर एडोल्फ हिटलर ने इसी राष्ट्रीय अपमान को भुनाकर सत्ता प्राप्त की।

अभ्यास प्रश्न #83 — परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. "वर्साय की संधि में ही द्वितीय विश्व युद्ध के बीज निहित थे।" इस कथन की पुष्टि कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** वर्साय की संधि सुलह की संधि न होकर प्रतिशोध में डूबी हुई एक 'आरोपित संधि' थी, जो जर्मनी को न तो पूरी तरह मित्र बना सकी और न ही स्थायी रूप से मिटा सकी।

• **विस्तृत व्याख्या:** जैसा कि मैकियावेली ने कहा था कि पराजित शत्रु को या तो मित्र बना लो या पूरी तरह नष्ट कर दो; वर्साय ने जर्मनी को अपमानित किया, आर्थिक रूप से पंगु बनाया और पोलिश गलियारे व सुडेटेनलैंड में लाखों जर्मनों को विदेशी शासन के अधीन कर दिया, जिसने नाजीवाद और 1939 के युद्ध को जन्म दिया।

अभ्यास प्रश्न #84 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस) की 'मैंडेट प्रणाली' (मैंडेट प्रणाली) क्या थी? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** राष्ट्र संघ के अनुच्छेद 22 के तहत प्रथम विश्व युद्ध में पराजित जर्मनी और ऑटोमन तुर्की के उपनिवेशों को सीधे हड़पने के बजाय उन्हें "स्वशासन के योग्य होने तक" विजयी मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, फ्रांस, जापान) के संरक्षण ('मैंडेट') में सौंपने की व्यवस्था।

• **विस्तृत व्याख्या:** वास्तव में यह पुराने उपनिवेशवाद पर चढ़ाया गया एक नया मुखौटा था, जिसके तहत इराक, फिलिस्तीन और ट्रांसजॉर्डन ब्रिटेन को तथा सीरिया और लेबनान फ्रांस को सौंप दिए गए।

अभ्यास प्रश्न #85 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. ऑटोमन साम्राज्य के साथ हुई 'सेवर्स की संधि' (1920) क्यों लागू नहीं हो सकी और भारत पर इसका क्या प्रभाव पड़ा? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** सेवर्स की संधि द्वारा तुर्की के विभाजन और सुल्तान (खलीफा) के अपमान के विरुद्ध भारत में अली बंधुओं और महात्मा गांधी के नेतृत्व में **'खिलाफत आंदोलन' (1919–22)** चला।

• **विस्तृत व्याख्या:** उधर स्वयं तुर्की में **मुस्तफा कमाल पाशा ('अतातुर्क')** के नेतृत्व में राष्ट्रवादियों ने सेवर्स की संधि को ठुकरा दिया, यूनानी सेना को खदेड़ दिया और मित्र राष्ट्रों को **1923 में सम्मानजनक 'लोजान की संधि'** करने पर बाध्य किया। इसके बाद कमाल पाशा ने तुर्की को धर्मनिरपेक्ष गणराज्य घोषित कर 1924 में खिलाफत का पद समाप्त कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #86 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. संयुक्त राज्य अमेरिका ने वुडरो विल्सन के प्रयासों के बावजूद राष्ट्र संघ की सदस्यता क्यों स्वीकार नहीं की? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** अमेरिकी संविधान के अनुसार किसी भी अंतर्राष्ट्रीय संधि के लिए सीनेट के दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती है, और रिपब्लिकन बहुल अमेरिकी सीनेट (हेनरी कैबोट लॉज के नेतृत्व में) ने वर्साय की संधि को अस्वीकार कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** अमेरिकी सांसदों को राष्ट्र संघ के अनुच्छेद 10 ('सामूहिक सुरक्षा') पर आपत्ति थी क्योंकि वे अमेरिका की पारंपरिक 'पृथकतावाद की नीति' (मुनरो सिद्धांत) पर लौटकर यूरोप के भावी युद्धों में अमेरिकी सैनिकों को उलझाने से बचना चाहते थे।

अभ्यास प्रश्न #87 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 1920 के दशक में यूरोपीय तनाव को कम करने के लिए किए गए 'लोकार्नो समझौते' (1925) और 'केलॉग-ब्रियांड समझौते' (1928) क्या थे? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** 1925 के **लोकार्नो समझौते** में जर्मनी (गुस्ताव स्ट्रेसेमैन), फ्रांस (ब्रियांड) और बेल्जियम ने अपनी पश्चिमी सीमाओं को स्थायी स्वीकार किया और 1926 में जर्मनी को राष्ट्र संघ का सदस्य बनाया गया।

• **विस्तृत व्याख्या: 1928 के 'केलॉग-ब्रियांड समझौते' (पेरिस पैक्ट)** में 60 से अधिक देशों ने राष्ट्रीय नीति के साधन के रूप में युद्ध का परित्याग करने की शपथ ली, किंतु इसे लागू कराने का कोई तंत्र न होने से यह केवल एक कागजी आदर्श बनकर रह गया।

अभ्यास प्रश्न #88 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. 1930 के दशक की किन तीन बड़ी घटनाओं ने राष्ट्र संघ की विफलता को पूरी तरह उजागर कर दिया? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** (1) **1931 में जापान द्वारा चीन के मंचूरिया** पर आक्रमण, (2) **1935–36 में मुसोलिनी (इटली) द्वारा अबिसीनिया (इथियोपिया)** पर आक्रमण, और (3) **1936 में हिटलर द्वारा राइनलैंड का पुनः सैन्यीकरण** व स्पेनिश गृहयुद्ध।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब राष्ट्र संघ ने मंचूरिया पर लिटन आयोग की रिपोर्ट स्वीकार की तो जापान संघ छोड़कर चला गया, और अबिसीनिया के सम्राट हैली सेलासी की मार्मिक अपील के बावजूद ब्रिटेन और फ्रांस ने स्वेज नहर बंद नहीं की और न ही इटली को तेल की आपूर्ति रोकी।

अभ्यास प्रश्न #89 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. प्रथम विश्व युद्ध का महिलाओं की सामाजिक और राजनीतिक स्थिति पर क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ा? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** जब करोड़ों पुरुष सैनिक मोर्चों पर लड़ रहे थे, तब कारखानों, हथियार निर्माण, परिवहन, नर्सिंग और प्रशासन की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं ने संभाली।

• **विस्तृत व्याख्या:** महिलाओं के इस अपरिहार्य योगदान ने उनकी क्षमता को सिद्ध कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप युद्ध समाप्त होते ही ब्रिटेन (1918 में आंशिक, 1928 में पूर्ण), जर्मनी (1919), अमेरिका (1920, 19वाँ संशोधन) और सोवियत रूस (1917) में महिलाओं को मताधिकार प्रदान किया गया।

अभ्यास प्रश्न #90 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. प्रथम विश्व युद्ध ने यूरोपीय वर्चस्व को किस प्रकार कमजोर किया और एशिया-अफ्रीका के राष्ट्रवादी आंदोलनों को कैसे प्रेरित किया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** युद्ध के कारण यूरोप कर्जदार बन गया और विश्व की आर्थिक धुरी लंदन से खिसककर न्यूयॉर्क (अमेरिका) पहुँच गई।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब भारतीय और अफ्रीकी सैनिकों ने यूरोप के मोर्चों पर श्वेत शासकों को आपस में लड़ते और हारते देखा, तो 'श्वेत जाति की अजेयता का मिथक' टूट गया। साथ ही विल्सन के 'आत्मनिर्णय के सिद्धांत' को जब उपनिवेशों पर लागू करने से मना किया गया (जैसे भारत में 1919 का रौलेट एक्ट और जलियाँवाला बाग), तो एशिया और अफ्रीका में जन-आधारित स्वतंत्रता संग्राम तीव्र हो उठे।

अध्याय 7: रूसी क्रांति (1917 — बोल्शेविक क्रांति, लेनिन और स्टालिन का युग)

7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कारण: जारशाही की निरंकुशता से विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य के जन्म तक

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 7.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं कारण: जारशाही की निरंकुशता से विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य के जन्म तक

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
क्रांति के मूल कारण: जार निकोलस द्वितीय का शासन और सामाजिक-आर्थिक सड़ांध	**की क्रांति ('खूनी रविवार') — 1917 का पूर्वाभ्यास (ड्रेस रिहर्सल)**

यदि 1789 की फ्रांसीसी क्रांति ने यूरोप में पूँजीवादी उदारवाद और राजनीतिक स्वतंत्रता का ध्वज फहराया था, तो **1917 की रूसी (बोल्शेविक) क्रांति** ने मानव इतिहास में पहली बार कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों को धरातल पर उतारते हुए **विश्व के प्रथम समाजवादी-साम्यवादी राज्य (सोवियत संघ)** की स्थापना की। बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में रूस पर **रोमानोव राजवंश** के सम्राट (**'जार' — जार**) का शासन था, जिसकी उपाधि थी— "समस्त रूस का एकछत्र और निरंकुश शासक"।

क्रांति के मूल कारण: जार निकोलस द्वितीय का शासन और सामाजिक-आर्थिक सड़ांध

1. **जारशाही की निरंकुशता और रास्पुतिन का कलंक:** 1894 में गद्दी पर बैठा अंतिम जार **निकोलस द्वितीय** एक अत्यंत अदूरदर्शी, कमजोर इच्छाशक्ति वाला और दैवीय अधिकारों में अंधविश्वास रखने वाला शासक था। वह अपनी जर्मन मूल की पत्नी **जरीना अलेक्जेंड्रा** और एक ढोंगी व भ्रष्ट साधु **ग्रिगोरी रास्पुतिन** के प्रभाव में डूबा रहता था, जिससे राजदरबार जनता की नजरों में घृणा का पात्र बन गया।

2. **कृषकों की दयनीय स्थिति ('मीर' और 'कुलक'):** यद्यपि जार अलेक्जेंडर द्वितीय ('मुक्तिदाता जार') ने **1861 में कृषि-दासता (सर्फडम) का उन्मूलन** कर दिया था, किंतु किसानों को जमीन के बदले भारी 'मुक्ति-शुल्क' (रिडेम्पशन पेमेंट) चुकाना पड़ता था। गाँव की पंचायत (**'मीर'**) के कठोर नियंत्रण और धनी किसानों (**'कुलक'**) तथा सामंतों के शोषण के कारण 80% रूसी किसान घोर दरिद्रता और भूमि की भूख से पीड़ित थे।

3. **औद्योगिक श्रमिकों की दुर्दशा:** उन्नीसवीं सदी के अंत में सर्गेई विटे के प्रयासों और फ्रांसीसी पूँजी से सेंट पीटर्सबर्ग (पेत्रोग्राद) और मॉस्को में विशाल कारखाने लगे, जहाँ लाखों मजदूर 12–14 घंटे नारकीय परिस्थितियों में काम करते थे। उन्हें ट्रेड यूनियन बनाने या हड़ताल करने का कोई अधिकार नहीं था।

4. **रूसीकरण की दमनकारी नीति (रसिफिकेशन):** विशाल रूसी साम्राज्य में गैर-रूसी राष्ट्रीयताओं (पोल, फिन, यूक्रेनी, यहूदी, मध्य एशियाई) की भाषा और संस्कृति को कुचलकर उन पर जबरन रूसी भाषा और रूढ़िवादी ईसाई धर्म थोपा गया।

5. **बौद्धिक जागरण और मार्क्सवादी दलों का उदय:** टॉलस्टॉय ('वार एंड पीस'), दोस्तोयेव्स्की, तुर्गनेव ('फादर्स एंड सन्स') और **मैक्सिम गोर्की** ('मदर' — माँ) के साहित्य ने चेतना जगाई। **1898 में 'रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी'** की स्थापना हुई, जो **1903 के लंदन सम्मेलन** में दो गुटों में बँट गई:

• **बोल्शेविक ('बहुमत दल'):** इसके नेता **व्लादिमीर इल्यिच उल्यानोव (लेनिन)** थे, जो मानते थे कि रूस में क्रांति के लिए कठोर अनुशासित व पेशेवर क्रांतिकारियों की पार्टी होनी चाहिए जो किसानों-मजदूरों के गठबंधन से तुरंत सर्वहारा क्रांति करेगी।

• **मेनशेविक ('अल्पमत दल'):** इसके नेता **जूलियस मार्टोव** थे, जो मानते थे कि रूस में पहले पश्चिमी यूरोप की तरह पूँजीवादी-लोकतांत्रिक विकास होना चाहिए और पार्टी की सदस्यता सभी के लिए खुली होनी चाहिए।

1905 की क्रांति ('खूनी रविवार') — 1917 का पूर्वाभ्यास (ड्रेस रिहर्सल)

1904–05 के **रूस-जापान युद्ध** में छोटे-से एशियाई देश जापान के हाथों विशाल रूस की शर्मनाक पराजय ने जारशाही की सैनिक खोखलेपन को उजागर कर दिया। **9 जनवरी (नए कैलेंडर से 22 जनवरी) 1905** को पादरी **फादर गैपोन** के नेतृत्व में हजारों निहत्थे मजदूर अपनी पत्नी-बच्चों के साथ जार को अपनी मांगों का प्रार्थना-पत्र देने सेंट पीटर्सबर्ग के **'विंटर पैलेस' (शीतकालीन महल)** की ओर गए। जार की सेना ने उन पर अंधाधुंध गोलियाँ चला दीं जिसमें सैकड़ों मजदूर मारे गए। इतिहास में यह घटना **'खूनी रविवार' (ब्लडी संडे)** कहलाई। पूरे देश में हड़तालें छिड़ गईं और मजदूरों ने अपनी पहली परिषदें (**'सोवियत'**) बनाईं। विवश होकर जार ने अक्टूबर 1905 में सुधारों की घोषणा की और एक निर्वाचित संसद (**'ड्यूमा'**) का गठन किया, किंतु जल्द ही जार ने ड्यूमा के अधिकार छीन लिए। लेनिन ने 1905 की इस क्रांति को **"1917 की महान क्रांति का ड्रेस रिहर्सल (पूर्वाभ्यास)"** कहा।

7.2 1917 की दो क्रांतियाँ: फरवरी क्रांति और अक्टूबर (बोल्शेविक) क्रांति

प्रथम विश्व युद्ध (1914) में रूस के प्रवेश ने जारशाही के ताबूत में अंतिम कील ठोक दी। बिना पर्याप्त बंदूकों, जूतों और रसद के मोर्चे पर भेजे गए **17 लाख से अधिक रूसी सैनिक मारे गए** और शहरों में रोटी व ईंधन का भयानक अकाल पड़ गया।

(नोट: रूस उस समय पुराने जूलियन कैलेंडर का प्रयोग करता था जो पश्चिमी ग्रेगोरियन कैलेंडर से 13 दिन पीछे था; इसलिए जो घटनाएँ रूसी कैलेंडर में फरवरी और अक्टूबर में हुईं, वे नए कैलेंडर में मार्च और नवंबर में पड़ती हैं।)

1. **फरवरी (मार्च) 1917 की क्रांति — जारशाही का अंत: 8 मार्च 1917** (रूसी कैलेंडर से 23 फरवरी — अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस) को राजधानी **पेत्रोग्राद** (सेंट पीटर्सबर्ग) की कपड़ा मिलों की महिला मजदूरों ने "रोटी दो, युद्ध बंद करो, जारशाही का नाश हो!" के नारे लगाते हुए हड़ताल कर दी। जब जार ने सैनिकों को भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया, तो सैनिकों ने गोली चलाने से इनकार कर दिया और विद्रोही मजदूरों से जा मिले। **15 मार्च 1917 को जार निकोलस द्वितीय को सिंहासन त्यागना पड़ा** और 300 वर्ष पुराने रोमानोव राजवंश का अंत हो गया। सत्ता एक उदारवादी-पूँजीवादी **'अस्थायी सरकार' (प्रोविजनल गवर्नमेंट — पहले प्रिंस ल्वोव और बाद में अलेक्जेंडर केरेंस्की के नेतृत्व में)** के हाथ में आई।

2. **लेनिन की 'अप्रैल थीसिस' और अक्टूबर (नवंबर) 1917 की बोल्शेविक क्रांति:** केरेंस्की की अस्थायी सरकार ने दो भयानक भूलें कीं—उसने प्रथम विश्व युद्ध जारी रखने का फैसला किया और किसानों को तुरंत भूमि वितरित करने का प्रश्न टाल दिया। इसी समय स्विट्जरलैंड में निर्वासित **लेनिन** जर्मनी की सहायता से एक सीलबंद ट्रेन द्वारा अप्रैल 1917 में पेत्रोग्राद पहुँचे और अपनी प्रसिद्ध **'अप्रैल थीसिस'** प्रस्तुत करते हुए तीन शब्दों का जादुई नारा दिया— **"शांति, भूमि और रोटी" (पीस, लैंड एंड ब्रेड)** तथा **"सारी सत्ता सोवियतों को!" (ऑल पावर टू द सोवियट्स)**।

• **7 नवंबर 1917 (रूसी कैलेंडर से 25 अक्टूबर):** लेनिन के मुख्य रणनीतिकार **लियोन ट्रॉट्स्की** के नेतृत्व में बोल्शेविकों की 'लाल रक्षक' (रेड गार्ड्स) टुकड़ियों ने पेत्रोग्राद के टेलीफोन केंद्र, रेलवे स्टेशनों, सरकारी बैंक और अंततः क्रूजर युद्धपोत 'अरोरा' की गोलाबारी के संकेत पर **विंटर पैलेस पर अधिकार कर केरेंस्की की सरकार का तख्तापलट कर दिया**। विश्व के प्रथम समाजवादी राज्य का जन्म हो चुका था।

7.3 लेनिन के सुधार (1917–1924): युद्ध साम्यवाद से नई आर्थिक नीति (नई आर्थिक नीति) तक

सत्ता संभालते ही लेनिन ने दो ऐतिहासिक आज्ञप्तियाँ जारी कीं—**'शांति संबंधी आज्ञप्ति'** (जिसके तहत मार्च 1918 में जर्मनी के साथ अपमानजनक किंतु आवश्यक **'ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि'** कर रूस को प्रथम विश्व युद्ध से बाहर निकाला गया) और **'भूमि संबंधी आज्ञप्ति'** (जिसके द्वारा जमींदारों, चर्च और जार की समस्त भूमि बिना मुआवजे के जब्त कर किसानों को बाँट दी गई)। बैंकों और बड़े उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया।

• **रूसी गृहयुद्ध (1918–1920) और 'युद्ध साम्यवाद':** बोल्शेविकों ('रेड्स' — लाल सेना, जिसका गठन ट्रॉट्स्की ने किया) को उखाड़ फेंकने के लिए राजतंत्रवादियों, जमींदारों ('व्हाइट्स' — श्वेत सेना) और विदेशी पूँजीवादी देशों (ब्रिटेन, फ्रांस, अमेरिका, जापान) ने गृहयुद्ध छेड़ दिया। इस संकट से निपटने के लिए लेनिन ने **'युद्ध साम्यवाद' (युद्ध साम्यवाद)** लागू किया—जिसमें निजी व्यापार पूर्णतः बंद कर दिया गया और किसानों से अतिरिक्त अनाज बलपूर्वक जब्त किया गया। गृहयुद्ध में लाल सेना तो जीत गई, किंतु 1921 तक रूस का औद्योगिक व कृषि उत्पादन 1913 के स्तर के मात्र 20% पर आ गिरा और क्रोनस्टाड के नाविकों ने विद्रोह कर दिया।

• **लेनिन की 'नई आर्थिक नीति' (नई आर्थिक नीति — मार्च 1921):** लेनिन ने अपनी वैचारिक लचीलेपन और यथार्थवाद का परिचय देते हुए **"दो कदम आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे हटने"** का सिद्धांत दिया और 1921 में **'नई आर्थिक नीति' (न्यू इकोनॉमिक पॉलिसी — नई आर्थिक नीति)** लागू की:

1. किसानों से अनाज की जबरन वसूली बंद कर एक निश्चित 'अनाज कर' लगाया गया और शेष अधिशेष अनाज को खुले बाजार में बेचने की छूट दी गई।

2. बड़े उद्योग, बैंक, रेलवे और विदेशी व्यापार ('अर्थव्यवस्था की कमान') राज्य के पास रहे, किंतु **20 से कम मजदूरों वाले छोटे कारखानों में निजी स्वामित्व** और खुदरा व्यापार की अनुमति दी गई।

3. इस मिश्रित अर्थव्यवस्था से रूस की कृषि और उद्योग में तेजी से सुधार हुआ। **दिसंबर 1922 में 'सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ' (सोवियत संघ)** की औपचारिक स्थापना हुई।

7.4 जोसेफ स्टालिन का युग (1924–1953): पंचवर्षीय योजनाएँ और सामूहिकीकरण

जनवरी 1924 में लेनिन की मृत्यु के बाद सत्ता के संघर्ष में दो विचारधाराएँ टकराईं—**लियोन ट्रॉट्स्की** का **'स्थायी विश्व क्रांति' (परमानेंट रिवोल्यूशन)** का सिद्धांत बनाम **जोसेफ स्टालिन** ('लौह पुरुष') का **'एक देश में समाजवाद' (सोशलिज्म इन वन कंट्री)** का सिद्धांत। स्टालिन ने पार्टी संगठन पर पकड़ बनाकर ट्रॉट्स्की को देश से निष्कासित कर दिया और सोवियत संघ को मात्र दस वर्षों में एक अजेय औद्योगिक महाशक्ति बनाने का संकल्प लिया। स्टालिन ने कहा था— "हम उन्नत पूँजीवादी देशों से 50 से 100 वर्ष पीछे हैं; हमें यह दूरी 10 वर्षों में तय करनी होगी, अन्यथा वे हमें कुचल देंगे। (और ठीक 12 वर्ष बाद 1941 में हिटलर ने सोवियत संघ पर आक्रमण किया!)"

1. **नियोजित अर्थव्यवस्था और पंचवर्षीय योजनाएँ (1928 से प्रारंभ):** स्टालिन ने 1928 में लेनिन की नई आर्थिक नीति को समाप्त कर राज्य योजना आयोग (**'गोसप्लान'**) के माध्यम से विश्व में पहली बार **'पंचवर्षीय योजनाओं'** की शुरुआत की। प्रथम (1928–32) और द्वितीय (1933–37) पंचवर्षीय योजनाओं में उपभोक्ता वस्तुओं के बजाय **भारी उद्योगों (इस्पात, कोयला, बिजली, ट्रैक्टर, मशीन निर्माण और शस्त्र उद्योग)** पर सर्वोच्च बल दिया गया। मग्नितोगोर्स्क और यूराल पर्वत के पूर्व में नए औद्योगिक नगर बसाए गए। जब 1929–33 में पूँजीवादी विश्व महामंदी में डूबा था, तब सोवियत संघ का औद्योगिक उत्पादन 400% की दर से बढ़ रहा था और 1939 तक सोवियत संघ अमेरिका के बाद विश्व की दूसरी सबसे बड़ी औद्योगिक शक्ति बन गया।

2. **कृषि का जबरन सामूहिकीकरण (कलेक्टिवाइजेशन):** उद्योगों और शहरी मजदूरों के लिए अनाज जुटाने हेतु स्टालिन ने 1929 से छोटे निजी खेतों को समाप्त कर उन्हें विशाल सामूहिक फार्मों (**'कोलखोज़'**) और राजकीय फार्मों (**'सोवखोज़'**) में मिला दिया तथा धनी किसानों (**'कुलक'**) का वर्ग के रूप में कठोरता से सफाया कर दिया।

3. **अधिनायकवादी दमन ('ग्रेट पर्ज', 1936–38):** स्टालिन के शासन का एक अंधकारमय पक्ष उसकी निरंकुश तानाशाही, गुप्त पुलिस (सोवियत गुप्त पुलिस) का आतंक और साइबेरिया के श्रम शिविर (**'गुलाग'**) थे, जिनमें लाखों राजनीतिक विरोधियों और बुद्धिजीवियों को दंडित किया गया।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
स्वतंत्र भारत में पंडित जवाहरलाल नेहरू और सुभाष चंद्र बोस द्वारा अपनाई गई **'आर्थिक नियोजन' (पंचवर्षीय योजनाओं)** की अवधारणा और भारतीय संविधान की प्रस्तावना में वर्णित **'सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय'** का आदर्श सीधे तौर पर **1917 की रूसी क्रांति और सोवियत संघ के नियोजन मॉडल** से प्रेरित था! रवींद्रनाथ टैगोर ने 1930 में मॉस्को की यात्रा कर सोवियत संघ के शिक्षा अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए 'रूस के पत्र' लिखे थे।

चार-नोड प्रवाह आरेख: जारशाही से सोवियत महाशक्ति के निर्माण तक

[नोड 1: जार निकोलस द्वितीय की निरंकुशता, 1905 का खूनी रविवार व प्रथम विश्व युद्ध की तबाही] [नोड 2: फरवरी क्रांति (जार का पतन) एवं लेनिन की अक्टूबर बोल्शेविक क्रांति (नवंबर 1917)] [नोड 3: गृहयुद्ध (1918-20), युद्ध साम्यवाद व लेनिन की नई आर्थिक नीति (नई आर्थिक नीति, 1921)] [नोड 4: सोवियत संघ का गठन (1922) व स्टालिन की पंचवर्षीय योजनाओं द्वारा महाशक्ति का उदय (1928-39)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: 1789 की फ्रांसीसी क्रांति बनाम 1917 की रूसी बोल्शेविक क्रांति

तुलना का आधार	फ्रांसीसी क्रांति (1789)	रूसी बोल्शेविक क्रांति (1917)
वैचारिक आधार	प्रबोधन कालीन उदारवाद (रूसो, लॉक, मोंटेस्क्यू)	मार्क्सवाद-लेनिनवाद (वैज्ञानिक समाजवाद व वर्ग-संघर्ष)
नेतृत्वकारी वर्ग	तृतीय स्टेट का शिक्षित पूँजीपति/मध्यम वर्ग ('बुर्जुआ')	सर्वहारा श्रमिक, किसान और सैनिकों की परिषदें ('सोवियतें')
निजी संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण	निजी संपत्ति को 'पवित्र और अनुल्लंघनीय प्राकृतिक अधिकार' घोषित किया	भूमि, बैंक और कारखानों की निजी संपत्ति का उन्मूलन कर राज्य/सामूहिक स्वामित्व स्थापित किया
स्थापित आर्थिक-राजनीतिक व्यवस्था	पूँजीवादी मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था एवं संसदीय लोकतंत्र	राज्य-नियंत्रित समाजवादी नियोजित अर्थव्यवस्था एवं एकदलीय सर्वहारा अधिनायकत्व
वैश्विक प्रभाव	यूरोप में राष्ट्रवाद, संविधानवाद और सामंतवाद के अंत की प्रेरणा	उपनिवेशवाद-विरोधी मुक्ति संग्रामों, कल्याणकारी राज्य और वैश्विक साम्यवाद का उदय

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): स्टालिन की पंचवर्षीय योजनाओं (1928–1938) के दौरान सोवियत संघ का आर्थिक-सामाजिक रूपांतरण

- **सोवियत कृषि भूमि का सामूहिकीकरण (कोलखोज़/सोवखोज़ में विलय, 1928 से 1937):** **1.7% से बढ़कर 93%** (निजी जोतों का लगभग पूर्ण उन्मूलन)
- **भारी औद्योगिक एवं इस्पात उत्पादन में वृद्धि (1928 से 1938):** **400% से अधिक वृद्धि** (इस्पात उत्पादन 40 लाख टन से बढ़कर 1.8 करोड़ टन हुआ)
- **सोवियत संघ की साक्षरता दर में ऐतिहासिक उछाल (1917 से 1939):** **28% से बढ़कर 87%** ('लिकबेज़' साक्षरता अभियान का चमत्कार)
- **विश्व औद्योगिक उत्पादन में सोवियत संघ की हिस्सेदारी (1921 बनाम 1938):** **1.5% से बढ़कर 18%** (अमेरिका के बाद विश्व में द्वितीय स्थान)

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):
- **लेनिन की अप्रैल थीसिस के तीन नारे (शांति-भूमि-रोटी): "सैनिकों को शांति (शांति), किसानों को भूमि (भूमि), मजदूरों को रोटी (रोटी) — सारी सत्ता सोवियतों को!"**
- **रूसी क्रांति के चार मुख्य चरण (1905–1928): "1905 में खूनी रविवार का रिहर्सल, 1917 में दो क्रांतियों का हलचल, 1921 में लेनिन की नई आर्थिक नीति का संबल, 1928 में स्टालिन का पंचवर्षीय कल-बल!"**

7.5 अध्याय 7: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #91 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. 1903 में रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी के 'बोल्शेविक' और 'मेनशेविक' गुटों में विभाजन का मुख्य सैद्धांतिक आधार क्या था? [संघ लोक सेवा आयोग / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

- **उत्तर:** पार्टी के संगठन के स्वरूप और क्रांति की रणनीति को लेकर लेनिन (बोल्शेविक) और मार्टोव (मेनशेविक) के बीच मतभेद।

- **विस्तृत व्याख्या:** मेनशेविक मानते थे कि मार्क्स के नियम के अनुसार रूस में पहले पूँजीवाद परिपक्व होगा और बुर्जुआ वर्ग क्रांति करेगा, इसलिए पार्टी को एक व्यापक जन-पार्टी होना चाहिए। इसके विपरीत लेनिन ने कहा कि रूस का पूँजीपति वर्ग कमजोर है, अत: पेशेवर व अनुशासित क्रांतिकारियों की एक छोटी अग्रदूत पार्टी ('वैनगार्ड पार्टी') को किसानों और मजदूरों को मिलाकर सीधे समाजवादी क्रांति करनी चाहिए।

अभ्यास प्रश्न #92 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 1905 की 'खूनी रविवार' की घटना क्या थी और इसका क्या राजनीतिक परिणाम निकला? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 22 जनवरी (पुराने कैलेंडर से 9 जनवरी) 1905 को सेंट पीटर्सबर्ग में फादर गैपोन के नेतृत्व में विंटर पैलेस जा रहे शांतिपूर्ण मजदूरों के जुलूस पर जार की सेना द्वारा गोलीबारी।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस नरसंहार ने रूसी जनता के मन में जार के प्रति 'छोटे पिता' (लिटिल फादर) की पारंपरिक श्रद्धा को सदा के लिए समाप्त कर दिया। देशव्यापी विद्रोह से डरकर जार निकोलस द्वितीय को अक्टूबर 1905 में निर्वाचित संसद ('ड्यूमा') के गठन की घोषणा करनी पड़ी।

अभ्यास प्रश्न #93 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 1917 की फरवरी (मार्च) क्रांति और अक्टूबर (नवंबर) क्रांति के चरित्र में क्या मौलिक अंतर था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** फरवरी क्रांति एक स्वत:स्फूर्त जन-विद्रोह था जिसने जार की निरंकुश राजशाही को समाप्त कर उदारवादी-पूँजीवादी 'अस्थायी सरकार' स्थापित की; जबकि अक्टूबर क्रांति लेनिन और ट्रॉट्स्की द्वारा सुनियोजित एक समाजवादी क्रांति थी जिसने पूँजीवादी सरकार को हटाकर सर्वहारा व सोवियतों की सत्ता स्थापित की।

• **विस्तृत व्याख्या:** फरवरी और अक्टूबर के बीच के आठ महीनों में रूस में 'दोहरी सत्ता' (एक ओर अस्थायी सरकार, दूसरी ओर पेत्रोग्राद सोवियत) चल रही थी, जिसका अंत अक्टूबर क्रांति ने किया।

अभ्यास प्रश्न #94 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. अलेक्जेंडर केरेंस्की की अस्थायी सरकार मात्र आठ महीनों (मार्च–नवंबर 1917) में ही क्यों गिर गई? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** अस्थायी सरकार जनता की तीन सबसे बुनियादी आकांक्षाओं—शांति, भूमि और रोटी—को पूरा करने में पूर्णत: विफल रही।

• **विस्तृत व्याख्या:** मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन-फ्रांस) के कर्ज के दबाव में केरेंस्की ने युद्ध जारी रखा जिसमें रूसी सेना हारती रही, संविधान सभा के चुनाव तक किसानों को जमीन बाँटने से रोका, और उद्योगपतियों के हितों की रक्षा की। लेनिन ने जनता की इसी नब्ज को पकड़कर सत्ता छीन ली।

अभ्यास प्रश्न #95 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. व्लादिमीर लेनिन की 'अप्रैल थीसिस' (1917) क्या थी? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** अप्रैल 1917 में निर्वासन से लौटने के तुरंत बाद लेनिन द्वारा बोल्शेविक पार्टी के समक्ष प्रस्तुत किया गया क्रांतिकारी कार्यक्रम।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसमें लेनिन ने घोषणा की कि बोल्शेविक अस्थायी पूँजीवादी सरकार को कोई समर्थन नहीं देंगे, साम्राज्यवादी प्रथम विश्व युद्ध को तुरंत समाप्त किया जाएगा, सारी भूमि का राष्ट्रीयकरण कर किसानों को दिया जाएगा, बैंकों का एकीकरण होगा और सारी सत्ता 'सोवियतों' को हस्तांतरित की जाएगी।

अभ्यास प्रश्न #96 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. मार्च 1918 की 'ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि' किनके बीच हुई और लेनिन ने इतनी कठोर संधि क्यों स्वीकार की? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** सोवियत रूस और जर्मनी (केंद्रीय शक्तियों) के बीच।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस संधि से रूस को पोलैंड, यूक्रेन, फिनलैंड और बाल्टिक प्रदेश खोने पड़े (रूस का एक-तिहाई कृषि व औद्योगिक क्षेत्र चला गया)। किंतु लेनिन ने 'नवजात समाजवादी क्रांति को बचाने के लिए स्थान देकर समय खरीदने' की नीति अपनाई, और नवंबर 1918 में जर्मनी की हार के बाद लेनिन ने इस संधि को रद्द घोषित कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #97 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 'युद्ध साम्यवाद' (युद्ध साम्यवाद, 1918–1921) क्या था और इसके क्या परिणाम हुए? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** गृहयुद्ध और विदेशी सैन्य हस्तक्षेप के दौरान लाल सेना और शहरों को जीवित रखने के लिए लेनिन द्वारा लागू की गई कठोर आर्थिक नीति।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके तहत सभी कारखानों का राष्ट्रीयकरण कर दिया गया, निजी व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया और किसानों से उनका सारा अतिरिक्त अनाज बलपूर्वक जब्त किया गया ('प्रोडराज़व्योर्स्तका')। इसके विरोध में किसानों ने अनाज बोना ही कम कर दिया, जिससे 1921 का भीषण अकाल पड़ा।

अभ्यास प्रश्न #98 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. लेनिन की 'नई आर्थिक नीति' (नई आर्थिक नीति, 1921) को 'राज्य पूँजीवाद' या 'एक कदम पीछे हटना' क्यों कहा गया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** 1921 के आर्थिक संकट और क्रोनस्टाड विद्रोह के बाद लेनिन ने महसूस किया कि विशुद्ध साम्यवाद को एक झटके में लागू नहीं किया जा सकता, इसलिए उन्होंने आंशिक रूप से बाजार और निजी लाभ को अनुमति दी।

• **विस्तृत व्याख्या:** नई आर्थिक नीति के तहत किसानों को एक निश्चित अनाज कर देने के बाद अपना अतिरिक्त अनाज खुले बाजार में बेचने की छूट मिली और छोटे कारखानों व खुदरा व्यापार में निजी स्वामित्व बहाल किया गया, जबकि बड़े उद्योग, बैंक और रेल राज्य के हाथ में रहे। इसने सोवियत अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #99 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. लियोन ट्रॉट्स्की और जोसेफ स्टालिन के बीच का वैचारिक संघर्ष क्या था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** ट्रॉट्स्की **'स्थायी विश्व क्रांति'** के समर्थक थे, जिनका मानना था कि जब तक पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक देशों में भी समाजवादी क्रांति नहीं होती, तब तक अकेले पिछड़े रूस में समाजवाद जीवित नहीं रह सकता।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके विपरीत स्टालिन ने **'एक देश में समाजवाद'** का व्यावहारिक सिद्धांत दिया कि सोवियत संघ के पास इतने विशाल प्राकृतिक और मानवीय संसाधन हैं कि वह बाहरी क्रांति की प्रतीक्षा किए बिना स्वयं को एक आत्मनिर्भर समाजवादी महाशक्ति बना सकता है।

अभ्यास प्रश्न #100 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. जोसेफ स्टालिन के 'कृषि के सामूहिकीकरण' (सामूहिकीकरण) का मुख्य उद्देश्य क्या था और 'कुलक' कौन थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 'कुलक' रूस के संपन्न किसान थे जो किराए के मजदूरों से खेती कराते थे और अनाज की जमाखोरी करते थे।

• **विस्तृत व्याख्या:** तीव्र औद्योगीकरण के लिए शहरों के मजदूरों को सस्ता अनाज चाहिए था और विदेशों से भारी मशीनें खरीदने के लिए अनाज का निर्यात आवश्यक था। इसलिए स्टालिन ने 1929 से कुलकों का उन्मूलन कर छोटे खेतों को विशाल मशीनीकृत सामूहिक फार्मों (**'कोलखोज़'**) में बदल दिया।

अभ्यास प्रश्न #101 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. स्टालिन की पंचवर्षीय योजनाओं (1928–1938) की मुख्य विशेषताएँ क्या थीं? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** केंद्रीकृत योजना आयोग ('गोसप्लान') द्वारा पूरे देश के उत्पादन लक्ष्यों का निर्धारण और उपभोक्ता वस्तुओं की तुलना में बुनियादी व भारी उद्योगों (लोहा, इस्पात, कोयला, बिजली, ट्रैक्टर व शस्त्र) को सर्वोच्च प्राथमिकता देना।

• **विस्तृत व्याख्या:** साथ ही सामरिक दृष्टि से यूराल पर्वत और साइबेरिया के दुर्गम क्षेत्रों में नए औद्योगिक केंद्र बनाए गए, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध में हिटलर के आक्रमण के समय सोवियत संघ की रक्षा की।

अभ्यास प्रश्न #102 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 'कॉमिनटर्न' (कॉमिनटर्न — तृतीय इंटरनेशनल) क्या था और इसकी स्थापना कब हुई? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** मार्च 1919 में लेनिन द्वारा मॉस्को में स्थापित **'कम्युनिस्ट इंटरनेशनल'**, जिसका उद्देश्य विश्व भर के साम्यवादी दलों का मार्गदर्शन करना और पूँजीवाद व साम्राज्यवाद के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय क्रांति को बढ़ावा देना था।

• **विस्तृत व्याख्या:** भारत के एम. एन. रॉय भी कॉमिनटर्न की कार्यकारिणी के प्रमुख सदस्य रहे। द्वितीय विश्व युद्ध में पश्चिमी मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन-अमेरिका) का विश्वास जीतने के लिए स्टालिन ने 1943 में कॉमिनटर्न को भंग कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #103 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. 1917 की रूसी क्रांति ने पूँजीवादी देशों को 'लोक-कल्याणकारी राज्य' (लोक-कल्याणकारी राज्य) अपनाने के लिए कैसे बाध्य किया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** सोवियत संघ ने जब अपने नागरिकों को काम का अधिकार, 8 घंटे का कार्यदिवस, निःशुल्क शिक्षा, निःशुल्क स्वास्थ्य और वृद्धावस्था पेंशन की गारंटी दी, तो पश्चिमी देशों के मजदूरों में भी साम्यवाद का आकर्षण बढ़ने लगा।

• **विस्तृत व्याख्या:** अपने यहाँ बोल्शेविक जैसी क्रांति होने के भय से ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिका जैसे पूँजीवादी देशों ने मजदूरों को सामाजिक सुरक्षा, बेरोजगारी भत्ता, न्यूनतम मजदूरी और ट्रेड यूनियन अधिकार प्रदान कर पूँजीवाद का मानवीयकरण (कल्याणकारी राज्य) किया।

अभ्यास प्रश्न #104 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर रूसी क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** रूसी क्रांति ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को केवल राजनीतिक आजादी के लक्ष्य से आगे बढ़ाकर किसानों और मजदूरों की सामाजिक-आर्थिक मुक्ति से जोड़ दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसी के प्रभाव से 1920 में 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' (अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस) की स्थापना हुई, एम. एन. रॉय व सत्यभक्त के प्रयासों से भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (1920/1925) बनी, भगत सिंह के 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' (1928) ने समाजवाद को लक्ष्य बनाया और कांग्रेस में नेहरू व सुभाष बाबू के नेतृत्व में वामपंथी धारा मजबूत हुई।

अभ्यास प्रश्न #105 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. लेनिन और स्टालिन के आर्थिक दृष्टिकोण तथा शासन शैली की तुलना कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** लेनिन एक लचीले और यथार्थवादी मार्क्सवादी रणनीतिकार थे जिन्होंने संकट के समय 'युद्ध साम्यवाद' को छोड़कर 'नई आर्थिक नीति' (नई आर्थिक नीति) का मिश्रित मॉडल अपनाया और पार्टी के भीतर सामूहिक विचार-विमर्श को स्थान दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके विपरीत स्टालिन ने नई आर्थिक नीति को समाप्त कर कठोर केंद्रीकृत पंचवर्षीय योजनाओं और जबरन सामूहिकीकरण के माध्यम से सोवियत संघ को एक औद्योगिक-सैन्य महाशक्ति तो बना दिया, किंतु इसके लिए व्यक्ति-पूजा, गुप्त पुलिस के दमन और लाखों लोगों की मानवीय त्रासदी की भारी कीमत चुकाई गई।

अध्याय 8: दोनों विश्व युद्धों के बीच की दुनिया: महामंदी (1929), फासीवाद (मुसोलिनी) और नाजीवाद (हिटलर)

8.1 आर्थिक महामंदी (1929–1933): जब पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था ताश के पत्तों की तरह ढह गई

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 8.1 आर्थिक महामंदी (1929–1933): जब पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था ताश के पत्तों की तरह ढह गई

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
महामंदी के मूल कारण	**महामंदी का वैश्विक प्रभाव और रूजवेल्ट की 'न्यू डील' (1933)**

प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद 1924 से 1929 तक के काल को अमेरिका में झूठी चमक-दमक और सट्टेबाजी के कारण 'रोअरिंग ट्वेंटीज' कहा जा रहा था। किंतु इसी के भीतर एक भयानक आर्थिक बुलबुला फूल रहा था। **24 अक्टूबर 1929 ('काला बृहस्पतिवार' — ब्लैक थर्सडे)** और **29 अक्टूबर 1929 ('काला**

मंगलवार') को न्यूयॉर्क के **वॉल स्ट्रीट शेयर बाजार (स्टॉक एक्सचेंज)** में शेयरों की कीमतें अचानक धड़ाम से गिर पड़ीं। एक ही दिन में अरबों डॉलर की पूँजी स्वाहा हो गई और पूँजीवादी इतिहास की सबसे भयावह **'वैश्विक आर्थिक महामंदी' (द ग्रेट डिप्रेशन, 1929–1933)** शुरू हो गई।

महामंदी के मूल कारण

1. **अति-उत्पादन और क्रय-शक्ति का संकट:** मशीनीकरण और असेंबली लाइन के कारण अमेरिका के कारखानों और खेतों में वस्तुओं व अनाज का भारी उत्पादन हो रहा था, किंतु आम मजदूरों और किसानों की मजदूरी उस अनुपात में नहीं बढ़ी थी (धन का 5% अमीरों के पास संकेंद्रण)। परिणामस्वरूप गोदाम माल से भर गए पर खरीदने वाले ग्राहक नहीं थे।

2. **शेयर बाजार की अनियंत्रित सट्टेबाजी:** लोग बैंकों से कर्ज लेकर ('बाइंग ऑन मार्जिन') शेयर बाजार में सट्टा लगा रहे थे। जब कंपनियों की वास्तविक बिक्री घटी, तो घबराहट में शेयर बेचने की होड़ मच गई।

3. **अंतर्राष्ट्रीय ऋण-चक्र का टूटना (डावेस योजना का पतन):** प्रथम विश्व युद्ध के बाद अमेरिकी बैंक जर्मनी को कर्ज देते थे; जर्मनी उसी पैसे से ब्रिटेन और फ्रांस को वर्साय की संधि का हर्जाना देता था; और ब्रिटेन-फ्रांस उसी पैसे से अमेरिका को अपना युद्ध-ऋण चुकाते थे। 1929 में वॉल स्ट्रीट ढहते ही अमेरिका ने जर्मनी और यूरोप को ऋण देना बंद कर दिया, जिससे पूरे यूरोप (विशेषकर जर्मनी और ऑस्ट्रिया के सबसे बड़े बैंक 'क्रेडिट-अंस्टाल्ट') की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो गई।

4. **संरक्षणवादी टैरिफ युद्ध (स्मूट-हॉली टैरिफ एक्ट, 1930):** अमेरिका ने अपने उद्योगों को बचाने के लिए विदेशी वस्तुओं पर भारी आयात शुल्क लगा दिया। बदले में अन्य देशों ने भी शुल्क बढ़ा दिए, जिससे विश्व व्यापार 65% तक सिकुड़ गया।

महामंदी का वैश्विक प्रभाव और रूजवेल्ट की 'न्यू डील' (1933)

अमेरिका में 5,000 से अधिक बैंक दिवालिया हो गए, औद्योगिक उत्पादन आधा रह गया और **1.3 करोड़ से अधिक अमेरिकी (25% श्रमशक्ति)** तथा जर्मनी में **60 लाख लोग बेरोजगार** होकर सूप-किचन की लाइनों में खड़े हो गए। एक तरफ गोदामों में अनाज सड़ रहा था या कीमतें गिरने से रोकने के लिए कॉफी और गेहूँ समुद्र में फेंका जा रहा था, और दूसरी तरफ करोड़ों लोग भूखे मर रहे थे! (केवल **सोवियत संघ** अपनी समाजवादी नियोजित अर्थव्यवस्था के कारण इस महामंदी से पूर्णतः अछूता रहा)।

इस संकट से अमेरिका को उबारने के लिए मार्च 1933 में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट (फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट)** ने प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थशास्त्री **जॉन मेनार्ड कीन्स** के सिद्धांतों (कि मंदी के समय सरकार को अहस्तक्षेप की नीति छोड़कर सार्वजनिक खर्च बढ़ाना चाहिए) के अनुरूप **'न्यू डील' (नई डील — राहत, सुधार और पुनरुद्धार — तीन आर: राहत, सुधार और पुनरुद्धार)** नीति लागू की:

- **बैंकिंग एवं शेयर बाजार सुधार:** 'इमरजेंसी बैंकिंग एक्ट' द्वारा बैंकों में जनता का विश्वास बहाल किया गया और शेयर बाजार की निगरानी हेतु 'सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज कमीशन' (प्रतिभूति एवं विनिमय आयोग) बनाया गया।
- **कृषि समायोजन अधिनियम (कृषि समायोजन अधिनियम):** किसानों को अधिक उत्पादन न करने के बदले सरकारी सब्सिडी दी गई ताकि फसलों के दाम स्थिर हों।
- **टेनेसी घाटी प्राधिकरण (टेनेसी घाटी प्राधिकरण) एवं सार्वजनिक निर्माण:** बेरोजगारों को काम देने के लिए विशाल बाँध, बिजलीघर, राजमार्ग, स्कूल और अस्पताल बनाए गए (इसी टेनेसी घाटी प्राधिकरण की तर्ज पर स्वतंत्र भारत में 1948 में 'दामोदर घाटी निगम — दामोदर घाटी निगम' बनाया गया)।
- **सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (1935):** वृद्धावस्था पेंशन, बेरोजगारी भत्ता और श्रमिक संघों के अधिकार (वैगनर एक्ट) की गारंटी दी गई।

8.2 इटली में फासीवाद (फासिज्म) का उदय और बेनिटो मुसोलिनी (1922–1943)

प्रथम विश्व युद्ध में इटली विजयी मित्र राष्ट्रों के पक्ष में लड़ा था, किंतु 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में उसे वचन दिए गए प्रदेश (डालमेशिया, फ्यूम आदि) नहीं मिले। इटलीवासियों ने इसे **'विकलांग विजय' (म्यूटिलेटेड विक्ट्री)** कहा—अर्थात "इटली ने युद्ध तो जीत लिया, किंतु शांति हार गया!" युद्ध के बाद इटली में भारी मुद्रास्फीति, बेरोजगारी और साम्यवादी हड़तालों से अराजकता फैल गई, जिसे कमजोर संसदीय सरकार रोक नहीं सकी।

इसी असंतोष का लाभ उठाकर एक पूर्व समाजवादी पत्रकार और सैनिक **बेनिटो मुसोलिनी (1883–1945)** ने मार्च 1919 में मिलान में **'फासी डी कम्बैटिमेंटो' (संघर्ष दल)** और 1921 में **'राष्ट्रीय फासीवादी पार्टी'** का गठन किया। 'फासीवाद' शब्द प्राचीन रोमन सत्ता और एकता के प्रतीक **'फासेस' (लकड़ियों का गट्ठर जिसके बीच में कुल्हाड़ी बंधी होती थी)** से लिया गया था। मुसोलिनी के सशस्त्र स्वयंसेवक **'काली कुर्ती दल' (ब्लैक शर्ट्स)** कहलाते थे, जो समाजवादियों और हड़ताली मजदूरों पर हमले करते थे, जिससे डरे हुए उद्योगपतियों, जमींदारों और सेना ने मुसोलिनी को धन व समर्थन दिया।

• **रोम पर मार्च (अक्टूबर 1922) और सर्वाधिकारवादी तानाशाही:** अक्टूबर 1922 में मुसोलिनी के 30,000 काली कुर्ती स्वयंसेवकों ने **'रोम पर मार्च'** कर सत्ता सौंपने की धमकी दी। गृहयुद्ध के भय से राजा **विक्टर इमैनुएल तृतीय** ने 29 अक्टूबर 1922 को मुसोलिनी को प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया। मुसोलिनी ने **'इल ड्यूस' (सर्वोच्च नेता)** की उपाधि धारण की, सभी विपक्षी दलों व स्वतंत्र प्रेस को समाप्त कर दिया, हड़तालों पर प्रतिबंध लगाकर **'निगमित राज्य' (कॉर्पोरेट स्टेट)** बनाया और 1929 में पोप के साथ **'लैटरन संधि'** कर कैथोलिक चर्च का समर्थन प्राप्त कर लिया।

• **फासीवाद का दर्शन और आक्रामक विदेश नीति:** मुसोलिनी का सिद्धांत था— "सब कुछ राज्य के भीतर है, राज्य के बाहर कुछ नहीं है, और राज्य के विरुद्ध कुछ भी नहीं है!" उसने लोकतंत्र को 'सड़ती हुई लाश' कहा और घोषणा की कि "पुरुष के लिए युद्ध वैसा ही है जैसा महिला के लिए मातृत्व!" प्राचीन रोमन साम्राज्य के गौरव को पुनर्जीवित करने के नाम पर मुसोलिनी ने **1935–36 में अफ्रीकी देश अबिसीनिया (इथियोपिया)** और 1939 में अल्बानिया को रौंद डाला तथा हिटलर के साथ मिलकर इटली को द्वितीय विश्व युद्ध के विनाश में झोंक दिया।

8.3 जर्मनी में नाजीवाद का उदय और एडोल्फ हिटलर (1933–1945)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 8.3 जर्मनी में नाजीवाद का उदय और एडोल्फ हिटलर (1933–1945)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
एडोल्फ हिटलर का उत्थान, नाजी विचारधारा और तृतीय राइख (1933–1945)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
चार-नोड प्रवाह आरेख: महामंदी से फासीवादी-नाजी तानाशाही और विश्व युद्ध की ओर

1918 में प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार के बाद वाइमर नामक नगर में एक लोकतांत्रिक गणराज्य की स्थापना हुई जिसे **'वाइमर गणराज्य' (1919–1933)** कहा गया। किंतु जन्म से ही वाइमर गणराज्य को जर्मन जनता ने **'वर्साय की अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने वाला पापी'** और **'पीठ में छुरा घोंपने वाला' (स्टैब-इन-द-बैक मिथक)** माना।

1923 में जब जर्मनी हर्जाने की किश्त नहीं चुका सका, तो फ्रांस ने जर्मनी के औद्योगिक हृदय **'रूर कोयला क्षेत्र'** पर कब्जा कर लिया। जवाब में वाइमर सरकार ने अंधाधुंध कागजी नोट छापे जिससे **अति-मुद्रास्फीति (हाइपर-इन्फ्लेशन)** का ऐसा भयावह दौर आया कि नवंबर 1923 में **एक अमेरिकी डॉलर की कीमत 42 खरब (4.2 ट्रिलियन) जर्मन मार्क** हो गई—लोग एक ब्रेड खरीदने के लिए ठेला भरकर नोट ले जाते थे! 1924–28 में अमेरिकी डावेस योजना से थोड़ी स्थिरता आई, किंतु **1929 की महामंदी** ने जर्मनी की कमर तोड़ दी और बेरोजगारों की संख्या 60 लाख के पार पहुँच गई।

एडोल्फ हिटलर का उत्थान, नाजी विचारधारा और तृतीय राइख (1933–1945)

ऑस्ट्रिया में 20 अप्रैल 1889 को जन्मे और प्रथम विश्व युद्ध में जर्मन सेना के कॉर्पोरल रहे **एडोल्फ हिटलर** ने 1919 में म्यूनिख में 'जर्मन वर्कर्स पार्टी' में प्रवेश किया और 1920 में उसका नाम बदलकर **'नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी' (संक्षेप में 'नाजी पार्टी')** कर दिया तथा **'स्वास्तिक' (हकेनक्रूज़)** को पार्टी का चिह्न और **'भूरी कुर्ती दल' (ब्राउन शर्ट्स / स्टॉर्म ट्रूपर्स — स्टॉर्म ट्रूपर्स)** को अपना अर्धसैनिक दस्ता बनाया।

नवंबर 1923 में हिटलर ने म्यूनिख में सत्ता कब्जाने का असफल प्रयास (**'म्यूनिख बियर हॉल पुच'**) किया, जिसके कारण उसे लैंड्सबर्ग जेल में बंद कर दिया गया। जेल में ही हिटलर ने अपनी आत्मकथा और नाजीवाद की बाइबिल कही जाने वाली पुस्तक **'मीन काम्फ' (मेरा संघर्ष — मेरा संघर्ष)** लिखी। इसमें हिटलर ने अपने खूंखार सिद्धांत प्रतिपादित किए:

1. **उग्र नस्लवाद और यहूदी-विरोध (एंटी-सेमिटिज्म):** हिटलर ने घोषित किया कि शुद्ध नीली आँखों वाले नॉर्डिक **'आर्य' (जर्मन) संसार की सर्वश्रेष्ठ शासक नस्ल ('मास्टर रेस' — हेरेनवोल्क)** हैं, जबकि यहूदी जर्मनी की हार, महामंदी और साम्यवाद के लिए जिम्मेदार हैं।
2. **लेबेन्सराउम (लेबेन्सराउम — जीवित रहने का स्थान):** महान जर्मन नस्ल के विस्तार के लिए पूर्वी यूरोप (पोलैंड, यूक्रेन, रूस) की भूमि को जीतकर जर्मनों को बसाना।
3. **वर्साय की संधि का विनाश और फ्यूहरर सिद्धांत:** लोकतंत्र और साम्यवाद को नष्ट कर एक नेता (**'फ्यूहरर'**) की पूर्ण तानाशाही—"एक जन, एक साम्राज्य, एक नेता" (आइन वोल्क, आइन राइख, आइन फ्यूहरर)।

1929 की महामंदी के बाद हिटलर के सम्मोहक भाषणों और प्रचार मंत्री **जोसेफ गोएबल्स** के दुष्प्रचार ("एक बड़े झूठ को सौ बार बोलो तो वह सच लगने लगता है") ने बेरोजगार युवाओं, मध्यम वर्ग और साम्यवाद से डरे बड़े उद्योगपतियों को नाजी पार्टी के पीछे खड़ा कर दिया। 1932 के चुनाव में नाजी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बनी और **30 जनवरी 1933 को राष्ट्रपति पॉल वॉन हिंडनबर्ग ने हिटलर को जर्मनी का चांसलर नियुक्त कर दिया।**

• **लोकतंत्र का विनाश और यहूदी नरसंहार (होलोकॉस्ट):** फरवरी 1933 में जर्मन संसद (**राइखस्टाग**) में संदिग्ध अग्निकांड का बहाना बनाकर हिटलर ने मार्च 1933 में **'इनेबलिंग एक्ट' (विशेषाधिकार अधिनियम)** पारित करा लिया, जिससे संसद को भंग कर हिटलर को तानाशाही शक्तियाँ मिल गईं। 1934 में

हिंडनबर्ग की मृत्यु के बाद हिटलर ने राष्ट्रपति और चांसलर के पद को मिलाकर स्वयं को **'फ्यूहरर'** घोषित कर दिया। गुप्त पुलिस **'गेस्टापो'** और **हाइनरिख हिमलर** के **'एस.एस. दस्ता' (काली वर्दी दस्ते)** ने सारे विरोधियों को यातना शिविरों (कंसंट्रेशन कैंप्स) में डाल दिया। **1935 के 'नूरेमबर्ग कानूनों'** द्वारा यहूदियों की जर्मन नागरिकता छीन ली गई, **9 नवंबर 1938 ('क्रिस्टलनाख्त' — टूटे काँच की रात)** को यहूदी पूजास्थलों व दुकानों को जलाया गया और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान **'अंतिम समाधान' (फाइनल सॉल्यूशन)** के नाम पर ऑशविट्ज़, ट्रेब्लिंका और डकाऊ के गैस चैंबरों में **60 लाख निर्दोष यहूदियों का औद्योगिक नरसंहार ('होलोकॉस्ट')** किया गया।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
1936 के **बर्लिन ओलंपिक खेलों** का आयोजन हिटलर ने नाजी जर्मनी की 'आर्य नस्लीय श्रेष्ठता' का प्रदर्शन करने के लिए किया था। किंतु इसी बर्लिन ओलंपिक में एक अफ्रीकी-अमेरिकी (अश्वेत) एथलीट **जेसी ओवेन्स** ने 4 स्वर्ण पदक जीतकर हिटलर के नस्लीय दंभ को चकनाचूर कर दिया, और **मेजर ध्यानचंद** के नेतृत्व में **भारतीय हॉकी टीम** ने फाइनल में मेजबान जर्मनी को हिटलर के सामने ही **8–1 से रौंदकर** स्वर्ण पदक जीता था!

चार-नोड प्रवाह आरेख: महामंदी से फासीवादी-नाजी तानाशाही और विश्व युद्ध की ओर

[नोड 1: वर्साय की संधि का अपमान (1919) व रूर संकट की अति-मुद्रास्फीति (1923)] [नोड 2: वॉल स्ट्रीट क्रैश एवं वैश्विक आर्थिक महामंदी (24 अक्टूबर 1929)] [नोड 3: बेरोजगारी का विस्फोट, वाइमर लोकतंत्र की विफलता व हिटलर का चांसलर बनना (1933)] [नोड 4: रोम-बर्लिन-टोक्यो धुरी, ब्रिटेन-फ्रांस की तुष्टीकरण नीति व द्वितीय विश्व युद्ध (1939)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: इतालवी फासीवाद (मुसोलिनी) बनाम जर्मन नाजीवाद (हिटलर)

तुलना का आधार	इतालवी फासीवाद (मुसोलिनी, 1922–1943)	जर्मन नाजीवाद (हिटलर, 1933–1945)
केंद्रीय वैचारिक धुरी	**'राज्य' की सर्वोच्चता** ("सब कुछ राज्य के भीतर है") एवं प्राचीन रोमन साम्राज्य का गौरव	**'नस्ल' (आर्य नस्ल) की सर्वोच्चता**; राज्य तो केवल नस्ल की रक्षा का एक साधन मात्र था
नस्लवाद एवं यहूदी-विरोध	प्रारंभ में नस्लवाद या यहूदी-विरोध नहीं था (1938 में हिटलर के दबाव में नस्लीय कानून अपनाए)	जन्म से ही कट्टर यहूदी-विरोध, नूरेमबर्ग कानून (1935) एवं 60 लाख यहूदियों का नरसंहार (होलोकॉस्ट)
राजतंत्र व चर्च के साथ संबंध	राजा (विक्टर इमैनुएल तृतीय) का पद बना रहा और पोप के साथ 1929 में 'लैटरन समझौता' किया	राजतंत्र पूर्णतः समाप्त; राष्ट्रपति व चांसलर पद मिलाकर 'फ्यूहरर' बना और चर्च को राज्य के अधीन कुचला
अर्धसैनिक दस्ता व प्रतीक	'काली कुर्ती दल' (ब्लैक शर्ट्स); प्रतीक: 'फासेस' (कुल्हाड़ी व लकड़ी का गट्ठर)	'भूरी कुर्ती दल' (स्टॉर्म ट्रूपर्स) व एस.एस. दस्ता/गेस्टापो; प्रतीक: तिरछा 'स्वास्तिक' (हकेनक्रूज़); पुस्तक: 'मीन काम्फ'
अर्थव्यवस्था व सैन्य क्षमता	औद्योगिक और सैन्य रूप से अपेक्षाकृत कमजोर ('निगमित राज्य')	चार-वर्षीय योजनाओं और शस्त्रीकरण द्वारा यूरोप की सबसे दुर्जेय सैन्य-औद्योगिक मशीन का निर्माण

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): महामंदी (1929–1932) का जर्मनी में नाजी पार्टी के चुनावी उभार के साथ प्रत्यक्ष सह-संबंध

- **1928 (महामंदी से पूर्व):** जर्मनी में बेरोजगारी: **8%** संसद (राइखस्टाग) में नाजी पार्टी को मिले वोट: **मात्र 2.6% (12 सीटें)**
- **1930 (महामंदी के प्रारंभ पर):** जर्मनी में बेरोजगारी: **15%** नाजी पार्टी को मिले वोट: **18.3% (107 सीटें)**
- **जुलाई 1932 (महामंदी के चरम पर):** जर्मनी में बेरोजगारी: **30% (60 लाख बेरोजगार)** नाजी पार्टी को मिले वोट: **37.3% (230 सीटें — सबसे बड़ा दल)**
- **1929–1932 के बीच वैश्विक व्यापार में आई गिरावट:** **65% की गिरावट** (अमेरिकी औद्योगिक उत्पादन में 46% की गिरावट)

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):

• रूजवेल्ट की 'न्यू डील' के 3 R और प्रमुख संस्थाएँ: "राहत (राहत), सुधार (सुधार), पुनरुद्धार (पुनरुद्धार) — टेनेसी घाटी प्राधिकरण ने बाँध बनाया, कृषि समायोजन अधिनियम ने किसान बचाया!"

• मुसोलिनी बनाम हिटलर के मुख्य चिह्न: "मुसोलिनी ने काली कुर्ती पहनकर 1922 में रोम मार्च किया (इल ड्यूस), हिटलर ने भूरी कुर्ती और मीन काम्फ लिखकर 1933 में राइखस्टाग लिया (फ्यूहरर)!"

8.4 अध्याय 8: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #106 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. 24 अक्टूबर 1929 को विश्व के आर्थिक इतिहास में 'काला बृहस्पतिवार' (ब्लैक थर्सडे) क्यों कहा जाता है? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** इसी दिन न्यूयॉर्क के वॉल स्ट्रीट स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों की कीमतों में भारी गिरावट आई और निवेशकों ने एक ही दिन में लगभग 1.3 करोड़ शेयर औने-पौने दामों पर बेच दिए।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस वित्तीय भूचाल ने अमेरिकी बैंकिंग प्रणाली को ध्वस्त कर दिया और देखते-ही-देखते पूरे पूँजीवादी विश्व को 1929–1933 की भयानक आर्थिक महामंदी में धकेल दिया।

अभ्यास प्रश्न #107 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 1929 की आर्थिक महामंदी को जन्म देने में 'अति-उत्पादन' और 'आय के असमान वितरण' की क्या भूमिका थी? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** 1920 के दशक में तकनीकी विकास से कारखानों और कृषि में उत्पादन तो कई गुना बढ़ गया, किंतु उसका लाभ मुख्यतः पूँजीपतियों की तिजोरी में गया और श्रमिकों की वास्तविक मजदूरी स्थिर रही।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब समाज के 90% उपभोक्ताओं के पास वस्तुएँ खरीदने की क्रय-शक्ति ही नहीं बची, तो बाजार में मांग गिर गई, कारखाने बंद होने लगे और मजदूरों की छँटनी से मांग और अधिक गिरने का दुष्चक्र शुरू हो गया।

अभ्यास प्रश्न #108 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 1924 की 'डावेस योजना' (डावेस योजना) और 1929 की 'यंग योजना' क्या थीं? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** प्रथम विश्व युद्ध के बाद जर्मनी की अर्थव्यवस्था को बचाने और वर्साय की संधि के हर्जाने की किश्तों को व्यावहारिक बनाने के लिए अमेरिकी बैंकर चार्ल्स डावेस (1924) और ओवेन यंग (1929) द्वारा तैयार की गई वित्तीय योजनाएँ।

• **विस्तृत व्याख्या:** डावेस योजना के तहत अमेरिका ने जर्मनी को 80 करोड़ मार्क का ऋण दिया और फ्रांस ने रूर क्षेत्र खाली किया। किंतु 1929 की महामंदी आते ही अमेरिकी ऋण रुक गए और यह पूरी व्यवस्था ढह गई।

अभ्यास प्रश्न #109 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट की 'न्यू डील' (1933) ने पारंपरिक पूँजीवाद के किस मूल सिद्धांत को बदल दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** न्यू डील ने एडम स्मिथ के समय से चले आ रहे **'अहस्तक्षेप के सिद्धांत' (लेसे-फेयर — बाजार अपने आप संतुलन बना लेगा)** को त्यागकर अर्थव्यवस्था में **राज्य के सक्रिय हस्तक्षेप और कल्याणकारी पूँजीवाद** की शुरुआत की।

• **विस्तृत व्याख्या:** अर्थशास्त्री जे. एम. कीन्स के विचारों के अनुरूप रूजवेल्ट ने घाटे की वित्त-व्यवस्था (डेफिसिट फाइनेंसिंग) अपनाकर सार्वजनिक निर्माण कार्यों (टेनेसी घाटी प्राधिकरण, सड़कें, बाँध) के माध्यम से करोड़ों लोगों को रोजगार दिया ताकि उनकी जेब में पैसा आए और बाजार में मांग पैदा हो।

अभ्यास प्रश्न #110 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. 1929 की महामंदी का औपनिवेशिक भारत पर क्या प्रभाव पड़ा? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद]

• **उत्तर:** 1928 से 1934 के बीच भारत का आयात और निर्यात घटकर लगभग आधा रह गया और गेहूँ तथा पटसन (जूट) की कीमतों में 50% से अधिक की गिरावट आई।

• **विस्तृत व्याख्या:** किसानों की फसल के दाम तो आधे हो गए, किंतु ब्रिटिश सरकार ने भू-राजस्व (लगान) में कोई छूट देने से इनकार कर दिया। कर्ज में डूबे भारतीय किसानों को अपने सोने-चांदी के गहने बेचने पड़े (अर्थशास्त्री कीन्स के अनुसार भारतीय सोने के इसी निर्यात ने ब्रिटेन की अर्थव्यवस्था को डूबने से बचाया!)। इसी ग्रामीण असंतोष ने महात्मा गांधी के **1930 के सविनय अवज्ञा आंदोलन** को व्यापक जन-आधार प्रदान किया।

अभ्यास प्रश्न #111 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. प्रथम विश्व युद्ध में विजयी पक्ष में रहने के बावजूद इटली में फासीवाद का उदय क्यों हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में इटली को 1915 की लंदन संधि के अनुसार वादा किए गए क्षेत्र न मिलने से राष्ट्रीय अपमान ('विकलांग विजय') की भावना फैली; साथ ही युद्ध से उत्पन्न भारी कर्ज, बेरोजगारी और 1919–20 के समाजवादी हड़तालों ('दो लाल वर्ष') से मध्यम व पूँजीपति वर्ग भयभीत हो गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** कमजोर उदारवादी सरकारें व्यवस्था स्थापित करने में विफल रहीं, तब मुसोलिनी ने एक ओर साम्यवाद को कुचलने और दूसरी ओर इटली का राष्ट्रीय गौरव लौटाने का वादा कर 1922 में सत्ता हथिया ली।

अभ्यास प्रश्न #112 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. मुसोलिनी के 'निगमित राज्य' (निगमित राज्य) की अवधारणा क्या थी? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** मुसोलिनी ने मार्क्सवादी 'वर्ग-संघर्ष' और पूँजीवादी 'मुक्त हड़ताल' दोनों को समाप्त कर अर्थव्यवस्था को 22 राज्य-नियंत्रित निगमों (सिंडिकेट) में बाँट दिया, जिनमें मालिकों, मजदूरों और फासीवादी पार्टी के प्रतिनिधि शामिल थे।

• **विस्तृत व्याख्या:** हड़ताल और तालाबंदी दोनों को कानूनन अपराध घोषित कर दिया गया। सिद्धांत रूप में यह मालिक और मजदूर के सहयोग की व्यवस्था थी, किंतु व्यवहार में इसने स्वतंत्र ट्रेड यूनियनों को नष्ट कर मजदूरों को पूँजीपतियों और राज्य के पूर्ण अधीन कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #113 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. जर्मनी के 'वाइमर गणराज्य' (1919–1933) के पतन के मुख्य कारण क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** (1) जन्म से ही वर्साय की अपमानजनक संधि और 'पीठ में छुरा घोंपने' के कलंक से जुड़ना, (2) आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली के कारण संसद में किसी एक दल को बहुमत न मिलना और गठबंधन सरकारों की अस्थिरता, (3) संविधान के **अनुच्छेद 48** (राष्ट्रपति की आपातकालीन शक्तियाँ) का दुरुपयोग, और (4) 1923 की अति-मुद्रास्फीति तथा 1929 की महामंदी।

• **विस्तृत व्याख्या:** वाइमर गणराज्य को जर्मनी की सेना, न्यायपालिका और नौकरशाही का भी कभी निष्ठापूर्ण समर्थन नहीं मिला, जिसे इतिहासकारों ने "बिना गणतंत्रवादियों का गणराज्य" कहा।

अभ्यास प्रश्न #114 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. हिटलर की पुस्तक 'मीन काम्फ' (मेरा संघर्ष) में प्रतिपादित 'लेबेन्सराउम' (लेबेन्सराउम) की अवधारणा क्या थी? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / केंद्रीय विद्यालय संगठन स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 'लेबेन्सराउम' का शाब्दिक अर्थ है **'जीवित रहने का स्थान' (लिविंग स्पेस)**।

• **विस्तृत व्याख्या:** भू-राजनीतिक चिंतक कार्ल हाउसोफर से प्रभावित इस सिद्धांत के तहत हिटलर का कहना था कि जर्मनी की बढ़ती हुई श्रेष्ठ आर्य जनसंख्या के भरण-पोषण के लिए जर्मनी की वर्तमान सीमाएँ अपर्याप्त हैं, अतः जर्मनी को पूर्व की ओर (पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया, यूक्रेन और रूस के उपजाऊ मैदानों पर) सैन्य विजय द्वारा अधिकार कर वहाँ के स्लाव लोगों को दास बनाना होगा।

अभ्यास प्रश्न #115 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. मार्च 1933 का 'इनेबलिंग एक्ट' (विशेषाधिकार अधिनियम) क्या था? [राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद / राज्य लोक सेवा आयोग / कर्मचारी चयन आयोग]

• **उत्तर:** 23 मार्च 1933 को जर्मन संसद (राइखस्टाग) द्वारा पारित कानून जिसने हिटलर को संसद की सहमति के बिना चार वर्षों तक कोई भी कानून बनाने और संविधान से हटकर कार्य करने की तानाशाही शक्ति दे दी।

• **विस्तृत व्याख्या:** फरवरी 1933 के राइखस्टाग अग्निकांड के बाद कम्युनिस्ट सांसदों को गिरफ्तार कर और शेष सांसदों को भूरी कुर्ती दस्ते से डराकर पारित कराए गए इस एक कानून ने जर्मनी में लोकतंत्र का कानूनी रूप से गला घोंट दिया।

अभ्यास प्रश्न #116 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. 1935 के 'नूरेमबर्ग कानून' और 1938 के 'क्रिस्टलनाख्त' का संबंध किससे था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** नाजी जर्मनी में यहूदियों के क्रमिक नागरिक व मानवीय अधिकार हनन और नरसंहार से।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1935 के नूरेमबर्ग कानूनों ने यहूदियों से जर्मन नागरिकता छीन ली, उन्हें सरकारी नौकरियों से निकाल दिया और यहूदियों तथा गैर-यहूदी जर्मनों के बीच विवाह को अपराध घोषित कर दिया। 9–10 नवंबर 1938 की रात ('क्रिस्टलनाख्त' — टूटे काँच की रात) नाजियों ने सैकड़ों यहूदी प्रार्थनागृहों (सिनागॉग) को जला दिया और 30,000 यहूदियों को यातना शिविरों में भेज दिया।

अभ्यास प्रश्न #117 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. स्पेन का गृहयुद्ध (1936–1939) क्यों छिड़ा और इसे 'द्वितीय विश्व युद्ध का ड्रेस रिहर्सल' क्यों कहा जाता है? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** 1936 में स्पेन की लोकतांत्रिक रूप से निर्वाचित वामपंथी 'पॉपुलर फ्रंट' गणतांत्रिक सरकार के विरुद्ध सेनापति **जनरल फ्रांसिस्को फ्रैंको** ने फासीवादी सैन्य विद्रोह कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** ब्रिटेन और फ्रांस ने 'अहस्तक्षेप' की नीति अपनाई, सोवियत संघ ने गणतंत्रवादियों की मदद की, जबकि **हिटलर और मुसोलिनी ने फ्रैंको की खुलकर सैन्य सहायता की** और अपने नए लड़ाकू विमानों ('लुफ्तवाफे' द्वारा **ग्वेर्निका नगर पर बमबारी**, जिस पर पाब्लो पिकासो ने अपनी विश्व-प्रसिद्ध पेंटिंग 'ग्वेर्निका' बनाई) व टैंकों का जीवंत परीक्षण किया। 1939 में फ्रैंको की जीत के साथ स्पेन में भी फासीवादी तानाशाही स्थापित हो गई।

अभ्यास प्रश्न #118 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. 1930 के दशक में हिटलर और मुसोलिनी ने कौन-कौन से अंतर्राष्ट्रीय समझौते कर 'धुरी शक्तियों' (धुरी राष्ट्र) का निर्माण किया? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** (1) अक्टूबर 1936 में हिटलर और मुसोलिनी ने **'रोम-बर्लिन धुरी'** बनाई, (2) नवंबर 1936 में जर्मनी और जापान ने सोवियत संघ के विरुद्ध **'एंटी-कॉमिनटर्न पैक्ट'** किया (जिसमें 1937 में इटली भी जुड़ गया), और (3) मई 1939 में हिटलर और मुसोलिनी ने पूर्ण सैन्य गठबंधन **'इस्पात समझौता' (पैक्ट ऑफ स्टील)** किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** सितंबर 1940 के त्रिपक्षीय समझौते से **'रोम-बर्लिन-टोक्यो धुरी'** औपचारिक रूप से पूर्ण हो गई।

अभ्यास प्रश्न #119 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. ब्रिटेन और फ्रांस ने 1930 के दशक में हिटलर और मुसोलिनी के प्रति 'तुष्टीकरण की नीति' (तुष्टीकरण की नीति) क्यों अपनाई? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** ब्रिटिश प्रधानमंत्री नेविल चेम्बरलेन और फ्रांसीसी नेताओं द्वारा हिटलर और मुसोलिनी की आक्रामक मांगों को मानकर युद्ध टालने की नीति को 'तुष्टीकरण की नीति' कहा जाता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके तीन कारण थे—प्रथम, ब्रिटेन में यह अपराध-बोध था कि वर्साय की संधि जर्मनी के साथ अधिक कठोर थी; द्वितीय, महामंदी के कारण ब्रिटेन और फ्रांस युद्ध का खर्च उठाने को तैयार नहीं थे; और तृतीय, पश्चिमी पूँजीवादी लोकतंत्रों को फासीवाद से अधिक डर **सोवियत साम्यवाद (स्टालिन)** से लगता था और वे चाहते थे कि हिटलर एक मजबूत दीवार बनकर सोवियत रूस से टकराए।

अभ्यास प्रश्न #120 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. सितंबर 1938 का 'म्यूनिख समझौता' तुष्टीकरण की नीति की पराकाष्ठा कैसे था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया के जर्मन-भाषी सीमांत क्षेत्र **'सुडेटेनलैंड'** को जर्मनी में मिलाने की धमकी दी। 29–30 सितंबर 1938 को म्यूनिख में हिटलर, मुसोलिनी, ब्रिटिश प्रधानमंत्री **नेविल चेम्बरलेन** और फ्रांसीसी प्रधानमंत्री **दलादिए** ने बैठक की (जिसमें स्वयं चेकोस्लोवाकिया या उसके मित्र सोवियत संघ को बुलाया तक नहीं गया!) और सुडेटेनलैंड हिटलर को सौंप दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** चेम्बरलेन ने लंदन लौटकर कहा कि वह "हमारे समय के लिए शांति" लेकर आया है, किंतु विंस्टन चर्चिल ने चेतावनी दी थी— "तुम्हें युद्ध और अपमान में से एक को चुनना था; तुमने अपमान चुना है और अब तुम्हें युद्ध भी मिलेगा!" मात्र छह महीने बाद मार्च 1939 में हिटलर ने शेष पूरे चेकोस्लोवाकिया को हड़प लिया।

अध्याय 9: द्वितीय विश्व युद्ध एवं संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय

9.1 द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945): कारण, घटनाक्रम और मानव इतिहास का सबसे भीषण महासंग्राम

1 सितंबर 1939 से 2 सितंबर 1945 तक पूरे छह वर्षों तक चला **द्वितीय विश्व युद्ध** मानव इतिहास का सर्वाधिक प्रलयंकारी और वैश्विक युद्ध था, जो यूरोप, उत्तरी अफ्रीका, अटलांटिक महासागर, सोवियत संघ के मैदानों से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत महासागर के द्वीपों तक लड़ा गया। इसमें लगभग **70 देशों** ने भाग लिया और **6 करोड़ से 8 करोड़ के बीच सैनिक व नागरिक मारे गए** (जो तत्कालीन विश्व जनसंख्या का लगभग 3% था)।

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण और हिटलर के आक्रामक कदम (1933–1939)

1. **वर्साय की संधि की विसंगतियाँ और राष्ट्र संघ की पंगुता:** 1919 की संधि द्वारा बनाए गए कृत्रिम बॉर्डर (पोलिश गलियारा, डैंजिग, सुडेटेनलैंड) और सामूहिक सुरक्षा की विफलता।

2. **फासीवादी-नाजी और जापानी सैन्यवाद का विस्तारवाद:**

• **1931:** जापान द्वारा मंचूरिया पर कब्जा और **1937 में चीन पर पूर्ण आक्रमण** (नानजिंग नरसंहार)।

• **1935:** मुसोलिनी द्वारा अबिसीनिया (इथियोपिया) पर अधिकार और हिटलर द्वारा वर्साय संधि तोड़कर अनिवार्य सैन्य सेवा लागू करना।

• **मार्च 1936:** हिटलर द्वारा असैन्यीकृत **राइनलैंड** में जर्मन सेना भेजना।

• **मार्च 1938 ('अंशलुस'):** हिटलर द्वारा पड़ोसी देश **ऑस्ट्रिया का जर्मनी में जबरन विलय**।

• **सितंबर 1938 व मार्च 1939:** म्यूनिख समझौते से सुडेटेनलैंड और मार्च 1939 में संपूर्ण **चेकोस्लोवाकिया पर कब्जा**।

3. **जर्मन-सोवियत अनाक्रमण समझौता (मोलोटोव-रिबेनट्रॉप पैक्ट, 23 अगस्त 1939):** म्यूनिख समझौते में ब्रिटेन और फ्रांस के विश्वासघात को देखकर सोवियत नेता स्टालिन को संदेह हो गया कि पश्चिमी देश हिटलर को सोवियत संघ पर आक्रमण करने के लिए उकसा रहे हैं। उधर हिटलर भी पोलैंड पर आक्रमण करते समय दो मोर्चों के युद्ध से बचना चाहता था। अत: **23 अगस्त 1939** को विश्व को चौंकाते हुए दो कट्टर वैचारिक शत्रुओं—नाजी जर्मनी और सोवियत संघ—ने 10 वर्षों के लिए **'अनाक्रमण समझौता'** कर लिया, जिसके एक गुप्त प्रोटोकॉल में पोलैंड और बाल्टिक राज्यों को आपस में बाँटने की सहमति थी।

4. **तात्कालिक कारण — पोलैंड पर जर्मनी का आक्रमण (1 सितंबर 1939):** हिटलर ने पोलैंड से 'डैंजिग बंदरगाह' और 'पोलिश गलियारे' की माँग की। पोलैंड द्वारा अस्वीकार किए जाने पर **1 सितंबर 1939 को भोर में हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया**। अंतत: तुष्टीकरण की नीति त्यागकर **3 सितंबर 1939 को ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी** और द्वितीय विश्व युद्ध प्रारंभ हो गया।

युद्ध के दोनों खेमे और प्रमुख चरण (1939–1945)

• **धुरी राष्ट्र (धुरी राष्ट्र):** जर्मनी (एडोल्फ हिटलर), इटली (बेनिटो मुसोलिनी) और जापान (प्रधानमंत्री हिदेकी तोजो व सम्राट हिरोहितो) तथा उनके सहयोगी (हंगरी, रोमानिया, बुल्गारिया)।

• **मित्र राष्ट्र (मित्र राष्ट्र):** ब्रिटेन (मई 1940 से प्रधानमंत्री **विंस्टन चर्चिल**), फ्रांस (स्वतंत्र फ्रांसीसी नेता **चार्ल्स डी गॉल**), सोवियत संघ (जून 1941 से — **जोसेफ स्टालिन**), संयुक्त राज्य अमेरिका (दिसंबर 1941 से — **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट** व 1945 में **हैरी ट्रूमैन**) और चीन (**च्यांग काई-शेक**)।

1. **प्रथम चरण — 'ब्लिट्जक्रीग' (बिजली की गति से युद्ध) और फ्रांस का पतन (1939–1940):** हिटलर ने टैंकों ('पैंजर डिवीजन') और गोताखोर बमवर्षक विमानों ('लुफ्तवाफे') के सटीक तालमेल से **'ब्लिट्जक्रीग' (बिजली युद्ध)** रणनीति अपनाई। चार सप्ताह में पोलैंड ढह गया। अप्रैल-मई 1940 में जर्मनी ने डेनमार्क, नॉर्वे, हॉलैंड और बेल्जियम को रौंदते हुए फ्रांस की प्रसिद्ध 'मैजिनो रक्षा पंक्ति' को चकमा देकर आर्डेन्स के जंगलों से फ्रांस में प्रवेश किया। **डंकर्क से 3.3 लाख ब्रिटिश व फ्रांसीसी सैनिकों को बचाकर निकाला गया ('ऑपरेशन डायनेमो')** और **जून 1940 में पेरिस तथा फ्रांस ने आत्मसमर्पण कर दिया** (दक्षिणी फ्रांस में मार्शल पेताँ की कठपुतली 'विची सरकार' बनी)।

2. **ब्रिटेन का युद्ध (बैटल ऑफ ब्रिटेन, जुलाई–अक्टूबर 1940):** फ्रांस के पतन के बाद ब्रिटेन अकेला खड़ा था। प्रधानमंत्री **विंस्टन चर्चिल** ने संसद में गरजते हुए कहा— "मेरे पास देने के लिए रक्त, कठोर परिश्रम, आँसू और पसीने के सिवा कुछ नहीं है... हम समुद्र तटों पर लड़ेंगे, हम खेतों और गलियों में लड़ेंगे, हम कभी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे!" हिटलर ने ब्रिटेन पर हवाई हमले (**'ऑपरेशन सी लायन'**) किए, किंतु ब्रिटिश रॉयल एयर फोर्स (रॉयल एयर फोर्स) और नए आविष्कृत **'रडार' तकनीक** ने हिटलर को पहली पराजय चखाई।

3. **द्वितीय चरण — युद्ध का भूमंडलीकरण: ऑपरेशन बारबरोसा और पर्ल हार्बर (1941):**

• **सोवियत संघ पर आक्रमण ('ऑपरेशन बारबरोसा', 22 जून 1941):** अनाक्रमण संधि को तोड़ते हुए हिटलर ने 30 लाख सैनिकों और 3,500 टैंकों के साथ सोवियत संघ पर तीन दिशाओं (लेनिनग्राद, मॉस्को और यूक्रेन/स्टालिनग्राद) से इतिहास का सबसे बड़ा जमीनी आक्रमण कर दिया।

• **पर्ल हार्बर पर जापानी हमला (7 दिसंबर 1941):** अमेरिका ने युद्ध के प्रारंभ में 'नकद दो और माल ले जाओ' (कैश एंड कैरी) तथा मार्च 1941 में मित्र राष्ट्रों को हथियार देने के लिए **'लेंड-लीज एक्ट' (उधार-पट्टा अधिनियम)** पारित किया था और अगस्त 1941 में रूजवेल्ट व चर्चिल ने **'अटलांटिक चार्टर'** जारी किया था। जब अमेरिका ने जापान के साम्राज्यवादी विस्तार के खिलाफ जापान को तेल और लोहे की आपूर्ति रोक दी, तो **7 दिसंबर 1941 की सुबह जापान के 350 से अधिक लड़ाकू विमानों ने हवाई द्वीप समूह स्थित अमेरिकी नौसैनिक अड्डे 'पर्ल हार्बर' पर अचानक भीषण बमबारी कर दी**, जिसमें 2,400 अमेरिकी सैनिक मारे गए और 8 युद्धपोत क्षतिग्रस्त हो गए। अगले ही दिन **8 दिसंबर 1941 को अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में कूद पड़ा**।

4. **तृतीय चरण — वर्ष 1942–1943 के तीन निर्णायक मोड़ (टर्निंग पॉइंट्स):**

• **मिडवे का नौसैनिक युद्ध (जून 1942):** प्रशांत महासागर में अमेरिकी नौसेना ने जापान के 4 प्रमुख विमानवाहक पोत डुबोकर जापानी विस्तार को रोक दिया।

• **अल-अलामीन का युद्ध (अक्टूबर–नवंबर 1942):** उत्तरी अफ्रीका (मिस्र) में ब्रिटिश सेनापति **जनरल बर्नार्ड मोंटगोमरी** ने जर्मनी के 'डेजर्ट फॉक्स' कहे जाने वाले सेनापति **इरविन रोमेल** को पराजित कर स्वेज नहर को बचा लिया।

• **स्टालिनग्राद का युद्ध (अगस्त 1942–फरवरी 1943 — युद्ध का सबसे बड़ा मोड़):** वोल्गा नदी के तट पर स्थित स्टालिनग्राद नगर के एक-एक मकान और गली के लिए पाँच महीने तक चले रक्तरंजित युद्ध में सोवियत मार्शल **जॉर्जी झुकोव** की लाल सेना ने जर्मन फील्ड मार्शल **फ्रेडरिक पॉलस** की छठी सेना को घेर लिया और 2 फरवरी 1943 को 91,000 जीवित बचे जर्मन सैनिकों ने आत्मसमर्पण कर दिया। स्टालिनग्राद ने हिटलर की अजेयता को सदा के लिए दफन कर दिया।

5. **चतुर्थ चरण — धुरी राष्ट्रों का पतन, डी-डे और परमाणु बम (1943–1945):**

• **इटली का पतन (1943):** जुलाई 1943 में मित्र राष्ट्रों के सिसिली आक्रमण के बाद मुसोलिनी को अपदस्थ कर दिया गया (अप्रैल 1945 में इतालवी छापामारों ने मुसोलिनी को गोली मार दी)।

• **नॉर्मंडी लैंडिंग / 'डी-डे' (6 जून 1944 — ऑपरेशन ओवरलॉर्ड):** अमेरिकी सेनापति **जनरल ड्वाइट आइजनहावर** के नेतृत्व में 6 जून 1944 को मित्र राष्ट्रों के 1.5 लाख सैनिक इंग्लिश चैनल पार कर उत्तरी फ्रांस के **नॉर्मंडी समुद्र तट** पर उतरे और पश्चिमी मोर्चा खोलकर अगस्त 1944 में पेरिस को मुक्त करा लिया।

• **बर्लिन का पतन और हिटलर की आत्महत्या (अप्रैल–मई 1945):** पूर्व से सोवियत लाल सेना और पश्चिम से अमेरिकी-ब्रिटिश सेना ने जर्मनी को दबा लिया। जब सोवियत सेना बर्लिन के केंद्र में पहुँच गई, तो **30 अप्रैल 1945 को हिटलर ने अपने भूमिगत बंकर में अपनी पत्नी ईवा ब्राउन के साथ आत्महत्या कर ली**। **7–8 मई 1945 (यूरोप विजय दिवस — यूरोप में विजय दिवस)** को जर्मनी ने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया।

• **हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु हमला (6 और 9 अगस्त 1945):** यूरोप में युद्ध समाप्त हो गया था, किंतु जापान अपने आत्मघाती **'कामिकाज़े'** विमान हमलों के साथ लड़ रहा था। अमेरिकी वैज्ञानिक **जे. रॉबर्ट ओपेनहाइमर** के नेतृत्व में गुप्त **'मैनहट्टन प्रोजेक्ट'** के तहत अमेरिका ने परमाणु बम विकसित कर लिया था। राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के आदेश पर **6 अगस्त 1945** को अमेरिकी बी-29 बमवर्षक विमान 'एनोला गे' ने जापान के **हिरोशिमा** नगर पर यूरेनियम-235 से बना पहला परमाणु बम (**'लिटिल बॉय'**) गिराया, और **9 अगस्त 1945** को **नागासाकी** पर प्लूटोनियम-239 से बना दूसरा परमाणु बम (**'फैट मैन'**) गिराया। पलक झपकते ही दोनों नगर राख के ढेर में बदल गए और दो लाख से अधिक निर्दोष लोग मारे गए। **15 अगस्त को सम्राट हिरोहितो ने रेडियो पर युद्ध समाप्ति की घोषणा की और 2 सितंबर 1945 को अमेरिकी युद्धपोत 'मिसौरी' पर जापान के औपचारिक आत्मसमर्पण के साथ द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त हो गया।**

9.2 संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ) का उदय एवं संरचना (24 अक्टूबर 1945)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 9.2 संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ) का उदय एवं संरचना (24 अक्टूबर 1945)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण के प्रमुख सोपान	**संयुक्त राष्ट्र संघ के 6 प्रमुख अंग**	**चार-नोड प्रवाह आरेख: द्वितीय विश्व युद्ध से संयुक्त राष्ट्र संघ के उदय तक**

द्वितीय विश्व युद्ध की भयावहता ने विश्व नेताओं को यह अनुभव करा दिया कि मानव जाति को तीसरे विश्व युद्ध से बचाने के लिए मृतप्राय 'राष्ट्र संघ' के स्थान पर एक अधिक शक्तिशाली और सार्वभौमिक अंतर्राष्ट्रीय संगठन अनिवार्य है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण के प्रमुख सोपान

1. **अटलांटिक चार्टर (अगस्त 1941):** रूजवेल्ट और चर्चिल द्वारा आठ सूत्रीय शांति घोषणापत्र।

2. **संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र (1 जनवरी 1942):** वाशिंगटन में 26 मित्र देशों ने हस्ताक्षर किए, जहाँ सर्वप्रथम राष्ट्रपति **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट द्वारा दिए गए नाम 'यूनाइटेड नेशंस' (संयुक्त राष्ट्र)** का प्रयोग किया गया।

3. **तेहरान सम्मेलन (नवंबर-दिसंबर 1943) एवं डम्बार्टन ओक्स सम्मेलन (अगस्त-अक्टूबर 1944):** डम्बार्टन ओक्स (वाशिंगटन) में अमेरिका, ब्रिटेन, सोवियत संघ और चीन ने संयुक्त राष्ट्र के ढाँचे का मसौदा तैयार किया।

4. **याल्टा सम्मेलन (फरवरी 1945):** क्रीमिया के याल्टा में **रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन (**'बिग थ्री'**)** ने सुरक्षा परिषद में **'वीटो पावर' (निषेधाधिकार)** के सूत्र पर सहमति बनाई।

5. **सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन और स्थापना (अप्रैल–अक्टूबर 1945):** 50 देशों (बाद में पोलैंड को मिलाकर **51 संस्थापक सदस्य देशों — जिनमें भारत भी एक संस्थापक सदस्य था, जिसकी ओर से सर रामास्वामी मुदलियार ने हस्ताक्षर किए**) ने **26 जून 1945 को सैन फ्रांसिस्को में 111 अनुच्छेदों वाले संयुक्त राष्ट्र चार्टर पर हस्ताक्षर किए**। **24 अक्टूबर 1945** को चार्टर के प्रभावी होने के साथ ही **संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ)** का विधिवत जन्म हुआ (इसीलिए 24 अक्टूबर को 'संयुक्त राष्ट्र दिवस' मनाया जाता है)। इसका मुख्यालय न्यूयॉर्क के मैनहट्टन द्वीप पर बनाया गया और नॉर्वे के **त्रिग्वे ली** इसके प्रथम महासचिव बने।

संयुक्त राष्ट्र संघ के 6 प्रमुख अंग

1. **महासभा (जनरल असेंबली):** इसे 'विश्व की लघु संसद' कहा जाता है जिसमें सभी सदस्य देशों (वर्तमान में 193 देश) को समान रूप से एक वोट का अधिकार है (प्रथम महिला अध्यक्ष: भारत की श्रीमती **विजया लक्ष्मी पंडित**, 1953)।

2. **सुरक्षा परिषद (सिक्योरिटी काउंसिल):** अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा के लिए उत्तरदायी सबसे शक्तिशाली कार्यपालिका अंग, जिसमें **15 सदस्य** होते हैं—**5 स्थायी सदस्य (पाँच स्थायी सदस्य: अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस और चीन — जिन्हें 'वीटो' का अधिकार प्राप्त है)** तथा महासभा द्वारा दो वर्ष के लिए चुने जाने वाले **10 अस्थायी सदस्य**।

3. **आर्थिक एवं सामाजिक परिषद (आर्थिक एवं सामाजिक परिषद):** 54 सदस्यों वाली परिषद जो यूनेस्को (यूनेस्को), विश्व स्वास्थ्य संगठन (विश्व स्वास्थ्य संगठन), अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन) और यूनिसेफ (यूनिसेफ) जैसी विशेष एजेंसियों के माध्यम से मानव कल्याण का कार्य करती है।

4. **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय):** इसका मुख्यालय **द हेग (नीदरलैंड)** में है (एकमात्र अंग जिसका मुख्यालय न्यूयॉर्क से बाहर है); इसमें 9 वर्ष के कार्यकाल के लिए चुने गए **15 न्यायाधीश** होते हैं।

5. **सचिवालय (सेक्रेटेरियट):** संगठन का प्रशासनिक अंग जिसका प्रमुख **महासचिव** (5 वर्ष का कार्यकाल) होता है।

6. **न्यास परिषद (ट्रस्टीशिप काउंसिल):** 1994 में पलाऊ की स्वतंत्रता के बाद इसका कार्य पूर्ण हो जाने से यह अंग स्थगित है।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
द्वितीय विश्व युद्ध में ब्रिटिश भारतीय सेना के **25 लाख (2.5 मिलियन) भारतीय सैनिकों** ने भाग लिया था, जो **मानव इतिहास की सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना (इतिहास की सबसे बड़ी स्वैच्छिक सेना)** थी! उधर **नेताजी सुभाष चंद्र बोस** ने 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' का उद्घोष कर जापान और जर्मनी के सहयोग से **'आजाद हिंद फौज' (आजाद हिंद फौज)** का गठन किया और कोहिमा-इम्फाल के मोर्चे तक ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती दी। द्वितीय विश्व युद्ध ने ब्रिटेन को आर्थिक व सैन्य रूप से इतना खोखला कर दिया कि युद्ध समाप्त होने के मात्र दो वर्ष बाद 1947 में उसे भारत छोड़ना पड़ा।

चार-नोड प्रवाह आरेख: द्वितीय विश्व युद्ध से संयुक्त राष्ट्र संघ के उदय तक

[नोड 1: हिटलर का पोलैंड पर आक्रमण (1 सितंबर 1939), ब्लिट्ज़क्रीग व फ्रांस का पतन (1940)] [नोड 2: ऑपरेशन बारबरोसा (जून 1941) व पर्ल हार्बर हमला (7 दिसंबर 1941)] [नोड 3: स्टालिनग्राद मोड़ (1943), नॉर्मंडी डी-डे (जून 1944) व हिरोशिमा-नागासाकी परमाणु बम (अगस्त 1945)] [नोड 4: याल्टा व सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन तथा संयुक्त राष्ट्र संघ का उदय (24 अक्टूबर 1945)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: राष्ट्र संघ (1920) बनाम संयुक्त राष्ट्र संघ (1945)

तुलना का आधार	राष्ट्र संघ (लीग ऑफ नेशंस, 1920)	संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ, 1945)
स्थापना एवं मुख्यालय	10 जनवरी 1920 (वर्साय संधि का भाग); मुख्यालय: जेनेवा (स्विट्ज़रलैंड)	24 अक्टूबर 1945 (स्वतंत्र चार्टर); मुख्यालय: न्यूयॉर्क (अमेरिका)
महाशक्तियों की भागीदारी	अमेरिका कभी सदस्य नहीं बना; सोवियत संघ देर से जुड़ा (1934); जर्मनी, जापान व इटली बाहर निकल गए	प्रारंभ से ही अमेरिका, सोवियत संघ (रूस), ब्रिटेन, फ्रांस और चीन (पाँच स्थायी सदस्य) स्थायी सदस्य बने
निर्णय प्रक्रिया	परिषद और सभा में लगभग सभी महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए 'सर्वसम्मति' अनिवार्य थी	महासभा में दो-तिहाई बहुमत और सुरक्षा परिषद में 15 में से 9 मत (5 स्थायी सदस्यों की सहमति सहित)
सैन्य हस्तक्षेप की शक्ति	राष्ट्र संघ के पास आक्रमणकारी को रोकने के लिए कोई सैन्य बल भेजने का अधिकार नहीं था	चार्टर के अध्याय 7 के तहत सुरक्षा परिषद को शांति रक्षक सेना (ब्लू हेलमेट्स) व सैन्य कार्रवाई का अधिकार है
सामाजिक-आर्थिक दायरा	मुख्यतः यूरोपीय कूटनीति तक सीमित (अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन को छोड़कर)	पूरे विश्व (एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका) के आर्थिक विकास, मानवाधिकार (1948), स्वास्थ्य व शिक्षा का विशाल तंत्र

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): द्वितीय विश्व युद्ध में मानवीय क्षति का वितरण एवं मित्र राष्ट्रों का सैन्य-औद्योगिक योगदान

- **द्वितीय विश्व युद्ध में कुल मृतकों (लगभग 7 करोड़) में अकेले सोवियत संघ (सोवियत संघ) और चीन का हिस्सा:**
  65% (सोवियत संघ के लगभग 2.7 करोड़ और चीन के 1.5 से 2 करोड़ लोग मारे गए)
- **यूरोप की यहूदी आबादी का होलोकॉस्ट में विनाश:** **67% (दो-तिहाई)** (यूरोप के 90 लाख यहूदियों में से 60 लाख की गैस चैंबरों में हत्या)
- **जर्मन सेना (वेहरमाख्त) की कुल सैन्य क्षति में पूर्वी मोर्चे (सोवियत लाल सेना के विरुद्ध) का अनुपात:**
  80% (हिटलर की सैन्य मशीन का 80% हिस्सा सोवियत मोर्चे पर नष्ट हुआ)
- **1945 में विश्व के कुल स्वर्ण भंडार और औद्योगिक उत्पादन में अमेरिका की हिस्सेदारी:** **55% औद्योगिक उत्पादन एवं 70% स्वर्ण भंडार**

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):
- **द्वितीय विश्व युद्ध के तीन प्रमुख सैन्य कोडनेम (एस-बी-ओ): "प्रथम—सी-लायन (ब्रिटेन पर हवाई हमला, 1940), द्वितीय—बारबरोसा (रूस पर हमला, 1941), तृतीय—ओवरलॉर्ड (नॉर्मंडी डी-डे, 1944)!"**
- **जापान पर गिराए गए दोनों परमाणु बम: "6 अगस्त को हिरोशिमा पर 'लिटिल बॉय' (यूरेनियम), 9 अगस्त को नागासाकी पर 'फैट मैन' (प्लूटोनियम)!"**

9.3 अध्याय 9: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #121 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. 23 अगस्त 1939 के 'जर्मन-सोवियत अनाक्रमण समझौते' (मोलोटोव-रिबेनट्रॉप पैक्ट) ने विश्व को क्यों चौंका दिया? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा]

• **उत्तर:** क्योंकि हिटलर का नाजीवाद और स्टालिन का साम्यवाद एक-दूसरे के जानी दुश्मन थे, फिर भी दोनों ने 10 वर्ष तक एक-दूसरे पर हमला न करने की संधि कर ली।

• **विस्तृत व्याख्या:** हिटलर पोलैंड पर आक्रमण करते समय सोवियत संघ को तटस्थ रखना चाहता था, जबकि स्टालिन को म्यूनिख समझौते के बाद ब्रिटेन-फ्रांस पर भरोसा नहीं था और वह अपनी सेना को तैयार करने के लिए समय चाहता था। इस संधि के मात्र 8 दिन बाद 1 सितंबर 1939 को हिटलर ने पोलैंड पर हमला कर युद्ध शुरू कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #122 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. द्वितीय विश्व युद्ध के प्रारंभिक महीनों (सितंबर 1939 से अप्रैल 1940) को 'नकली युद्ध' (नकली युद्ध) क्यों कहा जाता है? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 3 सितंबर 1939 को ब्रिटेन और फ्रांस ने जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा तो कर दी, किंतु अगले सात महीनों तक पश्चिमी मोर्चे पर जर्मनी पर कोई वास्तविक सैनिक हमला नहीं किया और अपनी रक्षात्मक 'मैजिनो लाइन' के पीछे बैठे रहे।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस निष्क्रियता का लाभ उठाकर हिटलर ने आराम से पोलैंड को कुचल दिया और अप्रैल-मई 1940 में अपनी 'ब्लिट्ज़क्रीग' रणनीति से नॉर्वे, बेल्जियम, हॉलैंड और फ्रांस को रौंद डाला।

अभ्यास प्रश्न #123 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. 'ऑपरेशन डायनेमो' (मई–जून 1940) क्या था? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** मई-जून 1940 में जब जर्मन सेना ने फ्रांस के **डंकर्क** समुद्र तट पर मित्र राष्ट्रों की सेना को घेर लिया, तब 800 से अधिक नौसैनिक जहाजों और मछुआरों की छोटी नौकाओं की मदद से **3,38,000 ब्रिटिश और फ्रांसीसी सैनिकों को सुरक्षित इंग्लैंड निकालने** का चमत्कारिक अभियान।

• **विस्तृत व्याख्या:** यदि डंकर्क में यह सेना बंदी बना ली जाती, तो ब्रिटेन के पास अपने द्वीप की रक्षा के लिए कोई प्रशिक्षित थल सेना नहीं बचती।

अभ्यास प्रश्न #124 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. 'ऑपरेशन बारबरोसा' (22 जून 1941) हिटलर की सबसे बड़ी सामरिक भूल कैसे सिद्ध हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** ब्रिटेन को पूरी तरह पराजित किए बिना हिटलर ने 22 जून 1941 को सोवियत संघ पर आक्रमण कर दिया, जिससे जर्मनी ठीक उसी 'दो मोर्चों के युद्ध' में फँस गया जिससे वह बचना चाहता था।

• **विस्तृत व्याख्या:** नेपोलियन के 1812 के अभियान की तरह हिटलर ने भी सोवियत संघ के विशाल भूगोल, स्टालिन द्वारा यूराल के पीछे स्थानांतरित किए गए उद्योगों, सोवियत नागरिकों के अदम्य राष्ट्रवाद और रूस की भयानक सर्दी ('जनरल विंटर') को कम आँका।

अभ्यास प्रश्न #125 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. अमेरिका का 'लेंड-लीज अधिनियम' (उधार-पट्टा कानून, मार्च 1941) क्या था? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** युद्ध में औपचारिक रूप से उतरने से पहले राष्ट्रपति रूजवेल्ट द्वारा पारित कराया गया कानून, जिसने अमेरिका को मित्र राष्ट्रों (ब्रिटेन, सोवियत संघ, चीन) को बिना तत्काल नकद भुगतान के असीमित हथियार, टैंक, विमान और खाद्यान्न उपलब्ध कराने का अधिकार दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** रूजवेल्ट ने इस कानून के माध्यम से अमेरिका को **"लोकतंत्र का शस्त्रागार" (आर्सनल ऑफ डेमोक्रेसी)** बना दिया और मित्र राष्ट्रों को कुल 50 अरब डॉलर से अधिक की सैन्य सहायता दी।

अभ्यास प्रश्न #126 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. 7 दिसंबर 1941 के 'पर्ल हार्बर हमले' के पीछे जापान का क्या रणनीतिक उद्देश्य था? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा]

• **उत्तर:** जापान दक्षिण-पूर्व एशिया (मलाया का रबर व टिन तथा डच ईस्ट इंडीज/इंडोनेशिया का तेल) पर अधिकार कर अपना 'वृहद पूर्वी एशिया सह-समृद्धि क्षेत्र' बनाना चाहता था, जिसके रास्ते में केवल अमेरिका का प्रशांत महासागरीय नौसैनिक बेड़ा ही बाधा था।

• **विस्तृत व्याख्या:** जापानी एडमिरल इमोरू यामामोतो ने पर्ल हार्बर पर अचानक हमला कर अमेरिकी बेड़े को नष्ट करना चाहा, किंतु संयोगवश उस दिन अमेरिकी विमानवाहक पोत (एयरक्राफ्ट कैरियर) बंदरगाह से बाहर अभ्यास पर थे इसलिए बच गए। यामामोतो ने स्वयं कहा था— "मुझे डर है कि हमने एक सोए हुए दैत्य (अमेरिका) को जगा दिया है।"

अभ्यास प्रश्न #127 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. 'स्टालिनग्राद के युद्ध' (1942–43) को द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा निर्णायक मोड़ (निर्णायक मोड़) क्यों माना जाता है? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** काकेशस के तेल क्षेत्रों पर कब्जा करने और वोल्गा नदी का मार्ग काटने के लिए हिटलर ने स्टालिनग्राद पर पूरी ताकत झोंक दी थी।

• **विस्तृत व्याख्या:** अगस्त 1942 से फरवरी 1943 तक चले इस महासंग्राम में सोवियत मार्शल झुकोव के घेराव अभियान ('ऑपरेशन यूरेनस') में जर्मनी के 3 लाख सैनिक नष्ट या बंदी हुए। इसके बाद से युद्ध के अंत तक जर्मन सेना केवल पीछे हटती रही और लाल सेना सीधे बर्लिन तक पहुँची।

अभ्यास प्रश्न #128 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. 'डी-डे' (6 जून 1944 — ऑपरेशन ओवरलॉर्ड) क्या था और इसका युद्ध पर क्या प्रभाव पड़ा? [कर्मचारी चयन आयोग / राष्ट्रीय रक्षा अकादमी / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 6 जून 1944 को जनरल आइजनहावर के नेतृत्व में मित्र राष्ट्रों (अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा) द्वारा फ्रांस के नॉर्मंडी तट पर किया गया इतिहास का सबसे बड़ा उभयचर (समुद्री-हवाई) सैन्य अवतरण।

• **विस्तृत व्याख्या:** स्टालिन लंबे समय से चर्चिल और रूजवेल्ट से पश्चिमी यूरोप में 'दूसरा मोर्चा' खोलने की माँग कर रहे थे ताकि सोवियत सेना पर जर्मनी का दबाव कम हो। नॉर्मंडी लैंडिंग ने पश्चिमी यूरोप को मुक्त कराया और हिटलर को पूर्व व पश्चिम दोनों ओर से कुचल दिया।

अभ्यास प्रश्न #129 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. फरवरी 1945 के 'याल्टा सम्मेलन' और जुलाई–अगस्त 1945 के 'पोट्सडैम सम्मेलन' के मुख्य निर्णय क्या थे? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर: याल्टा सम्मेलन** (रूजवेल्ट, चर्चिल, स्टालिन) में पराजित जर्मनी और बर्लिन को चार अधिकार क्षेत्रों (अमेरिका, सोवियत संघ, ब्रिटेन, फ्रांस) में बाँटने, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो प्रणाली और जर्मनी की हार के बाद सोवियत संघ के जापान के विरुद्ध युद्ध में उतरने का निर्णय हुआ।

• **विस्तृत व्याख्या: पोट्सडैम सम्मेलन** (ट्रूमैन, एटली, स्टालिन) में जर्मनी के वि-नाजीकरण (डी-नाजीफिकेशन), नूरेमबर्ग युद्ध अपराध मुकदमों और जापान को बिना शर्त आत्मसमर्पण की चेतावनी ('पोट्सडैम घोषणा') तय की गई।

अभ्यास प्रश्न #130 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. अमेरिका द्वारा अगस्त 1945 में हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम गिराए जाने के पीछे आधिकारिक तर्क और वास्तविक भू-राजनीतिक कारण क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** राष्ट्रपति ट्रूमैन का आधिकारिक तर्क था कि जापान की मुख्य भूमि पर जमीनी आक्रमण करने में 5 से 10 लाख अमेरिकी सैनिकों की जान जाती, इसलिए युद्ध को तुरंत समाप्त करने के लिए परमाणु बम गिराया गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** किंतु अनेक आधुनिक इतिहासकारों (जैसे गार अल्पेरोवित्ज़) का मानना है कि जापान पहले ही टूट चुका था; परमाणु बम गिराने का वास्तविक उद्देश्य **8 अगस्त 1945 को मंचूरिया में प्रवेश कर रही सोवियत लाल सेना को एशिया में प्रभाव बढ़ाने से रोकना** और आगामी शीत युद्ध में स्टालिन को अमेरिकी परमाणु शक्ति से डराना ('परमाणु कूटनीति') था।

अभ्यास प्रश्न #131 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. 'अटलांटिक चार्टर' (14 अगस्त 1941) क्या था और भारतीय राष्ट्रवादियों ने इस पर क्या प्रतिक्रिया दी? [संघ लोक सेवा आयोग प्रारंभिक परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** न्यूफाउंडलैंड के पास एक युद्धपोत पर अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री चर्चिल द्वारा जारी संयुक्त घोषणापत्र, जिसके तीसरे बिंदु में कहा गया था कि वे **"सभी लोगों के अपनी सरकार का स्वरूप चुनने के अधिकार (आत्मनिर्णय के अधिकार)"** का सम्मान करते हैं।

• **विस्तृत व्याख्या:** जब भारतीय नेताओं ने पूछा कि क्या यह चार्टर भारत की स्वतंत्रता पर भी लागू होगा, तो चर्चिल ने ब्रिटिश संसद में साफ मना कर दिया कि यह केवल हिटलर के अधीन यूरोपीय देशों के लिए है, ब्रिटिश साम्राज्य के उपनिवेशों के लिए नहीं! इसी पाखंड के विरोध में गांधीजी ने 1942 का 'भारत छोड़ो आंदोलन' छेड़ा।

अभ्यास प्रश्न #132 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. 1944 के 'ब्रेटन वुड्स सम्मेलन' से किन अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संस्थाओं का जन्म हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर स्थित ब्रेटन वुड्स में 44 मित्र देशों के सम्मेलन से **'अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष' (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष)** और **'अंतर्राष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक' (विश्व बैंक — विश्व बैंक)** का जन्म हुआ, जिन्हें 'ब्रेटन वुड्स जुड़वाँ' कहा जाता है।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1929 की महामंदी और संरक्षणवादी व्यापार युद्ध जैसी गलती दोबारा न हो, इसके लिए जे. एम. कीन्स और हैरी डेक्सटर व्हाइट ने युद्धोत्तर विश्व की मौद्रिक स्थिरता और पुनर्निर्माण हेतु यह ढाँचा तैयार किया।

अभ्यास प्रश्न #133 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 'वीटो पावर' (निषेधाधिकार) क्या है और इसकी क्या आलोचना की जाती है? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** संयुक्त राष्ट्र चार्टर के अनुच्छेद 27 के तहत सुरक्षा परिषद के 5 स्थायी सदस्यों (अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन) में से यदि कोई एक देश भी किसी प्रक्रियात्मक से इतर (गंभीर) प्रस्ताव के विपक्ष में वोट दे दे, तो वह प्रस्ताव पारित नहीं हो सकता—यही 'वीटो पावर' है।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसे 1945 में इसलिए रखा गया था ताकि महाशक्तियाँ संगठन छोड़कर न जाएँ; किंतु शीत युद्ध और आज के समय में महाशक्तियों ने अपने संकीर्ण स्वार्थों के लिए वीटो का सैकड़ों बार दुरुपयोग किया है, और भारत, ब्राजील, जापान व जर्मनी (जी-4 समूह) सुरक्षा परिषद के लोकतांत्रिक विस्तार की माँग कर रहे हैं।

अभ्यास प्रश्न #134 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. 'नूरेमबर्ग और टोक्यो युद्ध अपराध मुकदमे' (1945–46) का अंतर्राष्ट्रीय कानून में क्या महत्व है? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** युद्ध के बाद जर्मनी के नूरेमबर्ग और जापान के टोक्यो में अंतर्राष्ट्रीय सैन्य न्यायाधिकरण गठित कर नाजी व जापानी युद्ध अपराधियों पर मुकदमे चलाए गए।

• **विस्तृत व्याख्या:** नूरेमबर्ग मुकदमों ने अंतर्राष्ट्रीय कानून में पहली बार **'मानवता के विरुद्ध अपराध' (मानवता के विरुद्ध अपराध)** और **'नरसंहार' (नरसंहार)** को परिभाषित किया तथा यह सिद्धांत स्थापित किया कि कोई अधिकारी केवल "ऊपर के आदेश का पालन करने" का बहाना बनाकर मानवाधिकारों के हनन के दंड से बच नहीं सकता।

अभ्यास प्रश्न #135 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. द्वितीय विश्व युद्ध के वैश्विक भू-राजनीतिक परिणाम क्या रहे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** (1) यूरोप के 400 वर्ष पुराने वैश्विक आधिपत्य का अंत, (2) **संयुक्त राज्य अमेरिका** और **सोवियत संघ (सोवियत संघ)** के रूप में दो परस्पर विरोधी महाशक्तियों ('सुपरपावर्स') और द्विध्रुवीय शीत युद्ध का उदय, (3) परमाणु युग का सूत्रपात, (4) संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना, और (5) एशिया तथा अफ्रीका में साम्राज्यवाद के पतन (**वि-उपनिवेशीकरण**) की तीव्र लहर।

• **विस्तृत व्याख्या:** ब्रिटेन और फ्रांस भले ही विजेता मंच पर बैठे थे, किंतु आर्थिक और सैन्य रूप से वे द्वितीय श्रेणी की शक्तियाँ बन चुके थे और आगामी दो दशकों में उन्हें भारत, इंडोनेशिया, वियतनाम और अफ्रीकी महाद्वीप के दर्जनों देशों को स्वतंत्र करना पड़ा।

अध्याय 10: शीत युद्ध, गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन), सोवियत संघ का विघटन (1991), चीनी क्रांति (1949) एवं वि-उपनिवेशीकरण (एशिया व अफ्रीका)

10.1 शीत युद्ध (1945–1991): दो महाशक्तियों का वैचारिक, कूटनीतिक और छद्म युद्ध

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 10.1 शीत युद्ध (1945–1991): दो महाशक्तियों का वैचारिक, कूटनीतिक और छद्म युद्ध

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
शीत युद्ध का सूत्रपात और यूरोप का विभाजन (1946–1949)	**शीत युद्ध के प्रमुख संकट और टकराव के बिंदु (1950–1989)**

द्वितीय विश्व युद्ध में जब तक साझे शत्रु एडोल्फ हिटलर का अस्तित्व था, तब तक पूँजीवादी लोकतंत्र के अगुआ **संयुक्त राज्य अमेरिका** और साम्यवादी सर्वहारा अधिनायकत्व के अगुआ **सोवियत संघ (सोवियत संघ)** ने हाथ मिलाए रखा। किंतु 1945 में हिटलर और जापान के परास्त होते ही दोनों महाशक्तियों के बीच वैचारिक घृणा, अविश्वास, जासूसी, शस्त्रों की होड़ और सैन्य गुटबंदी का जो 45 वर्षीय तनावपूर्ण संघर्ष शुरू हुआ, उसे अमेरिकी पत्रकार **वाल्टर लिपमैन** और राजनीतिज्ञ **बर्नार्ड बारूच** ने **'शीत युद्ध' (कोल्ड वार)** नाम दिया। यह एक ऐसा युद्ध था जिसमें दोनों महाशक्तियाँ परमाणु विनाश ('पारस्परिक सुनिश्चित विनाश' — पारस्परिक सुनिश्चित विनाश) के डर से कभी आमने-सामने सीधे युद्ध के मैदान में नहीं लड़ीं, अपितु कोरिया, वियतनाम और अफगानिस्तान की धरती पर **'छद्म युद्ध' (प्रॉक्सी वार)** लड़ती रहीं। भारतीय प्रधानमंत्री **पंडित जवाहरलाल नेहरू** ने इसे **"स्नायु युद्ध" (दिमागों और नसों का युद्ध)** कहा था।

शीत युद्ध का सूत्रपात और यूरोप का विभाजन (1946–1949)

1. **फुल्टन भाषण और 'लौह आवरण' (आयरन कर्टेन, मार्च 1946):** 5 मार्च 1946 को अमेरिका के मिसौरी स्थित फुल्टन कॉलेज में पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री **विंस्टन चर्चिल** ने सोवियत विस्तारवाद के विरुद्ध ऐतिहासिक भाषण देते हुए कहा— "बाल्टिक में स्टेटिन से लेकर एड्रियाटिक में ट्रिएस्टे तक पूरे यूरोप महाद्वीप के आर-पार एक 'लौह आवरण' (आयरन कर्टेन) गिर चुका है।" इसी भाषण को शीत युद्ध का औपचारिक बिगुल माना जाता है।

2. **ट्रूमैन सिद्धांत (मार्च 1947) एवं अवरोधन की नीति (कंटेनमेंट पॉलिसी):** अमेरिकी राजनयिक **जॉर्ज केनन** के 'अवरोधन सिद्धांत' (साम्यवाद को वहीं रोक दो जहाँ वह है) के आधार पर राष्ट्रपति **हैरी ट्रूमैन** ने मार्च 1947 में घोषणा की कि अमेरिका विश्व में कहीं भी साम्यवादी दबाव का सामना कर रहे स्वतंत्र देशों (विशेषकर यूनान और तुर्की) को आर्थिक व सैन्य सहायता देगा।

3. **मार्शल योजना (जून 1947) बनाम मोलोटोव योजना (कॉमिनफॉर्म/कॉमेकॉन):** युद्ध से तबाह पश्चिमी यूरोप के देशों को गरीबी के कारण साम्यवाद की गोद में जाने से बचाने के लिए अमेरिकी विदेश मंत्री **जॉर्ज मार्शल** ने **'यूरोपीय पुनरुद्धार कार्यक्रम' (मार्शल प्लान)** के तहत 16 पश्चिमी यूरोपीय देशों को चार वर्षों में **13 अरब डॉलर से अधिक की आर्थिक सहायता** दी। स्टालिन ने इसे 'डॉलर साम्राज्यवाद' कहा और जवाब में पूर्वी यूरोप के साम्यवादी देशों (पोलैंड, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया, रोमानिया, बुल्गारिया, पूर्वी जर्मनी) के लिए **'मोलोटोव योजना'** और 1949 में **'कॉमेकॉन' (पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद)** का गठन किया।

4. **बर्लिन की नाकेबंदी (1948–49) और जर्मनी का विभाजन:** जून 1948 में जब अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने अपने तीनों पश्चिमी क्षेत्रों को मिलाकर नई मुद्रा जारी की, तो स्टालिन ने पश्चिमी बर्लिन के सारे सड़क और रेल मार्ग बंद कर दिए (**बर्लिन नाकेबंदी**)। अमेरिका और ब्रिटेन ने 11 महीनों तक 2.7 लाख उड़ानों (**'बर्लिन एयरलिफ्ट'**) द्वारा आकाश मार्ग से पश्चिमी बर्लिन के नागरिकों को कोयला व भोजन पहुँचाया। परिणामस्वरूप 1949 में जर्मनी दो देशों में बँट गया— पूंजीवादी **'पश्चिमी जर्मनी' (राजधानी: बॉन)** और साम्यवादी **'पूर्वी जर्मनी' (राजधानी: पूर्वी बर्लिन)**।

5. **सैन्य गुटों का निर्माण — नाटो (1949) बनाम वारसॉ पैक्ट (1955):**

• **नाटो (नाटो — उत्तर अटलांटिक संधि संगठन, 4 अप्रैल 1949):** वाशिंगटन में अमेरिका, कनाडा और 10 पश्चिमी यूरोपीय देशों ने सैन्य गठबंधन बनाया जिसका मूल सिद्धांत (अनुच्छेद 5) था कि "एक सदस्य पर हमला सभी सदस्यों पर हमला माना जाएगा।" एशिया में साम्यवाद को घेरने के लिए अमेरिका ने **1954 में 'सीटो' (सीटो — दक्षिण-पूर्व एशिया संधि संगठन)** और **1955 में 'बगदाद पैक्ट / सेंटो' (सेंटो)** बनाए।

• **वारसॉ संधि (वारसॉ संधि, मई 1955):** पश्चिमी जर्मनी को नाटो में शामिल किए जाने के जवाब में सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप के 7 साम्यवादी देशों के साथ पोलैंड की राजधानी वारसॉ में अपना सैन्य गठबंधन बनाया।

शीत युद्ध के प्रमुख संकट और टकराव के बिंदु (1950–1989)

• **कोरिया युद्ध (1950–1953):** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद कोरिया **38वीं समानांतर रेखा (38वीं समानांतर रेखा)** के सहारे सोवियत समर्थित उत्तरी कोरिया (किम इल-सुंग) और अमेरिकी समर्थित दक्षिणी कोरिया (सिंगमैन री) में बँट गया था। जून 1950 में उत्तरी कोरिया ने दक्षिण पर हमला कर दिया। संयुक्त राष्ट्र के झंडे तले अमेरिकी सेना (जनरल मैकआर्थर) और उत्तर के पक्ष में साम्यवादी चीन की सेना कूद पड़ी। **1953 के पनमुनजोम युद्धविराम** (जिसमें भारत के जनरल थिमैया की अध्यक्षता में तटस्थ राष्ट्र प्रत्यावर्तन आयोग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई) से युद्ध रुका।

• **स्वेज नहर संकट (1956):** मिस्र के राष्ट्रवादी राष्ट्रपति **गमाल अब्दुल नासिर** ने जब असवान बाँध के लिए पश्चिमी ऋण न मिलने पर जुलाई 1956 में **स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण** कर दिया, तब ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल ने मिस्र पर आक्रमण कर दिया। अमेरिका, सोवियत संघ और भारत (नेहरू) के कड़े विरोध के कारण ब्रिटेन-फ्रांस को पीछे हटना पड़ा, जिसने सिद्ध कर दिया कि ब्रिटेन और फ्रांस का महाशक्ति युग समाप्त हो चुका है।

• **बर्लिन की दीवार का निर्माण (अगस्त 1961):** पूर्वी बर्लिन से लाखों कुशल नागरिकों और युवाओं के पूँजीवादी पश्चिमी बर्लिन में पलायन को रोकने के लिए अगस्त 1961 में पूर्वी जर्मनी और सोवियत संघ (निकिता ख्रुश्चेव) ने रातोरात कँटीले तारों और कंक्रीट की 155 किलोमीटर लंबी **'बर्लिन की दीवार'** खड़ी कर दी, जो शीत युद्ध का सबसे बड़ा भौतिक प्रतीक बन गई।

• **क्यूबा मिसाइल संकट (अक्टूबर 1962 — जब विश्व परमाणु युद्ध के मुहाने पर आ खड़ा हुआ):** अमेरिका के तट से मात्र 90 मील दूर स्थित छोटे-से द्वीप **क्यूबा** में 1959 में **फिदेल कास्त्रो** और **चे ग्वेरा** ने अमेरिकी समर्थित तानाशाह बतिस्ता का तख्तापलट कर साम्यवादी शासन स्थापित किया। अप्रैल 1961 में अमेरिकी खुफिया एजेंसी (सी.आई.ए.) का कास्त्रो को हटाने का **'बे ऑफ पिग्स' (सूअरों की खाड़ी)** आक्रमण विफल रहा। क्यूबा की रक्षा के लिए सोवियत नेता **निकिता ख्रुश्चेव** ने मई-अक्टूबर 1962 में गुप्त रूप से क्यूबा में **परमाणु मिसाइलें** तैनात कर दीं, जिनकी मारक क्षमता में वाशिंगटन और न्यूयॉर्क सहित पूरा अमेरिका आ गया!

14 अक्टूबर 1962 को अमेरिकी यू-2 टोही विमान ने मिसाइलों की तस्वीरें ले लीं। अमेरिकी राष्ट्रपति **जॉन एफ. केनेडी** ने 22 अक्टूबर को क्यूबा की नौसैनिक घेराबंदी ('क्वारंटीन') का आदेश दिया। **16 से 28 अक्टूबर 1962 के वे 'तेरह दिन'** मानव इतिहास के सबसे भयावह दिन थे जब अमेरिकी और सोवियत परमाणु पनडुब्बियाँ आमने-सामने खड़ी थीं। अंततः दोनों नेताओं की समझदारी से समझौता हुआ—ख्रुश्चेव ने क्यूबा से मिसाइलें हटा लीं, और बदले में केनेडी ने क्यूबा पर कभी आक्रमण न करने का वचन दिया तथा गुप्त रूप से तुर्की से अमेरिकी जुपिटर मिसाइलें हटा लीं।

• **वियतनाम युद्ध (1955–1975):** फ्रांसीसी उपनिवेश हिंद-चीन (वियतनाम) के महान राष्ट्रवादी-साम्यवादी नेता **हो ची मिन्ह** और सेनापति जनरल गियाप ने **1954 में 'दिएन बिएन फू के युद्ध'** में फ्रांस को हराया। **1954 के जेनेवा समझौते** द्वारा वियतनाम **17वीं समानांतर रेखा** पर उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम में बँट गया। साम्यवाद को फैलने से रोकने के लिए ('डोमिनो थ्योरी') अमेरिका ने दक्षिणी वियतनाम में **5 लाख से अधिक सैनिक** उतार दिए और नेपाम बमों व 'एजेंट ऑरेंज' रसायन का प्रयोग किया। किंतु वियतनामी छापामारों (**'वियतकॉन्ग'**) के अदम्य साहस के सामने महाशक्ति अमेरिका को घुटने टेकने पड़े; 58,000 अमेरिकी सैनिकों की मौत के बाद 1973 में अमेरिका हटा और **1975 में साइगॉन के पतन के साथ वियतनाम का एकीकरण हो गया**।

• **तनाव शैथिल्य (देतांत — देतांत, 1963–1979) और नया शीत युद्ध (1979–85):** क्यूबा संकट के बाद वाशिंगटन और मॉस्को के बीच 'हॉटलाइन' स्थापित हुई, **1963 में आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि)**, **1968 में परमाणु अप्रसार संधि (परमाणु अप्रसार संधि)** और 1972 में निक्सन-ब्रेझनेव के बीच **साल्ट-I (स्टॉर्म ट्रूपर्सएल.टी.-I)** तथा 1975 में हेलसिंकी समझौता हुआ—इस तनाव में कमी के दौर को **'देतांत' (तनाव शैथिल्य)** कहा गया। किंतु **दिसंबर 1979 में सोवियत संघ द्वारा अफगानिस्तान में सैन्य हस्तक्षेप** और अमेरिकी राष्ट्रपति रोनाल्ड रीगन के 'स्टार वार्स' (सामरिक रक्षा पहल) कार्यक्रम से 'दूसरा शीत युद्ध' शुरू हो गया।

10.2 गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन): तृतीय विश्व की स्वतंत्र आवाज

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब एशिया और अफ्रीका के नव-स्वतंत्र देश सदियों की गुलामी से मुक्त हो रहे थे, तब उनके सामने यह संकट था कि यदि वे अमेरिका (नाटो/सीटो) या सोवियत संघ (वारसॉ पैक्ट) के सैन्य गुटों में शामिल होते हैं, तो अपनी नई-नई मिली संप्रभुता फिर से खो बैठेंगे और अपने संसाधन गरीबी मिटाने के बजाय हथियारों पर खर्च करने पड़ेंगे।

इसी ऐतिहासिक मोड पर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री **पंडित जवाहरलाल नेहरू** ने **'गुटनिरपेक्षता' (गुटनिरपेक्षता)** की दूरदर्शी संकल्पना प्रस्तुत की:

1. **एशियाई संबंध सम्मेलन (दिल्ली, मार्च 1947) और पंचशील (1954):** नेहरू ने 1947 में ही घोषणा की थी कि एशिया के देश अब यूरोप की शतरंज के प्यादे नहीं बनेंगे। 1954 में भारत और चीन के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के **'पंचशील सिद्धांत'** प्रतिपादित किए गए।

2. **बांडुंग सम्मेलन (अप्रैल 1955):** इंडोनेशिया के **बांडुंग** नगर में एशिया और अफ्रीका के **29 नव-स्वतंत्र देशों का ऐतिहासिक एफ्रो-एशियाई सम्मेलन** हुआ, जिसने गुटनिरपेक्ष आंदोलन की वैचारिक आधारशिला रखी।

3. **बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (सितंबर 1961) और पाँच संस्थापक स्तंभ:** सितंबर 1961 में यूगोस्लाविया की राजधानी **बेलग्रेड** में 25 सदस्य देशों के प्रथम शिखर सम्मेलन के साथ **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन)** की औपचारिक स्थापना हुई। इसके **पाँच महान संस्थापक जनक** थे:

- **पंडित जवाहरलाल नेहरू** (भारत के प्रधानमंत्री)
- **मार्शल जोसिप ब्रोज़ टीटो** (यूगोस्लाविया के राष्ट्रपति)
- **गमाल अब्दुल नासिर** (मिस्र के राष्ट्रपति)
- **डॉ. अहमद सुकर्णो** (इंडोनेशिया के राष्ट्रपति)
- **क्वामे एन्क्रूमा** (घाना के राष्ट्रपति)

नेहरू ने स्पष्ट किया कि **गुटनिरपेक्षता का अर्थ 'तटस्थता' (तटस्थता) या 'पलायनवाद' कदापि नहीं है**; अपितु इसका अर्थ किसी भी सैन्य गुट से बाहर रहकर अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर गुण-दोष (मेरिट) के आधार पर स्वतंत्र निर्णय लेना, उपनिवेशवाद व रंगभेद (दक्षिण अफ्रीका) का विरोध करना, नि:शस्त्रीकरण को बढ़ावा देना और 1973 के अल्जीयर्स सम्मेलन के माध्यम से **'नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था)** की माँग उठाना है। आज संयुक्त राष्ट्र के बाद गुटनिरपेक्ष आंदोलन विश्व का सबसे बड़ा मंच है जिसमें **120 विकासशील सदस्य देश** शामिल हैं।

10.3 सोवियत संघ (सोवियत संघ) का विघटन (1991): शीत युद्ध का अंत और एकध्रुवीय विश्व

जो सोवियत संघ स्टालिन के काल में लोहे के अनुशासन और अंतरिक्ष व परमाणु शक्ति (1957 में विश्व का पहला कृत्रिम उपग्रह **'स्पुतनिक-1'** और 1961 में प्रथम अंतरिक्ष यात्री **यूरी गागरिन**) से विश्व को चकित कर रहा था, वह 1980 के दशक तक आते-आते अंदर से खोखला क्यों हो गया?

सोवियत संघ के पतन के मुख्य कारण और मिखाइल गोर्बाचेव के सुधार (1985–1991)

1. **आर्थिक गतिरोध और सैन्य बोझ:** सोवियत अर्थव्यवस्था ने अपने सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) का **20% से 25% हिस्सा अमेरिका के साथ हथियारों की होड़, अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा और अफगानिस्तान युद्ध (1979–89 — जो सोवियत संघ का 'वियतनाम' या 'रिसता हुआ घाव' बन गया)** में झोंक दिया। परिणामस्वरूप आम नागरिकों के लिए दैनिक उपभोक्ता वस्तुओं, जूतों, कपड़ों और खाद्यान्न की भारी कमी हो गई।

2. **नौकरशाही की जड़ता और लोकतंत्र का अभाव:** 70 वर्षों से कम्युनिस्ट पार्टी के एकाधिकार के कारण प्रशासन भ्रष्ट और जनता से कटा हुआ हो चुका था।

3. **मिखाइल गोर्बाचेव की दो सुधार नीतियाँ — 'ग्लासनोस्त' और 'पेरेस्त्रोइका' (1985):** मार्च 1985 में युवा और सुधारवादी नेता **मिखाइल गोर्बाचेव** सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने। उन्होंने डूबती हुई सोवियत व्यवस्था को पुनर्जीवित करने के लिए दो क्रांतिकारी सुधार लागू किए:

- **पेरेस्त्रोइका (पेरेस्त्रोइका — आर्थिक पुनर्गठन):** राज्य के कठोर नियंत्रण में ढील देकर विकेंद्रीकरण, सीमित निजी उद्यम और विदेशी निवेश को अनुमति देना।
- **ग्लासनोस्त (ग्लासनोस्त — राजनीतिक खुलापन):** प्रेस पर से सेंसरशिप हटाना, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देना, राजनीतिक बंदियों की रिहाई और सरकार की आलोचना करने की छूट देना।

4. **पूर्वी यूरोप में साम्यवाद का पतन और बर्लिन की दीवार का ढहना (9 नवंबर 1989):** गोर्बाचेव ने घोषणा कर दी कि सोवियत सेना अब पूर्वी यूरोप के देशों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करेगी ('सिनात्रा सिद्धांत')। देखते-ही-देखते पोलैंड में लेक वालेसा के 'सॉलिडैरिटी' आंदोलन, हंगरी, चेकोस्लोवाकिया ('मखमली क्रांति' — वेलवेट रिवोल्यूशन) और रोमानिया में साम्यवादी सरकारें गिर गईं। **9 नवंबर 1989 की ऐतिहासिक रात को पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों ने हथौड़ों से 'बर्लिन की दीवार' को तोड़कर गिरा दिया** और **3 अक्टूबर 1990 को जर्मनी का पुन: एकीकरण** हो गया।

5. **राष्ट्रीयताओं का विद्रोह और 25 दिसंबर 1991 को सोवियत संघ का विघटन:** 'ग्लासनोस्त' की खुली हवा मिलते ही सोवियत संघ के 15 गणराज्यों—सबसे पहले **बाल्टिक गणराज्यों (लिथुआनिया, लातविया, एस्टोनिया)** और फिर जॉर्जिया व यूक्रेन—में स्वतंत्रता की मांग फूट पड़ी। अगस्त 1991 में कट्टरपंथी कम्युनिस्टों द्वारा गोर्बाचेव के तख्तापलट के असफल प्रयास के बाद रूसी गणराज्य के निर्वाचित राष्ट्रपति **बोरिस येल्तसिन** वास्तविक शक्ति बनकर उभरे। दिसंबर 1991 में रूस, यूक्रेन और बेलारूस ने सोवियत संघ को समाप्त करने की घोषणा की तथा **'स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल' (स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रकुल)** बनाया। **25 दिसंबर 1991** को मिखाइल गोर्बाचेव ने इस्तीफा दे दिया, क्रेमलिन के शिखर से लाल सोवियत झंडा (हँसिया-हथौड़ा) उतारकर रूस का

तिरंगा फहराया गया, और **सोवियत संघ (सोवियत संघ) पंद्रह स्वतंत्र राष्ट्रों में विघटित हो गया**। इसके साथ ही शीत युद्ध का अंत हो गया और **रूस (रूसी संघ)** को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ की स्थायी सीट व वीटो अधिकार प्राप्त हुआ।

10.4 चीनी क्रांति (1949): अफीम युद्धों से माओ त्से-तुंग की साम्यवादी क्रांति तक

प्राचीन सभ्यता वाले विशाल देश चीन पर **1644 से 1911 तक मंचू (किंग/चिंग) राजवंश** का शासन था। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटेन ने चीन से चाय और रेशम खरीदने के बदले भारत में उगाई गई **अफीम** चीन में तस्करी करना शुरू किया। जब चीनी सम्राट ने अफीम नष्ट करवाई, तो ब्रिटेन ने **प्रथम अफीम युद्ध (1839–1842 — नानकिंग की संधि, जिससे हांगकांग ब्रिटेन ने छीन लिया)** और **द्वितीय अफीम युद्ध (1856–1860)** में चीन को हराकर उस पर 'असमान संधियाँ' थोप दीं। यूरोपीय शक्तियों ने चीन को प्रभाव-क्षेत्रों में बाँटकर **'तरबूज की फाँकों की तरह काट डाला' (कटिंग ऑफ द चाइनीज मेलन)**। **ताइपिंग विद्रोह (1850–64)** और विदेशी ईसाइयों व साम्राज्यवादियों के विरुद्ध **'बॉक्सर विद्रोह' (1899–1901)** को कुचल दिया गया।

1911 की गणतांत्रिक क्रांति (डॉ. सन यात-सेन) से 1949 की साम्यवादी क्रांति (माओ त्से-तुंग) तक

1. **1911 की चीनी क्रांति और डॉ. सन यात-सेन:** 'आधुनिक चीन के राष्ट्रपिता' कहे जाने वाले **डॉ. सन यात-सेन** ने **'कोमितांग' (कोमितांग — राष्ट्रवादी दल)** की स्थापना की और जनता के सामने अपने **'तीन सिद्धांत' (सैन-मिन-चु-ई)** रखे—**राष्ट्रवाद, लोकतंत्र और जन-आजीविका (समाजवाद)**। अक्टूबर 1911 की क्रांति से फरवरी 1912 में 268 वर्ष पुराने मंचू राजवंश (अंतिम बाल सम्राट पू-यी) का अंत हुआ और चीन एशिया का पहला गणराज्य बना।

2. **कोमितांग (च्यांग काई-शेक) बनाम चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (माओ त्से-तुंग): 1919 के 'चार मई आंदोलन'** (वर्साय की संधि में जर्मनी के चीनी क्षेत्र शानतुंग को जापान को सौंपने के विरोध में छात्रों का राष्ट्रवादी आंदोलन) और रूसी क्रांति से प्रेरित होकर **जुलाई 1921 में शंघाई में 'चीनी कम्युनिस्ट पार्टी' (चीनी कम्युनिस्ट पार्टी)** की स्थापना हुई, जिसके प्रमुख नेता **माओ त्से-तुंग (माओ ज़ेदोंग)** और चाऊ एन-लाई बने।

1925 में सन यात-सेन की मृत्यु के बाद कोमितांग की कमान **जनरल च्यांग काई-शेक** के हाथों में आई, जिसने पूँजीपतियों और जमींदारों का साथ लेकर 1927 में कम्युनिस्टों का नरसंहार शुरू कर दिया।

3. **माओ का कृषक-आधारित साम्यवाद और 'लॉन्ग मार्च' (महाप्रयाण, 1934–1935):** सोवियत संघ के पारंपरिक मार्क्सवाद (जो शहरी औद्योगिक मजदूरों को क्रांति का आधार मानता था) से हटकर **माओ त्से-तुंग ने चीन की करोड़ों गरीब कृषक आबादी को साम्यवादी क्रांति का मुख्य इंजन बनाया** तथा छापामार युद्ध का प्रसिद्ध सिद्धांत दिया कि "बंदूक की नली से ही राजनीतिक सत्ता निकलती है!"

1934 में जब च्यांग काई-शेक की सेना ने दक्षिणी चीन (जियांग्शी) में कम्युनिस्टों को घेर लिया, तब माओ के नेतृत्व में लगभग 1 लाख लाल सैनिकों ने अपने प्राण बचाने के लिए **अक्टूबर 1934 से अक्टूबर 1935 तक 368 दिनों में 18 पर्वत श्रृंखलाओं और 24 नदियों को पार करते हुए 6,000 मील (लगभग 10,000 किमी) की अकल्पनीय पैदल यात्रा ('लॉन्ग मार्च' — महाप्रयाण)** कर उत्तरी चीन के **येनान (शानक्सी)** में अपना नया गढ़ बनाया। इस यात्रा में मात्र 20,000 सैनिक जीवित बचे, किंतु इसने माओ को चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का निर्विवाद सर्वोच्च नेता बना दिया।

4. **जापानी आक्रमण (1937–45) और 1 अक्टूबर 1949 की साम्यवादी विजय:** 1937–45 के जापानी आक्रमण के विरुद्ध दोनों दलों ने अस्थायी मोर्चा बनाया, किंतु 1945 में जापान की हार के तुरंत बाद गृहयुद्ध (1945–1949) फिर छिड़ गया। च्यांग काई-शेक की भ्रष्ट और मुद्रास्फीति से ग्रस्त सरकार अमेरिकी हथियारों के बावजूद किसानों का समर्थन खो बैठी, जबकि माओ की 'पीपुल्स लिबरेशन आर्मी' (जनमुक्ति सेना) ने भूमि सुधारों से पूरे देश के किसानों का दिल जीत लिया। अंततः च्यांग काई-शेक भागकर **ताइवान (फारमोसा द्वीप)** चला गया और **1 अक्टूबर 1949 को माओ त्से-तुंग ने बीजिंग के तियानमेन चौक से 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' (जनवादी गणराज्य चीन) की स्थापना की घोषणा की**।

5. **माओ के अभियान और देंग शियाओपिंग के सुधार (1978):** माओ ने त्वरित औद्योगीकरण और 'पीपुल्स कम्यून' के लिए **1958 में 'महान छलांग' (ग्रेट लीप फॉरवर्ड)** अभियान चलाया जो भयानक अकाल (3 करोड़ मौतें) के कारण विफल रहा, और अपनी वैचारिक पकड़ बनाए रखने के लिए **1966–1976 में उग्र 'सांस्कृतिक क्रांति' (कल्चरल रिवोल्यूशन — रेड गार्ड्स के माध्यम से)** चलाई। 1976 में माओ की मृत्यु के बाद **1978 में देंग शियाओपिंग** ने 'चार आधुनिकीकरण' और मुक्त बाजार सुधार लागू कर चीन को विश्व की विनिर्माण महाशक्ति बना दिया।

10.5 एशिया और अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण (वि-उपनिवेशीकरण, 1945–1994)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 10.5 एशिया और अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण (वि-उपनिवेशीकरण, 1945–1994)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2	प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
एशिया में वि-उपनिवेशीकरण: इंडोनेशिया और हिंद-चीन (वियतनाम)	**अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण: 'परिवर्तन की आँधी' और रंगभेद का अंत**	**चार-नोड प्रवाह आरेख: शीत युद्ध से सोवियत विघटन और उत्तर-औपनिवेशिक विश्व तक**

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों (ब्रिटेन, फ्रांस, हॉलैंड, पुर्तगाल, बेल्जियम) के चंगुल से एशिया और अफ्रीका के उपनिवेशों की मुक्ति और स्वतंत्र राष्ट्र-राज्यों के उदय की ऐतिहासिक प्रक्रिया को **'वि-उपनिवेशीकरण' (डी-कोलोनाइजेशन)** कहा जाता है। **15 अगस्त 1947 को भारत की स्वतंत्रता** ने इस पूरी प्रक्रिया में 'उत्प्रेरक' का कार्य किया।

एशिया में वि-उपनिवेशीकरण: इंडोनेशिया और हिंद-चीन (वियतनाम)

• **इंडोनेशिया की स्वतंत्रता (हॉलैंड/डच शासन से मुक्ति, 1949):** साढ़े तीन सौ वर्षों तक इंडोनेशिया ('डच ईस्ट इंडीज') अपने मसालों, रबर, टिन और पेट्रोलियम के कारण हॉलैंड (नीदरलैंड) का सबसे मूल्यवान उपनिवेश था। **डॉ. अहमद सुकर्णो** ने 1927 में 'इंडोनेशियन नेशनलिस्ट पार्टी' (इंडोनेशियन नेशनलिस्ट पार्टी) बनाई। द्वितीय विश्व युद्ध में जापान ने डचों को भगाकर इंडोनेशिया पर कब्जा कर लिया। **17 अगस्त 1945** को जापान के आत्मसमर्पण करते ही सुकर्णो और मोहम्मद हट्टा ने इंडोनेशिया की स्वतंत्रता की घोषणा कर दी और **'पंचशिला' (पाँच राष्ट्रीय सिद्धांत)** दिए। किंतु युद्ध के बाद हॉलैंड ने ब्रिटेन की मदद से पुनः इंडोनेशिया पर सैन्य हमला ('पुलिस एक्शन', 1947–48) कर दिया। इंडोनेशियाई छापामार प्रतिरोध और **जनवरी 1949 में नई दिल्ली में प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू द्वारा बुलाए गए 19 देशों के 'एशियाई सम्मेलन'** तथा संयुक्त राष्ट्र के दबाव में अंततः **दिसंबर 1949 को हॉलैंड ने इंडोनेशिया की संप्रभुता को मान्यता दे दी**।

• **हिंद-चीन (वियतनाम, लाओस, कंबोडिया) की फ्रांस से मुक्ति (1954):** फ्रांस ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में हिंद-चीन पर कब्जा किया था। महान क्रांतिकारी **हो ची मिन्ह** ने 1941 में **'वियतमिन्ह'** संगठन बनाया और सितंबर 1945 में हनोई में वियतनाम की स्वतंत्रता घोषित की। जब फ्रांस ने पुनः कब्जा करने के लिए युद्ध (प्रथम हिंद-चीन युद्ध, 1946–1954) छेड़ा, तो **मई 1954 में 'दिएन बिएन फू के किले'** में वियतनामी सेना ने फ्रांसीसी सेना को करारी शिकस्त दी और **1954 के जेनेवा समझौते** से फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन समाप्त हो गया।

अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण: 'परिवर्तन की आँधी' और रंगभेद का अंत

अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी के अंत में यूरोपीय शक्तियों ने अफ्रीका को कागज पर लकीरें खींचकर बाँट लिया था। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद **डब्ल्यू. ई. बी. ड्यू बोइस, जॉर्ज पैडमोर, क्वामे एन्क्रूमा और जोमो केन्याटा** द्वारा **1945 में मैनचेस्टर में आयोजित 'पाँचवीं अखिल अफ्रीकी कांग्रेस' (पैन-अफ्रीकन कांग्रेस)** ने अफ्रीकी राष्ट्रवाद में नई जान फूँक दी:

1. **घाना (गोल्ड कोस्ट) — उप-सहारा अफ्रीका का प्रथम स्वतंत्र राष्ट्र (1957):** पश्चिम अफ्रीका के ब्रिटिश उपनिवेश 'गोल्ड कोस्ट' में **क्वामे एन्क्रूमा** ने 'कन्वेंशन पीपुल्स पार्टी' (कन्वेंशन पीपुल्स पार्टी) बनाई और महात्मा गांधी के अहिंसक असहयोग से प्रेरित होकर 'सकारात्मक कार्रवाई' (पॉजिटिव एक्शन) आंदोलन चलाया। **6 मार्च 1957 को गोल्ड कोस्ट 'घाना' के नाम से स्वतंत्र होने वाला उप-सहारा अफ्रीका का पहला अश्वेत राष्ट्र बना**, जिसने पूरे महाद्वीप में आजादी की लहर दौड़ा दी।

2. **वर्ष 1960 — 'अफ्रीका का वर्ष':** एक ही वर्ष (1960) में अफ्रीका के **17 देश** (नाइजीरिया, सेनेगल, कांगो, कैमरून, माली, मेडागास्कर आदि) स्वतंत्र हुए! ब्रिटिश प्रधानमंत्री हेराल्ड मैकमिलन ने फरवरी 1960 में केपटाउन में कहा— "इस महाद्वीप में परिवर्तन की आँधी (विंड ऑफ चेंज) चल रही है।" **मई 1963 में आदिस अबाबा (इथियोपिया)** में 32 स्वतंत्र अफ्रीकी देशों ने मिलकर **'अफ्रीकी एकता संगठन' (अफ्रीकी एकता संगठन — जो 2002 में 'अफ्रीकी संघ' अफ्रीकी संघ बना)** की स्थापना की।

3. **केन्या का 'माऊ-माऊ विद्रोह' (1952–1963):** पूर्वी अफ्रीका के ब्रिटिश उपनिवेश केन्या में उपजाऊ उच्चभूमि ('व्हाइट हाइलैंड्स') पर श्वेत अंग्रेज बसने वालों (सेटलर) ने कब्जा कर स्थानीय **'किकूयू' जनजाति** को भूमिहीन बना दिया था। इसके विरुद्ध 1952–56 में उग्र **'माऊ-माऊ सशस्त्र विद्रोह'** हुआ। अंततः राष्ट्रपिता **जोमो केन्याटा** ('केन्या की जलती मशाल') के नेतृत्व में **दिसंबर 1963 में केन्या स्वतंत्र हुआ**।

4. **अल्जीरिया का रक्तरंजित मुक्ति संग्राम (फ्रांस से मुक्ति, 1954–1962):** उत्तरी अफ्रीका के अल्जीरिया में 10 लाख से अधिक फ्रांसीसी नागरिक ('कोलोन') बसे हुए थे, इसलिए फ्रांस अल्जीरिया को अपना उपनिवेश नहीं बल्कि 'फ्रांस का ही प्रांत' मानता था और किसी भी कीमत पर छोड़ने को तैयार नहीं

था। इसके विरुद्ध **अहमद बेन बेल्ला** के नेतृत्व में **'राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा' (राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा)** ने नवंबर 1954 से 8 वर्षों तक भीषण छापामार युद्ध लड़ा जिसमें **लगभग 10 लाख अल्जीरियाई नागरिक मारे गए**। इस युद्ध के संकट ने स्वयं फ्रांस में 'चतुर्थ गणराज्य' को गिरा दिया और **जनरल चार्ल्स डी गॉल** सत्ता में आए, जिन्होंने यथार्थ को स्वीकार करते हुए **मार्च 1962 के 'एवियन समझौते'** द्वारा **जुलाई 1962 में अल्जीरिया को स्वतंत्र कर दिया**।

5. **पुर्तगाली उपनिवेश (अंगोला व मोजाम्बिक, 1975) और दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद (अपार्थाइड) का अंत (1994):** 1974 में पुर्तगाल में तानाशाही गिरने ('कार्नेशन क्रांति') के बाद 1975 में **अंगोला** (डॉ. अगोस्तिन्हो नेटो) और **मोजाम्बिक** (समोरा माशेल) स्वतंत्र हुए। अंत में, **दक्षिण अफ्रीका** की अल्पसंख्यक गोरी सरकार की अमानवीय **'रंगभेद नीति' (रंगभेद)** के विरुद्ध **'अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस' (अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस)** के नेता **नेल्सन मंडेला** ने रॉबेन द्वीप की जेल में **27 वर्ष (1964–1990)** का कारावास सहा। वैश्विक प्रतिबंधों और आंतरिक संघर्ष के आगे झुकते हुए 1990 में राष्ट्रपति एफ. डब्ल्यू. डी क्लर्क ने मंडेला को रिहा किया और **अप्रैल 1994 के प्रथम बहु-नस्लीय लोकतांत्रिक चुनाव में नेल्सन मंडेला के राष्ट्रपति बनने के साथ ही अफ्रीका से उपनिवेशवाद और नस्लवाद के अंतिम अवशेष का अंत हो गया**।

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)
जब मार्च 1949 में डच (हॉलैंड) सेना ने इंडोनेशिया के राष्ट्रपति **डॉ. सुकर्णो** और उपराष्ट्रपति **मोहम्मद हट्टा** को योग्याकार्ता में बंदी बना लिया था, तब प्रधानमंत्री **जवाहरलाल नेहरू** के गुप्त निर्देश पर भारत के महान पायलट और राजनेता **बीजू पटनायक** अपने डकोटा विमान को डच लड़ाकू विमानों की गोलियों से बचाते हुए इंडोनेशिया में उतरे और वहाँ के प्रधानमंत्री सुल्तान
शहरिर व मोहम्मद हट्टा को सुरक्षित निकालकर नई दिल्ली ले आए थे! इसी ऐतिहासिक योगदान के लिए इंडोनेशिया सरकार ने बीजू पटनायक को अपना सर्वोच्च नागरिक सम्मान **'भूमि पुत्र'** प्रदान किया था।

चार-नोड प्रवाह आरेख: शीत युद्ध से सोवियत विघटन और उत्तर-औपनिवेशिक विश्व तक

[नोड 1: ट्रूमैन सिद्धांत, मार्शल प्लान (1947), नाटो (1949) बनाम वारसॉ पैक्ट (1955) व चीनी क्रांति (1949)] [नोड 2: बांडुंग (1955) व बेलग्रेड सम्मेलन (1961) द्वारा गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन) तथा एशिया-अफ्रीका का वि-उपनिवेशीकरण] [नोड 3: बर्लिन दीवार (1961), क्यूबा मिसाइल संकट (1962) व वियतनाम युद्ध (1955-75)] [नोड 4: गोर्बाचेव के ग्लासनोस्त-पेरेस्त्रोइका सुधार, बर्लिन दीवार का पतन (1989) व सोवियत संघ का विघटन (25 दिसंबर 1991)]

विस्तृत तुलनात्मक सारणी: पूँजीवादी पश्चिमी गुट (अमेरिका) बनाम साम्यवादी पूर्वी गुट (सोवियत संघ) बनाम गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन)

तुलना का आधार	पश्चिमी पूँजीवादी गुट (प्रथम विश्व)	पूर्वी साम्यवादी गुट (द्वितीय विश्व)	गुटनिरपेक्ष आंदोलन — गुटनिरपेक्ष आंदोलन (तृतीय विश्व)
नेतृत्वकर्ता राष्ट्र	संयुक्त राज्य अमेरिका (उस्टॉर्म ट्रूपर्स)	सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ (सोवियत संघ)	भारत (नेहरू), यूगोस्लाविया (टीटो), मिस्र (नासिर), इंडोनेशिया (सुकर्णो), घाना (एन्क्रूमा)
राजनीतिक एवं आर्थिक विचारधारा	उदारवादी बहुदलीय लोकतंत्र एवं मुक्त बाजार पूँजीवाद	मार्क्सवादी-लेनिनवादी एकदलीय शासन एवं राज्य-नियंत्रित नियोजित समाजवाद	राजनीतिक स्वतंत्रता, मिश्रित/विकासशील अर्थव्यवस्था एवं शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व (पंचशील)
सैन्य गठबंधन प्रणाली	नाटो (नाटो, 1949), सीटो (सीटो, 1954), सेंटो (सेंटो, 1955)	वारसॉ संधि (वारसॉ संधि, 1955)	किसी भी महाशक्ति के सैन्य गुट में शामिल न होने की स्वतंत्र विदेश नीति
आर्थिक सहायता तंत्र	मार्शल योजना (1947), ब्रेटन वुड्स संस्थाएँ (अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक)	मोलोटोव योजना एवं कॉमेकॉन (कॉमेकॉन, 1949)	दक्षिण-दक्षिण सहयोग, अंकटाड (अंकटाड) एवं नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था (नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था, 1973)
शीत युद्ध के प्रति दृष्टिकोण	साम्यवाद के 'अवरोधन' (कंटेनमेंट) और परमाणु प्रतिरोध की नीति	विश्व क्रांति एवं पूँजीवादी घेराबंदी के विरुद्ध समाजवादी खेमे की रक्षा	शीत युद्ध के तनाव को कम करना, परमाणु निःशस्त्रीकरण, उपनिवेशवाद व रंगभेद का उन्मूलन

सांख्यिकीय चार्ट डेटा (%): वि-उपनिवेशीकरण (1945–1995), शीत युद्ध रक्षा व्यय एवं संयुक्त राष्ट्र सदस्यता का विस्तार

- **संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ) में एशियाई-अफ्रीकी व विकासशील सदस्य देशों का अनुपात (1945 से 1995):**
  1945 में 51 सदस्यों में मात्र 24% से बढ़कर 1995 में 185 सदस्यों में 78%
- **1980 के दशक में सकल घरेलू उत्पाद (सकल घरेलू उत्पाद) में सैन्य-रक्षा व्यय का अनुपात:** सोवियत संघ (सोवियत संघ):
  22%–25% बनाम संयुक्त राज्य अमेरिका (उस्टॉर्म ट्रूपर्स):
  6.5% (इसी असहनीय सैन्य भार ने सोवियत अर्थव्यवस्था को तोड़ा)

• **1991 में विघटित सोवियत संघ (सोवियत संघ) की कुल जनसंख्या व क्षेत्रफल में अकेले 'रूस' का अनुपात:** **76% क्षेत्रफल एवं 51% जनसंख्या** (शेष 14 गणराज्यों के पास 24% क्षेत्रफल और 49% आबादी थी)

• **अफ्रीकी महाद्वीप का यूरोपीय औपनिवेशिक शासन के अधीन क्षेत्रफल (1945 बनाम 1980):** **1945 में 90% गुलाम** **1980 तक 98% स्वतंत्र**

★ स्मृति ट्रिक (स्मृति सूत्र):

• **गुटनिरपेक्ष आंदोलन, 1961) के 5 संस्थापक जनक (नेहरू-टीटो-नासिर-सुकर्णो-एन्क्रूमा): "नेहरू (भारत) और टीटो (यूगोस्लाविया) ने नासिर (मिस्र), सुकर्णो (इंडोनेशिया) और एन्क्रूमा (घाना) के साथ बेलग्रेड में शांति का दीप जलाया!"**

• **गोर्बाचेव के दो सुधार और सोवियत विघटन: "पेरेस्त्रोइका ने अर्थव्यवस्था खोली, ग्लासनोस्त ने जुबान खोली — 1989 में बर्लिन की दीवार गिरी और 1991 में 15 देशों की झोली!"**

• **एशिया-अफ्रीका वि-उपनिवेशीकरण के नायक: "भारत में गांधी-नेहरू, इंडोनेशिया में सुकर्णो, वियतनाम में हो ची मिन्ह, घाना में एन्क्रूमा, केन्या में केन्याटा और दक्षिण अफ्रीका में मंडेला!"**

10.6 अध्याय 10: उच्चस्तरीय विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर (15 विगत वर्षीय प्रश्नोत्तर — विस्तृत व्याख्या सहित)

अभ्यास प्रश्न #136 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. विंस्टन चर्चिल के 'फुल्टन भाषण' (मार्च 1946) और राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन के 'ट्रूमैन सिद्धांत' (मार्च 1947) ने शीत युद्ध को किस प्रकार संस्थागत रूप दिया? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** चर्चिल के फुल्टन भाषण ने 'लौह आवरण' (आयरन कर्टेन) शब्दावली देकर सोवियत संघ को मित्र से शत्रु घोषित किया, और ट्रूमैन सिद्धांत ने अमेरिकी विदेश नीति को 'पृथकतावाद' से हटाकर स्थायी रूप से 'साम्यवाद के वैश्विक अवरोधन' (कंटेनमेंट) पर केंद्रित कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** यूनान और तुर्की में साम्यवादी प्रभाव को रोकने के लिए 40 करोड़ डॉलर की सहायता देकर ट्रूमैन ने विश्व को वैचारिक रूप से दो खेमों ('स्वतंत्र लोकतांत्रिक विश्व' बनाम 'अधिनायकवादी साम्यवादी विश्व') में बाँट दिया।

अभ्यास प्रश्न #137 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 'मार्शल योजना' (1947) क्या थी और इसके पीछे अमेरिका के आर्थिक व राजनीतिक उद्देश्य क्या थे? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** जून 1947 में अमेरिकी विदेश मंत्री जॉर्ज मार्शल द्वारा प्रस्तुत 'यूरोपीय पुनरुद्धार कार्यक्रम', जिसके तहत पश्चिमी यूरोप के 16 देशों के पुनर्निर्माण के लिए 13 अरब डॉलर से अधिक की आर्थिक सहायता दी गई।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके दोहरे उद्देश्य थे—राजनीतिक रूप से युद्ध से ध्वस्त फ्रांस, इटली और पश्चिमी जर्मनी में भूख और बेरोजगारी को मिटाकर वहाँ की कम्युनिस्ट पार्टियों को सत्ता में आने से रोकना; और आर्थिक रूप से यूरोप को समृद्ध बनाकर अमेरिकी कारखानों के तैयार माल के लिए एक विशाल बाजार तैयार करना।

अभ्यास प्रश्न #138 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. अक्टूबर 1962 के 'क्यूबा मिसाइल संकट' को शीत युद्ध का चरम बिंदु क्यों माना जाता है और इसके क्या सकारात्मक परिणाम निकले? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** अक्टूबर 1962 में जब सोवियत संघ ने अमेरिका के ठीक पड़ोस में स्थित क्यूबा में परमाणु मिसाइलें तैनात कर दीं और राष्ट्रपति केनेडी ने क्यूबा की नौसैनिक नाकेबंदी कर दी, तब दुनिया तीसरे (परमाणु) विश्व युद्ध के सबसे करीब पहुँच गई थी।

• **विस्तृत व्याख्या:** ख्रुश्चेव और केनेडी की सूझबूझ से संकट टलने के बाद दोनों महाशक्तियों को परमाणु युद्ध के खतरे का अहसास हुआ, जिसके परिणामस्वरूप मॉस्को और वाशिंगटन के बीच सीधी 'हॉटलाइन' स्थापित हुई, **1963 में आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि)** पर हस्ताक्षर हुए और 'देतांत' (तनाव शैथिल्य) की शुरुआत हुई।

अभ्यास प्रश्न #139 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. वियतनाम युद्ध (1955–1975) में अमेरिका ने क्यों हस्तक्षेप किया और अपार सैन्य शक्ति के बावजूद वह क्यों पराजित हुआ? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर:** अमेरिकी राष्ट्रपति आइजनहावर की **'डोमिनो थ्योरी'** (कि यदि वियतनाम साम्यवादी हो गया, तो पासों की कतार की तरह लाओस, कंबोडिया, थाईलैंड, मलेशिया और पूरा दक्षिण-पूर्व एशिया साम्यवादी हो जाएगा) के कारण अमेरिका ने दक्षिणी वियतनाम में सैन्य हस्तक्षेप किया।

• **विस्तृत व्याख्या:** अमेरिका ने द्वितीय विश्व युद्ध से भी तीन गुना अधिक बम वियतनाम पर गिराए, किंतु हो ची मिन्ह के राष्ट्रवादी नेतृत्व, वियतकॉन्ग छापामारों की सुरंग युद्ध प्रणाली, घने जंगलों के भूगोल, सोवियत-चीनी रसद सहायता और स्वयं अमेरिका के भीतर युद्ध-विरोधी जन-प्रदर्शनों के कारण 1973–75 में अमेरिका को पराजित होकर लौटना पड़ा।

अभ्यास प्रश्न #140 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. 1956 के 'स्वेज नहर संकट' के कारण और वैश्विक परिणाम क्या थे? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** मिस्र के राष्ट्रपति गमाल अब्दुल नासिर द्वारा असवान बाँध के निर्माण हेतु जुलाई 1956 में स्वेज नहर कंपनी का राष्ट्रीयकरण किए जाने पर ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल ने मिस्र पर त्रिपक्षीय सैन्य हमला कर दिया।

• **विस्तृत व्याख्या:** शीत युद्ध के दुर्लभ क्षण में अमेरिका और सोवियत संघ दोनों ने तथा भारत (नेहरू) ने इस औपनिवेशिक आक्रमण की कड़ी निंदा की। अमेरिकी आर्थिक दबाव के आगे ब्रिटेन के प्रधानमंत्री एंथनी ईडन को सेना वापस बुलानी पड़ी और इस्तीफा देना पड़ा। इस घटना ने ब्रिटेन के साम्राज्यवादी दंभ को सदा के लिए समाप्त कर नासिर को अरब राष्ट्रवाद का नायक बना दिया।

अभ्यास प्रश्न #141 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. गुटनिरपेक्ष आंदोलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन) के उदय में 1955 के 'बांडुंग सम्मेलन' और 1961 के 'बेलग्रेड सम्मेलन' की भूमिका स्पष्ट कीजिए। [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / स्नातकोत्तर शिक्षक इतिहास]

• **उत्तर:** अप्रैल 1955 के बांडुंग (इंडोनेशिया) सम्मेलन में 29 एशियाई और अफ्रीकी देशों ने उपनिवेशवाद-विरोध और पंचशील के सिद्धांतों को स्वीकार कर गुटनिरपेक्ष आंदोलन की वैचारिक नींव रखी।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके छह वर्ष बाद सितंबर 1961 में बेलग्रेड (यूगोस्लाविया) में नेहरू, टीटो, नासिर, सुकर्णो और एन्क्रूमा की पहल पर 25 देशों का प्रथम गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन हुआ, जिसने द्विध्रुवीय शीत युद्ध के बीच 'तृतीय विश्व' की स्वतंत्र आवाज को संस्थागत रूप दिया।

अभ्यास प्रश्न #142 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. "गुटनिरपेक्षता का अर्थ तटस्थता (तटस्थता) नहीं, अपितु रणनीतिक स्वायत्तता है।" इस कथन की विवेचना कीजिए। [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** स्विट्जरलैंड या ऑस्ट्रिया जैसी 'तटस्थता' का अर्थ युद्ध और शांति दोनों में अंतर्राष्ट्रीय विवादों से अलग-थलग रहना है; जबकि भारत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन की 'गुटनिरपेक्षता' एक सक्रिय और गतिशील विदेश नीति थी।

• **विस्तृत व्याख्या:** पंडित नेहरू ने कहा था कि "जहाँ स्वतंत्रता खतरे में हो, जहाँ न्याय का गला घोंटा जा रहा हो या आक्रमण हो रहा हो, वहाँ हम तटस्थ नहीं रह सकते और न ही रहेंगे।" भारत ने कोरिया युद्ध (1950–53), हिंद-चीन (1954), स्वेज संकट (1956) और कांगो संकट (1960) में सक्रिय मध्यस्थ और शांति रक्षक की भूमिका निभाई।

अभ्यास प्रश्न #143 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. मिखाइल गोर्बाचेव की 'ग्लासनोस्त' और 'पेरेस्त्रोइका' नीतियाँ सोवियत संघ को बचाने के लिए लाई गई थीं, किंतु वे ही उसके विघटन का कारण कैसे बन गईं? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** गोर्बाचेव का उद्देश्य लोकतांत्रिक समाजवाद के माध्यम से जड़ हो चुकी सोवियत अर्थव्यवस्था में नई जान फूँकना था, किंतु दोनों सुधारों के बीच संतुलन टूट गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** 'पेरेस्त्रोइका' ने पुरानी राज्य-नियंत्रित वितरण प्रणाली को तो तोड़ दिया, पर उसकी जगह तुरंत कुशल बाजार तंत्र खड़ा नहीं हो सका जिससे वस्तुओं की भारी किल्लत और महँगाई हो गई; वहीं 'ग्लासनोस्त' (खुलेपन) से मिली अभिव्यक्ति की आजादी का उपयोग बाल्टिक, यूक्रेनी और काकेशस गणराज्यों के राष्ट्रवादियों ने इस आर्थिक असंतोष को सोवियत संघ से अलग होने के आंदोलन में बदलने के लिए कर लिया।

अभ्यास प्रश्न #144 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. 1989 में 'बर्लिन की दीवार के पतन' का विश्व इतिहास में क्या प्रतीकात्मक और राजनीतिक महत्व है? [राष्ट्रीय रक्षा अकादमी एवं सम्मिलित रक्षा सेवा / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1961 में बनाई गई बर्लिन की दीवार 28 वर्षों तक यूरोप और विश्व के वैचारिक विभाजन ('लौह आवरण') का सबसे ठोस प्रतीक थी।

• **विस्तृत व्याख्या:** 9 नवंबर 1989 को बर्लिन की दीवार का गिरना और 3 अक्टूबर 1990 को जर्मनी का एकीकरण पूर्वी यूरोप से साम्यवादी शासन के अंत, शीत युद्ध की समाप्ति और यूरोपीय एकीकरण की नई शुरुआत का प्रतीक बना।

अभ्यास प्रश्न #145 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. 1911 की चीनी क्रांति और डॉ. सन यात-सेन के 'तीन जन-सिद्धांत' क्या थे? [विश्वविद्यालय अनुदान आयोग-राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा / दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड स्नातकोत्तर शिक्षक]

• **उत्तर:** 1911 की चीनी क्रांति ने भ्रष्ट और विदेशी शक्तियों के सामने घुटने टेक चुके मंचू राजवंश को उखाड़कर चीन में गणतंत्र की स्थापना की।

• **विस्तृत व्याख्या:** डॉ. सन यात-सेन के तीन सिद्धांत ('सैन-मिन-चु-ई') थे—(1) **राष्ट्रवाद (मिनज़ू):** मंचू शासन और विदेशी साम्राज्यवादी असमान संधियों से मुक्ति; (2) **लोकतंत्र (मिनचुआन):** जनता द्वारा निर्वाचित संवैधानिक गणतांत्रिक सरकार; और (3) **जन-आजीविका / समाजवाद (मिनशेंग):** भूमि के स्वामित्व का समानीकरण और पूँजी का नियमन।

अभ्यास प्रश्न #146 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. चीनी साम्यवादी क्रांति (1949) में माओ त्से-तुंग का मार्क्सवाद में क्या मौलिक योगदान था और 'लॉन्ग मार्च' (1934–35) का क्या महत्व था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** कार्ल मार्क्स और लेनिन दोनों ने 'शहरी औद्योगिक श्रमिक वर्ग' (सर्वहारा) को क्रांति का अग्रदूत माना था, किंतु कृषि-प्रधान चीन में माओ त्से-तुंग ने **'ग्रामीण किसानों' को साम्यवादी क्रांति की मुख्य शक्ति** बनाकर और ग्रामीण आधार क्षेत्रों से शहरों को घेरने की छापामार रणनीति से क्रांति सफल की।

• **विस्तृत व्याख्या:** 1934–35 की 6,000 मील लंबी 'लॉन्ग मार्च' (महाप्रयाण) ने लाल सेना को च्यांग काई-शेक के घेरे से बचाकर उत्तरी चीन (येनान) पहुँचाया और रास्ते भर किसानों के बीच भूमि सुधारों का संदेश फैलाकर माओ की विजय सुनिश्चित कर दी।

अभ्यास प्रश्न #147 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. माओ त्से-तुंग की 'महान छलांग' (महान छलांग, 1958) और 'महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति' (1966–1976) क्या थीं? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / केंद्रीय विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर प्रवेश परीक्षा]

• **उत्तर: 'महान छलांग' (1958–60)** चीन को मात्र 15 वर्षों में ब्रिटेन से आगे निकालने के लिए शुरू किया गया अभियान था, जिसमें ग्रामीण किसानों को विशाल **'पीपुल्स कम्यून'** में संगठित किया गया और हर घर के पिछवाड़े इस्पात की भट्ठियाँ ('बैकयार्ड फर्नेस') लगवाई गईं; अव्यावहारिक नीतियों के कारण इससे 3 करोड़ लोग अकाल में मारे गए।

• **विस्तृत व्याख्या:** इस विफलता के बाद पार्टी में अपनी कमजोर होती पकड़ को फिर से मजबूत करने के लिए माओ ने **1966 में 'सांस्कृतिक क्रांति'** छेड़ी, जिसमें छात्र संगठनों (**'रेड गार्ड्स'**) के माध्यम से 'चार पुरानी चीजों' (पुराने विचार, संस्कृति, रीति-रिवाज, आदतें) और अपने राजनीतिक विरोधियों (ल्यू शाओकी, देंग शियाओपिंग) का हिंसक दमन किया गया।

अभ्यास प्रश्न #148 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. मलाया (मलेशिया) और इंडोनेशिया के वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में क्या मुख्य अंतर था? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर: इंडोनेशिया** में औपनिवेशिक शासक **हॉलैंड (डच)** ने युद्ध के बाद अपनी सत्ता छोड़ने से इनकार कर दिया और सुकर्णो के गणराज्य पर दो बार सैन्य आक्रमण किया, जिसके कारण सशस्त्र संघर्ष और अंतर्राष्ट्रीय (भारतीय व संयुक्त राष्ट्र) हस्तक्षेप के बाद 1949 में स्वतंत्रता मिली।

• **विस्तृत व्याख्या:** इसके विपरीत **मलाया (मलेशिया)** में **ब्रिटेन** ने तीन प्रमुख नस्लीय समुदायों (मलय, चीनी और भारतीय) के बीच संवैधानिक समझौता कराया, 1948–60 के साम्यवादी छापामार विद्रोह ('मलय इमरजेंसी') को दबाया और **तुंकू अब्दुल रहमान** के गठबंधन को **31 अगस्त 1957 ('मर्डेका')** को शांतिपूर्ण ढंग से सत्ता हस्तांतरित कर दी।

अभ्यास प्रश्न #149 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. अल्जीरिया और केन्या के स्वतंत्रता संग्राम घाना के स्वतंत्रता संग्राम से अधिक हिंसक और रक्तरंजित क्यों रहे? [संघ लोक सेवा आयोग मुख्य परीक्षा सामान्य अध्ययन-1]

• **उत्तर:** इसका सबसे बड़ा कारण **'श्वेत बसने वालों' (श्वेत बसने वाले)** की उपस्थिति का अंतर था।

• **विस्तृत व्याख्या:** पश्चिम अफ्रीका के **घाना (गोल्ड कोस्ट)** में मलेरिया-प्रवण जलवायु के कारण यूरोपीय गोरे स्थायी रूप से नहीं बसे थे, इसलिए ब्रिटेन ने क्वामे एन्क्रूमा को 1957 में शांतिपूर्वक सत्ता सौंप दी। किंतु **अल्जीरिया** में 10 लाख फ्रांसीसी 'कोलोन' और **केन्या** की उपजाऊ भूमि पर हजारों ब्रिटिश जमींदार स्थायी रूप से बसे थे, जिन्होंने स्थानीय अफ्रीकियों को सत्ता देने का सशस्त्र विरोध किया—जिससे अल्जीरिया में राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चा युद्ध (1954–62) और केन्या में माऊ-माऊ विद्रोह (1952–60) हुआ।

अभ्यास प्रश्न #150 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. दक्षिण अफ्रीका में 'अपार्थाइड' (रंगभेद) प्रणाली क्या थी और इसके उन्मूलन में भारत तथा नेल्सन मंडेला की क्या भूमिका रही? [संघ लोक सेवा आयोग सामान्य अध्ययन-1 / राज्य लोक सेवा आयोग]

• **उत्तर:** 1948 में दक्षिण अफ्रीका की गोरी 'नेशनल पार्टी' सरकार द्वारा कानूनी रूप से लागू की गई नस्लीय पृथक्करण की व्यवस्था को 'अपार्थाइड' कहा गया, जिसमें 80% मूल अश्वेत और भारतीय मूल की आबादी से मताधिकार छीन लिया गया और उन्हें अलग बंजर क्षेत्रों ('बांटूस्तान') व बस्तियों में रहने पर बाध्य किया गया।

• **विस्तृत व्याख्या:** महात्मा गांधी ने 1893–1914 के दौरान दक्षिण अफ्रीका में ही सत्याग्रह का जन्म दिया था, और स्वतंत्र **भारत 1946 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में दक्षिण अफ्रीका के रंगभेद के विरुद्ध प्रस्ताव लाने और व्यापारिक संबंध तोड़ने वाला विश्व का पहला देश बना**। आंतरिक मोर्चे पर अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस (अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस) और **नेल्सन मंडेला** के 27 वर्षीय कारावास व अहिंसक-सशस्त्र संघर्ष ने अंततः 1994 में रंगभेद को समाप्त कर बहु-नस्लीय लोकतंत्र की स्थापना की।

परीक्षा-पूर्व त्वरित पुनरावलोकन (मास्टर त्वरित पुनरावलोकन बूस्टर — विश्व इतिहास की 25 युगान्तकारी संधियाँ एवं घटनाएँ)

क्र.सं.	वर्ष / तिथि	ऐतिहासिक घटना / संधि	प्रमुख संबंधित व्यक्ति / राष्ट्र	वैश्विक ऐतिहासिक महत्व
1	**1453 ई.**	कस्तुनतुनिया का पतन	सुल्तान महमूद द्वितीय (ऑटोमन तुर्क)	इतालवी पुनर्जागरण एवं समुद्री मार्गों की खोज की शुरुआत
2	**31 अक्टूबर 1517**	95 थीसिस (धर्म सुधार आंदोलन)	मार्टिन लूथर (विटेनबर्ग, जर्मनी)	कैथोलिक चर्च का विभाजन और प्रोटेस्टेंट धर्म का जन्म
3	**1648 ई.**	वेस्टफेलिया की संधि	यूरोपीय राष्ट्र	तीस वर्षीय धार्मिक युद्ध का अंत; आधुनिक संप्रभु राष्ट्र-राज्य व्यवस्था का उदय
4	**1688 ई.**	गौरवपूर्ण क्रांति (रक्तहीन क्रांति)	विलियम ऑफ ऑरेंज एवं ब्रिटिश संसद	इंग्लैंड में राजा की निरंकुशता का अंत और संसदीय सर्वोच्चता (बिल ऑफ राइट्स, 1689)
5	**16 दिसंबर 1773**	बोस्टन टी पार्टी	सैमुअल एडम्स ('सन्स ऑफ लिबर्टी')	ब्रिटिश टी एक्ट के विरोध में 342 चाय की पेटियाँ समुद्र में फेंकी गईं
6	**4 जुलाई 1776**	अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणापत्र	थॉमस जेफरसन, जॉर्ज वाशिंगटन	प्राकृतिक अधिकारों के आधार पर 13 अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतंत्रता की घोषणा
7	**3 सितंबर 1783**	पेरिस की संधि	ब्रिटेन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका	ब्रिटेन द्वारा अमेरिकी स्वतंत्रता को औपचारिक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता

क्र.सं.	वर्ष / तिथि	ऐतिहासिक घटना / संधि	प्रमुख संबंधित व्यक्ति / राष्ट्र	वैश्विक ऐतिहासिक महत्व
8	**14 जुलाई 1789**	बास्तील के किले का पतन	फ्रांसीसी तृतीय स्टेट की जनता	फ्रांसीसी क्रांति का विस्फोट; निरंकुश बूर्बो राजतंत्र के पतन का प्रतीक
9	**1804 ई.**	नेपोलियन कोड (सिविल कोड)	नेपोलियन बोनापार्ट	कानून के समक्ष समानता, सामंतवाद का अंत और आधुनिक नागरिक विधि
10	**18 जून 1815**	वाटरलू का युद्ध एवं वियना कांग्रेस	नेपोलियन बनाम वेलिंगटन/ब्लूचर; मेटरनिख	नेपोलियन युग का अंतिम अंत और यूरोप में पुरातन राजवंशों की पुनर्स्थापना
11	**1848 ई.**	कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो का प्रकाशन	कार्ल मार्क्स एवं फ्रेडरिक एंगेल्स	वैज्ञानिक समाजवाद (मार्क्सवाद) और सर्वहारा वर्ग-संघर्ष के सिद्धांत का उद्घोष
12	**1861–1865**	अमेरिकी गृहयुद्ध एवं 13वाँ संशोधन	राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन	अमेरिकी संघ की रक्षा और दास प्रथा का स्थायी संवैधानिक उन्मूलन
13	**1868 ई.**	मेइजी पुनर्स्थापना (रेस्टोरेशन)	सम्राट मुत्सुहितो (जापान)	सामंती शोगुन प्रथा का अंत कर जापान का तीव्र पश्चिमीकरण व औद्योगीकरण
14	**1870–1871**	इटली एवं जर्मनी का एकीकरण	कावूर, गैरीबाल्डी एवं ऑटो वॉन बिस्मार्क	सेडोवा (1866) व सेडान (1870) के युद्धों से मध्य यूरोप के मानचित्र का पुनर्निर्माण
15	**28 जून 1914**	सेराजेवो हत्याकांड	आर्कड्यूक फर्डिनेंड व गैवरिलो प्रिंसिप	प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) का तात्कालिक कारण
16	**7 नवंबर 1917**	रूसी बोल्शेविक (अक्टूबर) क्रांति	व्लादिमीर लेनिन एवं लियोन ट्रॉट्स्की	विश्व में प्रथम समाजवादी-साम्यवादी राज्य (सोवियत संघ) की स्थापना
17	**28 जून 1919**	वर्साय की संधि	मित्र राष्ट्र ('बिग फोर') एवं जर्मनी	जर्मनी पर कठोर प्रादेशिक-सैन्य प्रतिबंध व हर्जाना; राष्ट्र संघ (1920) का जन्म
18	**24 अक्टूबर 1929**	वॉल स्ट्रीट क्रैश एवं आर्थिक महामंदी	Uस्टॉर्म ट्रूपर्स (समाधान: रूजवेल्ट की 'न्यू डील', 1933)	वैश्विक व्यापार व रोजगार का पतन; जर्मनी में हिटलर के नाजीवाद के उभार की जमीन
19	**1 सितंबर 1939**	जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण	एडोल्फ हिटलर	द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) का प्रारंभ
20	**6 व 9 अगस्त 1945**	हिरोशिमा व नागासाकी पर परमाणु बम	राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन (अमेरिका)	द्वितीय विश्व युद्ध का अंत और परमाणु युग की शुरुआत
21	**24 अक्टूबर 1945**	संयुक्त राष्ट्र संघ (संयुक्त राष्ट्र संघ) की स्थापना	51 संस्थापक राष्ट्र (सैन फ्रांसिस्को चार्टर)	वैश्विक शांति, सामूहिक सुरक्षा और मानवाधिकारों हेतु सर्वोच्च अंतर्राष्ट्रीय संगठन
22	**1 अक्टूबर 1949**	चीनी साम्यवादी क्रांति की सफलता	माओ त्से-तुंग (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना)	कृषक-आधारित साम्यवादी क्रांति द्वारा एशिया के शक्ति-संतुलन में भारी परिवर्तन
23	**सितंबर 1961**	बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (गुटनिरपेक्ष आंदोलन)	नेहरू, टीटो, नासिर, सुकर्णो, एन्क्रूमा	द्विध्रुवीय शीत युद्ध के बीच गुटनिरपेक्ष आंदोलन की औपचारिक स्थापना
24	**अक्टूबर 1962**	क्यूबा मिसाइल संकट	जॉन एफ. केनेडी एवं निकिता ख्रुश्चेव	शीत युद्ध का चरम बिंदु; परमाणु युद्ध टला और 'तनाव शैथिल्य' (देतांत) का प्रारंभ
25	**25 दिसंबर 1991**	सोवियत संघ (सोवियत संघ) का विघटन	मिखाइल गोर्बाचेव एवं बोरिस येल्तसिन	15 स्वतंत्र गणराज्यों का उदय, शीत युद्ध की समाप्ति और एकध्रुवीय विश्व व्यवस्था

© आई.यू.सी. अकादमी (समावेशी सार्वभौमिक करियर अकादमी) — निःशुल्क एवं गुणवत्तापूर्ण राष्ट्र-निर्माण शिक्षा समर्पित

संस्थापक एवं मुख्य मार्गदर्शक: सरोज मिश्रा | आधिकारिक वेबसाइट: डब्ल्यूडब्ल्यूडब्ल्यू.आईयूसीअकादमी.कॉम

यह खंड IUC Academy लर्निंग पाथ की पुस्तक 27 (संपूर्ण विश्व का इतिहास) के लिए तैयार किया गया है, जिसमें NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के मानकों के अनुरूप 10 पूर्ण 'IUC प्रमुख अध्ययन इकाई' और 100-पॉइंट 'अंतिम समय त्वरित वन-लाइनर रिवीजन कैप्सूल' शामिल हैं।

मॉड्यूल 1: पुनर्जागरण, प्रबोधन काल एवं वैज्ञानिक क्रांति (14वीं से 18वीं शताब्दी)

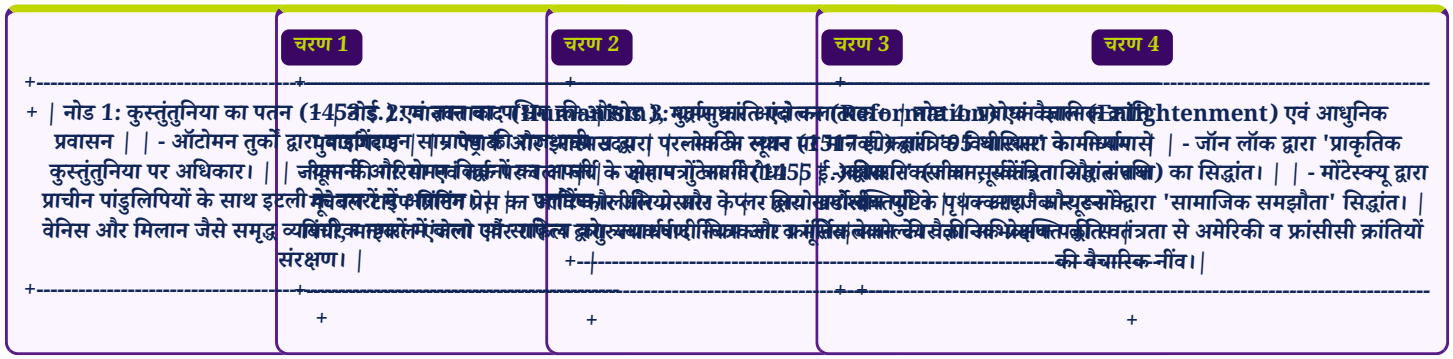
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 1: पुनर्जागरण, प्रबोधन काल एवं वैज्ञानिक क्रांति (14वीं से 18वीं शताब्दी)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: मध्यकालीन सामंती व्यवस्था बनाम पुनर्जागरण एवं प्रबोधन कालीन आधुनिक व्यवस्था

तुलना का आधार	मध्यकालीन सामंती एवं चर्च-केंद्रित व्यवस्था	पुनर्जागरण एवं प्रबोधन कालीन आधुनिक व्यवस्था	ऐतिहासिक प्रभाव एवं प्रामाणिक संदर्भ
वैचारिक केंद्रबिंदु	धर्मतंत्र, परलोकवाद और चर्च की सर्वोच्च व्याख्या पर आधारित जीवन दर्शन।	मानवतावाद (Humanism), व्यक्ति की गरिमा, इहलौकिक सुख और तार्किक चिंतन पर बल।	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के विश्व इतिहास मानकों के अनुसार आधुनिक धर्मनिरपेक्ष राज्य की नींव पड़ी।
ज्ञान एवं विज्ञान का स्रोत	अरस्तू और टॉलमी की प्राचीन मान्यताओं तथा धार्मिक ग्रंथों का अक्षरशः पालन; पृथ्वी-केंद्रित ब्रह्मांड की धारणा।	प्रेक्षण, प्रयोग और गणितीय प्रमाण पर आधारित वैज्ञानिक पद्धति; कोपरनिकस और गैलीलियो का सूर्यकेंद्रित सिद्धांत।	प्रायोगिक विज्ञान के विकास ने आगे चलकर औद्योगिक क्रांति के लिए तकनीकी आधार तैयार किया।
साहित्य एवं भाषा	केवल लैटिन और ग्रीक जैसी शास्त्रीय भाषाओं में धार्मिक साहित्य की रचना; जनसामान्य की पहुंच से दूर।	इटालियन (दांते), अंग्रेजी (शेक्सपियर), जर्मन (मार्टिन लूथर की बाइबल) जैसी स्थानीय जनभाषाओं में साहित्य सृजन।	गुटेनबर्ग के छापेखाने से साक्षरता बढ़ी और यूरोप में राष्ट्रीय चेतना का तीव्र प्रसार हुआ।
कला एवं स्थापत्य शैली	गोथिक शैली, कठोर धार्मिक प्रतीकवाद और द्वि-आयामी अमूर्त चित्रण।	शरीर रचना विज्ञान (Anatomy), ज्यामितीय परिप्रेक्ष्य (Perspective) और प्रकाश-छाया (Chiaroscuro) का यथार्थवादी प्रयोग।	लियोनार्डो दा विंची की 'मोनालिसा' व 'द लास्ट सपर' और माइकल एंजेलो की 'डेविड' मूर्ति कालजयी कृतियां बनीं।
राजनीतिक एवं आर्थिक स्वरूप	राजा के दैवीय अधिकार, सामंती जागीरदारी, कृषि-आधारित बंद अर्थव्यवस्था और कृषक दासता।	सामाजिक समझौता (रूसो, लॉक), शक्तियों का पृथक्करण (मोंटेस्क्यू), वाणिज्यवाद और समुद्री व्यापार का विस्तार।	निरंकुश राजतंत्रों के विरुद्ध संवैधानिक शासन और नागरिक अधिकारों की मांग को वैधता मिली।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. पुनर्जागरण काल के महान कलाकार **लियोनार्डो दा विंची** केवल चित्रकार ही नहीं थे, बल्कि उन्होंने मानव शरीर की नसों व मांसपेशियों को समझने के लिए 30 से अधिक मानव शवों का वैज्ञानिक विच्छेदन किया था और हेलीकॉप्टर, टैंक तथा पैराशूट के प्रारंभिक रेखाचित्र 15वीं शताब्दी में ही बना दिए थे (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. वर्ष 1517 में जब जर्मन भिक्षु **मार्टिन लूथर** ने विटेनबर्ग चर्च के दरवाजे पर अपनी '95 थीसिस' लगाईं, तो गुटेनबर्ग के प्रिंटिंग प्रेस की बदौलत मात्र दो सप्ताह के भीतर पूरे जर्मनी में उसकी हजारों प्रतियां छपकर फैल गईं, जिससे यह इतिहास का पहला मुद्रण-संचालित जन आंदोलन बन गया।
3. प्रबोधन काल के दार्शनिक **मोंटेस्क्यू** ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' (*The Spirit of the Laws*, 1748) में विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच जिस 'शक्ति के पृथक्करण' (Separation of Powers) का सिद्धांत दिया था, वही आज अमेरिका और भारत के संविधान के अनुच्छेद 50 का आधार स्तंभ है।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

• **जाल 1 (मानवतावाद का जनक बनाम पुनर्जागरण का प्रथम व्यक्ति):** परीक्षार्थी अक्सर 'मानवतावाद के जनक' (Father of Humanism) के रूप में दांते या मैकियावेली को टिक कर देते हैं। याद रखें: **पेट्रार्क (Petrarch)** को 'मानवतावाद का जनक' कहा जाता है, जबकि **दांते एलिगियरी** को 'पुनर्जागरण का अग्रदूत' और **मैकियावेली** को 'आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक' (पुस्तक: द प्रिंस) माना जाता है।

• **जाल 2 (सूर्यकेंद्रित सिद्धांत का प्रतिपादक):** परीक्षा में पूछा जाता है कि "सूर्यकेंद्रित सिद्धांत (Heliocentric Theory) सबसे पहले किसने दिया?" छात्र अक्सर गैलीलियो लगा देते हैं। सही उत्तर **निकोलस कोपरनिकस** (पोलैंड के खगोलशास्त्री, पुस्तक: *De revolutionibus orbium coelestium*) है; गैलीलियो ने दूरबीन से इसकी पुष्टि की थी।

• **जाल 3 (सामाजिक समझौता पुस्तक बनाम प्राकृतिक अधिकार):** 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (*The Social Contract*) पुस्तक **रूसो** की है, जबकि 'टू ट्रीटिजेस ऑफ गवर्नमेंट' (*Two Treatises of Government*) **जॉन लॉक** की है। इन दोनों को आपस में कभी न मिलाएं (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

• **पुनर्जागरण के त्रिरत्न (चित्रकला के 3 महारथी) याद करने का सूत्र: "लि-मा-रा" (Li-Ma-Ra)**
• **लि (Li):** लियोनार्डो दा विंची (मोनालिसा, द लास्ट सपर)
• **मा (Ma):** माइकल एंजेलो (द लास्ट जजमेंट, सिस्टीन चैपल की छत, डेविड व पिएटा की मूर्ति)
• **रा (Ra):** राफेल (स्कूल ऑफ एथेंस, मैडोना का चित्र)
• **प्रबोधन के 3 स्तंभ (दार्शनिक व सिद्धांत): "लॉ-प्र, मों-श, रू-स"**
• **लॉ-प्र:** लॉक = प्राकृतिक अधिकार (जीवन, स्वतंत्रता, संपत्ति)
• **मों-श:** मोंटेस्क्यू = शक्तियों का पृथक्करण
• **रू-स:** रूसो = सामाजिक समझौता (Social Contract)

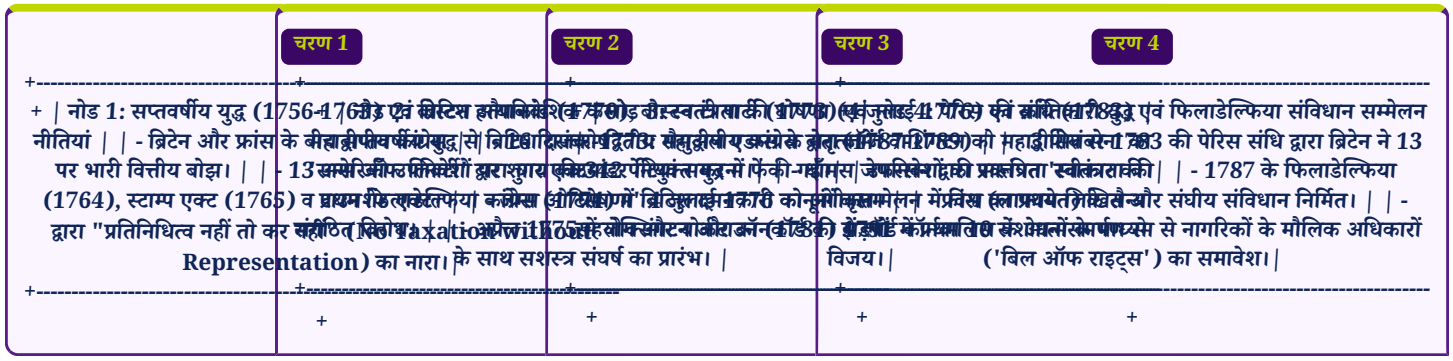
मॉड्यूल 2: अमेरिकी क्रांति (1776) एवं अमेरिकी संविधान निर्माण

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 2: अमेरिकी क्रांति (1776) एवं अमेरिकी संविधान निर्माण

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)	'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: ब्रिटिश संसदीय राजतंत्र बनाम अमेरिकी अध्यक्षात्मक गणराज्य (1789)

तुलना का आधार	ब्रिटिश संसदीय एवं औपनिवेशिक प्रणाली	अमेरिकी संवैधानिक एवं संघीय गणराज्य (1789)	ऐतिहासिक एवं संवैधानिक महत्व
संविधान का स्वरूप	अलिखित, परंपराओं, न्यायिक निर्णयों और संसदीय कानूनों (जैसे मैग्ना कार्टा 1215, बिल ऑफ राइट्स 1689) पर आधारित।	विश्व का **प्रथम लिखित संविधान** (1787 में निर्मित, 1789 में लागू), जिसमें मात्र 7 मूल अनुच्छेद शामिल किए गए।	विधायी विभाग — भारत का संविधान में भी लिखित संविधान की परंपरा और प्रस्तावना की प्रेरणा यहीं से ली गई।
राष्ट्राध्यक्ष का पद	वंशानुगत सम्राट (राजा/रानी) राज्य का नाममात्र प्रमुख; संसद की सर्वोच्चता।	निर्वाचित राष्ट्रपति (प्रथम: जॉर्ज वाशिंगटन) राज्य और सरकार दोनों का वास्तविक प्रमुख (अध्यक्षात्मक प्रणाली)।	आधुनिक विश्व में वंशानुगत राजतंत्र के बिना एक विशाल लोकतांत्रिक गणराज्य की व्यवहार्यता सिद्ध हुई।
केंद्र-राज्य संबंध	एकात्मक शासन व्यवस्था (Unitary System), जहां समस्त संप्रभु शक्तियां लंदन स्थित ब्रिटिश संसद में निहित थीं।	कठोर संघीय व्यवस्था (Federal System), जहां केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों का स्पष्ट बंटवारा और अवशिष्ट शक्तियां राज्यों के पास।	विविधतापूर्ण प्रांतों को एक सूत्र में पिरोने के लिए 'संघवाद' (Federalism) का आधुनिक मॉडल विकसित हुआ।
शक्तियों का संतुलन	कार्यपालिका (मंत्रिमंडल) विधायिका (हाउस ऑफ कॉमन्स) का ही अंग होती है और उसी के प्रति उत्तरदायी रहती है।	कांग्रेस (विधायिका), राष्ट्रपति (कार्यपालिका) और सर्वोच्च न्यायालय के बीच कठोर शक्ति पृथक्करण तथा 'अवरोध एवं संतुलन' (Checks and Balances)।	मोंटेस्क्यू के सिद्धांत का व्यावहारिक क्रियान्वयन और 'न्यायिक पुनरावलोकन' (Judicial Review) की शुरुआत।
मौलिक अधिकार	संसद द्वारा साधारण कानून से नागरिकों के अधिकारों में परिवर्तन संभव।	1791 के 'बिल ऑफ राइट्स' (प्रथम 10 संशोधन) द्वारा नागरिकों के अधिकारों को संवैधानिक संरक्षण।	भारतीय संविधान के भाग III (मौलिक अधिकार) और न्यायपालिका की स्वतंत्रता का प्रत्यक्ष प्रेरणास्रोत।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. अमेरिकी क्रांति में अक्टूबर 1781 में योर्कटाउन के युद्ध में जिस ब्रिटिश सेनापति **लॉर्ड कॉर्नवालिस** ने जॉर्ज वाशिंगटन के सामने आत्मसमर्पण किया था, ठीक उसी कॉर्नवालिस को बाद में 1786 में भारत का गवर्नर-जनरल बनाकर भेजा गया, जिसने 1793 में बंगाल में 'स्थायी बंदोबस्त' (Permanent Settlement) लागू किया (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. थॉमस पेन की जनवरी 1776 में प्रकाशित लघु पुस्तिका **'कॉमन सेंस' (Common Sense)** की कुछ ही महीनों में 5 लाख से अधिक प्रतियां बिकीं, जिसने आम अमेरिकी किसानों और कारीगरों को ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज तृतीय से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने के लिए मानसिक रूप से तैयार कर दिया।
3. फ्रांस ने अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में ब्रिटेन से बदला लेने के लिए अपनी क्षमता से अधिक धन और सेना भेजी; इस युद्ध के कर्ज ने फ्रांस के राजकोष को इस कदर दिवालिया कर दिया कि मात्र 6 वर्ष बाद (1789 में) स्वयं फ्रांस के राजा लुई सोलहवें के विरुद्ध फ्रांसीसी क्रांति भड़क उठी।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 ("प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं" का नारा किसने दिया?):** अधिकांश छात्र इसका उत्तर थॉमस जेफरसन या जॉर्ज वाशिंगटन लगाते हैं। वास्तविकता में यह नारा **जेम्स ओटिस (James Otis)** ने स्टाम्प एक्ट के विरोध के संदर्भ में दिया था, और बोस्टन टी पार्टी का नेतृत्व **सैमुअल एडम्स** ने किया था।
- **जाल 2 (स्वतंत्रता की घोषणा बनाम पेरिस की संधि):** अमेरिका ने स्वतंत्रता की घोषणा **4 जुलाई 1776** को की (प्रारूपकार: थॉमस जेफरसन), लेकिन ब्रिटेन ने आधिकारिक रूप से अमेरिका की स्वतंत्रता को **3 सितंबर 1783 की पेरिस की संधि** के माध्यम से मान्यता दी।
- **जाल 3 (सप्तवर्षीय युद्ध की पेरिस संधि बनाम अमेरिकी क्रांति की पेरिस संधि):** इतिहास में दो प्रमुख पेरिस संधियां हैं — पहली **1763 की पेरिस संधि** (जिससे ब्रिटेन-फ्रांस का सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ) और दूसरी **1783 की पेरिस संधि** (जिससे अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम समाप्त हुआ)। वर्ष को ध्यान से देखें (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

- **अमेरिकी क्रांति का कालानुक्रम याद रखने का सूत्र: "स-स्टा-टी-फि-घो-पे-सं" (63-65-73-74-76-83-89)**
- **स (1763):** सप्तवर्षीय युद्ध की समाप्ति
- **स्टा (1765):** स्टाम्प एक्ट लागू होना
- **टी (1773):** बोस्टन टी पार्टी (16 दिसंबर 1773)
- **फि (1774):** प्रथम फिलाडेल्फिया महाद्वीपीय कांग्रेस
- **घो (1776):** अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा (4 जुलाई 1776)
- **पे (1783):** पेरिस की संधि (स्वतंत्रता की मान्यता)
- **सं (1789):** अमेरिकी संविधान लागू (जॉर्ज वाशिंगटन प्रथम राष्ट्रपति)

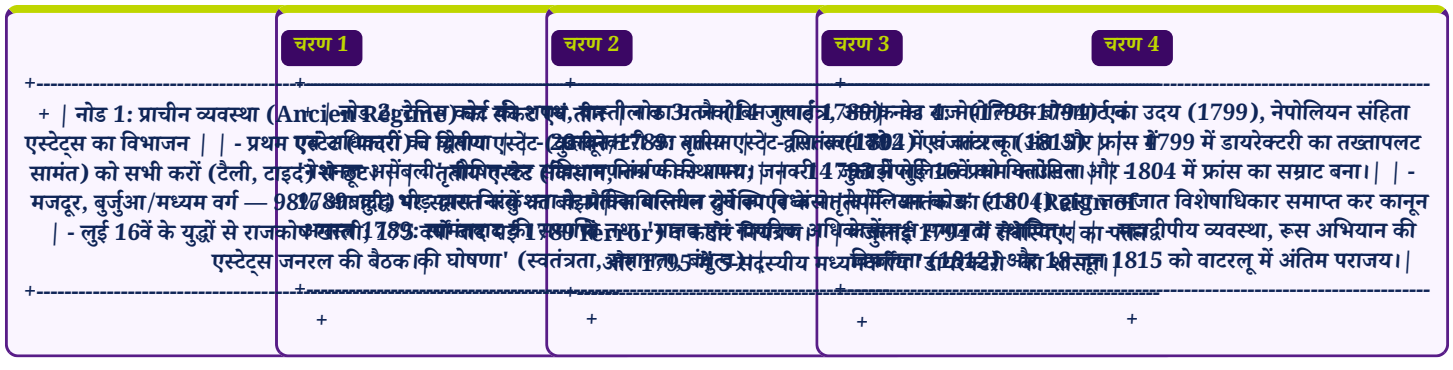
मॉड्यूल 3: फ्रांसीसी क्रांति (1789) एवं नेपोलियन बोनापार्ट का युग

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 3: फ्रांसीसी क्रांति (1789) एवं नेपोलियन बोनापार्ट का युग

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)	'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: फ्रांस के तीन एस्टेट्स एवं क्रांतिकारी राजनीतिक चरणों का तुलनात्मक विश्लेषण

तुलना का आधार	प्रथम एवं द्वितीय एस्टेट (विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग)	तृतीय एस्टेट (विशेषाधिकार विहीन वर्ग)	क्रांति एवं नेपोलियन संहिता (1804) के बाद का परिवर्तन
सामाजिक संरचना एवं जनसंख्या	प्रथम एस्टेट: चर्च के पादरी; द्वितीय एस्टेट: सामंती कुलीन वर्ग (कुल जनसंख्या का मात्र लगभग 2 प्रतिशत)।	बड़े व्यवसायी, वकील, लेखक (बुर्जुआ वर्ग), किसान, कारीगर और भूमिहीन मजदूर (लगभग 98 प्रतिशत जनसंख्या)।	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के अनुसार जन्म पर आधारित सामंती श्रेणीक्रम और विशेषाधिकार पूर्णतः समाप्त किए गए।
भूमि स्वामित्व एवं संपदा	देश की लगभग 60 प्रतिशत उपजाऊ भूमि पर चर्च और कुलीनों का स्वामित्व तथा उच्च सैन्य व प्रशासनिक पदों पर एकाधिकार।	बहुसंख्यक आबादी भूमिहीन या छोटे भूखंडों पर आश्रित; योग्यता के बावजूद उच्च पदों से वंचित।	चर्च की भूमि जब्त कर ली गई और योग्यता (Merit) के आधार पर सभी नागरिकों के लिए राजकीय पद खोल दिए गए।
कराधान प्रणाली	प्रत्यक्ष कर **'टैली' (Taille)** और धार्मिक कर **'टाइद' (Tithe)** देने से पूर्ण छूट; उल्टे किसानों से सामंती शुल्क वसूलते थे।	राज्य को दिया जाने वाला प्रत्यक्ष कर (टैली), चर्च को उपज का दसवां हिस्सा (टाइद) और नमक व तंबाकू पर अप्रत्यक्ष कर (गैबेल) चुकाने की बाध्यता।	'टाइद' और सामंती कर समाप्त कर दिए गए तथा सभी नागरिकों पर उनकी आय के अनुपात में समान कर प्रणाली लागू हुई।
मताधिकार व्यवस्था	एस्टेट्स जनरल में प्रत्येक एस्टेट का 1 वोट होता था, जिससे पादरी और कुलीन (1+1=2) मिलकर हमेशा तृतीय एस्टेट (1) को हरा देते थे।	तृतीय एस्टेट ने 'प्रत्येक सदस्य एक वोट' (रूसो के लोकतांत्रिक सिद्धांत) की मांग की, जिसे अस्वीकार करने पर क्रांति हुई।	नेशनल कन्वेंशन (1792) में 21 वर्ष से अधिक आयु के सभी पुरुषों को मताधिकार मिला (महिलाओं को 1946 में मिला)।
विधिक एवं प्रशासनिक स्थिति	प्रांत-दर-प्रांत अलग-अलग सामंती कानून और नाप-तौल की सैकड़ों असमान प्रणालियां।	सामंती न्यायालयों और मनमाने गिरफ्तारी वारंट ('लेट्रे डी कैशे') का निरंतर भय।	**नेपोलियन संहिता (1804)** द्वारा पूरे देश में एकसमान नागरिक कानून, संपत्ति का अधिकार और दशमलव नाप-तौल प्रणाली लागू।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में सम्मिलित **'स्वतंत्रता, समता और बंधुता' (Liberty, Equality and Fraternity)** के आदर्श सीधे 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से लिए गए हैं (विधायी विभाग — भारत का संविधान)। मैसूर के शासक **टीपू सुल्तान** और समाज सुधारक **राजा राममोहन राय** फ्रांसीसी क्रांति के विचारों से गहराई से प्रभावित थे; टीपू सुल्तान ने श्रीरंगपट्टनम में 'जैकोबिन क्लब' की सदस्यता ली और 'स्वतंत्रता का वृक्ष' लगाया था (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. फ्रांसीसी क्रांति के दौरान महिलाओं के अधिकारों के लिए सबसे मुखर आवाज **ओलंप दे गूज (Olympe de Gouges)** ने उठाई थी। उन्होंने 1791 में 'महिला एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा' लिखी, लेकिन जैकोबिन सरकार की आलोचना करने के कारण 1793 में उन्हें देशद्रोह के आरोप में गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया।
3. **नेपोलियन बोनापार्ट** ने स्वयं कहा था: "मेरा वास्तविक गौरव मेरी 40 युद्धों की जीत में नहीं है, वाटरलू की एक हार उन सबकी स्मृति मिटा देगी; लेकिन जो चीज कभी नहीं मिटेगी और अनंत काल तक जीवित रहेगी, वह है मेरी नागरिक संहिता (*Civil Code of* 1804)।"

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (टैली बनाम टाइद कर में भ्रम):** परीक्षाओं में बार-बार पूछा जाता है कि फ्रांस में चर्च द्वारा वसूल किया जाने वाला कर कौन-सा था? याद रखें: **'टाइद' (Tithe)** चर्च द्वारा कृषि उपज के दसवें हिस्से के रूप में वसूला जाने वाला धार्मिक कर था, जबकि **'टैली' (Taille)** सीधे राज्य (सरकार) को अदा किया जाने वाला प्रत्यक्ष कर था।
- **जाल 2 (1791 के संविधान में मताधिकार):** 1791 के फ्रांसीसी संविधान ने सभी नागरिकों को वोट का अधिकार नहीं दिया था! उसने केवल 25 वर्ष से अधिक आयु के उन पुरुषों को 'सक्रिय नागरिक' (Active Citizens) माना जो कम से कम 3 दिन की मजदूरी के बराबर कर चुकाते थे; शेष पुरुषों और सभी महिलाओं को 'निष्क्रिय नागरिक' श्रेणी में रखा गया।
- **जाल 3 (त्राफलगर बनाम वाटरलू का युद्ध):** नेपोलियन की नौसेना को ब्रिटिश एडमिरल होरेशियो नेल्सन ने **1805 में त्राफलगर के युद्ध** में हराया था, जबकि उसकी थलसेना की अंतिम हार **18 जून 1815 को वाटरलू के युद्ध** (ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और ब्लूचर के हाथों) में हुई, जिसके बाद उसे दक्षिणी अटलांटिक के **सेंट हेलेना द्वीप** पर निर्वासित कर दिया गया (जहां 1821 में उसकी मृत्यु हुई) (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ **IUC स्मृति ट्रिक:**

- **फ्रांसीसी क्रांति की संस्थाओं का सही क्रम: "ए-ने-ले-क-डा-का-स"**
- **ए (मई 1789):** एस्टेट्स जनरल
- **ने (जून 1789):** नेशनल असेंबली (संविधान सभा)
- **ले (1791):** लेजिस्लेटिव असेंबली
- **क (1792-95):** नेशनल कन्वेंशन (गणतंत्र व रोबेस्पिएर का आतंक काल)
- **डा (1795-99):** डायरेक्टरी का शासन (5 निदेशक)
- **का (1799-1804):** काउंसलेट (नेपोलियन प्रथम काउंसल)
- **स (1804-1814/15):** सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट
- **कर याद रखने का सूत्र: "चर्च में टाइद (Tie), राज्य में टैली (Tally)!"** (चर्च जाते समय टाई पहनते हैं = टाइद चर्च कर; राज्य का हिसाब टैली करते हैं = टैली राज्य कर)।

मॉड्यूल 4: औद्योगिक क्रांति — ब्रिटेन से वैश्विक विस्तार एवं सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

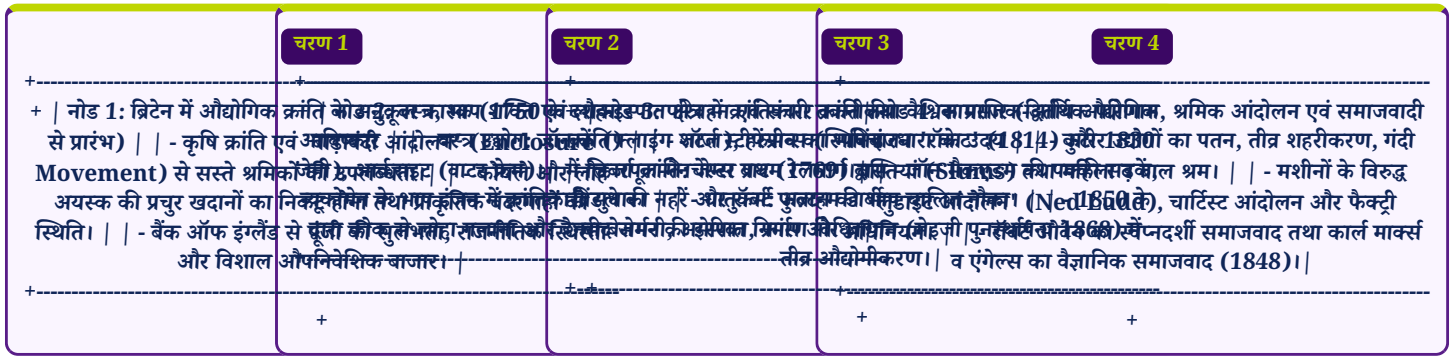
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 4: औद्योगिक क्रांति — ब्रिटेन से वैश्विक विस्तार एवं सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)


चरण 1
चरण 2
चरण 3
चरण 4
नोड 1: ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत (1760 के दशक से प्रारंभ)
- कृषि क्रांति एवं बाड़ाबंदी आंदोलन (Enclosure Movement) से सस्ते श्रमिकों की उपलब्धता।
- बैंक ऑफ इंग्लैंड से पूंजी की सुलभता।
और विशाल औपनिवेशिक बाजार।
नोड 2: तकनीकी नवाचारों का प्रसार (1830 के दशक तक)
- कपास उद्योग में जॉन के (फ्लाइंग शटल), हारग्रीव्स (स्पिनिंग जेनी), आर्कराइट (वाटर फ्रेम), क्रॉम्पटन (म्यूल) और कार्टराइट (पावर लूम) के आविष्कार।
- लोहा उद्योग में कोयले से गलाने की विधि (1709) और हेनरी कोर्ट द्वारा पुडलिंग एवं रोलिंग मिल (1784) का विकास।
- जेम्स वाट द्वारा भाप इंजन में महत्वपूर्ण सुधार (1769)।
नोड 3: सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन (1810 से 1850 के दशक)
- फैक्ट्री प्रणाली का उदय और कुटीर उद्योगों का पतन।
- शहरीकरण, गंदी बस्तियों (Slums) का विकास और श्रमिक वर्ग का निर्माण।
- लंबे कार्य घंटे, बाल श्रम और खराब कार्य परिस्थितियों के खिलाफ श्रमिक आंदोलन।
- राबर्ट ओवेन द्वारा सहकारी आंदोलन की शुरुआत।
नोड 4: प्रतिक्रिया और परिपक्वता (1830 से 1850 के दशक)
- संसदीय सुधार (1832, 1867) और फैक्ट्री अधिनियमों (जैसे 1833, 1847) के माध्यम से राज्य का हस्तक्षेप।
- टोरी डेमोक्रेसी (बेंजामिन डिजरायली) और उदारवाद (ग्लैडस्टोन) का उदय।
- चार्टिस्ट आंदोलन (1838-1848) का पतन, तीव्र शहरीकरण, गंदी बस्तियों का विकास और श्रमिक आंदोलन।
- मशीनों के विरुद्ध लुडाइट आंदोलन (1811-16) और कुशल श्रमिकों का पलायन।
- कृषि में मशीनीकरण (थ्रेशर, रीपर) और ग्रामीण बेरोजगारी

तुलना का आधार	प्रथम औद्योगिक क्रांति (लगभग 1760–1850)	द्वितीय औद्योगिक क्रांति (लगभग 1850–1914)	आर्थिक एवं सामाजिक प्रभाव (NCERT)
अग्रणी उद्योग एवं धातु	सूती वस्त्र उद्योग (मैनचेस्टर और लंकाशायर) तथा ढलवां व पिटवां लोहा (Cast and Wrought Iron)।	भारी इस्पात उद्योग (बेसेमर प्रक्रिया), रसायन, विद्युत उपकरण, सिंथेटिक रंग और ऑटोमोबाइल (हेनरी फोर्ड की असेंबली लाइन)।	विशालकाय पुलों, गगनचुंबी इमारतों, युद्धपोतों और अंतरमहाद्वीपीय रेलमार्गों (जैसे ट्रांस-साइबेरियन रेलवे) का निर्माण।
संगठनात्मक स्वरूप	व्यक्तिगत उद्यमियों और पारिवारिक साझेदारियों द्वारा संचालित छोटे व मध्यम आकार के कारखाने।	विशाल संयुक्त पूंजी कंपनियां (Joint-Stock Corporations), बैंकों द्वारा वित्तीय पूंजीवाद, ट्रस्ट और कार्टेल का निर्माण।	पूंजीपति वर्ग (Bourgeoisie) और सर्वहारा श्रमिक वर्ग (Proletariat) के बीच आर्थिक खाई गहरी हुई।
आर्थिक दर्शन एवं प्रतिरोध	एडम स्मिथ (द वेल्थ ऑफ नेशंस, 1776) का 'अहस्तक्षेप नीति' (Laissez-faire) और मुक्त बाजार पूंजीवाद; लुडाइट व चार्टिस्ट आंदोलन।	कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स (कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो, 1848; दास कैपिटल, 1867) का वैज्ञानिक समाजवाद तथा ट्रेड यूनियनों को कानूनी मान्यता।	बाल श्रम निषेध, काम के घंटे निश्चित करने (8 घंटे कार्य दिवस) और श्रमिक कल्याण कानूनों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. शब्द **'औद्योगिक क्रांति' (Industrial Revolution)** का प्रयोग अंग्रेजी में सबसे पहले प्रसिद्ध इतिहासकार **अर्नोल्ड टायनबी (Arnold Toynbee)** ने 1880 के दशक में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में अपने व्याख्यानों के दौरान ब्रिटेन के 1760–1840 के आर्थिक परिवर्तनों का वर्णन करने के लिए किया था, यद्यपि फ्रांसीसी विद्वान जॉर्ज मिशेल और फ्रेडरिक एंगेल्स ने इससे पहले इसका उल्लेख किया था (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. जब ब्रिटेन के लंकाशायर और मैनचेस्टर में सूती वस्त्र मिलें खुलीं, तब भारत विश्व का सबसे बड़ा सूती वस्त्र निर्यातक था; परंतु ब्रिटिश सरकार ने भारतीय कपड़ों पर भारी आयात शुल्क लगाकर और मशीन से बने सस्ते ब्रिटिश कपड़ों को बिना शुल्क भारत में पाटकर भारत के पारंपरिक हथकरघा उद्योग का **'वि-औद्योगीकरण' (De-industrialization)** कर दिया।
3. कोयला खदानों में जहरीली गैसों के कारण होने वाले विस्फोटों से हजारों मजदूरों की जान जाती थी; इसके समाधान के लिए **हम्फ्री डेवी (Humphry Davy)** ने 1815 में **'सेफ्टी लैंप' (Safety Lamp)** का आविष्कार किया, जिसने खनन उद्योग को सुरक्षित बनाया।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

• **जाल 1 (वस्त्र उद्योग के 4 आविष्कारों का सही मिलान):** परीक्षा में सुमेलित करने के प्रश्न में छात्र अक्सर स्पिनिंग जेनी और स्पिनिंग म्यूल में भ्रमित होते हैं। इसे बिल्कुल स्पष्ट रखें:

1. **फ्लाइंग शटल (1733):** जॉन के (John Kay) — बुनाई की गति दोगुनी की।
2. **स्पिनिंग जेनी (1764):** जेम्स हरग्रीव्स (James Hargreaves) — एक साथ कई धागे कातने की मशीन।
3. **वाटर फ्रेम (1769):** रिचर्ड आर्कराइट (Richard Arkwright) — जल शक्ति से चलने वाली मजबूत धागे की मशीन।
4. **स्पिनिंग म्यूल (1779):** सैमुअल क्रॉम्पटन (Samuel Crompton) — स्पिनिंग जेनी और वाटर फ्रेम का संयोजन।
5. **पावरलूम (1785):** एडमंड कार्टराइट (Edmund Cartwright) — भाप/शक्ति चालित करघा।
6. **कॉटन जिन (1793):** एली व्हिटनी (Eli Whitney) — कपास से बिनौले (बीज) अलग करने की मशीन।

• **जाल 2 (लुडाइट आंदोलन बनाम चार्टिस्ट आंदोलन): लुडाइट आंदोलन (1811–1817)** जनरल नेड लड के अनुयायियों द्वारा बेरोजगारी और कम मजदूरी के विरोध में मशीनों को तोड़ने से नहीं बल्कि कारखानों के शोषण के खिलाफ था, जबकि **चार्टिस्ट आंदोलन (1838–1848)** ब्रिटेन में वयस्क पुरुष मताधिकार और गुप्त मतदान की मांग के लिए चलाया गया राजनीतिक श्रमिक आंदोलन था (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

• सूती वस्त्र के 5 आविष्कारक याद रखने का सूत्र: "जॉन उड़ा (Flying), जेम्स की जेनी, रिचर्ड का पानी (Water), क्रॉम्पटन का खच्चर (Mule), एडमंड की पावर (Powerloom)!"

• जॉन के = फ्लाइंग शटल
• जेम्स हरग्रीव्स = स्पिनिंग जेनी
• रिचर्ड आर्कराइट = वाटर फ्रेम
• सैमुअल क्रॉम्पटन = स्पिनिंग म्यूल
• एडमंड कार्टराइट = पावरलूम

मॉड्यूल 5: यूरोप में राष्ट्रवाद — इटली एवं जर्मनी का एकीकरण (1815–1871)

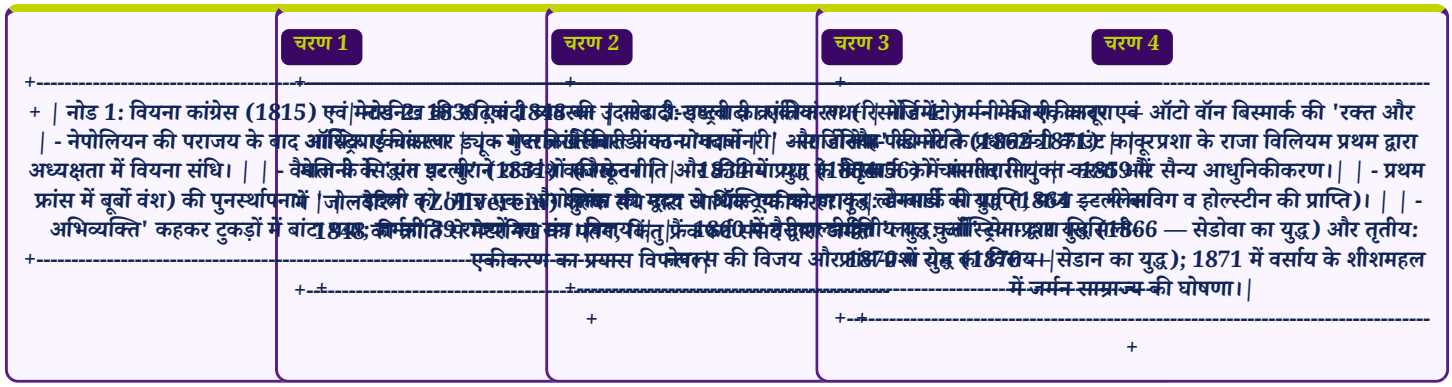
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 5: यूरोप में राष्ट्रवाद — इटली एवं जर्मनी का एकीकरण (1815–1871)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: इटली का एकीकरण बनाम जर्मनी का एकीकरण

तुलना का आधार	इटली का एकीकरण (1859–1870)	जर्मनी का एकीकरण (1864–1871)	तुलनात्मक ऐतिहासिक मूल्यांकन
नेतृत्वकर्ता राज्य एवं राजवंश	**सार्डिनिया-पीडमोंट** राज्य (सेवॉय राजवंश के राजा **विक्टर इमैनुएल द्वितीय** के नेतृत्व में)।	**प्रशा (Prussia)** राज्य (होहेनजोलर्न राजवंश के सम्राट **कैसर विलियम प्रथम** के नेतृत्व में)।	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के अनुसार दोनों ही देशों में सबसे शक्तिशाली स्वदेशी राजतंत्र ने एकीकरण की धुरी का काम किया।
मुख्य वास्तुकार एवं रणनीति	प्रधानमंत्री **काउंट कैमिलो दे कावूर** (कूटनीति), **जोसेफ मेजिनी** (वैचारिक आत्मा) और **गैरीबाल्डी** (सशस्त्र जन-अभियान)।	चांसलर **ऑटो वॉन बिस्मार्क**, जिन्होंने संसदीय भाषणों के स्थान पर **'रक्त और लौह' (Blood and Iron)** तथा सैन्य शक्ति की नीति अपनाई।	इटली को सैन्य कमजोरी के कारण विदेशी सहायता (फ्रांस और प्रशा) लेनी पड़ी, जबकि प्रशा ने अपनी सैन्य शक्ति से एकीकरण किया।
प्रमुख बाधक शक्तियां	उत्तरी भाग (लोम्बार्डी और वेनेशिया) पर ऑस्ट्रिया का कब्जा, मध्य में पोप का राज्य (रोम) और दक्षिण में बूर्बो वंश।	ऑस्ट्रिया का राजनीतिक हस्तक्षेप, दक्षिणी जर्मन कैथोलिक राज्यों का संदेह और फ्रांस (नेपोलियन तृतीय) का विरोध।	ऑस्ट्रिया और फ्रांस दोनों की पराजय ने ही इटली और जर्मनी दोनों के एकीकरण के अंतिम चरणों को एक साथ पूरा किया।

तुलना का आधार	इटली का एकीकरण (1859–1870)	जर्मनी का एकीकरण (1864–1871)	तुलनात्मक ऐतिहासिक मूल्यांकन
आर्थिक एवं वैचारिक आधार	'रिसोर्जिमेंटो' (पुनरुत्थान) पत्रिका, 'कार्बोनरी' गुप्त संस्था और 'यंग इटली' (1831) से सांस्कृतिक राष्ट्रवाद।	**'जोलवेरिन' (Zollverein, 1834)** सीमा-शुल्क संघ जिसने 39 राज्यों की मुद्राओं को घटाकर 2 किया और रेलमार्गों से बाजार जोड़ा।	अर्थशास्त्री फ्रेडरिक लिस्ट के शब्दों में जोलवेरिन ने आर्थिक हितों को जोड़कर जर्मन राष्ट्रीय भावना को जगाया।
निर्णायक युद्ध एवं पूर्णता (1870–71)	1866 के सेडोवा युद्ध से वेनेशिया मिला और 1870 के सेडान युद्ध के दौरान फ्रांसीसी सेना हटने पर **रोम** को संयुक्त इटली की राजधानी बनाया गया।	1864 (डेनमार्क), 1866 (सेडोवा में ऑस्ट्रिया) और 1870 (सेडान में फ्रांस) को हराकर **18 जनवरी 1871** को वर्साय में एकीकरण पूर्ण हुआ।	फ्रैंकफर्ट की संधि (मई 1871) से जर्मनी ने फ्रांस के समृद्ध कोयला-लौह प्रांत 'अल्सास और लॉरेन' छीन लिए, जो प्रथम विश्व युद्ध का कारण बना।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान नायक **लाला लाजपत राय** इटली के क्रांतिकारी **जोसेफ मेजिनी** और **गैरीबाल्डी** से इतने अधिक प्रेरित थे कि उन्होंने उर्दू में इन दोनों की जीवनियां लिखीं, और **विनायक दामोदर सावरकर** ने मेजिनी की आत्मकथा का मराठी में अनुवाद किया तथा उनकी 'यंग इटली' की तर्ज पर 'अभिनव भारत' संगठन की स्थापना की (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. जब 1870 में इटली की सेना ने रोम पर अधिकार किया, तो पोप ने स्वयं को वेटिकन महल में बंद कर लिया और इटली के राज्य को मान्यता देने से इनकार कर दिया; यह 'रोम प्रश्न' 59 वर्षों बाद **1929 की लैटरन संधि (Lateran Treaty)** द्वारा सुलझा, जिससे विश्व का सबसे छोटा स्वतंत्र देश **'वेटिकन सिटी'** अस्तित्व में आया।
3. वियना कांग्रेस (1815) के सूत्रधार मेटरनिख ने फ्रांस की राजनीतिक हलचलों के प्रभाव पर टिप्पणी करते हुए प्रसिद्ध कथन कहा था: "जब फ्रांस छींकता है, तो पूरे यूरोप को सर्दी-जुकाम हो जाता है!"

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (इटली के एकीकरण की 'आत्मा', 'मस्तिष्क' और 'तलवार'):** प्रतियोगी परीक्षाओं में इन तीनों उपाधियों पर सीधा प्रश्न आता है:
- इटली के एकीकरण की **आत्मा / पैगंबर (Soul/Prophet):** जोसेफ मेजिनी
- इटली के एकीकरण का **मस्तिष्क / राजनीतिज्ञ (Brain/Statesman):** काउंट कावूर
- इटली के एकीकरण की **तलवार (Sword):** ज्यूसेप गैरीबाल्डी (संगठन: 'रेड शर्ट्स' / लाल कुर्ती दल)
- **जाल 2 (सेडोवा का युद्ध बनाम सेडान का युद्ध):** नाम मिलते-जुलते होने से भारी भ्रम होता है!
- **सेडोवा का युद्ध (Battle of Sadowa / Königgrätz — 1866):** प्रशा बनाम **ऑस्ट्रिया** (प्रशा की जीत, वेनेशिया इटली को मिला)।
- **सेडान का युद्ध (Battle of Sedan — 1870):** प्रशा बनाम **फ्रांस** (नेपोलियन तृतीय का आत्मसमर्पण, रोम इटली को और अल्सास-लॉरेन जर्मनी को मिला) (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

- **बिस्मार्क के 3 युद्धों का क्रम और वर्ष: "डे-ऑ-फ्रा (DAF) = 64-66-70"**
- **डे (D — 1864):** डेनमार्क के विरुद्ध युद्ध
- **ऑ (A — 1866):** ऑस्ट्रिया के विरुद्ध युद्ध (सेडोवा = 'ओ' से ऑस्ट्रिया, 'ओ' से सेडोवा!)
- **फ्रा (F — 1870):** फ्रांस के विरुद्ध युद्ध (सेडान = फ्रांस का नेपोलियन तृतीय 'दान' हो गया!)

मॉड्यूल 6: प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918), रूसी क्रांति (1917) एवं वर्साय की संधि (1919)

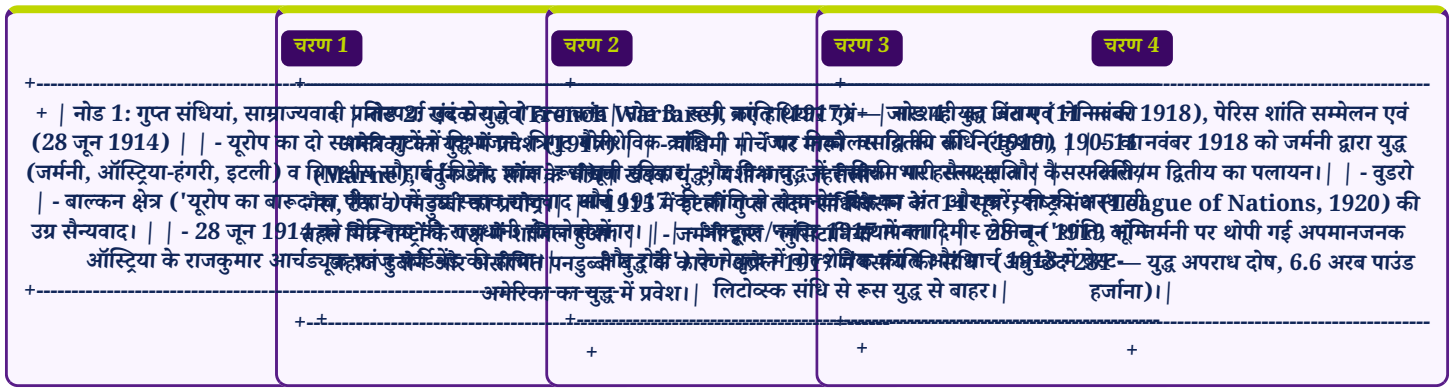
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 6: प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918), रूसी क्रांति (1917) एवं वर्साय की संधि (1919)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: फरवरी/मार्च क्रांति (मेनशेविक/उदारवादी) बनाम अक्टूबर/नवंबर क्रांति (बोल्शेविक, 1917)

तुलना का आधार	फरवरी/मार्च 1917 की रूसी क्रांति	अक्टूबर/नवंबर 1917 की बोल्शेविक क्रांति	वैश्विक एवं ऐतिहासिक परिणाम
नेतृत्व एवं प्रमुख दल	उदारवादी बुर्जुआ वर्ग और **मेनशेविक** (अल्पमत दल); अंतरिम सरकार का नेतृत्व **अलेक्जेंडर करेंस्की** ने किया।	**बोल्शेविक दल** (बहुमत दल); सर्वोच्च नेतृत्व **व्लादिमीर इल्यिच लेनिन** और लाल सेना के प्रमुख **लियोन ट्रॉट्स्की** ने किया।	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के अनुसार विश्व में पहली बार मजदूरों और किसानों की समाजवादी सरकार (सोवियत) स्थापित हुई।
क्रांति का तात्कालिक परिणाम	पेत्रोग्राद की महिला मजदूरों की हड़ताल से शुरुआत; 300 वर्ष पुराने **रोमानोव राजवंश** (जार निकोलस द्वितीय) के शासन का अंत।	'अप्रैल थीसिस' के आधार पर करेंस्की की अंतरिम सरकार का तख्तापलट और 'अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस' को सत्ता हस्तांतरण।	बैंकों और उद्योगों का राष्ट्रीयकरण किया गया तथा सामंती जमींदारों की भूमि किसानों में बांट दी गई।
प्रथम विश्व युद्ध के प्रति नीति	अंतरिम सरकार ने मित्र राष्ट्रों के दबाव में प्रथम विश्व युद्ध जारी रखने का अलोकप्रिय निर्णय लिया, जिससे जन-असंतोष बढ़ा।	लेनिन ने **'शांति पर डिक्री'** जारी की और 3 मार्च 1918 को जर्मनी के साथ **ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि** कर रूस को युद्ध से अलग कर लिया।	युद्ध से हटने के बाद बोल्शेविकों ने 1918-1920 के गृहयुद्ध में 'व्हाइट आर्मी' को परास्त कर अपनी सत्ता सुरक्षित की।
आर्थिक सुधार एवं नियोजन	पूंजीवादी और संसदीय लोकतांत्रिक ढांचे को बनाए रखने का प्रयास।	युद्ध साम्यवाद के बाद लेनिन ने **1921 में 'नई आर्थिक नीति' (NEP)** लागू की; बाद में स्टालिन ने **1928 से पंचवर्षीय योजनाएं** और सामूहिकीकरण शुरू किया।	सोवियत संघ की पंचवर्षीय योजनाओं से प्रेरित होकर भारत ने भी स्वतंत्रता के बाद नियोजित विकास और नीति आयोग के पूर्ववर्ती योजना आयोग का मॉडल अपनाया।
वैश्विक वैचारिक प्रभाव	रूस में राजतंत्र की समाप्ति और नागरिक स्वतंत्रताओं की अस्थायी शुरुआत।	1919 में 'कॉमिनटर्न' (तृतीय इंटरनेशनल) का गठन और 1922 में सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ (USSR) की औपचारिक स्थापना।	भारत सहित एशिया व अफ्रीका के उपनिवेशवाद-विरोधी स्वतंत्रता आंदोलनों में समाजवादी और श्रमिक संगठनों को नई ऊर्जा मिली।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. 1917 की रूसी क्रांति की तिथियों में 'फरवरी बनाम मार्च' और 'अक्टूबर बनाम नवंबर' का अंतर इसलिए आता है क्योंकि फरवरी 1918 तक रूस में प्राचीन **जूलियन कैलेंडर** चलता था, जो पश्चिमी देशों के **ग्रेगोरियन कैलेंडर** से 13 दिन पीछे था; जूलियन कैलेंडर की 25 अक्टूबर की बोल्शेविक क्रांति ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार 7 नवंबर 1917 को हुई थी (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।

2. प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटिश भारतीय सेना के **13 लाख से अधिक भारतीय सैनिकों** ने यूरोप (इप्रेस), मेसोपोटामिया, मिस्र और पूर्वी अफ्रीका के मोर्चों पर युद्ध लड़ा था, जिनमें से लगभग 74,000 भारतीय सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति दी; उन्हीं की स्मृति में नई दिल्ली में **'इंडिया गेट'** (अखिल भारतीय युद्ध स्मारक) बनाया गया।

3. अमेरिकी राष्ट्रपति **वुडरो विल्सन** ने ही अपने 14 सूत्रों के तहत विश्व शांति के लिए **'राष्ट्र संघ' (League of Nations, स्थापना 10 जनवरी 1920)** की संकल्पना दी थी, किंतु अमेरिकी सीनेट द्वारा वर्साय की संधि को अनुमोदित न किए जाने के कारण **स्वयं अमेरिका कभी राष्ट्र संघ का सदस्य नहीं बन सका!**

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

• **जाल 1 (प्रथम विश्व युद्ध में इटली और जापान किस पक्ष में थे?):** परीक्षा में छात्र अक्सर द्वितीय विश्व युद्ध की धुरी (जर्मनी-इटली-जापान) को देखकर प्रथम विश्व युद्ध में भी इटली और जापान को जर्मनी के साथ मान लेते हैं! यह सबसे बड़ा जाल है: **प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) में इटली (1915 से) और जापान दोनों ब्रिटेन-फ्रांस-अमेरिका वाले 'मित्र राष्ट्रों' (Allied Powers) के पक्ष में लड़े थे**, जबकि तुर्की (ऑटोमन) और बुल्गारिया जर्मनी-ऑस्ट्रिया (केंद्रीय शक्तियों) के साथ थे।

• **जाल 2 (1905 का खूनी रविवार बनाम 1917 की क्रांति): 'खूनी रविवार' (Bloody Sunday)** की घटना 1917 में नहीं, बल्कि **22 जनवरी 1905** को सेंट पीटर्सबर्ग में हुई थी, जब पादरी फादर गैपोन के नेतृत्व में विंटर पैलेस जा रहे शांतिपूर्ण मजदूरों पर जार की सेना ने गोलियां चलाईं; इसी के बाद रूस में प्रथम संसद **'ड्यूमा' (Duma)** का गठन हुआ।

• **जाल 3 (पेरिस शांति सम्मेलन की 5 अलग-अलग संधियां):** 1919-20 में पराजित देशों के साथ अलग-अलग संधियां हुईं: जर्मनी के साथ **वर्साय की संधि**, ऑस्ट्रिया के साथ **सेंट जर्मेन की संधि**, हंगरी के साथ **त्रियानों की संधि**, बुल्गारिया के साथ **न्यूइली की संधि**, और तुर्की के साथ **सेव्रेस की संधि** (बाद में मुस्तफा कमाल पाशा के नेतृत्व में 1923 में लोजान की संधि) (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

• **प्रथम विश्व युद्ध के मुख्य कारण (M-A-I-N सूत्र):**

• **M (Militarism):** सैन्यवाद और हथियारों की होड़

• **A (Alliances):** गुप्त संधियों का जाल (त्रिगुट बनाम त्रिपक्षीय सौहार्द)

• **I (Imperialism):** साम्राज्यवाद और उपनिवेशों की छीना-झपटी

• **N (Nationalism):** उग्र राष्ट्रवाद (बाल्कन संकट और सेराजेवो हत्याकांड)

• **लेनिन का जादुई नारा (अप्रैल थीसिस, 1917): "शां-भू-रो" = युद्ध से शांति (Peace), किसानों को भूमि (Land), मजदूरों को रोटी (Bread) और सारी सत्ता सोवियतों को!**

मॉड्यूल 7: दोनों विश्व युद्धों के बीच का विश्व — महामंदी (1929), फासीवाद एवं नाजीवाद

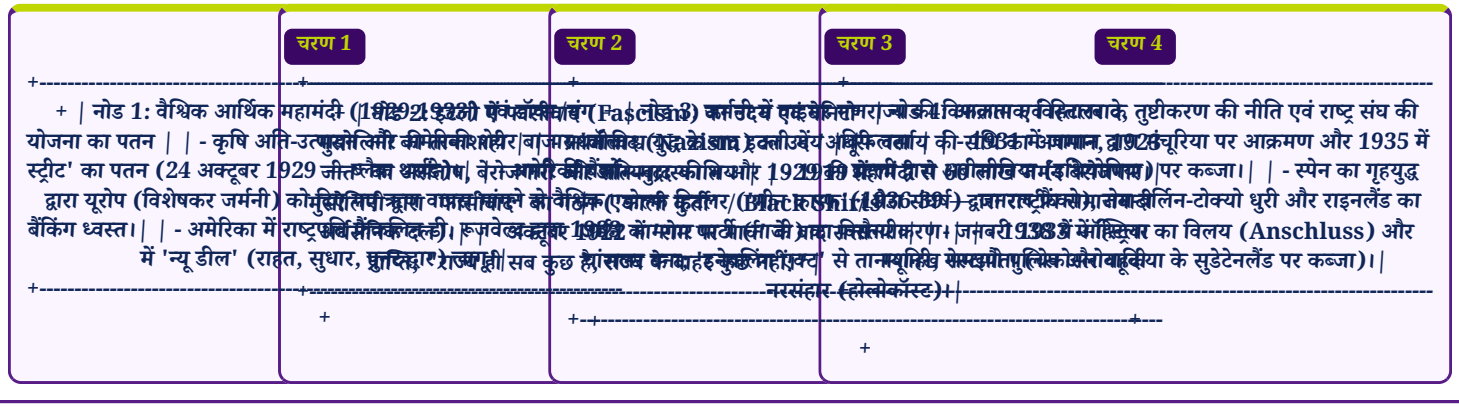
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 7: दोनों विश्व युद्धों के बीच का विश्व — महामंदी (1929), फासीवाद एवं नाजीवाद

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: उदारवादी लोकतंत्र बनाम फासीवाद/नाजीवाद बनाम सोवियत साम्यवाद (1919–1939)

तुलना का आधार	पश्चिमी उदारवादी लोकतंत्र (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस)	फासीवाद एवं नाजीवाद (इटली एवं जर्मनी)	सोवियत साम्यवाद (USSR — लेनिन व स्टालिन काल)
राजनीतिक प्रणाली एवं राज्य का स्वरूप	बहुदलीय संसदीय या अध्यक्षात्मक लोकतंत्र, संविधानवाद, नागरिक स्वतंत्रता और स्वतंत्र न्यायपालिका।	एकदलीय सर्वसत्तावादी तानाशाही (Totalitarianism); एक राष्ट्र, एक दल और एक सर्वोच्च नेता (**'ड्यूस'** मुसोलिनी, **'फ्यूहरर'** हिटलर)।	सर्वहारा वर्ग की तानाशाही के सिद्धांत पर आधारित कम्युनिस्ट पार्टी का एकदलीय शासन और केंद्रीकृत सोवियत ढांचा।
अर्थव्यवस्था का स्वामित्व एवं संकट समाधान	निजी संपत्ति और पूंजीवाद; 1929 की महामंदी से उबरने के लिए रूजवेल्ट ने **'न्यू डील'** और जे.एम. कीन्स के सार्वजनिक व्यय सिद्धांत को अपनाया।	निजी संपत्ति और बड़े उद्योगपतियों को बनाए रखा गया, किंतु राज्य के कठोर नियंत्रण में युद्धोन्मुखी अर्थव्यवस्था और शस्त्रीकरण चलाया गया।	निजी संपत्ति का उन्मूलन, भारी उद्योगों का राजकीय स्वामित्व, कृषि का सामूहिकीकरण (**कोलखोज**) और पंचवर्षीय योजनाएं (1928 से)।
सामाजिक एवं नस्लीय विचारधारा	व्यक्ति की स्वतंत्रता और विधि के समक्ष समानता (यद्यपि उपनिवेशों और नस्लीय अल्पसंख्यकों के साथ भेदभाव विद्यमान था)।	उग्र नस्लवाद (विशेषकर नाजी जर्मनी में 'नॉर्डिक जर्मन आर्य' नस्ल की श्रेष्ठता का दावा और न्यूरेमबर्ग कानूनों द्वारा यहूदियों का दमन)।	वर्गहीन समाज का आदर्श, किंतु व्यवहार में कुलकों (धनी किसानों) और राजनीतिक विरोधियों का कठोर दमन ('ग्रेट पर्ज')।
अंतर्राष्ट्रीय संबंध एवं युद्ध दर्शन	यथास्थिति बनाए रखने की नीति और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री नेविल चेम्बरलेन द्वारा फासीवादी शक्तियों के प्रति **'तुष्टीकरण की नीति' (Policy of Appeasement)**।	युद्ध का महिमामंडन, वर्साय संधि का उल्लंघन और हिटलर का **'लेबेन्सराउम' (Lebensraum — रहने के लिए नए भू-क्षेत्र)** का आक्रामक विस्तारवाद।	प्रारंभ में फासीवाद-विरोधी मोर्चा, किंतु पश्चिमी देशों के अविश्वास के कारण अगस्त 1939 में जर्मनी के साथ अनाक्रमण समझौता।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. **1929 की आर्थिक महामंदी (Great Depression)** का दुनिया के लगभग हर देश पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा और भारत से कृषि निर्यात आधी से भी कम कीमत पर आ गिरा, लेकिन **सोवियत संघ (USSR)** दुनिया का एकमात्र ऐसा बड़ा देश था जो इस महामंदी से पूर्णतः अप्रभावित रहा, क्योंकि उसकी समाजवादी अर्थव्यवस्था विश्व पूंजीवादी बाजार से अलग और अपनी प्रथम पंचवर्षीय योजना (1928–1932) द्वारा संचालित थी (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. 1923 में जब जर्मनी ने युद्ध का हर्जाना देने से मना किया और फ्रांस ने उसके औद्योगिक क्षेत्र **'रूर' (Ruhr)** पर कब्जा कर लिया, तो जर्मन सरकार ने इतने अधिक कागजी नोट छापे कि **अति-मुद्रास्फीति (Hyperinflation)** के कारण एक पाव रोटी खरीदने के लिए लोगों को बैलगाड़ी या टोकरे में भरकर कागजी मुद्रा (मार्क) ले जानी पड़ती थी!
3. शब्द **'फासीवाद' (Fascism)** प्राचीन रोम के शब्द 'फासेस' (*Fasces*) से बना है, जिसका अर्थ होता है 'लकड़ियों का गट्ठर जिसके बीच में कुल्हाड़ी बंधी हो' — जो एकता और राज्य के दंडात्मक प्राधिकार का प्रतीक था।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (काली कुर्ती बनाम भूरी कुर्ती बनाम लाल कुर्ती):** परीक्षा में अर्धसैनिक दलों के रंगों पर अक्सर प्रश्न आते हैं:
- **लाल कुर्ती (Red Shirts):** गैरीबाल्डी (इटली का एकीकरण) एवं भारत में खान अब्दुल गफ्फार खान ('खुदाई खिदमतगार')।
- **काली कुर्ती (Black Shirts):** बेनिटो मुसोलिनी (इटली का फासीवादी दल)।
- **भूरी कुर्ती (Brown Shirts / Stormtroopers — SA):** एडोल्फ हिटलर (जर्मनी का नाजी दल)।
- **जाल 2 (हिटलर सवर्ण जर्मन नहीं बल्कि ऑस्ट्रियाई था):** याद रखें कि एडोल्फ हिटलर का जन्म जर्मनी में नहीं, बल्कि **1889 में ऑस्ट्रिया** में हुआ था। उसकी आत्मकथा **'मीन काम्फ' (Mein Kampf — मेरा संघर्ष)** 1923 के असफल 'म्यूनिख बियर हॉल क्रांति' के बाद जेल में लिखी गई थी।
- **जाल 3 (म्यूनिख समझौता 1938):** सितंबर 1938 के **म्यूनिख समझौते** में ब्रिटेन (चेम्बरलेन), फ्रांस (दलादिए), जर्मनी (हिटलर) और इटली (मुसोलिनी) ने भाग लिया और **चेकोस्लोवाकिया** के जर्मन-बहुल प्रांत **'सुडेटेनलैंड'** को बिना चेकोस्लोवाकिया या सोवियत संघ से पूछे हिटलर को सौंप दिया, जो 'तुष्टीकरण की नीति' की पराकाष्ठा थी (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ **IUC स्मृति ट्रिक:**

- **रूजवेल्ट की 'न्यू डील' (1933) के 3 R याद रखने का सूत्र: "रा-पु-सु (Ra-Pu-Su = 3 R's)"**
- **रा (Relief — राहत):** बेरोजगारों और गरीबों को तत्काल भोजन व कार्य सहायता
- **पु (Recovery — पुनरुद्धार):** उद्योग और कृषि को मंदी से बाहर निकालने के लिए सरकारी निवेश (जैसे टेनेसी घाटी प्राधिकरण — TVA, जिसकी तर्ज पर भारत में दामोदर घाटी निगम बना!)
- **सु (Reform — सुधार):** बैंकिंग, शेयर बाजार और सामाजिक सुरक्षा कानूनों में स्थायी सुधार

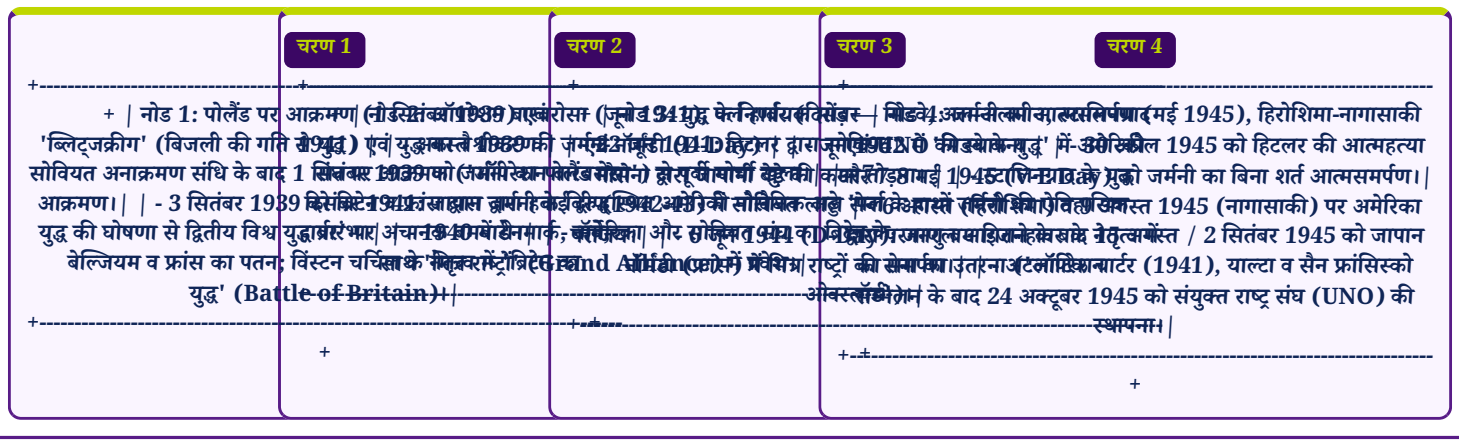
मॉड्यूल 8: द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) एवं संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) का उदय

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 8: द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) एवं संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) का उदय

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)	'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: प्रथम विश्व युद्ध बनाम द्वितीय विश्व युद्ध एवं राष्ट्र संघ बनाम संयुक्त राष्ट्र संघ

तुलना का आधार	प्रथम विश्व युद्ध (1914–1918) एवं राष्ट्र संघ	द्वितीय विश्व युद्ध (1939–1945) एवं संयुक्त राष्ट्र संघ	ऐतिहासिक एवं भू-राजनीतिक महत्व
युद्धरत गुट एवं प्रमुख देश	**केंद्रीय शक्तियां:** जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन तुर्की, बुल्गारिया बनाम **मित्र राष्ट्र:** ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, इटली, जापान, अमेरिका।	**धुरी राष्ट्र (Axis Powers):** जर्मनी, इटली, जापान बनाम **मित्र राष्ट्र (Allies):** ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ (USSR), अमेरिका, चीन।	NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के अनुसार द्वितीय विश्व युद्ध में इटली और जापान मित्र राष्ट्रों का साथ छोड़कर जर्मनी के साथ धुरी में शामिल हुए।
युद्ध की प्रकृति एवं तकनीक	मुख्यत: यूरोप-केंद्रित स्थिर **खंदक युद्ध (Trench Warfare)**; मशीनगन, मस्टर्ड गैस और प्रारंभिक टैंकों का प्रयोग।	गतिशील **'ब्लिट्जक्रीग' (Blitzkrieg)**, विमानवाहक पोत, रडार, वी-1/वी-2 रॉकेट और **परमाणु बम** (मैनहट्टन प्रोजेक्ट) का प्रयोग।	युद्ध यूरोप से बाहर उत्तरी अफ्रीका, प्रशांत महासागर, दक्षिण-पूर्व एशिया और भारत की पूर्वी सीमा (कोहिमा-इम्फाल) तक लड़ा गया।
मानवीय क्षति एवं त्रासदी	लगभग 1.7 से 2 करोड़ लोगों की मृत्यु (अधिकांश सैनिक) और चार बड़े राजवंशों (रोमानोव, होहेनजोलर्न, हैब्सबर्ग, ऑटोमन) का अंत।	मानव इतिहास का सबसे रक्तपातपूर्ण संघर्ष: लगभग **6 से 7 करोड़ लोगों की मृत्यु** (जिसमें 60 लाख यहूदियों का नाजी होलोकॉस्ट नरसंहार शामिल)।	युद्ध अपराधों के लिए न्यूरेमबर्ग और टोक्यो ट्रिब्यूनल चलाए गए तथा 1948 में संयुक्त राष्ट्र मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा हुई।
भारत पर प्रभाव	महात्मा गांधी और कांग्रेस ने युद्ध प्रयासों में सहयोग दिया; युद्ध के बाद मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और रॉलेट एक्ट आया।	लॉर्ड लिनलिथगो ने बिना भारतीय सहमति के भारत को युद्ध में झोंका; परिणामस्वरूप 1942 में **'भारत छोड़ो आंदोलन'** और सुभाष चंद्र बोस की **आजाद हिंद फौज (INA)** का संग्राम हुआ।	युद्ध से ब्रिटेन आर्थिक और सैन्य रूप से इतना कमजोर हो गया कि उसे 1947 में भारत को स्वतंत्रता देनी पड़ी।
अंतर्राष्ट्रीय शांति संगठन	**राष्ट्र संघ (League of Nations, 1920)** — मुख्यालय: जिनेवा; अपनी कोई शांति सेना नहीं और सर्वसम्मति की शर्त के कारण विफल।	**संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO, 24 अक्टूबर 1945)** — मुख्यालय: न्यूयॉर्क; 5 स्थायी सदस्यों (अमेरिका, रूस, ब्रिटेन, फ्रांस, चीन) को वीटो शक्ति और शांतिरक्षा बल।	ब्रेटन वुड्स सम्मेलन (1944) से विश्व बैंक (IBRD) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की भी स्थापना हुई।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. शब्द **'यूनाइटेड नेशंस' (United Nations)** सबसे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट** ने गढ़ा था, और इसका पहली बार आधिकारिक प्रयोग 1 जनवरी 1942 को तब हुआ जब 26 देशों के प्रतिनिधियों (जिसमें **भारत** भी एक मूल हस्ताक्षरकर्ता के रूप में शामिल था!) ने धुरी राष्ट्रों के खिलाफ मिलकर लड़ने के लिए 'संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र' पर हस्ताक्षर किए (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. अमेरिका ने रॉबर्ट ओपेनहाइमर के नेतृत्व में गुप्त **'मैनहट्टन प्रोजेक्ट'** के तहत परमाणु बम विकसित किया; 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा पर गिराए गए यूरेनियम-235 बम का कोड नाम **'लिटिल बॉय' (Little Boy)** था और 9 अगस्त 1945 को नागासाकी पर गिराए गए प्लूटोनियम-239 बम का कोड नाम **'फैट मैन' (Fat Man)** था।
3. अगस्त 1941 में एक युद्धपोत पर ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल और अमेरिकी राष्ट्रपति रूजवेल्ट के बीच हस्ताक्षरित **'अटलांटिक चार्टर'** ने सभी लोगों के आत्मनिर्णय के अधिकार की घोषणा की थी, जिसने आगे चलकर संयुक्त राष्ट्र चार्टर (26 जून 1945 को सैन फ्रांसिस्को में 50 देशों द्वारा हस्ताक्षरित, बाद में पोलैंड 51वां मूल सदस्य बना) की नींव रखी।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (द्वितीय विश्व युद्ध के सैन्य ऑपरेशनों के कोड नाम):** यूपीएससी और पीसीएस परीक्षाओं में इन ऑपरेशनों का मिलान बार-बार पूछा जाता है:
- **ऑपरेशन सी लायन (Operation Sea Lion — 1940):** जर्मनी की ब्रिटेन पर आक्रमण करने की योजना।
- **ऑपरेशन बारबरोसा (Operation Barbarossa — 22 जून 1941):** हिटलर द्वारा सोवियत संघ (USSR) पर किया गया विशाल आक्रमण।
- **ऑपरेशन ओवरलॉर्ड (Operation Overlord — 6 जून 1944 / D-Day):** मित्र राष्ट्रों द्वारा फ्रांस के नॉर्मंडी तट पर सेना उतारकर जर्मनी को मुक्त कराने का अभियान।
- **ऑपरेशन मैनहट्टन (Manhattan Project):** अमेरिका का परमाणु बम निर्माण कार्यक्रम।
- **जाल 2 (संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों के मुख्यालय):** संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों (महासभा, सुरक्षा परिषद, आर्थिक एवं सामाजिक परिषद, न्यास परिषद, सचिवालय और अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय) में से **5 अंगों का मुख्यालय न्यूयॉर्क (अमेरिका)** में है, जबकि केवल एक अंग — **अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय (International Court of Justice - ICJ)** का मुख्यालय **द हेग (नीदरलैंड)** के 'पीस पैलेस' में है (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ **IUC स्मृति ट्रिक:**

- **हिरोशिमा और नागासाकी के बम याद करने का सूत्र: "6 हि-लि (Hi-Li), 9 ना-फै (Na-Fa)!"**
- **6 हि-लि:** 6 अगस्त 1945 = **हि**रोशिमा = **लि**टिल बॉय (यूरेनियम बम)
- **9 ना-फै:** 9 अगस्त 1945 = **ना**गासाकी = **फै**ट मैन (प्लूटोनियम बम)
- **संयुक्त राष्ट्र की 6 आधिकारिक भाषाएं याद रखने का सूत्र: "FACERS (फेसर्स)"**
- **F:** French (फ्रेंच), **A:** Arabic (अरबी), **C:** Chinese (चीनी/मैंडरिन), **E:** English (अंग्रेजी), **R:** Russian (रूसी), **S:** Spanish (स्पेनिश)।

मॉड्यूल 9: चीनी क्रांति (1911–1949), उपनिवेशवाद का अंत एवं एशिया-अफ्रीका का जागरण

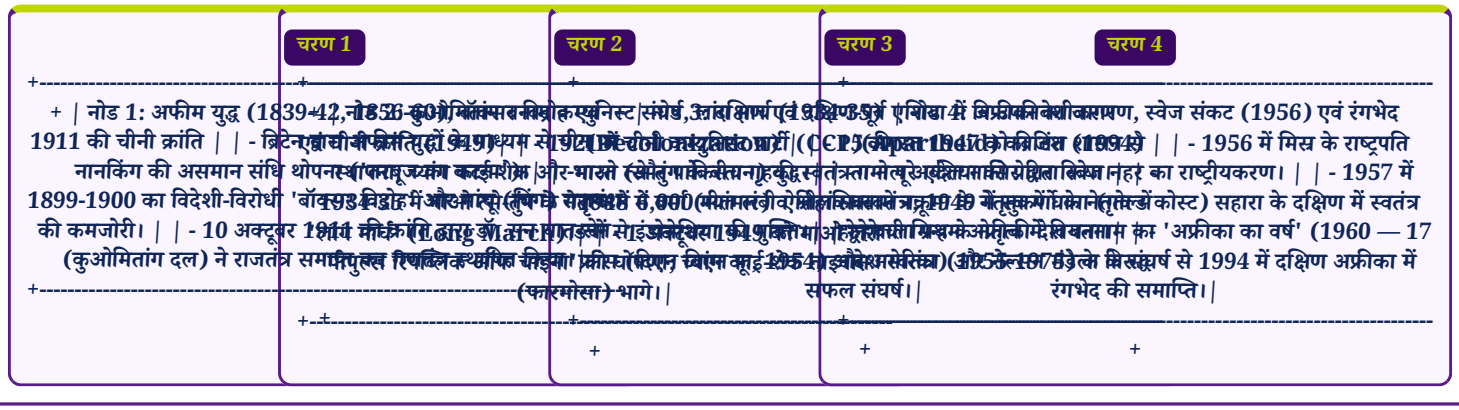
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 9: चीनी क्रांति (1911–1949), उपनिवेशवाद का अंत एवं एशिया-अफ्रीका का जागरण

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: भारत का स्वतंत्रता आंदोलन बनाम चीन की क्रांति बनाम वियतनाम व अफ्रीकी मुक्ति संग्राम

तुलना का आधार	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1947)	चीनी क्रांति (1911 एवं 1949)	इंडो-चाइना (वियतनाम) एवं अफ्रीकी मुक्ति संग्राम
साम्राज्यवादी शासन का स्वरूप	प्रत्यक्ष ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन; एकीकृत प्रशासनिक, न्यायिक और रेल ढांचे के अधीन शोषण।	**अर्ध-औपनिवेशिक स्थिति:** चीन औपचारिक रूप से किसी एक देश का गुलाम नहीं था, बल्कि ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, रूस व जापान ने उसे अपने प्रभाव क्षेत्रों में बांट रखा था।	वियतनाम में फ्रेंच औपनिवेशिक शासन (और बाद में अमेरिकी हस्तक्षेप); अफ्रीका में 1884-85 के बर्लिन सम्मेलन के बाद यूरोपीय देशों द्वारा कृत्रिम सीमाओं में बंटवारा।
प्रमुख नेतृत्व एवं वैचारिक दर्शन	**महात्मा गांधी** के नेतृत्व में सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह और जन-आंदोलन तथा संवैधानिक लोकतंत्र की धारा।	प्रथम चरण में **डॉ. सन यात-सेन** के 'तीन जन सिद्धांत' (राष्ट्रवाद, लोकतंत्र, आजीविका) और द्वितीय चरण में **माओ त्से-तुंग** की किसान-आधारित सशस्त्र साम्यवादी क्रांति।	वियतनाम में **हो ची मिन्ह** (वियत मिन्ह) का छापामार युद्ध; घाना में **क्वामे नक्रूमा**, केन्या में **जोमो केन्याटा** और दक्षिण अफ्रीका में **नेल्सन मंडेला** (ANC)।
सामाजिक आधार एवं रणनीति	शहरी मध्यम वर्ग, बुद्धिजीवियों, किसानों, मजदूरों और महिलाओं का व्यापक अहिंसक गठबंधन।	सोवियत संघ की शहरी मजदूर क्रांति के विपरीत माओ ने **ग्रामीण किसानों** को क्रांति की मुख्य शक्ति बनाया और लाल सेना से शहरों को घेरा।	अल्जीरिया (FLN — 1962 में फ्रांस से आजादी) और अंगोला-मोजाम्बिक (1975 में पुर्तगाल से आजादी) में सशस्त्र संघर्ष तथा दक्षिण अफ्रीका में जन-प्रतिरोध व अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबंध।

तुलना का आधार	भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1947)	चीनी क्रांति (1911 एवं 1949)	इंडो-चाइना (वियतनाम) एवं अफ्रीकी मुक्ति संग्राम
स्वतंत्रता के बाद राजनीतिक व्यवस्था	सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित बहुदलीय संसदीय लोकतंत्र और भारत का संविधान (1950)।	चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व में एकदलीय जनवादी गणराज्य; 'ग्रेट लीप फॉरवर्ड' (1958) और 'सांस्कृतिक क्रांति' (1966)।	अप्रैल 1955 के **बांडुंग सम्मेलन** से एफ्रो-एशियाई एकता और 1961 के बेलग्रेड सम्मेलन से **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)** का उदय।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. प्रथम अफीम युद्ध (1839–1842) में ब्रिटेन ने चीन को जो अफीम जबरन बेची थी, वह भारत (विशेषकर बिहार और बंगाल) के किसानों से उगाई जाती थी; **1842 की नानकिंग की संधि** के तहत ही ब्रिटेन ने चीन से **हांगकांग द्वीप** छीना था, जिसे 155 वर्षों बाद **1 जुलाई 1997** को चीन को वापस लौटाया गया (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
2. वर्ष **1960** को विश्व इतिहास में **'अफ्रीका का वर्ष' (Year of Africa)** कहा जाता है, क्योंकि मात्र इस एक वर्ष के भीतर नाइजीरिया, कांगो, सेनेगल, माली और मेडागास्कर सहित **17 अफ्रीकी देशों** ने यूरोपीय औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता प्राप्त की और संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता ग्रहण की।
3. आधुनिक चीन के राष्ट्रपिता **डॉ. सन यात-सेन** ने अपनी राजनीतिक विचारधारा को **'सान मिन चू-ई' (तीन जन सिद्धांत — Three Principles of the People)** में सूत्रबद्ध किया था: **राष्ट्रवाद (Minzu)**, **लोकतंत्र (Minquan)** और **जन-आजीविका / समाजवाद (Minsheng)**।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (रूसी साम्यवाद बनाम चीनी माओवाद का मुख्य अंतर):** यूपीएससी मुख्य व प्रारंभिक परीक्षा में यह सूक्ष्म अंतर पूछा जाता है — कार्ल मार्क्स और लेनिन ने **शहरी औद्योगिक सर्वहारा (मजदूर) वर्ग** को क्रांति का अग्रदूत माना था, जबकि **माओ त्से-तुंग** ने चीन की परिस्थितियों के अनुसार **ग्रामीण किसानों (Peasantry)** को साम्यवादी क्रांति की मुख्य धुरी बनाया।
- **जाल 2 (1911 की चीनी क्रांति बनाम 1949 की चीनी क्रांति): 1911 की सिन्हाई क्रांति** डॉ. सन यात-सेन (कुओमितांग पार्टी) के नेतृत्व में हुई थी जिसने चीन से 267 वर्ष पुराने **मांचू (चिंग) राजवंश** को समाप्त कर गणतंत्र स्थापित किया; जबकि **1 अक्टूबर 1949 की क्रांति** माओ त्से-तुंग (कम्युनिस्ट पार्टी) के नेतृत्व में हुई जिसने च्यांग काई-शेक की राष्ट्रवादी सरकार को हटाकर साम्यवादी शासन स्थापित किया।
- **जाल 3 ('खुले द्वार की नीति' किसने प्रतिपादित की?):** 1899 में चीन में सभी साम्राज्यवादी देशों को समान व्यापारिक अधिकार दिलाने वाली **'खुले द्वार की नीति' (Open Door Policy)** ब्रिटेन ने नहीं, बल्कि **संयुक्त राज्य अमेरिका के विदेश मंत्री जॉन हे (John Hay)** ने प्रतिपादित की थी (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

- **चीन के आधुनिक इतिहास के 5 स्तंभ: "अफीम (1842) -> बॉक्सर (1900) -> सन (1911) -> लांग मार्च (1934) -> माओ (1949)"**
- **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM — 1961, बेलग्रेड) के 5 संस्थापक स्तंभ ('पांच पांडव'): "ने-ना-टी-सु-न (Ne-Na-Ti-Su-N)"**
- **ने:** जवाहरलाल नेहरू (भारत)
- **ना:** गमाल अब्देल नासिर (मिस्र)
- **टी:** जोसिप ब्रोज टीटो (यूगोस्लाविया)
- **सु:** डॉ. सुकर्णो (इंडोनेशिया)
- **न:** क्वामे नक्रूमा (घाना)

मॉड्यूल 10: शीत युद्ध (1945–1991), गुटनिरपेक्ष आंदोलन एवं सोवियत संघ का विघटन

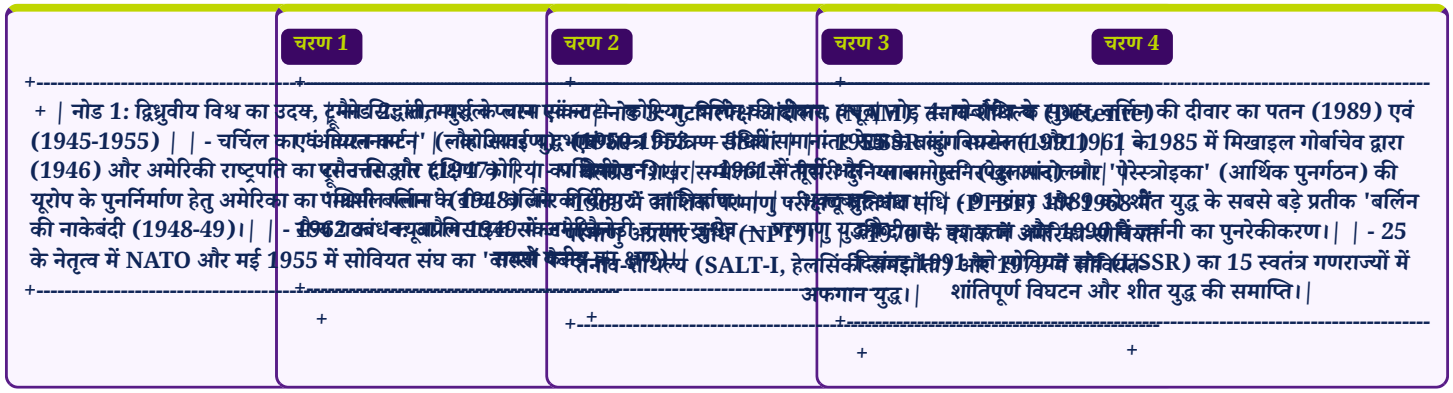
अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — मॉड्यूल 10: शीत युद्ध (1945–1991), गुटनिरपेक्ष आंदोलन एवं सोवियत संघ का विघटन

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

प्रमुख चरण एवं प्रक्रिया प्रवाह

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)



2. विस्तृत तुलनात्मक सारणी: अमेरिकी पूंजीवादी गुट (प्रथम विश्व) बनाम सोवियत समाजवादी गुट (द्वितीय विश्व) बनाम गुटनिरपेक्ष आंदोलन (तृतीय विश्व)

तुलना का आधार	पश्चिमी पूंजीवादी गठबंधन (अमेरिकी नेतृत्व)	पूर्वी साम्यवादी गठबंधन (सोवियत नेतृत्व)	गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM — भारत व विकासशील देश)
वैचारिक एवं आर्थिक मॉडल	उदारवादी लोकतंत्र, बहुदलीय चुनाव प्रणाली और बाजार-आधारित मुक्त पूंजीवादी अर्थव्यवस्था।	मार्क्सवादी-लेनिनवादी एकदलीय शासन और राज्य-नियंत्रित समाजवादी नियोजित अर्थव्यवस्था।	दोनों महाशक्तियों के सैन्य गुटों से स्वतंत्र रहते हुए मिश्रित अर्थव्यवस्था, संप्रभुता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व (**पंचशील**)।
प्रमुख सैन्य गठबंधन	**NATO** (उत्तर अटलांटिक संधि संगठन, 4 अप्रैल 1949), **SEATO** (1954) और **CENTO / बगदाद पैक्ट** (1955)।	**वारसॉ पैक्ट (Warsaw Pact, 14 मई 1955)** — नाटो में पश्चिमी जर्मनी को शामिल किए जाने के जवाब में गठित (1991 में भंग)।	किसी भी महाशक्ति के सैन्य गठबंधन या विदेशी सैन्य अड्डे का हिस्सा न बनने का संकल्प (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।
आर्थिक सहायता कार्यक्रम	**ट्रूमैन सिद्धांत (1947)** और **मार्शल प्लान (1948)** जिसके तहत पश्चिमी यूरोप को 13 अरब डॉलर से अधिक की आर्थिक सहायता दी गई।	**मोलोटोव प्लान** और **कॉमएकॉन (COMECON, 1949 — पारस्परिक आर्थिक सहायता परिषद)** पूर्वी यूरोपीय देशों के लिए।	संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD, 1964) के माध्यम से **'नई अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था' (NIEO)** की मांग।
प्रमुख छद्म युद्ध एवं हस्तक्षेप	कोरियाई युद्ध (1950-53), वियतनाम युद्ध (1955-75), बे ऑफ पिग्स (क्यूबा, 1961) में प्रत्यक्ष/अप्रत्यक्ष सैन्य हस्तक्षेप।	हंगरी (1956), चेकोस्लोवाकिया ('प्राग स्प्रिंग', 1968 — ब्रेझनेव सिद्धांत) और अफगानिस्तान (1979-1989) में सैन्य हस्तक्षेप।	कोरियाई युद्ध और स्वेज संकट (1956) में शांतिपूर्ण मध्यस्थता तथा रंगभेद व नव-उपनिवेशवाद के विरुद्ध वैश्विक मंच।

3. 'क्या आप जानते हैं?' बॉक्स (Did You Know? Box)

क्या आप जानते हैं? (रोचक ऐतिहासिक तथ्य)

1. शब्द **'शीत युद्ध' (Cold War)** का आधुनिक भू-राजनीतिक अर्थ में प्रयोग सबसे पहले अंग्रेजी लेखक **जॉर्ज ऑरवेल** ने 1945 के अपने निबंध 'यू एंड द एटॉमिक बॉम्ब' में किया था, और इसे अमेरिकी राजनीति में राष्ट्रपति के सलाहकार **बर्नार्ड बारूक** और पत्रकार **वाल्टर लिपमैन** ने 1947 में लोकप्रिय बनाया (NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल)।

2. अक्टूबर 1962 के **क्यूबा मिसाइल संकट** के दौरान दुनिया परमाणु युद्ध के इतना करीब पहुंच गई थी कि सोवियत पनडुब्बी B-59 के कमांडर ने अमेरिकी नौसेना के घेरे में आने पर परमाणु टॉरपीडो दागने का निर्णय लगभग ले ही लिया था, किंतु पनडुब्बी के सेकंड-इन-कमांड अधिकारी **वासिली अर्खिपोव (Vasili Arkhipov)** ने अनुमति देने से इनकार कर दिया और मानव सभ्यता को परमाणु विनाश से बचा लिया!

3. सोवियत संघ के विघटन (दिसंबर 1991) से पहले 8 दिसंबर 1991 को रूस (बोरिस येल्तसिन), यूक्रेन और बेलारूस के नेताओं ने **'बेलोवेझा समझौते' (Belavezha Accords)** पर हस्ताक्षर कर सोवियत संघ की समाप्ति और **'स्वतंत्र राज्यों के राष्ट्रकुल' (CIS)** के गठन की घोषणा की थी, और **रूस** को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सोवियत संघ का उत्तराधिकारी राष्ट्र (स्थायी सदस्य) माना गया।

4. 'परीक्षा जाल सतर्कता' बॉक्स (Exam Trap Alert Box)

परीक्षा जाल सतर्कता (Exam Trap Alert — सावधानी से पढ़ें!)

- **जाल 1 (ग्लासनोस्त बनाम पेरेस्त्रोइका का सही अर्थ):** सोवियत राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव (1985–1991) की इन दोनों नीतियों के अर्थ परीक्षा में उलट कर पूछे जाते हैं:
- **ग्लासनोस्त (Glasnost):** इसका अर्थ है **'खुलापन' (Openness)** — अर्थात अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, प्रेस से सेंसरशिप हटाना और प्रशासनिक पारदर्शिता।
- **पेरेस्त्रोइका (Perestroika):** इसका अर्थ है **'पुनर्गठन' (Restructuring)** — अर्थात केंद्रीकृत अर्थव्यवस्था और राजनीतिक ढांचे में विकेंद्रीकरण व बाजार सुधार।
- **जाल 2 (गुटनिरपेक्षता का अर्थ 'तटस्थता' या 'पृथकतावाद' नहीं है!):** यूपीएससी और एनसीईआरटी के प्रश्नों में यह कथन आता है कि "गुटनिरपेक्षता का अर्थ अंतर्राष्ट्रीय मामलों से तटस्थ रहना है।" यह कथन **गलत** है! गुटनिरपेक्षता न तो 'पृथकतावाद' (Isolationism) है और न ही 'निष्क्रिय तटस्थता' (Neutrality), बल्कि यह महाशक्तियों के सैन्य गुटों से दूर रहते हुए अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए स्वतंत्र और सक्रिय विदेश नीति अपनाने का आंदोलन है।
- **जाल 3 (विभाजक समानांतर रेखाएं):**
- **38वीं समानांतर रेखा (38th Parallel):** उत्तर कोरिया और दक्षिण कोरिया के बीच।
- **17वीं समानांतर रेखा (17th Parallel):** 1954 के जिनेवा समझौते द्वारा उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम के बीच (1975 में वियतनाम का एकीकरण हो गया) (IUC Academy लर्निंग पाथ)।

5. 'IUC स्मृति ट्रिक' (IUC Magic Memory Trick)

★ IUC स्मृति ट्रिक:

- **गोर्बाचेव के सुधार याद रखने का सूत्र: "ग्लास (Glasnost) में सब साफ दिखता है = खुलापन (Openness); पैर (Perestroika) से नया ढांचा खड़ा करना = पुनर्गठन (Restructuring)!"**
- **शीत युद्ध की 6 प्रमुख घटनाओं का कालानुक्रम: "ना-को-वा-दी-क्यू-ब" (49-50-55-61-62-89)**
- **ना (1949):** नाटो (NATO) की स्थापना
- **को (1950-53):** कोरियाई युद्ध
- **वा (1955):** वारसॉ पैक्ट
- **दी (1961):** बर्लिन की दीवार का निर्माण (और बेलग्रेड में प्रथम NAM शिखर सम्मेलन)
- **क्यू (1962):** क्यूबा मिसाइल संकट
- **ब (1989):** बर्लिन की दीवार का पतन (और 1991 में USSR का विघटन)

अंतिम समय त्वरित वन-लाइनर रिवीजन कैप्सूल (100-पॉइंट — विश्व का इतिहास)

यह 100-पॉइंट वन-लाइनर कैप्सूल IUC Academy लर्निंग पाथ एवं NCERT पाठ्यपुस्तक पोर्टल के आधार पर परीक्षा से ठीक पहले त्वरित रिवीजन के लिए तैयार किया गया है:

1. **कुस्तुंतुनिया का पतन:** वर्ष 1453 ई. में ऑटोमन तुर्क सुल्तान महमद द्वितीय ने पूर्वी रोमन (बाइजेंटाइन) साम्राज्य की राजधानी कुस्तुंतुनिया पर अधिकार किया।
2. **पुनर्जागरण का जन्मस्थल:** यूरोप में पुनर्जागरण (Renaissance — अर्थ: 'पुनर्जन्म') का प्रारंभ इटली के **फ्लोरेंस** नगर से माना जाता है।
3. **मानवतावाद का जनक:** इटली के विद्वान **पेट्रार्क (Petrarch)** को 'मानवतावाद का जनक' (Father of Humanism) कहा जाता है।
4. **डिवाइन कॉमेडी:** पुनर्जागरण के अग्रदूत **दांते एलिगियरी** ने स्थानीय टस्कन (इटालियन) भाषा में अमर महाकाव्य 'डिवाइन कॉमेडी' की रचना की।
5. **डेकामेरॉन के लेखक:** प्रसिद्ध कथा-संग्रह 'डेकामेरॉन' (*Decameron*) के रचयिता **जियोवानी बोकाचियो** थे।
6. **आधुनिक राजनीतिक दर्शन का जनक:** फ्लोरेंस के राजनयिक **निकोलो मैकियावेली** की प्रसिद्ध कृति 'द प्रिंस' (*The Prince*) यथार्थवादी राजनीति का आधार ग्रंथ है।
7. **यूटोपिया (Utopia):** आदर्श समाज की कल्पना करने वाली प्रसिद्ध पुस्तक 'यूटोपिया' (1516) के लेखक इंग्लैंड के **सर थॉमस मूर** थे।
8. **इन प्रेज ऑफ फॉली:** चर्च के पाखंडों पर व्यंग्य करने वाली पुस्तक 'इन प्रेज ऑफ फॉली' (मूर्खता की प्रशंसा) हॉलैंड के मानवतावादी **इरास्मस** ने लिखी थी।
9. **मोनालिसा एवं द लास्ट सपर:** विश्व प्रसिद्ध चित्र 'मोनालिसा' और 'द लास्ट सपर' के चित्रकार बहुमुखी प्रतिभा के धनी **लियोनार्डो दा विंची** थे।

10. **द लास्ट जजमेंट एवं डेविड:** वेटिकन के सिस्टीन चैपल की छत पर 'द लास्ट जजमेंट' चित्र और 'डेविड' तथा 'पिएटा' की संगमरमर मूर्तियां **माइकल एंजेलो** ने बनाईं।

11. **स्कूल ऑफ एथेंस:** पुनर्जागरण कालीन प्रसिद्ध भित्ति-चित्र 'स्कूल ऑफ एथेंस' और 'सिस्टीन मैडोना' के चित्रकार **राफेल** थे।

12. **मुद्रण कला का आविष्कार:** जर्मनी के मेंज शहर के **जोहान गुटेनबर्ग** ने 1455 ई. के आसपास मूवेबल टाइप प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार कर प्रथम मुद्रित बाइबल छापी।

13. **धर्मसुधार आंदोलन (1517):** जर्मनी के धर्मशास्त्री **मार्टिन लूथर** ने 1517 में पोप के 'पापमोचन पत्रों' (Indulgences) के विरुद्ध विटेनबर्ग चर्च पर अपनी **'95 थीसिस'** लगाईं।

14. **बाइबल का जर्मन अनुवाद:** मार्टिन लूथर ने बाइबल का लैटिन से आम जनता की **जर्मन भाषा** में अनुवाद किया और 'प्रोटेस्टेंट' संप्रदाय की नींव रखी।

15. **जॉन केल्विन और ज्विंगली:** स्विट्जरलैंड (जिनेवा और ज्यूरिख) में प्रोटेस्टेंट धर्मसुधार आंदोलन का नेतृत्व **हुल्ड्रिच ज्विंगली** और **जॉन केल्विन** ने किया।

16. **एंग्लिकन चर्च की स्थापना:** इंग्लैंड के राजा **हेनरी अष्टम** ने 1534 के 'एक्ट ऑफ सुप्रीमेसी' द्वारा रोम के पोप से संबंध तोड़कर स्वयं को इंग्लैंड के चर्च का प्रमुख घोषित किया।

17. **प्रति-धर्मसुधार एवं सोसाइटी ऑफ जीसस:** कैथोलिक चर्च में आंतरिक सुधार के लिए ट्रेंट की परिषद बुलाई गई और 1534 में स्पेन के **इग्नेशियस लोयोला** ने 'सोसाइटी ऑफ जीसस' (जेसुइट संघ) की स्थापना की।

18. **सूर्यकेंद्रित सिद्धांत:** पोलैंड के खगोलशास्त्री **निकोलस कोपरनिकस** ने सिद्ध किया कि पृथ्वी नहीं, बल्कि सूर्य सौरमंडल के केंद्र में है।

19. **ग्रहों की गति के नियम:** जर्मन गणितज्ञ **जोहान्स केप्लर** ने सिद्ध किया कि ग्रह सूर्य के चारों ओर वृत्ताकार नहीं, बल्कि दीर्घवृत्ताकार (Elliptical) कक्षाओं में घूमते हैं।

20. **दूरबीन एवं गैलीलियो:** इटली के वैज्ञानिक **गैलीलियो गैलीली** ने उन्नत दूरबीन बनाकर कोपरनिकस के सिद्धांत की पुष्टि की और जड़त्व (Inertia) का नियम दिया।

21. **गुरुत्वाकर्षण एवं प्रिंसिपिया:** सर **आइजैक न्यूटन** ने 1687 में अपनी पुस्तक 'प्रिंसिपिया मैथमैटिका' में सार्वत्रिक गुरुत्वाकर्षण और गति के तीन नियमों का प्रतिपादन किया।

22. **रक्त परिसंचरण की खोज:** मानव शरीर में हृदय द्वारा रक्त परिसंचरण (Blood Circulation) तंत्र की खोज अंग्रेज चिकित्सक **विलियम हार्वे** ने 1628 में की।

23. **भौगोलिक खोजें — उत्तमाशा अंतरीप:** पुर्तगाली नाविक **बार्थोलोम्यू डियाज** ने 1488 में अफ्रीका के दक्षिणी छोर 'केप ऑफ गुड होप' (उत्तमाशा अंतरीप) की खोज की।

24. **नई दुनिया (अमेरिका) की खोज:** स्पेन की रानी इसाबेला के सहयोग से इटली के नाविक **क्रिस्टोफर कोलंबस** ने 1492 में बहामास व कैरेबियन द्वीपों ('नई दुनिया') की खोज की।

25. **भारत के समुद्री मार्ग की खोज:** पुर्तगाली नाविक **वास्को डी गामा** मई 1498 में केप ऑफ गुड होप होते हुए केरल के कालीकट (कोझिकोड) बंदरगाह पहुंचा।

26. **पृथ्वी की प्रथम समुद्री परिक्रमा:** स्पेन के अभियान के तहत पुर्तगाली नाविक **फर्डिनेंड मैगलन** के बेड़े (1519–1522) ने पहली बार समुद्री मार्ग से पूरी पृथ्वी का चक्कर लगाया।

27. **गौरवपूर्ण क्रांति (1688):** इंग्लैंड में राजा जेम्स द्वितीय को बिना रक्तपात के हटाकर विलियम तृतीय और मैरी को गद्दी पर बिठाया गया और **1689 के बिल ऑफ राइट्स** से संसदीय सर्वोच्चता स्थापित हुई।

28. **जॉन लॉक का राजनीतिक दर्शन:** अंग्रेज दार्शनिक **जॉन लॉक** को उदारवाद का जनक माना जाता है; उन्होंने राज्य को जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के प्राकृतिक अधिकारों का रक्षक बताया।

29. **वोल्टेयर और धार्मिक सहिष्णुता:** फ्रांसीसी प्रबोधन दार्शनिक **वोल्टेयर** ने चर्च की कट्टरता पर प्रहार किया और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन किया।

30. **दिदरो का विश्वकोश (Encyclopédie):** प्रबोधन काल के वैज्ञानिक और तर्कसंगत विचारों को संकलित करने वाले विशाल 'एनसाइक्लोपीडिया' का संपादन **डेनिस दिदरो** ने किया।

31. **अमेरिकी उपनिवेशों की संख्या:** उत्तरी अमेरिका के पूर्वी तट पर ब्रिटेन के **13 उपनिवेश** थे; वर्जीनिया (जेम्सटाउन, 1607) इनमें पहला स्थायी ब्रिटिश उपनिवेश था।

32. **स्टाम्प एक्ट (1765):** ब्रिटिश प्रधानमंत्री ग्रेनविले द्वारा 1765 में अमेरिकी उपनिवेशों के सभी कानूनी दस्तावेजों और अखबारों पर स्टाम्प लगाना अनिवार्य किया गया।

33. **बोस्टन टी पार्टी (16 दिसंबर 1773):** ईस्ट इंडिया कंपनी के चाय एकाधिकार के विरोध में **सैमुअल एडम्स** के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने बोस्टन बंदरगाह पर चाय की 342 पेटियां समुद्र में फेंक दीं।

34. **अमेरिकी स्वतंत्रता की घोषणा: 4 जुलाई 1776** को फिलाडेल्फिया में **थॉमस जेफरसन** द्वारा रचित स्वतंत्रता घोषणापत्र स्वीकार किया गया, जिसमें कहा गया कि "सभी मनुष्य जन्म से समान हैं।"

35. **पेरिस की संधि (1783):** 3 सितंबर 1783 को हस्ताक्षरित पेरिस संधि द्वारा ब्रिटेन ने संयुक्त राज्य अमेरिका की स्वतंत्रता को आधिकारिक मान्यता प्रदान की।

36. **विश्व का प्रथम लिखित संविधान:** 1787 के फिलाडेल्फिया सम्मेलन में निर्मित अमेरिकी संविधान **1789** में लागू हुआ और **जॉर्ज वाशिंगटन** अमेरिका के प्रथम राष्ट्रपति बने।

37. **लुई चौदहवें का कथन:** फ्रांस के निरंकुश राजतंत्र की पराकाष्ठा सम्राट लुई चौदहवें के कथन "मैं ही राज्य हूं" (*I am the State*) में झलकती थी, जिसने वर्साय का विशाल महल बनवाया।

38. **बास्तील का पतन (14 जुलाई 1789):** पेरिस की क्रांतिकारी जनता ने निरंकुश राजतंत्र के प्रतीक बास्तील के किले-जेल को ध्वस्त कर दिया; 14 जुलाई आज भी फ्रांस का राष्ट्रीय दिवस है।

39. **मानव एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा:** अगस्त 1789 में फ्रांस की नेशनल असेंबली ने रूसो और अमेरिकी क्रांति से प्रेरित होकर नागरिक अधिकारों का ऐतिहासिक घोषणापत्र जारी किया।

40. **फ्रांस का राष्ट्रगान 'मार्सिले':** कवि **रॉजेट डी लाइल** द्वारा रचित देशभक्ति गीत 'ला मार्सिले' (*La Marseillaise*) फ्रांसीसी क्रांतिकारियों का अभियान गीत और बाद में फ्रांस का राष्ट्रगान बना।

41. **आतंक का राज (1793–1794):** जैकोबिन क्लब के नेता **मैक्सिमिलियन रोबेस्पिएर** ने फ्रांस में सितंबर 1793 से जुलाई 1794 तक कठोर दमनकारी शासन चलाया, जिसमें डॉ. गिलोटिन की मशीन से हजारों लोगों को मृत्युदंड दिया गया।

42. **नेपोलियन का सम्राट बनना (1804):** कोर्सिका द्वीप में जन्मे **नेपोलियन बोनापार्ट** ने 1804 में जनमत संग्रह के बाद नॉट्रे डेम कैथेड्रल में स्वयं को फ्रांस का सम्राट घोषित किया।

43. **महाद्वीपीय व्यवस्था (Continental System):** नेपोलियन ने ब्रिटेन को आर्थिक रूप से घुटनों पर लाने के लिए 1806 की बर्लिन व मिलान डिक्री द्वारा यूरोपीय देशों के ब्रिटेन से व्यापार करने पर रोक लगाई।

44. **वाटरलू का युद्ध (18 जून 1815):** बेल्जियम के **वाटरलू** मैदान में मित्र राष्ट्रों की सेना (ड्यूक ऑफ वेलिंगटन और प्रशा के सेनापति ब्लूचर) ने नेपोलियन को अंतिम रूप से पराजित किया।

45. **वियना कांग्रेस (1815):** ऑस्ट्रिया के चांसलर **मेटरनिख** की मेजबानी में 1815 में हुई वियना संधि ने यूरोप में पुरातन राजवंशों और रूढ़िवादी व्यवस्था को पुनः स्थापित किया।

46. **कृषि क्रांति और रोटेशन प्रणाली:** ब्रिटेन में लॉर्ड टाउनशेंड ने चार-फसली चक्र (Turnip rotation) और जेथ्रो टुल ने **'सीड ड्रिल' (Seed Drill)** मशीन का आविष्कार कर कृषि क्रांति को गति दी।

47. **भाप इंजन का सुधारक:** स्कॉटलैंड के अभियंता **जेम्स वाट** ने मैथ्यू बोल्टन के सहयोग से 1769 में भाप इंजन को घूर्णन गति प्रदान कर कारखानों की मशीनों को चलाने योग्य बनाया।

48. **रेलवे का जनक: जॉर्ज स्टीफेंसन** ने 1814 में 'ब्लूचर' और बाद में प्रसिद्ध भाप इंजन **'रॉकेट'** बनाया; 1830 में लिवरपूल से मैनचेस्टर के बीच विश्व की पहली यात्री रेलगाड़ी चली।

49. **बेसेमर प्रक्रिया (1856):** अंग्रेज इंजीनियर **हेनरी बेसेमर** ने पिघले हुए कच्चे लोहे से अशुद्धियां दूर कर कम लागत में बड़े पैमाने पर मजबूत **इस्पात (Steel)** बनाने की विधि खोजी।

50. **संचार क्रांति के आविष्कार: सैमुअल मोर्स** ने टेलीग्राफ (मोर्स कोड, 1837), **अलेक्जेंडर ग्राहम बेल** ने टेलीफोन (1876) और **मारकोनी** ने बेतार के तार (रेडियो, 1895) का आविष्कार किया।

51. **कम्युनिस्ट मेनिफेस्टो (1848):** वैज्ञानिक समाजवाद के संस्थापक **कार्ल मार्क्स** और **फ्रेडरिक एंगेल्स** ने 1848 में 'साम्यवादी घोषणापत्र' प्रकाशित किया और नारा दिया: "दुनिया के मजदूरों, एक हो जाओ!"

52. **दास कैपिटल (Das Kapital):** पूंजीवादी शोषण और 'अतिरिक्त मूल्य के सिद्धांत' (Theory of Surplus Value) का विश्लेषण करने वाली कालजयी कृति 'दास कैपिटल' (प्रथम खंड 1867) के लेखक **कार्ल मार्क्स** हैं।

53. **मेइजी पुनर्स्थापना (1868):** जापान में शोगुन सामंती शासन का अंत कर सम्राट मुत्सुहितो (**मेइजी काल**) के अधीन पश्चिमी तकनीक व शिक्षा अपनाकर तीव्र औद्योगीकरण किया गया।

54. **यंग इटली और यंग यूरोप:** इटली के राष्ट्रवादी **जोसेफ मेजिनी** ने 1831 में मार्सेई में 'यंग इटली' और 1834 में बर्न में 'यंग यूरोप' नामक युवा क्रांतिकारी संगठनों की स्थापना की।

55. **प्लॉम्बियर्स का गुप्त समझौता (1858):** काउंट कावूर ने फ्रांस के सम्राट नेपोलियन तृतीय के साथ गुप्त समझौता कर 1859 में ऑस्ट्रिया को हराया और लोम्बार्डी को सार्डिनिया में मिलाया।

56. **जोलवेरिन (Zollverein, 1834):** प्रशा की पहल पर 1834 में गठित **'जोलवेरिन'** एक जर्मन सीमा-शुल्क संघ था जिसने आंतरिक व्यापारिक अवरोध समाप्त कर जर्मन एकीकरण की आर्थिक नींव रखी।

57. **रक्त और लौह की नीति:** प्रशा के चांसलर **ऑटो वॉन बिस्मार्क** ने 1862 में संसद में कहा कि "जर्मनी की समस्याओं का समाधान भाषणों और बहुमत के प्रस्तावों से नहीं, बल्कि **रक्त और लौह (Blood and Iron)** से होगा।"

58. **फ्रैंकफर्ट की संधि (10 मई 1871):** सेडान के युद्ध में फ्रांस की हार के बाद हुई फ्रैंकफर्ट संधि के तहत फ्रांस को अपने समृद्ध प्रांत **अल्सास और लॉरेन** नवगठित जर्मन साम्राज्य को सौंपने पड़े।

59. **अमेरिकी गृहयुद्ध (1861–1865):** दास प्रथा के उन्मूलन और संघ की एकता के मुद्दे पर अमेरिका के उत्तरी राज्यों (संघ) और दक्षिणी परिसंघीय राज्यों के बीच चार वर्षों तक गृहयुद्ध चला।

60. **अब्राहम लिंकन और दास प्रथा का अंत:** अमेरिकी राष्ट्रपति **अब्राहम लिंकन** ने 1 जनवरी 1863 को 'मुक्ति उद्घोषणा' जारी की, 1863 के गेटिसबर्ग भाषण में लोकतंत्र को "जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन" परिभाषित किया और **13वें संविधान संशोधन (1865)** से दास प्रथा समाप्त हुई।

61. **बर्लिन सम्मेलन (1884–1885):** अफ्रीका के शांतिपूर्ण बंटवारे ('Scramble for Africa') के लिए जर्मन चांसलर बिस्मार्क ने 1884-85 में यूरोपीय साम्राज्यवादी देशों का बर्लिन सम्मेलन बुलाया।

62. **रूस-जापान युद्ध (1904–1905):** मंचूरिया और कोरिया पर नियंत्रण को लेकर हुए युद्ध में छोटे से एशियाई देश **जापान** ने विशाल यूरोपीय शक्ति **रूस** को हराकर एशियाई राष्ट्रवाद में नया आत्मविश्वास भरा।

63. **सेराजेवो हत्याकांड (28 जून 1914):** सर्बियाई गुप्त राष्ट्रवादी संगठन 'ब्लैक हैंड' के सदस्य गैवरिलो प्रिंसिप ने बोस्निया की राजधानी सेराजेवो में ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकारी **आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड** की हत्या कर दी, जो प्रथम विश्व युद्ध का तात्कालिक कारण बना।

64. **श्लीफेन प्लान (Schlieffen Plan):** प्रथम विश्व युद्ध में दो मोर्चों के युद्ध से बचने के लिए जर्मनी द्वारा बेल्जियम होते हुए पहले फ्रांस को तेजी से हराने और फिर रूस से लड़ने की सैन्य योजना को 'श्लीफेन प्लान' कहा गया।

65. **फरवरी और अक्टूबर क्रांति (1917):** रूस में मार्च 1917 की क्रांति से जार निकोलस द्वितीय ने गद्दी छोड़ी और नवंबर 1917 की बोल्शेविक क्रांति से **लेनिन** ने दुनिया की पहली साम्यवादी सरकार बनाई।

66. **ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि (3 मार्च 1918):** बोल्शेविक रूस ने जर्मनी के साथ ब्रेस्ट-लिटोव्स्क संधि कर प्रथम विश्व युद्ध से स्वयं को अलग कर लिया।

67. **पेरिस शांति सम्मेलन के 'बिग फोर' (Big Four):** 1919 के पेरिस शांति सम्मेलन में मुख्य निर्णय चार नेताओं ने लिए — **वुडरो विल्सन** (अमेरिका), **लॉयड जॉर्ज** (ब्रिटेन), **जॉर्ज क्लेमेंसो** (फ्रांस) और **विटोरियो ऑरलैंडो** (इटली)।

68. **वर्साय की संधि (28 जून 1919):** जर्मनी के साथ वर्साय के शीशमहल में हुई इस संधि के तहत जर्मनी की सेना 1 लाख तक सीमित कर दी गई, राइनलैंड का विसैन्यीकरण किया गया और 6.6 अरब पाउंड का युद्ध हर्जाना लगाया गया।

69. **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO):** वर्साय की संधि के भाग XIII के अंतर्गत ही वर्ष **1919** में श्रमिकों के अधिकारों और सामाजिक न्याय के लिए **अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (मुख्यालय: जिनेवा)** की स्थापना हुई।

70. **आधुनिक तुर्की का निर्माता:** प्रथम विश्व युद्ध के बाद **मुस्तफा कमाल पाशा ('अतातुर्क')** ने तुर्की से खिलाफत व सल्तनत समाप्त कर 1923 में धर्मनिरपेक्ष और आधुनिक तुर्की गणराज्य की स्थापना की।

71. **वॉल स्ट्रीट क्रैश (24 अक्टूबर 1929):** अमेरिकी शेयर बाजार के अचानक ढहने ('ब्लैक थर्सडे') के साथ विश्वव्यापी आर्थिक महामंदी (1929–1933) की शुरुआत हुई।

72. **रोम पर मार्च (अक्टूबर 1922):** बेनिटो मुसोलिनी के 30,000 'काली कुर्ती' फासीवादी स्वयंसेवकों द्वारा रोम पर चढ़ाई करने के बाद राजा विक्टर इमैनुएल तृतीय ने मुसोलिनी को इटली का प्रधानमंत्री नियुक्त किया।

73. **राइखस्टाग अग्निकांड एवं इनेबलिंग एक्ट (1933):** जनवरी 1933 में जर्मनी का चांसलर बनने के बाद **एडोल्फ हिटलर** ने मार्च 1933 में 'इनेबलिंग एक्ट' पारित कराकर वाइमर संविधान को निष्प्रभावी कर दिया और पूर्ण तानाशाही स्थापित की।

74. **एंटी-कॉमिनटर्न पैक्ट (1936–1937):** साम्यवाद के विरुद्ध 1936 में जर्मनी और जापान ने समझौता किया, जिसमें 1937 में इटली के जुड़ने से **'रोम-बर्लिन-टोक्यो धुरी' (Axis)** का निर्माण हुआ।

75. **द्वितीय विश्व युद्ध का प्रारंभ (1 सितंबर 1939):** जर्मनी द्वारा 1 सितंबर 1939 को पोलैंड पर आक्रमण करने और 3 सितंबर को ब्रिटेन व फ्रांस द्वारा युद्ध की घोषणा करने से द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ।

76. **पर्ल हार्बर पर हमला (7 दिसंबर 1941):** जापान की वायुसेना ने हवाई द्वीप स्थित अमेरिकी नौसैनिक बेड़े **पर्ल हार्बर** पर अचानक हमला किया, जिसके अगले दिन अमेरिका द्वितीय विश्व युद्ध में कूद पड़ा।

77. **स्टालिनग्राद का युद्ध (1942–1943):** सोवियत संघ की लाल सेना ने जनरल जुकोव के नेतृत्व में स्टालिनग्राद में जर्मन सेनापति वॉन पॉलस की छठी सेना को घेरकर आत्मसमर्पण करने पर विवश किया, जो द्वितीय विश्व युद्ध का सबसे बड़ा मोड़ साबित हुआ।

78. **याल्टा सम्मेलन (फरवरी 1945):** क्रीमिया के याल्टा में चर्चिल (ब्रिटेन), रूजवेल्ट (अमेरिका) और स्टालिन (USSR) ने युद्धोत्तर यूरोप के पुनर्गठन, जर्मनी के चार अधिकार क्षेत्रों में विभाजन और UNO की स्थापना की रूपरेखा तय की।

79. **संयुक्त राष्ट्र दिवस (24 अक्टूबर 1945):** 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र चार्टर लागू होने के साथ UNO अस्तित्व में आया; इसके प्रथम महासचिव नॉर्वे के **ट्रिग्वे ली (Trygve Lie)** थे।

80. **ब्रेटन वुड्स जुड़वां (Bretton Woods Twins):** जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स सम्मेलन में विश्व बैंक (IBRD) और अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की स्थापना का निर्णय हुआ।

81. **मानवाधिकारों की सार्वभौम घोषणा (UDHR):** संयुक्त राष्ट्र महासभा ने **10 दिसंबर 1948** को पेरिस में एलेनोर रूजवेल्ट की अध्यक्षता में तैयार 30 अनुच्छेदों वाले मानव अधिकार घोषणापत्र को अपनाया (10 दिसंबर = अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस)।

82. **इजरायल की स्थापना (14 मई 1948):** प्रथम विश्व युद्ध की 'बाल्फोर घोषणा' (1917) और 1947 के संयुक्त राष्ट्र विभाजन प्रस्ताव के बाद 14 मई 1948 को यहूदी राष्ट्र **इजरायल** के गठन की घोषणा हुई।

83. **मार्शल प्लान (1948):** अमेरिकी विदेश मंत्री **जॉर्ज सी. मार्शल** ने युद्ध से तबाह पश्चिमी यूरोपीय देशों के आर्थिक पुनर्निर्माण और साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए 'यूरोपीय रिकवरी प्रोग्राम' शुरू किया।

84. **नाटो (NATO) की स्थापना:** 4 अप्रैल 1949 को वाशिंगटन में सामूहिक सुरक्षा सिद्धांत पर **उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (मुख्यालय: ब्रुसेल्स, बेल्जियम)** की स्थापना हुई।

85. **चीनी जनवादी गणराज्य (1 अक्टूबर 1949):** माओ त्से-तुंग के नेतृत्व में कम्युनिस्ट क्रांति सफल हुई और बीजिंग में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की स्थापना हुई।

86. **पंचशील समझौता (29 अप्रैल 1954):** भारत के प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू और चीन के प्रधानमंत्री चाउ एन-लाई ने शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के **पांच सिद्धांतों (पंचशील)** पर हस्ताक्षर किए।

87. **बांडुंग सम्मेलन (अप्रैल 1955):** इंडोनेशिया के बांडुंग शहर में 29 एशियाई और अफ्रीकी नव-स्वतंत्र देशों का ऐतिहासिक सम्मेलन हुआ, जिसने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की आधारशिला रखी।

88. **स्वेज संकट (1956):** मिस्र के राष्ट्रपति **गमाल अब्देल नासिर** द्वारा स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण करने पर ब्रिटेन, फ्रांस और इजरायल ने मिस्र पर हमला किया, किंतु अमेरिका, सोवियत संघ और भारत के दबाव में उन्हें पीछे हटना पड़ा।

89. **स्पुतनिक-1 और अंतरिक्ष युग (1957):** शीत युद्ध की तकनीकी प्रतिस्पर्धा के दौरान **सोवियत संघ** ने 4 अक्टूबर 1957 को विश्व का पहला कृत्रिम उपग्रह **'स्पुतनिक-1'** अंतरिक्ष में भेजा और 1961 में **यूरी गागरिन** अंतरिक्ष जाने वाले पहले मानव बने।

90. **प्रथम गुटनिरपेक्ष शिखर सम्मेलन (1961):** सितंबर 1961 में यूगोस्लाविया की राजधानी **बेलग्रेड** में 25 सदस्य देशों के साथ गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का पहला औपचारिक शिखर सम्मेलन आयोजित हुआ।

91. **क्यूबा मिसाइल संकट (अक्टूबर 1962):** क्यूबा के साम्यवादी नेता फिदेल कास्त्रो की रक्षा के लिए सोवियत नेता निकिता ख्रुश्चेव द्वारा क्यूबा में परमाणु मिसाइलें तैनात करने पर अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी ने नौसैनिक नाकेबंदी की; अंततः समझौते से परमाणु युद्ध टला।

92. **अश्वेत नागरिक अधिकार आंदोलन (1963):** अमेरिका में नस्लीय भेदभाव के विरुद्ध **डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर** ने महात्मा गांधी के अहिंसक सत्याग्रह के मार्ग पर चलते हुए अगस्त 1963 में वाशिंगटन में प्रसिद्ध "आई हैव अ ड्रीम" (*I Have a Dream*) भाषण दिया।

93. **परमाणु अप्रसार संधि (NPT, 1968):** परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए 1 जुलाई 1968 को हस्ताक्षरित यह संधि 1970 में लागू हुई; भारत ने इसे भेदभावपूर्ण मानते हुए कभी हस्ताक्षर नहीं किए।

94. **वियतनाम युद्ध का अंत (1975):** लगभग दो दशकों के भीषण संघर्ष के बाद 30 अप्रैल 1975 को साइगॉन (हो ची मिन्ह सिटी) के पतन के साथ अमेरिकी सेना की वापसी हुई और उत्तरी व दक्षिणी वियतनाम का एकीकरण हुआ।

95. **ईरानी इस्लामी क्रांति (1979):** वर्ष 1979 में अयातुल्ला रुहोल्लाह खोमैनी के नेतृत्व में हुई क्रांति ने अमेरिका समर्थित शाह मोहम्मद रजा पहलवी के राजतंत्र को समाप्त कर ईरान को इस्लामी गणराज्य बनाया।

96. **बर्लिन की दीवार का पतन (9 नवंबर 1989):** 1961 में बनी 155 किलोमीटर लंबी बर्लिन की दीवार को 9 नवंबर 1989 को पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी के नागरिकों ने तोड़ दिया और **3 अक्टूबर 1990** को जर्मनी का पुनरेकीकरण हुआ।

97. **सोवियत संघ का विघटन (25 दिसंबर 1991):** मिखाइल गोर्बाचेव के इस्तीफे के साथ 25-26 दिसंबर 1991 को सोवियत संघ (USSR) 15 स्वतंत्र देशों में विभाजित हो गया और 45 वर्षों से चल रहे शीत युद्ध का अंत हुआ।

98. **मास्ट्रिच संधि और यूरोपीय संघ (1992–1993):** 1957 की रोम संधि से बने यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) को फरवरी 1992 की **मास्ट्रिच संधि** (1993 से लागू) द्वारा **यूरोपीय संघ (European Union — EU)** और साझा मुद्रा 'यूरो' में परिवर्तित किया गया।

99. **दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की समाप्ति (1994):** 27 वर्षों तक रॉबेन द्वीप की जेल में रहने के बाद 1990 में रिहा हुए **नेल्सन मंडेला** मई 1994 में दक्षिण अफ्रीका के पहले अश्वेत लोकतांत्रिक राष्ट्रपति चुने गए।

100. **विश्व व्यापार संगठन (WTO) की स्थापना (1 जनवरी 1995):** 1947 के 'गैट' (GATT — प्रशुल्क एवं व्यापार पर सामान्य समझौता) के उरुग्वे दौर और मराकेश समझौते के परिणामस्वरूप **1 जनवरी 1995** को बहुपक्षीय व्यापार के नियमन हेतु **WTO (मुख्यालय: जिनेवा)** की स्थापना हुई।

1.0 पुस्तक 27 का गहन अकादमिक ऑडिट एवं अपग्रेड मैट्रिक्स

IUC Academy (www.iucacademy.com) की पुस्तक 27 (संपूर्ण विश्व का इतिहास) के पूर्व संस्करण का तुलनात्मक परीक्षण संघ लोक सेवा आयोग (UPSC CSE), राज्य लोक सेवा आयोगों (UPPSC, BPSC) तथा राष्ट्रीय स्तर की अध्यापक एवं शोध परीक्षाओं (DSSSB PGT History, UGC-NET History) के वर्ष 2019 से 2026 तक के प्रश्न-पत्रों के सापेक्ष किया गया। इस ऑडिट में पहचाने गए अंतराल और नए अपग्रेड बिंदु नीचे सारणीबद्ध हैं:

क्र.सं.	विषय क्षेत्र (Domain)	पूर्व संस्करण की स्थिति (Audit Gap)	अपग्रेड संस्करण में जोड़े गए उन्नत बिंदु (Upgraded Additions)	परीक्षा प्रासंगिकता
1	प्रबोधन काल (Age of Enlightenment)	केवल प्रमुख दार्शनिकों के नाम व पुस्तकों की सूची	10 प्रमुख दार्शनिकों का मानव स्वभाव, संप्रभुता, धर्म, अर्थव्यवस्था एवं नारीवाद पर तुलनात्मक वैचारिक मैट्रिक्स	UPSC GS-I, UGC-NET, DSSSB PGT
2	आधुनिक विश्व की तीन महाक्रांतियाँ	अमेरिकी, फ्रांसीसी और रूसी क्रांति का अलग-अलग विवरण	तीनों क्रांतियों का कारण, वर्ग-चरित्र, संवैधानिक परिणाम, हिंसा के स्वरूप और वैश्विक प्रभाव पर एकीकृत तुलनात्मक विश्लेषण	UPSC CSE Mains, UPPSC, BPSC
3	विश्व युद्धों की शांति संधियाँ	मुख्यतः वर्साय की संधि तक सीमित चर्चा	पेरिस शांति सम्मेलन की 5 संधियाँ, लोकार्नो, केलॉग-ब्रियांड, म्यूनिख, याल्टा, पोट्सडैम व सैन फ्रांसिस्को का पूर्ण अनुच्छेद-वार विश्लेषण	NDA/CDS, UGC-NET, DSSSB PGT
4	शीत युद्ध एवं द्विध्रुवीय संकट	शीत युद्ध के सामान्य चरण	बर्लिन नाकेबंदी (1948) से सोवियत विघटन (1991) तक के 12 प्रमुख भू-राजनीतिक संकटों का कालानुक्रमिक एवं रणनीतिक विश्लेषण	UPSC GS-I, UPPSC Mains, CAPF
5	वि-उपनिवेशीकरण (Decolonization)	एशिया और अफ्रीका की स्वतंत्रता की सामान्य तिथियाँ	ब्रिटिश, फ्रांसीसी, डच, बेल्जियम एवं पुर्तगाली वि-उपनिवेशीकरण मॉडलों की तुलना; अल्जीरिया, हिंद-चीन, कांगो, केन्या व अंगोला के केस स्टडी	UPSC CSE Mains, BPSC, UGC-NET

1.1 उन्नत गहन अध्ययन मॉड्यूल (5 New Advanced Deep-Study Modules — Book 27)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 1.1 उन्नत गहन अध्ययन मॉड्यूल (5 New Advanced Deep-Study Modules — Book 27)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1
मॉड्यूल 1: प्रबोधन कालीन दार्शनिकों का तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis of Enlightenment Philosophers)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
मॉड्यूल 2: अमेरिकी बनाम फ्रांसीसी बनाम रूसी क्रांति — बहुआयामी तुलनात्मक अध्ययन (American vs. French vs. Russian Revolution)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 3
मॉड्यूल 3: दोनों विश्व युद्धों की सभी प्रमुख संधियाँ एवं कूटनीतिक समझौते (All Treaties of WWI & WWII)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 4
मॉड्यूल 4: शीत युद्ध के प्रमुख संकट एवं भू-राजनीतिक टकराव (Cold War Crises: 1945–1991)

मॉड्यूल 1: प्रबोधन कालीन दार्शनिकों का तुलनात्मक विश्लेषण (Comparative Analysis of Enlightenment Philosophers)

17वीं और 18वीं शताब्दी का यूरोपीय प्रबोधन (Enlightenment / *Aufklärung*) वैज्ञानिक क्रांति के तार्किक नियमों को मानव समाज, राज्य, अर्थव्यवस्था और धर्म पर लागू करने का बौद्धिक आंदोलन था। इमैनुएल कांट ने 1784 के अपने प्रसिद्ध निबंध "*What is Enlightenment?*" में इसका आदर्श वाक्य दिया — **"Sapere Aude!" (जानने का साहस करो / अपनी बुद्धि के प्रयोग का साहस रखो)।**

(क) सामाजिक समझौता एवं राज्य के सिद्धांतकार: हॉब्स, लॉक और रूसो का त्रिकोण

प्रबोधन चिंतन की राजनीतिक नींव 'सामाजिक समझौता सिद्धांत' (Social Contract Theory) पर टिकी है, किंतु तीनों विचारकों ने 'प्राकृतिक अवस्था' (State of Nature) और 'संप्रभुता' (Sovereignty) की भिन्न व्याख्या की:

1. **थॉमस हॉब्स (Thomas Hobbes, 1588–1679):** अपनी कृति *Leviathan* (1651) में हॉब्स ने मानव स्वभाव को स्वार्थी, भयभीत और शक्ति-लोलुप माना। प्राकृतिक अवस्था में "सबका सबके विरुद्ध युद्ध" (*Bellum omnium contra omnes*) था, जहाँ मानव जीवन "एकाकी, निर्धन, कुत्सित, पाशविक और अल्पायु" (Solitary, poor, nasty, brutish, and short) था। अतः आत्म-संरक्षण हेतु मनुष्यों ने अपने समस्त अधिकार एक निरंकुश

संप्रभु ('लेवियाथन') को सौंप दिए। शासक समझौते का पक्ष नहीं है, इसलिए जनता को विद्रोह का अधिकार नहीं है (सिवाय तब जब राज्य जीवन की रक्षा न कर सके)।

2. **जॉन लॉक (John Locke, 1632–1704):** *Two Treatises of Government* (1689) में लॉक ने प्राकृतिक अवस्था को शांतिपूर्ण व सद्भावनापूर्ण बताया, जहाँ मनुष्य के पास तीन नैसर्गिक अधिकार थे— **जीवन (Life), स्वतंत्रता (Liberty) और संपत्ति (Property)**। केवल निष्पक्ष न्यायनिर्णयन के अभाव को दूर करने हेतु दोहरा समझौता हुआ। राज्य एक 'ट्रस्ट' (न्यास) है; यदि सरकार प्राकृतिक अधिकारों का हनन करे, तो जनता को उसे अपदस्थ करने और क्रांति करने का वैध अधिकार है। लॉक ने *Essay Concerning Human Understanding* (1690) में मनुष्य के मस्तिष्क को **'तबुला रासा' (Tabula Rasa — कोरी स्लेट)** बताया, जिस पर अनुभव से ज्ञान अंकित होता है।

3. **जीन-जैक्स रूसो (Jean-Jacques Rousseau, 1712–1778):** *Discourse on the Origin of Inequality* (1755) और *The Social Contract* (1762) में रूसो ने उद्घोष किया— **"मनुष्य स्वतंत्र जन्मा है, किंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है।"** रूसो के अनुसार आदिम मनुष्य 'भद्र वन्य' (Noble Savage) था, किंतु निजी संपत्ति के उदय ने असमानता और पराधीनता को जन्म दिया। इसका समाधान **'सामान्य इच्छा' (General Will / Volonté Générale)** की संप्रभुता है, जो सभी नागरिकों के सामूहिक कल्याण का प्रतिनिधित्व करती है। लॉक की प्रतिनिधि सरकार के विपरीत रूसो ने प्रत्यक्ष एवं लोकप्रिय संप्रभुता (Popular Sovereignty) का समर्थन किया।

(ख) प्रबोधन कालीन प्रमुख दार्शनिकों का तुलनात्मक वैचारिक मैट्रिक्स

दार्शनिक (Philosopher)	देश एवं कालखंड	प्रमुख कृतियाँ (Major Works)	केंद्रीय राजनीतिक एवं दार्शनिक सिद्धांत	ऐतिहासिक प्रभाव एवं विरासत
थॉमस हॉब्स	इंग्लैंड (1588–1679)	*Leviathan* (1651), *De Cive* (1642)	अखंड एवं अविभाज्य वैधानिक संप्रभुता; धर्म पर राज्य का सर्वोच्च नियंत्रण	आधुनिक राजनीतिक यथार्थवाद और सकारात्मक कानून (Legal Positivism) की नींव
जॉन लॉक	इंग्लैंड (1632–1704)	*Two Treatises of Government* (1689), *A Letter Concerning Toleration*	सीमित सरकार, संवैधानिक राजतंत्र, जीवन-स्वतंत्रता-संपत्ति के प्राकृतिक अधिकार	1688 की गौरवपूर्ण क्रांति और 1776 के अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणापत्र का मुख्य आधार
मोंटेस्क्यू (Montesquieu)	फ्रांस (1689–1755)	*The Spirit of the Laws* (1748), *Persian Letters* (1721)	शक्तियों का पृथक्करण (विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका) एवं नियंत्रण व संतुलन	अमेरिकी संविधान (1787) और फ्रांस के 1791 के संविधान की संरचनात्मक रीढ़
वोल्टेयर (Voltaire)	फ्रांस (1694–1778)	*Candide* (1759), *Letters on the English* (1734), *Treatise on Tolerance*	अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, धार्मिक सहिष्णुता, चर्च के पाखंड पर प्रहार (*Écrasez l'infâme*), प्रबुद्ध निरंकुशता	यूरोप में चर्च के विशेषाधिकारों का ह्रास, नागरिक स्वतंत्रताओं का विस्तार
जीन-जैक्स रूसो	जिनेवा/फ्रांस (1712–1778)	*The Social Contract* (1762), *Émile* (1762), *Confessions*	सामान्य इच्छा (General Will), लोकप्रिय संप्रभुता, बाल-केंद्रित प्राकृतिक शिक्षा	फ्रांसीसी क्रांति (विशेषतः जैकोबिन गणतंत्र) और स्वच्छंदतावाद (Romanticism) का प्रेरणास्रोत
डेनिस दिदरो (Denis Diderot)	फ्रांस (1713–1784)	*Encyclopédie* (28 खंड, डी'अलेम्बर्ट के साथ संपादित, 1751–1772)	वैज्ञानिक ज्ञान का लोकतंत्रीकरण, भौतिकवाद, शिल्प व तकनीकी श्रम को दार्शनिक प्रतिष्ठा	ज्ञान पर चर्च और कुलीन वर्ग के एकाधिकार को समाप्त कर जन-जागरण का प्रसार
एडम स्मिथ (Adam Smith)	स्कॉटलैंड (1723–1790)	*The Wealth of Nations* (1776), *Theory of Moral Sentiments* (1759)	अहस्तक्षेप नीति (*Laissez-faire*), 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand), श्रम विभाजन, वाणिज्यवाद का विरोध	आधुनिक शास्त्रीय अर्थशास्त्र, मुक्त व्यापार और औद्योगिक पूँजीवाद का सैद्धांतिक आधार
इमैनुएल कांट (Immanuel Kant)	प्रशा/जर्मनी (1724–1804)	*Critique of Pure Reason* (1781), *Perpetual Peace* (1795)	अनुभववाद और बुद्धिवाद का समन्वय, 'निरपेक्ष आदेश' (Categorical Imperative), गणतांत्रिक विश्व संघ	आधुनिक कर्तव्यवादी नीतिशास्त्र (Deontology) तथा राष्ट्र संघ/संयुक्त राष्ट्र की वैचारिक पूर्वपीठिका

दार्शनिक (Philosopher)	देश एवं कालखंड	प्रमुख कृतियाँ (Major Works)	केंद्रीय राजनीतिक एवं दार्शनिक सिद्धांत	ऐतिहासिक प्रभाव एवं विरासत
सीज़र बेकारिया (Cesare Beccaria)	इटली (1738–1794)	*On Crimes and Punishments* (1764)	यातना और मृत्युदंड का विरोध, अपराध की गंभीरता के अनुपात में दंड, त्वरित व निश्चित न्याय	आधुनिक अपराधशास्त्र (Criminology) और मानवीय दंड संहिताओं का सुधार
मैरी वोलस्टोनक्राफ्ट	इंग्लैंड (1759–1797)	*A Vindication of the Rights of Woman* (1792)	महिलाओं की तर्कशक्ति पुरुषों के समान; समान शिक्षा और नागरिक अधिकारों की माँग (रूसो के लिंगभेद की आलोचना)	आधुनिक उदारवादी नारीवाद (First-Wave Feminism) की संस्थापक आधारशिला

मॉड्यूल 2: अमेरिकी बनाम फ्रांसीसी बनाम रूसी क्रांति — बहुआयामी तुलनात्मक अध्ययन (American vs. French vs. Russian Revolution)

आधुनिक विश्व इतिहास की तीन युगान्तकारी क्रांतियों ने क्रमशः **उपनिवेशवाद-विरोधी संवैधानिक गणतंत्र (1776)**, **सामंती विशेषाधिकार-मुक्त नागरिक राष्ट्रवाद (1789)** और **सर्वहारा समाजवादी राज्य (1917)** के प्रतिमान स्थापित किए।

(क) वैचारिक, सामाजिक एवं संरचनात्मक तुलना

तुलनात्मक आयाम (Parameter)	अमेरिकी क्रांति (1775–1783)	फ्रांसीसी क्रांति (1789–1799)	रूसी (बोल्शेविक) क्रांति (1917)
मुख्य प्रकृति एवं लक्ष्य	औपनिवेशिक एवं राजकोषीय नियंत्रण के विरुद्ध राजनीतिक-संवैधानिक क्रांति	सामंतवाद, चर्च के विशेषाधिकारों और निरंकुश राजतंत्र के विरुद्ध सामाजिक-राजनीतिक क्रांति	पूँजीवाद, ज़ारशाही निरंकुशता और साम्राज्यवादी युद्ध के विरुद्ध आर्थिक-समाजवादी क्रांति
वैचारिक प्रेरणास्रोत	जॉन लॉक, मोंटेस्क्यू, थॉमस पेन (*Common Sense*), जेम्स ओटिस	रूसो, वोल्टेयर, मोंटेस्क्यू, एबे सिएस (*What is the Third Estate?*)	कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, व्लादिमीर लेनिन (*April Theses, State and Revolution*)
प्रमुख नारा (Slogan)	*"No Taxation Without Representation"* (प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं)	*"Liberté, Égalité, Fraternité"* (स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व)	*"Peace, Land, and Bread"* (शांति, भूमि और रोटी) एवं *"All Power to the Soviets"*
नेतृत्वकारी वर्ग	औपनिवेशिक भूपति, वकील, व्यापारी व बुद्धिजीवी (वाशिंगटन, जेफरसन, एडम्स, फ्रैंकलिन)	तृतीय एस्टेट का बुर्जुआ वर्ग, वकील (रोबेस्पियरे, दांते) एवं शहरी श्रमिक (*Sans-culottes*)	पेशेवर क्रांतिकारी वैनगार्ड पार्टी (बोल्शेविक — लेनिन, ट्रॉट्स्की, स्टालिन) + श्रमिक व सैनिक सोवियतें
संपत्ति के प्रति दृष्टिकोण	निजी संपत्ति को पवित्र प्राकृतिक अधिकार माना गया; दास प्रथा तत्काल समाप्त नहीं हुई	सामंती जागीरें और चर्च की भूमि (*Biens nationaux*) जब्त कर किसानों व बुर्जुआ को बेची गईं, किंतु निजी संपत्ति सुरक्षित रही	भूमि, बैंकों और बड़े उद्योगों का पूर्ण राष्ट्रीयकरण; निजी संपत्ति के उन्मूलन का लक्ष्य
क्रांति के आंतरिक चरण	अपेक्षाकृत स्थिर व एकीकृत नेतृत्व; कोई आंतरिक 'आतंक का राज' नहीं	उदार संवैधानिक चरण (1789–91) → उग्र जैकोबिन आतंक का राज (1793–94) → डायरेक्टरी (1795–99) → नेपोलियन	फरवरी क्रांति (अस्थायी बुर्जुआ सरकार: ल्वोव/केरेंस्की) → अक्टूबर क्रांति (बोल्शेविक सत्ता) → गृहयुद्ध व युद्ध साम्यवाद (1918–21)
संवैधानिक एवं संस्थागत परिणाम	विश्व का प्रथम लिखित संविधान (1787), संघीय व्यवस्था, राष्ट्रपति प्रणाली, न्यायिक पुनरावलोकन, Bill of Rights (1791)	मानव एवं नागरिक अधिकारों की घोषणा (अगस्त 1789), धर्मनिरपेक्ष राज्य, नेपोलियन संहिता (1804)	सोवियत समाजवादी गणराज्य संघ (USSR, 1922), एकदलीय साम्यवादी शासन, नियोजित अर्थव्यवस्था (पंचवर्षीय योजनाएँ)
धर्म एवं चर्च की स्थिति	चर्च और राज्य का पूर्ण संवैधानिक पृथक्करण (First Amendment), धार्मिक स्वतंत्रता	चर्च की संपत्ति का राष्ट्रीयकरण, पादरियों का नागरिक संविधान (1790), बाद में कॉनकॉर्डेट (1801)	राज्य द्वारा घोषित नास्तिकता; रूसी ऑर्थोडॉक्स चर्च की संपत्ति व विशेषाधिकारों की समाप्ति

(ख) विश्लेषणात्मक निष्कर्ष (Exam Insight)

• **अमेरिकी क्रांति** एक 'संरक्षणवादी क्रांति' भी कही जाती है क्योंकि उपनिवेशवासियों ने उन अधिकारों की मांग की जिन्हें वे अंग्रेज नागरिक के रूप में पहले से अपना मानते थे; इसमें सामाजिक पदानुक्रम का हिंसक विध्वंस नहीं हुआ।

• **फ्रांसीसी क्रांति** ने यूरोप की *Ancien Régime* (पुरातन व्यवस्था) को जड़ से उखाड़ फेंका और राष्ट्रवाद व नागरिक समानता को आधुनिक राजनीति के केंद्र में स्थापित किया।

• **रूसी क्रांति** ने फ्रांसीसी क्रांति की 'राजनीतिक समानता' की सीमाओं को चुनौती देते हुए 'आर्थिक समानता' का प्रश्न उठाया और 20वीं सदी की विश्व राजनीति को पूँजीवादी बनाम समाजवादी खेमों में विभाजित कर दिया।

मॉड्यूल 3: दोनों विश्व युद्धों की सभी प्रमुख संधियाँ एवं कूटनीतिक समझौते (All Treaties of WWI & WWII)

(क) प्रथम विश्व युद्ध एवं अंतर्युद्ध काल की प्रमुख संधियाँ (1918–1938)

संधि / समझौता	हस्ताक्षर तिथि एवं स्थान	संबंधित पक्ष (Parties)	प्रमुख क्षेत्रीय, सैन्य एवं आर्थिक प्रावधान	ऐतिहासिक परिणाम एवं आलोचना
ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि (Treaty of Brest-Litovsk)	3 मार्च 1918 (ब्रेस्ट-लिटोव्स्क)	बोल्शेविक रूस एवं केंद्रीय शक्तियाँ (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी)	रूस प्रथम विश्व युद्ध से बाहर हुआ; पोलैंड, फिनलैंड, बाल्टिक राज्यों (एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया) और यूक्रेन पर से नियंत्रण छोड़ा	रूस ने अपनी एक-तिहाई जनसंख्या और कोयला-लौह क्षेत्र खोया; नवंबर 1918 में जर्मनी की हार के बाद यह संधि निरस्त हो गई
वर्साय की संधि (Treaty of Versailles)	28 जून 1919 (दर्पण महल, वर्साय)	मित्र राष्ट्र एवं जर्मनी	अलसेस-लॉरेन फ्रांस को, पोसेन/पश्चिमी प्रशा (पोलिश कॉरिडोर) पोलैंड को; सार कोयला क्षेत्र 15 वर्ष हेतु राष्ट्र संघ को; राइनलैंड का विसैन्यीकरण; सेना 1 लाख तक सीमित (पनडुब्बी व वायुसेना प्रतिबंधित); **अनुच्छेद 231 (War Guilt Clause)** के तहत 6.6 अरब पाउंड (132 अरब गोल्ड मार्क) की क्षतिपूर्ति	जर्मनी में इसे 'लादी गई संधि' (*Diktat*) और राष्ट्रीय अपमान माना गया; वाइमर गणराज्य कमजोर हुआ और हिटलर के नाजीवाद के उदय की पृष्ठभूमि तैयार हुई
सेंट जर्मेन-एन-ले की संधि (Treaty of Saint-Germain)	10 सितंबर 1919 (सेंट जर्मेन, फ्रांस)	मित्र राष्ट्र एवं ऑस्ट्रिया	हैब्सबर्ग साम्राज्य का विघटन; चेकोस्लोवाकिया, पोलैंड और यूगोस्लाविया की स्वतंत्रता को मान्यता; दक्षिण टिरोल और इस्ट्रिया इटली को दिए गए; ऑस्ट्रिया की सेना 30,000 तक सीमित; *अनुच्छेद 88 द्वारा जर्मनी के साथ विलय (Anschluss) पर पूर्ण प्रतिबंध*	ऑस्ट्रिया एक छोटा स्थलरुद्ध (Landlocked) देश बनकर रह गया; सुडेटेनलैंड के 30 लाख जर्मन भाषी चेकोस्लोवाकिया में चले गए
न्यूइली-सुर-सीन की संधि (Treaty of Neuilly)	27 नवंबर 1919 (न्यूइली, फ्रांस)	मित्र राष्ट्र एवं बुल्गारिया	पश्चिमी थ्रेस यूनान (ग्रीस) को सौंपा गया (जिससे बुल्गारिया की एजियन सागर तक पहुँच समाप्त हो गई); दक्षिणी डोब्रुजा रोमानिया को और कुछ पश्चिमी सीमांत क्षेत्र यूगोस्लाविया को मिले; सेना 20,000 तक सीमित	बाल्कन क्षेत्र में बुल्गारिया का असंतोष बना रहा, जिसके कारण द्वितीय विश्व युद्ध में वह धुरी राष्ट्रों से जुड़ा
ट्रियानॉन की संधि (Treaty of Trianon)	4 जून 1920 (ग्रांड ट्रियानॉन, वर्साय)	मित्र राष्ट्र एवं हंगरी	हंगरी ने अपना 72% भू-भाग और 64% जनसंख्या खो दी; ट्रांसिल्वेनिया रोमानिया को, स्लोवाकिया व रुथेनिया चेकोस्लोवाकिया को तथा क्रोएशिया-स्लावोनिया यूगोस्लाविया को दिए गए; सेना 35,000 तक सीमित	30 लाख से अधिक जातीय मग्यार (हंगेरियन) पड़ोसी देशों में अल्पसंख्यक बन गए; हंगरी में तीव्र संशोधनवादी राजनीति का उदय
सेवर्स की संधि (Treaty of Sèvres)	10 अगस्त 1920 (सेवर्स, फ्रांस)	मित्र राष्ट्र एवं ऑटोमन साम्राज्य (तुर्की)	अरब प्रांतों (सीरिया, लेबनान फ्रांस को; इराक, फिलिस्तीन, ट्रांसजॉर्डन ब्रिटेन को) पर मैंडेट व्यवस्था; पूर्वी थ्रेस और स्मिर्ना (इज़मिर) ग्रीस को; डार्डनेल्स व बोस्फोरस जलडमरूमध्य का अंतर्राष्ट्रीयकरण; कुर्द और अर्मेनियाई स्वायत्तता का प्रस्ताव	मुस्तफा कमाल पाशा (अतातुर्क) के नेतृत्व में तुर्की के राष्ट्रवादियों ने इसे अस्वीकार कर दिया और तुर्की स्वतंत्रता संग्राम छेड़ दिया
लोज़ान की संधि (Treaty of Lausanne)	24 जुलाई 1923 (लोज़ान, स्विट्ज़रलैंड)	मित्र राष्ट्र एवं कमाल पाशा का नया तुर्की गणराज्य	सेवर्स की संधि को प्रतिस्थापित किया; पूर्वी थ्रेस, इज़मिर और संपूर्ण अनातोलिया पर आधुनिक तुर्की की संप्रभुता स्वीकार; विदेशी 'कैपिचुलेशन' (विशेषाधिकार) और युद्ध क्षतिपूर्ति समाप्त	पेरिस शांति सम्मेलन की एकमात्र संधि जिसे पराजित राष्ट्र ने अपनी शर्तों पर संशोधित करवाया; धर्मनिरपेक्ष तुर्की गणराज्य की मान्यता
लोकार्नो संधियाँ (Locarno Treaties)	अक्टूबर 1925 (लोकार्नो, स्विट्ज़रलैंड; दिसंबर 1925 में लंदन में हस्ताक्षर)	जर्मनी (स्ट्रेसेमान), फ्रांस (ब्रियांड), ब्रिटेन (चेम्बरलेन), बेल्जियम, इटली, पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया	जर्मनी ने फ्रांस और बेल्जियम के साथ अपनी पश्चिमी सीमाओं (वर्साय द्वारा निर्धारित) को स्थायी रूप से स्वीकार किया और राइनलैंड के विसैन्यीकरण की पुष्टि की; इसके बदले 1926 में जर्मनी को राष्ट्र संघ में शामिल किया गया	'लोकार्नो भावना' से यूरोप में तनाव कम हुआ, किंतु जर्मनी ने अपनी **पूर्वी सीमाओं (पोलैंड व चेकोस्लोवाकिया)** की अखंडता की ऐसी कोई गारंटी नहीं दी

संधि / समझौता	हस्ताक्षर तिथि एवं स्थान	संबंधित पक्ष (Parties)	प्रमुख क्षेत्रीय, सैन्य एवं आर्थिक प्रावधान	ऐतिहासिक परिणाम एवं आलोचना
केलॉग-ब्रियांड समझौता (Pact of Paris)	27 अगस्त 1928 (पेरिस)	अमेरिका (फ्रैंक केलॉग) और फ्रांस (एरिस्टाइड ब्रियांड) की पहल पर 60+ राष्ट्र	राष्ट्रीय नीति के साधन के रूप में युद्ध का परित्याग और अंतर्राष्ट्रीय विवादों का केवल शांतिपूर्ण समाधान करने की शपथ	प्रवर्तन तंत्र (Enforcement mechanism) के अभाव में यह एक नैतिक घोषणा मात्र रह गया; 1931 में जापान के मंचूरिया आक्रमण ने इसे निष्प्रभावी कर दिया
म्यूनिख समझौता (Munich Agreement)	29–30 सितंबर 1938 (म्यूनिख)	जर्मनी (हिटलर), ब्रिटेन (नेविल चेम्बरलेन), फ्रांस (दलादिए), इटली (मुसोलिनी)	चेकोस्लोवाकिया और सोवियत संघ की अनुपस्थिति में चेकोस्लोवाकिया का जर्मन-बहुल **सुडेटेनलैंड** क्षेत्र हिटलर को सौंप दिया गया	पश्चिमी तुष्टीकरण नीति (*Policy of Appeasement*) की पराकाष्ठा; मार्च 1939 में हिटलर ने शेष चेकोस्लोवाकिया भी हड़प लिया

(ख) द्वितीय विश्व युद्ध कालीन शिखर सम्मेलन एवं युद्धोत्तर संधियाँ (1941–1951)

1. **अटलांटिक चार्टर (अगस्त 1941):** रूजवेल्ट और चर्चिल द्वारा युद्धोत्तर विश्व व्यवस्था के 8 सिद्धांत (आत्मनिर्णय का अधिकार, मुक्त व्यापार, निःशस्त्रीकरण)।

2. **तेहरान सम्मेलन (नवंबर–दिसंबर 1943):** 'बिग थ्री' (रूजवेल्ट, चर्चिल, स्टालिन) की प्रथम प्रत्यक्ष बैठक; पश्चिमी यूरोप में 'द्वितीय मोर्चा' (Operation Overlord / D-Day, जून 1944) खोलने पर सहमति।

3. **याल्टा सम्मेलन (4–11 फरवरी 1945, क्रीमिया):** रूजवेल्ट, चर्चिल और स्टालिन ने जर्मनी व बर्लिन को 4 कब्ज़ा क्षेत्रों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, सोवियत संघ) में बाँटने, जर्मनी के 'वि-नाजीकरण' (Denazification), संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो प्रणाली, तथा जर्मनी की हार के 3 माह बाद सोवियत संघ के जापान के विरुद्ध युद्ध में उतरने (सखालिन और कुरिल द्वीपों के बदले) पर सहमति बनाई।

4. **पोट्सडैम सम्मेलन (17 जुलाई – 2 अगस्त 1945):** स्टालिन, हैरी ट्रूमैन (रूजवेल्ट के उत्तराधिकारी) और क्लीमेंट एटली (चर्चिल के उत्तराधिकारी) शामिल हुए। पोलैंड-जर्मनी की सीमा के रूप में **ओडर-नीसे रेखा (Oder-Neisse Line)** निर्धारित की गई, नाजी युद्ध अपराधियों पर **न्यूरमबर्ग ट्रायल** चलाने का निर्णय हुआ और जापान को बिना शर्त आत्मसमर्पण हेतु 'पोट्सडैम घोषणा' जारी की गई।

5. **सैन फ्रांसिस्को शांति संधि (8 सितंबर 1951):** मित्र राष्ट्रों (सोवियत संघ और भारत ने हस्ताक्षर नहीं किए; भारत ने 1952 में जापान से अलग द्विपक्षीय संधि की) और जापान के मध्य हस्ताक्षरित; जापान की संप्रभुता बहाल हुई और अमेरिकी सैन्य संरक्षण की व्यवस्था बनी।

मॉड्यूल 4: शीत युद्ध के प्रमुख संकट एवं भू-राजनीतिक टकराव (Cold War Crises: 1945–1991)

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात संयुक्त राज्य अमेरिका (पूंजीवादी उदार लोकतंत्र) और सोवियत संघ (मार्क्सवादी-लेनिनवादी समाजवाद) के बीच वैचारिक, सामरिक और छद्म युद्धों (Proxy Wars) का दौर चला, जिसे बर्नार्ड बारूक और वाल्टर लिपमैन ने **'शीत युद्ध' (Cold War)** कहा।

शीत युद्ध के 10 निर्णायक संकटों का विश्लेषणात्मक विवरण

संकट / घटना	कालखंड	मुख्य नेतृत्वकर्ता	घटनाक्रम एवं भू-राजनीतिक कारण	परिणाम एवं वैश्विक प्रभाव
1. बर्लिन नाकेबंदी एवं एयरलिफ्ट	जून 1948 – मई 1949	ट्रूमैन बनाम स्टालिन	पश्चिमी मित्र राष्ट्रों द्वारा पश्चिमी जर्मनी में नई मुद्रा (*Deutsche Mark*) लागू करने के विरोध में स्टालिन ने पश्चिमी बर्लिन के सभी सड़क व रेल मार्ग बंद कर दिए	अमेरिका व ब्रिटेन ने 11 माह तक 'बर्लिन एयरलिफ्ट' द्वारा 23 लाख टन रसद पहुँचाई; मई 1949 में नाकेबंदी हटी; जर्मनी FRG (पश्चिमी) और GDR (पूर्वी) में विभाजित; **अप्रैल 1949 में NATO का गठन**
2. कोरियाई युद्ध	1950–1953	किम इल-सुंग (उत्तर), सिंघमन री (दक्षिण), ट्रूमैन, माओ, स्टालिन	25 जून 1950 को उत्तरी कोरिया ने **38वीं समानांतर रेखा** पार कर दक्षिण कोरिया पर आक्रमण किया; UN सुरक्षा परिषद (सोवियत बहिष्कार के कारण) ने मैकआर्थर के नेतृत्व में सैन्य हस्तक्षेप किया; चीन की 'पीपुल्स वालंटियर आर्मी' भी कूदी	27 जुलाई 1953 को **पानमुनजोम युद्धविराम** (कोई औपचारिक शांति संधि नहीं); 38वीं समानांतर के पास विसैन्यीकृत क्षेत्र (DMZ) बना; शीत युद्ध एशिया में फैला

संकट / घटना	कालखंड	मुख्य नेतृत्वकर्ता	घटनाक्रम एवं भू-राजनीतिक कारण	परिणाम एवं वैश्विक प्रभाव
3. स्वेज नहर संकट	अक्टूबर–नवंबर 1956	जमाल अब्दुल नासिर बनाम ब्रिटेन (ईडन), फ्रांस, इज़रायल	अमेरिका/ब्रिटेन द्वारा असवान बाँध की वित्तीय सहायता रोकने पर मिस्र के राष्ट्रपति नासिर ने जुलाई 1956 में स्वेज नहर का राष्ट्रीयकरण किया; इज़रायल, ब्रिटेन और फ्रांस ने मिस्र पर संयुक्त हमला किया	अमेरिका (आइजनहावर) के आर्थिक दबाव और सोवियत चेतावनी के कारण ब्रिटेन-फ्रांस को पीछे हटना पड़ा; मध्य-पूर्व में ब्रिटिश-फ्रांसीसी साम्राज्यवादी वर्चस्व का अंत और अरब राष्ट्रवाद का उभार
4. हंगरी विद्रोह	अक्टूबर–नवंबर 1956	इमरे नागी बनाम निकिता ख्रुश्चेव	ख्रुश्चेव के 'डी-स्टालिनीकरण' भाषण से प्रेरित होकर हंगरी के प्रधानमंत्री इमरे नागी ने वारसॉ पैक्ट (1955) से बाहर निकलने और बहुदलीय लोकतंत्र की घोषणा की	सोवियत टैंकों ने बुडापेस्ट में विद्रोह को कुचल दिया; पूर्वी यूरोप पर सोवियत नियंत्रण की कठोर सीमा स्पष्ट हुई
5. U-2 जासूसी विमान कांड एवं बर्लिन दीवार	मई 1960 एवं अगस्त 1961	आइजनहावर/केनेडी बनाम ख्रुश्चेव	1 मई 1960 को अमेरिकी U-2 जासूसी विमान (पायलट फ्रांसिस गैरी पावर्स) सोवियत सीमा में मार गिराया गया; पेरिस शिखर सम्मेलन भंग; पूर्वी जर्मनी से पलायन रोकने हेतु 13 अगस्त 1961 को बर्लिन दीवार का निर्माण	बर्लिन दीवार शीत युद्ध के 'लौह आवरण' (Iron Curtain) का सबसे प्रत्यक्ष भौतिक प्रतीक बन गई
6. क्यूबा मिसाइल संकट	अक्टूबर 1962 (13 दिन)	जॉन एफ. केनेडी बनाम निकिता ख्रुश्चेव एवं फिदेल कास्त्रो	1961 के असफल 'बे ऑफ पिग्स' आक्रमण के बाद सोवियत संघ ने क्यूबा में मध्यम दूरी की परमाणु मिसाइलें तैनात कीं; केनेडी ने क्यूबा की नौसैनिक नाकेबंदी ('Quarantine') की घोषणा की	परमाणु युद्ध के कगार से वापसी; ख्रुश्चेव क्यूबा से मिसाइलें हटाने पर सहमत हुए और अमेरिका ने क्यूबा पर आक्रमण न करने तथा तुर्की से अपनी 'जूपिटर' मिसाइलें गुप्त रूप से हटाने का वचन दिया; 1963 में **हॉटलाइन** और **आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (PTBT)** हुई
7. वियतनाम युद्ध	1955–1975	हो ची मिन्ह, ल्यो डुक थो बनाम जॉनसन, निक्सन, किसिंगर	1954 के जिनेवा समझौते से वियतनाम **17वीं समानांतर रेखा** पर विभाजित हुआ; 'डोमिनो थ्योरी' के डर से अमेरिका ने दक्षिण वियतनाम में भारी सैन्य हस्तक्षेप किया (1964 टोंकिन की खाड़ी प्रस्ताव); वियतकॉन्ग का गुरिल्ला युद्ध	1973 के पेरिस शांति समझौते से अमेरिकी सेना की वापसी; 30 अप्रैल 1975 को साइगॉन के पतन के साथ वियतनाम का समाजवादी एकीकरण; अमेरिकी अजेयता के मिथक को आघात
8. प्राग स्प्रिंग एवं ब्रेझनेव सिद्धांत	1968	अलेक्जेंडर दुबचेक बनाम लियोनिद ब्रेझनेव	चेकोस्लोवाकिया के नेता दुबचेक ने "मानवीय चेहरे वाला समाजवाद" (*Socialism with a human face*) लागू कर सेंसरशिप समाप्त की	वारसॉ पैक्ट सेनाओं ने हस्तक्षेप किया; **'ब्रेझनेव सिद्धांत'** घोषित किया गया कि किसी भी समाजवादी देश में समाजवाद को खतरा होने पर हस्तक्षेप करना सभी समाजवादी देशों का अधिकार है
9. सोवियत-अफगान युद्ध	दिसंबर 1979 – फरवरी 1989	ब्रेझनेव/गोर्बाचेव बनाम कार्टर/रीगन	काबुल की साम्यवादी सरकार (PDPA) की रक्षा हेतु सोवियत सेना का हस्तक्षेप; अमेरिका (CIA के 'ऑपरेशन साइक्लोन'), पाकिस्तान और सऊदी अरब ने मुजाहिदीन को हथियार दिए	'देतांत' (Détente — तनाव शैथिल्य) का अंत और **द्वितीय शीत युद्ध** का आरंभ; 1988 के जिनेवा समझौते के बाद 1989 में सोवियत वापसी; सोवियत संघ का 'वियतनाम' सिद्ध हुआ
10. गोर्बाचेव के सुधार एवं सोवियत विघटन	1985–1991	मिखाइल गोर्बाचेव, बोरिस येल्तसिन	आर्थिक गतिरोध दूर करने हेतु **पेरेस्त्रोइका** (आर्थिक पुनर्गठन) और **ग्लासनोस्त** (राजनीतिक खुलापन) लागू किए गए; पूर्वी यूरोप में 'सिनात्रा सिद्धांत' (हस्तक्षेप न करना) अपनाया	9 नवंबर 1989 को बर्लिन दीवार गिरी; 3 अक्टूबर 1990 को जर्मनी का एकीकरण; दिसंबर 1991 (बेलावेज़ा समझौता और अल्मा-अता घोषणा) से USSR का 15 गणराज्यों में शांतिपूर्ण विघटन और शीत युद्ध की समाप्ति

मॉड्यूल 5: वि-उपनिवेशीकरण एवं तृतीय विश्व का उदय (Decolonization Models in Asia & Africa)

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों की आर्थिक-सैन्य कमजोरी, अटलांटिक चार्टर के आत्मनिर्णय सिद्धांत, एशियाई-अफ्रीकी राष्ट्रवाद के उभार और संयुक्त राष्ट्र के मंच ने वि-उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया को तीव्र किया।

(क) चार यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के वि-उपनिवेशीकरण मॉडलों की तुलना

औपनिवेशिक शक्ति	प्रशासनिक दर्शन	वि-उपनिवेशीकरण की प्रकृति एवं प्रक्रिया	प्रमुख केस स्टडी (Case Studies)
1. ब्रिटिश मॉडल	अप्रत्यक्ष शासन (Indirect Rule) एवं क्रमिक संवैधानिक हस्तांतरण	अपेक्षाकृत क्रमिक और समझौतावादी हस्तांतरण (जहाँ श्वेत बसावट कम थी), किंतु विभाजन या नस्लीय संघर्ष वाले क्षेत्रों में हिंसक; राष्ट्रमंडल (Commonwealth) के माध्यम से संबंध बनाए रखे	**भारत (1947), श्रीलंका व म्यांमार (1948), घाना (1957 — क्वामे एन्क्रूमा, उप-सहारा अफ्रीका का प्रथम स्वतंत्र राष्ट्र)**; इसके विपरीत **केन्या में माउ-माउ विद्रोह (1952–60, जोमो केन्याटा)** और **मलाया आपातकाल (1948–60)** में सैन्य दमन हुआ

औपनिवेशिक शक्ति	प्रशासनिक दर्शन	वि-उपनिवेशीकरण की प्रकृति एवं प्रक्रिया	प्रमुख केस स्टडी (Case Studies)
2. फ्रांसीसी मॉडल	आत्मसातीकरण (*Assimilation*) एवं केंद्रीकृत प्रत्यक्ष शासन	फ्रांस ने उपनिवेशों को 'फ्रांसीसी संघ' का अभिन्न अंग माना, इसलिए प्रारंभ में स्वतंत्रता का कड़ा सैन्य विरोध किया; किंतु 1958 में चार्ल्स डी गॉल के सत्ता में आने के बाद उप-सहारा अफ्रीका में जनमत संग्रह द्वारा तेज हस्तांतरण (1960: 'अफ्रीका का वर्ष')	**हिंद-चीन युद्ध (1946–54): डिएन बिएन फू (1954)** में हो ची मिन्ह व जनरल जियाप के हाथों फ्रांस की ऐतिहासिक पराजय; **अल्जीरियाई स्वतंत्रता संग्राम (1954–62):** 10 लाख फ्रांसीसी बसने वालों (*Pieds-Noirs*) के कारण अत्यंत रक्तपातपूर्ण युद्ध, जो **1962 के एवियन समझौते (Évian Accords)** से समाप्त हुआ
3. डच एवं बेल्जियम मॉडल	आर्थिक दोहन एवं पैतृकवादी नियंत्रण (स्थानीय प्रशासनिक कैडर का अभाव)	बिना किसी संस्थागत तैयारी के अचानक या दबाव में पलायन, जिससे गृहयुद्ध और अराजकता उत्पन्न हुई	**इंडोनेशिया (डच):** सुकर्णो ने अगस्त 1945 में स्वतंत्रता घोषित की; डच सैन्य कार्रवाई ('Police Actions') के बाद अंतरराष्ट्रीय दबाव में **दिसंबर 1949 में हेग समझौते** से संप्रभुता मिली। **कांगो (बेल्जियम):** जून 1960 में बिना शिक्षित प्रशासनिक वर्ग के अचानक स्वतंत्रता; कटांगा प्रांत का अलगाव और प्रधानमंत्री **पैट्रिस लुमुम्बा** की हत्या (1961)
4. पुर्तगाली मॉडल	सालाजार की तानाशाही के तहत उपनिवेशों को 'समुद्रपारीय प्रांत' मानना	सबसे देर से और सबसे लंबे सशस्त्र गुरिल्ला युद्धों के बाद वि-उपनिवेशीकरण; अप्रैल 1974 में लिस्बन की **'कार्नेशन क्रांति' (Carnation Revolution)** के बाद ही उपनिवेश स्वतंत्र हुए	**अंगोला (1975 — MPLA, UNITA, FNLA के बीच शीत युद्ध प्रेरित गृहयुद्ध), मोज़ाम्बिक (1975 — FRELIMO), गिनी-बिसाऊ (1974 — अमिलकर काब्राल)**

(ख) बांडुंग सम्मेलन (1955) और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM — 1961)

- **अफ्रीकी-एशियाई बांडुंग सम्मेलन (अप्रैल 1955, इंडोनेशिया):** 29 नव-स्वतंत्र देशों ने पंचशील और सह-अस्तित्व के 10 सिद्धांतों को अपनाया।
- **बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (सितंबर 1961):** जवाहरलाल नेहरू (भारत), जोसिप ब्रोज़ टीटो (यूगोस्लाविया), जमाल अब्दुल नासिर (मिस्र), सुकर्णो (इंडोनेशिया) और क्वामे एन्क्रूमा (घाना) की पहल पर गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की औपचारिक स्थापना हुई, जिसने नव-स्वतंत्र देशों को सैन्य गठबंधनों (NATO, SEATO, CENTO, Warsaw Pact) से अलग रहकर स्वतंत्र विदेश नीति अपनाने का मंच दिया।

1.2 पुस्तक 27: 60 वास्तविक परीक्षा-स्तरीय बहुविकल्पीय प्रश्न (60 Authentic 4-Option MCQs)

निर्देश: प्रत्येक प्रश्न में चार विशिष्ट विकल्प (A), (B), (C), (D) दिए गए हैं। सही उत्तर और विस्तृत व्याख्या प्रश्न के ठीक नीचे दी गई है।

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. **[UPSC CSE / UGC-NET 2021]**

प्रबोधन कालीन किस दार्शनिक ने 1784 के अपने निबंध में प्रबोधन को "मनुष्य की स्व-आरोपित अपरिपक्वता से मुक्ति" के रूप में परिभाषित किया और "*Sapere Aude*" (जानने का साहस करो) का नारा दिया?

(A) जीन-जैक्स रूसो

(B) इमैनुएल कांट

(C) डेनिस दिदरो

(D) फ्रांस्वा-मैरी अरोएत (वोल्टेयर)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जर्मन दार्शनिक इमैनुएल कांट ने 1784 में प्रकाशित अपने निबंध "*Answering the Question: What is Enlightenment?*" (*Was ist Aufklärung?*) में प्रबोधन का आदर्श वाक्य "*Sapere Aude*" दिया और कहा कि बिना किसी बाहरी निर्देश के अपनी स्वयं की तर्कबुद्धि का उपयोग करने का साहस ही प्रबोधन है।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. **[UPPSC / DSSSB PGT 2022]**

थॉमस हॉब्स के 'लेवियाथन' (1651) और जॉन लॉक के 'टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट' (1689) के सामाजिक समझौता सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(A) हॉब्स और लॉक दोनों ने शासक को सामाजिक समझौते का एक प्रत्यक्ष पक्षकार माना है।

(B) हॉब्स ने प्राकृतिक अवस्था को शांतिपूर्ण बताया जबकि लॉक ने इसे "सबका सबके विरुद्ध युद्ध" कहा।

(C) हॉब्स का समझौता निरंकुश एवं अविभाज्य संप्रभुता स्थापित करता है, जबकि लॉक का समझौता सीमित एवं उत्तरदायी ट्रस्टी सरकार की स्थापना करता है।

(D) लॉक ने निजी संपत्ति के अधिकार को प्राकृतिक अधिकार मानने से इनकार कर दिया था।

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: हॉब्स के अनुसार लोग अराजक प्राकृतिक अवस्था के भय से अपने सभी अधिकार बिना शर्त एक संप्रभु (लेवियाथन) को सौंपते हैं जो स्वयं समझौते का पक्ष नहीं है। इसके विपरीत, लॉक के अनुसार जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति प्राकृतिक अधिकार हैं और उनकी बेहतर सुरक्षा के लिए सीमित सरकार ('न्यास/Trust') बनाई जाती है।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. **[BPSC / UGC-NET 2023]**

प्रबोधन काल के प्रसिद्ध विश्वकोश (*Encyclopédie*, 1751–1772) का संपादन डेनिस दिदरो ने किस प्रसिद्ध गणितज्ञ एवं दार्शनिक के साथ मिलकर किया था?

(A) जीन ले रोंड डी'अलेम्बर्ट (Jean le Rond d'Alembert)

(B) मार्किस डी कोंडोरसेट (Marquis de Condorcet)

(C) बैरन डी होलबाख (Baron d'Holbach)

(D) फ्रांस्वा केने (François Quesnay)

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: 28 खंडों वाले फ्रांसीसी *Encyclopédie* का संपादन डेनिस दिदरो और गणितज्ञ जीन ले रोंड डी'अलेम्बर्ट ने किया था। डी'अलेम्बर्ट ने इसकी प्रसिद्ध 'प्रारंभिक प्रस्तावना' (*Preliminary Discourse*) लिखी थी।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. **[NDA/CDS 2020]**

18वीं शताब्दी के फ्रांस में 'फिजियोक्रेट्स' (Physiocrats) नामक आर्थिक विचारकों के समूह का नेतृत्व किसने किया था, जिन्होंने भूमि और कृषि को राष्ट्रीय संपत्ति का एकमात्र वास्तविक स्रोत माना?

(A) जीन-बैप्टिस्ट कोल्बर्ट

(B) फ्रांस्वा केने (François Quesnay)

(C) जैक्स नेकर

(D) चार्ल्स डी कैलोन

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: फ्रांस्वा केने (जिनकी प्रसिद्ध कृति *Tableau Économique*, 1758 है) और तुर्गो फिजियोक्रेट संप्रदाय के प्रमुख विचारक थे। उन्होंने वाणिज्यवाद (Mercantilism) का विरोध किया और *Laissez-faire* तथा कृषि अधिशेष को संपदा का मूल आधार बताया।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. **[DSSSB PGT / UGC-NET 2024]**

अपराधों की रोकथाम, न्यायिक यातना के उन्मूलन और मृत्युदंड के विरोध पर आधारित प्रबोधन कालीन क्लासिक कृति "*On Crimes and Punishments*" (1764) के लेखक कौन थे?

(A) जर्मी बेंथम

(B) सीज़र बेकारिया (Cesare Beccaria)

(C) जियामबतिस्ता विको

(D) गॉटहोल्ड एफ्राइम लेसिंग

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: इतालवी न्यायशास्त्री और प्रबोधन विचारक सीज़र बेकारिया ने 1764 में *Dei delitti e delle pene* (*On Crimes and Punishments*) प्रकाशित की, जिसने यूरोप और अमेरिका में मानवीय दंड सुधारों को गहराई से प्रभावित किया।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. **[UPSC CSE / CAPF 2021]**

अमेरिकी क्रांति के दौरान किस ब्रिटिश अधिनियम ने उपनिवेशों में मुद्रित कानूनी दस्तावेजों, समाचार-पत्रों और पर्चों पर पहला प्रत्यक्ष आंतरिक कर लगाया, जिसके विरोध में 1765 में न्यूयॉर्क में 'स्टाम्प एक्ट कांग्रेस' बुलाई गई?

(A) शुगर एक्ट, 1764

(B) स्टाम्प एक्ट, 1765

(C) टाउनशेंड एक्ट, 1767

(D) टी एक्ट, 1773

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: ब्रिटिश प्रधानमंत्री जॉर्ज ग्रेनविल द्वारा मार्च 1765 में पारित स्टाम्प एक्ट अमेरिकी उपनिवेशों पर पहला प्रत्यक्ष आंतरिक कर था। इसके विरोध में जेम्स ओटिस और पैट्रिक हेनरी के नेतृत्व में "*No Taxation Without Representation*" का नारा बुलंद हुआ और अक्टूबर 1765 में न्यूयॉर्क में 9 उपनिवेशों की स्टाम्प एक्ट कांग्रेस हुई।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. **[UPPSC 2023]**

जनवरी 1776 में प्रकाशित किस लघु पुस्तिका (Pamphlet) ने अमेरिकी उपनिवेशवासियों को ब्रिटिश राजतंत्र से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने के लिए प्रेरित किया?

(A) थॉमस पेन की *Common Sense*

(B) जॉन डिकिन्सन की *Letters from a Farmer in Pennsylvania*

(C) अलेक्जेंडर हैमिल्टन की *The Federalist Papers*

(D) थॉमस जेफरसन की *A Summary View of the Rights of British America*

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: थॉमस पेन द्वारा जनवरी 1776 में प्रकाशित *Common Sense* की कुछ ही महीनों में लाखों प्रतियाँ बिकीं। इसने जॉर्ज तृतीय के वंशानुगत राजतंत्र पर सीधा प्रहार किया और सिद्ध किया कि एक द्वीप (ब्रिटेन) द्वारा एक महाद्वीप (अमेरिका) पर शासन करना प्रकृति के विरुद्ध है।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. **[NDA/CDS 2022]**

अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम में अक्टूबर 1777 की किस निर्णायक लड़ाई में अमेरिकी सेना की विजय के बाद फ्रांस (1778) ने औपचारिक रूप से अमेरिका के पक्ष में युद्ध में प्रवेश किया?

(A) लेक्सिंगटन और कॉनकॉर्ड की लड़ाई

(B) साराटोगा की लड़ाई (Battle of Saratoga)

(C) बंकर हिल की लड़ाई

(D) यॉर्कटाउन की लड़ाई

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: अक्टूबर 1777 में साराटोगा (न्यूयॉर्क) में ब्रिटिश जनरल जॉन बर्गोयन ने अमेरिकी जनरल होरेशियो गेट्स के समक्ष आत्मसमर्पण किया। इस जीत से आश्वस्त होकर फ्रांस ने फरवरी 1778 में बेंजामिन फ्रैंकलिन के प्रयासों से अमेरिका के साथ मैत्री एवं सैन्य गठबंधन की संधि की।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. [BPSC / DSSSB PGT 2021]

3 सितंबर 1783 की पेरिस संधि (Treaty of Paris), जिसने अमेरिकी स्वतंत्रता को मान्यता दी, के तहत संयुक्त राज्य अमेरिका की पश्चिमी सीमा कहाँ तक निर्धारित की गई थी?

(A) अपलेशियन पर्वत श्रृंखला तक

(B) मिसिसिपी नदी तक

(C) रॉकी पर्वत श्रृंखला तक

(D) प्रशांत महासागर तक

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 1783 की पेरिस संधि के अंतर्गत ब्रिटेन ने 13 अमेरिकी उपनिवेशों की संप्रभुता स्वीकार की और नवगठित संयुक्त राज्य अमेरिका की पश्चिमी सीमा मिसिसिपी नदी तक तथा उत्तरी सीमा ग्रेट लेक्स तक निर्धारित की गई।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. [UGC-NET 2023]

1787 के फिलाडेल्फिया संवैधानिक सम्मेलन में बड़े राज्यों (जनसंख्या आधारित प्रतिनिधित्व — वर्जीनिया प्लान) और छोटे राज्यों (समान प्रतिनिधित्व — न्यू जर्सी प्लान) के बीच गतिरोध को किस समझौते द्वारा सुलझाया गया?

(A) मिसौरी समझौता (Missouri Compromise)

(B) कनेक्टिकट समझौता / महान समझौता (Great Compromise)

(C) तीन-पाँचवाँ समझौता (Three-Fifths Compromise)

(D) फिलाडेल्फिया चार्टर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: रोजर शेरमन द्वारा प्रस्तावित कनेक्टिकट समझौते (Great Compromise of 1787) के तहत द्विसदनीय कांग्रेस बनी— निचले सदन (House of Representatives) में जनसंख्या के अनुपात में और ऊपरी सदन (Senate) में प्रत्येक राज्य को समान (2-2) प्रतिनिधित्व दिया गया।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. [UPSC CSE / UPPSC 2020]

फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व 1789 में तृतीय एस्टेट के अधिकारों की वकालत करने वाली प्रसिद्ध पुस्तिका "*What is the Third Estate?*" (*Qu'est-ce que le Tiers-État?*) किसने लिखी थी?

(A) कामिल देशमूलिंस

(B) एबे इमैनुएल जोसेफ सिएस (Abbé Sieyès)

(C) ऑनरे गेब्रियल रिकेती (मिराबो)

(D) जीन-पॉल मारात

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: एबे सिएस ने जनवरी 1789 में अपनी पुस्तिका में लिखा: "तृतीय एस्टेट क्या है? सब कुछ। अब तक राजनीतिक व्यवस्था में यह क्या रहा है? कुछ नहीं। यह क्या बनना चाहता है? कुछ बनने की आकांक्षा रखता है।"

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. **[DSSSB PGT 2023]**

1789 की फ्रांसीसी क्रांति से पूर्व फ्रांस की कर-प्रणाली में शामिल 'ताइय' (*Taille*), 'गबेल' (*Gabelle*) और 'कोरवी' (*Corvée*) का सही मिलान क्या है?

(A) ताइय: नमक कर; गबेल: प्रत्यक्ष भूमि/आय कर; कोरवी: चर्च का धार्मिक कर

(B) ताइय: प्रत्यक्ष भूमि/व्यक्ति कर; गबेल: नमक कर; कोरवी: सड़कों पर अवैतनिक बाध्यकारी श्रम

(C) ताइय: चर्च का दशमांश कर; गबेल: शराब कर; कोरवी: सैन्य सेवा कर

(D) ताइय: सामंती भट्टी कर; गबेल: सीमा शुल्क; कोरवी: राजशाही स्टाम्प कर

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: फ्रांस की पुरातन व्यवस्था (*Ancien Régime*) में प्रथम और द्वितीय एस्टेट को करों से छूट थी। तृतीय एस्टेट को राज्य को *Taille* (प्रत्यक्ष कर), *Gabelle* (नमक पर एकाधिकार कर), *Corvée* (सड़क निर्माण हेतु बेगार श्रम) तथा चर्च को *Tithe* (उपज का दसवाँ हिस्सा) देना पड़ता था।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. **[UGC-NET 2022]**

फ्रांसीसी राष्ट्रीय संविधान सभा ने किस ऐतिहासिक रात्रि सत्र में फ्रांस से सामंती विशेषाधिकारों, बेगार प्रथा और चर्च के दशमांश कर (Tithes) को समाप्त करने की घोषणा की?

(A) 20 जून 1789

(B) 14 जुलाई 1789

(C) 4 अगस्त 1789

(D) 26 अगस्त 1789

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: ग्रामीण क्षेत्रों में फैले 'महान भय' (*Great Fear*) के दबाव में 4 अगस्त 1789 की रात्रि को राष्ट्रीय सभा में कुलीनों और पादरियों ने अपने सामंती विशेषाधिकारों के त्याग की घोषणा की, जिसे फ्रांस में सामंतवाद के विधिवत अंत की तिथि माना जाता है।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. **[UPSC CSE / NDA 2021]**

1791 में फ्रांसीसी क्रांति के "*Declaration of the Rights of Man and of the Citizen*" के प्रत्युत्तर में "*Declaration of the Rights of Woman and of the Female Citizen*" किसने लिखी, जिन्हें 1793 में गिलोटिन पर चढ़ा दिया गया?

(A) मैडम रोलां (Madame Roland)

(B) ओलम्प दे गूजे (Olympe de Gouges)

(C) शार्लोट कॉर्डे (Charlotte Corday)

(D) पॉलिन लियोन (Pauline Léon)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: फ्रांसीसी नाटककार व नारीवादी कार्यकर्ता ओलम्प दे गूजे ने 1791 में महिला एवं महिला नागरिक के अधिकारों का घोषणापत्र लिखा, जिसका प्रथम अनुच्छेद था— "महिला स्वतंत्र जन्म लेती है और अधिकारों में पुरुष के समान रहती है।"

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. **[BPSC / UPPSC 2024]**

फ्रांसीसी क्रांति के दौरान 'आतंक के राज्य' (Reign of Terror, 1793–1794) का संचालन किस संस्था के माध्यम से मैक्सिमिलियन रोबेस्पियरे ने किया था और उसका पतन किस घटना से हुआ?

(A) डायरेक्टरी; 18 ब्रूमेयर का तख्तापलट

(B) जन सुरक्षा समिति (Committee of Public Safety); 9 थर्मिडोर की प्रतिक्रिया (जुलाई 1794)

(C) पेरिस कम्यून; वारेन की उड़ान

(D) लेजिस्लेटिव असेंबली; वेंडोम विद्रोह

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जैकोबिन नेता रोबेस्पियरे ने 12-सदस्यीय 'जन सुरक्षा समिति' और क्रांतिकारी न्यायाधिकरण के माध्यम से आतंक का राज चलाया। 27 जुलाई 1794 (क्रांतिकारी कैलेंडर के अनुसार 9 थर्मिडोर) को नेशनल कन्वेंशन ने रोबेस्पियरे को गिरफ्तार कर अगले दिन गिलोटिन दे दिया, जिसे 'थर्मिडोरियन प्रतिक्रिया' कहते हैं।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 16. **[DSSSB PGT 2022]**

नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा 1806–1807 में ग्रेट ब्रिटेन को आर्थिक रूप से पंगु बनाने के लिए लागू की गई 'महाद्वीपीय व्यवस्था' (Continental System) किन दो प्रमुख राजाज्ञाओं (Decrees) पर आधारित थी?

(A) पेरिस डिक्री और वियना डिक्री

(B) बर्लिन डिक्री (1806) और मिलान डिक्री (1807)

(C) टिल्सिट डिक्री और ऑस्टरलिट्ज़ डिक्री

(D) फॉन्टेनब्लू डिक्री और मैड्रिड डिक्री

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: अक्टूबर 1805 में ट्राफलगर की नौसैनिक हार के बाद नेपोलियन ने ब्रिटेन के विरुद्ध आर्थिक युद्ध छेड़ा। नवंबर 1806 की 'बर्लिन डिक्री' और दिसंबर 1807 की 'मिलान डिक्री' द्वारा फ्रांस और उसके सहयोगी देशों के बंदरगाहों में ब्रिटिश जहाजों और माल के प्रवेश पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 17. **[UGC-NET 2021]**

1815 की वियना कांग्रेस (Congress of Vienna) में ऑस्ट्रिया के चांसलर मेटरनिख और फ्रांस के विदेश मंत्री तालेरां द्वारा अपनाया गया 'वैधता का सिद्धांत' (Principle of Legitimacy) क्या था?

(A) यूरोप की सीमाओं का भाषा और राष्ट्रीयता के आधार पर पुनर्निर्धारण करना

(B) नेपोलियन द्वारा अपदस्थ किए गए पारंपरिक राजवंशों (जैसे फ्रांस व स्पेन में बूर्बोन) को पुनः सिंहासन पर स्थापित करना

(C) सभी यूरोपीय राज्यों में संवैधानिक संसद की स्थापना करना

(D) पवित्र रोमन साम्राज्य का पुनर्गठन करना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: तालेरां द्वारा प्रतिपादित 'वैधता के सिद्धांत' के तहत 1789 से पूर्व के वैध राजवंशों को बहाल किया गया— फ्रांस में लुई XVIII (बूर्बोन वंश), स्पेन और दो सिसिली के राज्य में बूर्बोन तथा पीडमोंट-सार्डिनिया में सेवॉय वंश को पुनः सत्ता मिली।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 18. **[UPSC CSE / CDS 2022]**

इटली के एकीकरण (Risorgimento) के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रम क्या है?

1. ज्युसेपे मेज़िनी द्वारा मार्सेई में 'यंग इटली' की स्थापना
2. कावूर और नेपोलियन तृतीय के बीच प्लॉम्बियर्स का गुप्त समझौता
3. गैरीबाल्डी का सिसिली और नेपल्स पर 'हजार लालकुर्ती वालों' (Red Shirts) का अभियान
4. रोम का इटली साम्राज्य में अंतिम विलय

(A) 1 – 2 – 3 – 4

(B) 2 – 1 – 3 – 4

(C) 1 – 3 – 2 – 4

(D) 3 – 1 – 2 – 4

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: 'यंग इटली' की स्थापना (1831) → प्लॉम्बियर्स समझौता (जुलाई 1858, जिसके बाद 1859 में ऑस्ट्रिया से लोम्बार्डी छीना गया) → गैरीबाल्डी का सिसिली/नेपल्स अभियान (मई–अक्टूबर 1860) → फ्रैंको-प्रशियन युद्ध के दौरान रोम का विलय (सितंबर 1870)।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 19. **[UPPSC / BPSC 2023]**

जर्मनी के आर्थिक एकीकरण की आधारशिला रखने वाले शुल्क संघ **'ज़ोलवेरिन' (Zollverein)** की स्थापना 1834 में किस राज्य के नेतृत्व में हुई और इसमें किस प्रमुख जर्मन शक्ति को बाहर रखा गया था?

(A) बवेरिया के नेतृत्व में; प्रशा को बाहर रखा गया

(B) प्रशा के नेतृत्व में; ऑस्ट्रिया को बाहर रखा गया

(C) ऑस्ट्रिया के नेतृत्व में; प्रशा को बाहर रखा गया

(D) सैक्सनी के नेतृत्व में; हनोवर को बाहर रखा गया

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: अर्थशास्त्री फ्रेडरिक लिस्ट के विचारों और प्रशा के वित्त मंत्री मोत्ज़ के प्रयासों से 1834 में 'ज़ोलवेरिन' (सीमा शुल्क संघ) अस्तित्व में आया, जिसने 18 जर्मन राज्यों के बीच आंतरिक व्यापार शुल्क समाप्त कर दिए। इसमें ऑस्ट्रिया को जानबूझकर बाहर रखा गया, जिससे प्रशा राजनीतिक एकीकरण का भी स्वाभाविक नेता बन गया।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 20. **[DSSSB PGT / UGC-NET 2023]**

ऑटो वॉन बिस्मार्क ने जर्मनी के एकीकरण के दौरान किन तीन क्रमिक युद्धों (1864–1871) का संचालन किया और उनकी समाप्ति किन संधियों से हुई?

(A) डेनमार्क युद्ध (गैस्टीन समझौता, 1865) → ऑक्ट्रो-प्रशियन युद्ध (प्राग की संधि, 1866) → फ्रैंको-प्रशियन युद्ध (फ्रैंकफर्ट की संधि, 1871)

(B) ऑक्ट्रो-प्रशियन युद्ध (वियना संधि) → डेनमार्क युद्ध (लंदन संधि) → फ्रैंको-प्रशियन युद्ध (वर्साय संधि)

(C) क्रीमिया युद्ध (पेरिस संधि) → डेनमार्क युद्ध → फ्रैंको-प्रशियन युद्ध

(D) फ्रैंको-प्रशियन युद्ध → डेनमार्क युद्ध → ऑक्ट्रो-प्रशियन युद्ध

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: बिस्मार्क ने 'रक्त और लौह' (*Blood and Iron*) की नीति के तहत: (1) 1864 में डेनमार्क को हराकर श्लेसविग और होल्स्टीन प्राप्त किए (1865 गैस्टीन समझौता), (2) 1866 में सेडोवा (कोनिग्रेत्ज़) के युद्ध में ऑस्ट्रिया को पराजित कर **प्राग की संधि (1866)** से उत्तरी जर्मन परिसंघ बनाया, और (3) 1870 में सेडान के युद्ध में फ्रांस को हराकर **फ्रैंकफर्ट की संधि (मई 1871)** से जर्मन साम्राज्य का एकीकरण पूर्ण किया।

अभ्यास प्रश्न #21 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 21. **[UPSC CSE 2023]**

1884–1885 का 'बर्लिन सम्मेलन' (Berlin West Africa Conference), जिसकी अध्यक्षता बिस्मार्क ने की थी, विश्व इतिहास में किस लिए जाना जाता है?

(A) बाल्कन संकट और ऑटोमन साम्राज्य के विभाजन के लिए

(B) अफ्रीका के बँटवारे (*Scramble for Africa*) के लिए 'प्रभावी आधिपत्य' (Effective Occupation) के नियम तय करने और कांगो बेसिन में मुक्त व्यापार हेतु

(C) प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व त्रिगुट गठबंधन के निर्माण के लिए

(D) चीन में 'खुले द्वार की नीति' (Open Door Policy) लागू करने के लिए

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 1884–85 के बर्लिन सम्मेलन में किसी भी अफ्रीकी प्रतिनिधि को बुलाए बिना 14 पश्चिमी देशों ने अफ्रीका के उपनिवेशीकरण के नियम तय किए। इसमें यह सिद्धांत बनाया गया कि कोई भी यूरोपीय देश केवल झंडा गाड़कर दावा नहीं कर सकता, बल्कि उसे 'प्रभावी प्रशासनिक आधिपत्य' सिद्ध करना होगा।

अभ्यास प्रश्न #22 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 22. **[NDA/CDS 2021]**

1868 में जापान में 'मेइजी पुनर्स्थापना' (Meiji Restoration) का तात्कालिक राजनीतिक अर्थ क्या था?

(A) जापान में राजतंत्र को समाप्त कर संसदीय गणतंत्र की स्थापना

(B) तोकुगावा शोगुनशाही (सैन्य सामंती शासन) का अंत और सम्राट मुत्सुहितो (मेइजी) के प्रत्यक्ष साम्राज्यवादी शासन व तीव्र आधुनिकीकरण की शुरुआत

(C) अमेरिका के कमोडोर मैथ्यू पेरी के साथ कनागावा संधि को रद्द करना

(D) समुराई वर्ग को विशेषाधिकार सौंपकर पश्चिमी तकनीक पर प्रतिबंध लगाना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 1868 में तोकुगावा शोगुन (योशिनोबु) से सत्ता छीनकर सम्राट मेइजी को सर्वोच्च सत्ता लौटाई गई। "फुकुओकु क्योहेई" (समृद्ध देश, शक्तिशाली सेना) के नारे के तहत सामंती जागीरदारी (*Daimyo*) समाप्त की गई और जापान का तीव्र औद्योगीकरण हुआ।

अभ्यास प्रश्न #23 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 23. **[UGC-NET 2020]**

रूस में किस ज़ार ने 1861 में 'मुक्ति अधिनियम' (Emancipation Manifesto) जारी कर कृषि-दासों (Serfs) को मुक्त किया, जिसके कारण उन्हें 'मुक्तिदाता ज़ार' (*Tsar Liberator*) कहा जाता है?

(A) निकोलस प्रथम

(B) अलेक्जेंडर द्वितीय

(C) अलेक्जेंडर तृतीय

(D) निकोलस द्वितीय

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: क्रीमिया युद्ध (1853–56) में रूस की पराजय से रूस का पिछड़ापन उजागर होने के बाद ज़ार अलेक्जेंडर द्वितीय ने 3 मार्च 1861 को कृषि-दासता समाप्त कर दी और स्थानीय स्वशासन हेतु 'ज़ेमstvo' (Zemstvo) संस्थाएँ स्थापित कीं।

अभ्यास प्रश्न #24 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 24. [BPSC / UPPSC 2021]

रूस की 1905 की क्रांति के दौरान 22 जनवरी 1905 की 'खूनी रविवार' (*Bloody Sunday*) की घटना का नेतृत्व किस पादरी ने किया था, जो सेंट पीटर्सबर्ग के विंटर पैलेस में ज़ार को शांतिपूर्ण याचिका देने जा रहे मजदूरों के जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे?

(A) ग्रिगोरी रास्पुतिन

(B) फादर जॉर्जी गैपॉन (Father Georgy Gapon)

(C) जॉर्जी प्लेखानोव

(D) विक्टर चेर्नोव

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: फादर गैपॉन के नेतृत्व में निहत्थे मजदूर 8 घंटे के कार्यदिवस और नागरिक अधिकारों की याचिका लेकर विंटर पैलेस पहुँचे, जिन पर शाही सेना ने गोलियाँ चलाईं। इसके बाद पूरे रूस में हड़तालें हुईं और ज़ार निकोलस द्वितीय को 'अक्टूबर घोषणापत्र' द्वारा निर्वाचित संसद **'ड्यूमा' (Duma)** के गठन की अनुमति देनी पड़ी।

अभ्यास प्रश्न #25 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 25. [DSSSB PGT 2024]

1903 में रूसी सोशल डेमोक्रेटिक लेबर पार्टी (RSDLP) के लंदन सम्मेलन में 'बोल्शेविक' (बहुमत) और 'मेन्शेविक' (अल्पमत) के बीच विभाजन का मुख्य वैचारिक मुद्दा क्या था?

(A) पार्टी की सदस्यता और संगठन का स्वरूप— लेनिन अनुशासित पेशेवर क्रांतिकारियों की छोटी 'वैनगार्ड' पार्टी चाहते थे जबकि जूलियस मार्टोव व्यापक जन-आधारित पार्टी के पक्षधर थे

(B) रूस में राजतंत्र को बनाए रखने का प्रश्न

(C) चीन के साथ मंचूरिया विवाद में युद्ध का समर्थन

(D) कृषि भूमि को जमींदारों के पास ही रहने देने का प्रश्न

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: लेनिन ने अपनी पुस्तक *What Is To Be Done?* (1902) में तर्क दिया था कि ज़ारशाही पुलिस राज्य में केवल कठोर रूप से केंद्रीकृत और अनुशासित पेशेवर क्रांतिकारियों का दल (Vanguard Party) ही क्रांति ला सकता है, जबकि मार्टोव के मेन्शेविक पश्चिमी यूरोप की तरह व्यापक सदस्यता वाली पार्टी चाहते थे।

अभ्यास प्रश्न #26 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 26. **[UPSC CSE / NDA 2022]**

अप्रैल 1917 में स्विट्ज़रलैंड के निर्वासन से पेट्रोग्राद लौटने पर व्लादिमीर लेनिन द्वारा प्रस्तुत प्रसिद्ध **'अप्रैल थीसिस' (April Theses)** में निम्नलिखित में से कौन-सी माँग शामिल **नहीं** थी?

(A) प्रथम विश्व युद्ध ('साम्राज्यवादी युद्ध') से रूस की तत्काल वापसी

(B) केरेंस्की/ल्वोव की अस्थायी सरकार को पूर्ण सहयोग देना और संसदीय गणतंत्र को मजबूत करना

(C) "सारी सत्ता सोवियतों को" (*All Power to the Soviets*) स्थानांतरित करना

(D) समस्त कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण और सभी बैंकों का एक राष्ट्रीय बैंक में विलय

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: लेनिन ने अपनी 'अप्रैल थीसिस' में अस्थायी बुर्जुआ सरकार को किसी भी प्रकार का समर्थन देने से स्पष्ट इनकार किया था और मांग की थी कि बुर्जुआ-लोकतांत्रिक चरण से तत्काल दूसरे चरण (श्रमिकों और गरीब किसानों की सोवियतों को सत्ता हस्तांतरण) में प्रवेश किया जाए।

अभ्यास प्रश्न #27 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 27. **[UGC-NET 2022]**

1921 में क्रोनस्टाट नौसैनिक विद्रोह और भयंकर अकाल के बाद लेनिन ने 'युद्ध साम्यवाद' (War Communism) के स्थान पर **'नई आर्थिक नीति' (NEP)** लागू की। NEP के संबंध में कौन-सा कथन सत्य है?

(A) इसमें सभी छोटे-बड़े उद्योगों और खुदरा व्यापार पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।

(B) किसानों से जबरन अनाज वसूली (*Prodrazvyorstka*) को समाप्त कर एक निश्चित 'अनाज कर' (*Prodnalog*) लगाया गया और शेष अधिशेष को खुले बाजार में बेचने की अनुमति दी गई।

(C) विदेशी पूँजी और रियायतों को पूर्णतः अवैध घोषित किया गया।

(D) सामूहिक खेती (*Kolkhoz*) को 1921 में ही 100% अनिवार्य कर दिया गया।

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: लेनिन ने NEP को "एक कदम पीछे, ताकि दो कदम आगे बढ़ा जा सके" और 'राज्य पूँजीवाद' की संज्ञा दी। इसमें भारी उद्योग, बैंक, परिवहन व विदेशी व्यापार ('Commanding Heights') राज्य के पास रहे, किंतु किसानों को कर चुकाने के बाद अधिशेष बेचने और छोटे निजी व्यवसायों ('NEPmen') की छूट दी गई। (अनिवार्य सामूहिकीकरण 1928 के बाद स्टालिन ने किया)।

अभ्यास प्रश्न #28 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 28. **[UPPSC / DSSSB PGT 2021]**

प्रथम विश्व युद्ध से पूर्व यूरोप को दो विरोधी सैन्य गुटों में बाँटने वाले 'त्रिगुट गठबंधन' (Triple Alliance, 1882) और 'त्रिगुट सौहार्द' (Triple Entente, 1907) के सदस्य राष्ट्र कौन-कौन थे?

(A) ट्रिपल एलायंस: जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, इटली | ट्रिपल एंते: ब्रिटेन, फ्रांस, रूस

(B) ट्रिपल एलायंस: जर्मनी, तुर्की, बुल्गारिया | ट्रिपल एंते: अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस

(C) ट्रिपल एलायंस: जर्मनी, रूस, ऑस्ट्रिया | ट्रिपल एंते: ब्रिटेन, फ्रांस, इटली

(D) ट्रिपल एलायंस: जर्मनी, ऑस्ट्रिया, स्पेन | ट्रिपल एंते: ब्रिटेन, रूस, जापान

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: 1879 के जर्मन-ऑस्ट्रियाई द्विगुट में 1882 में इटली के जुड़ने से 'ट्रिपल एलायंस' बना (हालाँकि 1915 की गुप्त लंदन संधि के बाद इटली मित्र राष्ट्रों की ओर से लड़ा)। दूसरी ओर, फ्रेंको-रूसी गठबंधन (1894), एंग्लो-फ्रेंच 'एंते कॉर्डियल' (1904) और एंग्लो-रूसी समझौते (1907) से 'ट्रिपल एंते' बना।

अभ्यास प्रश्न #29 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 29. [BPSC 2022]

28 जून 1914 को बोस्निया की राजधानी साराजेवो में ऑस्ट्रिया-हंगरी के उत्तराधिकारी आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या करने वाला गैवरिलो प्रिंसिप किस गुप्त राष्ट्रवादी संगठन का सदस्य था?

(A) यंग तुर्क (Young Turks)

(B) ब्लैक हैंड / यूनियन ऑर डेथ (Crna Ruka)

(C) कार्बोनारी (Carbonari)

(D) फिलिकी एतेरिया (Filiki Eteria)

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 19 वर्षीय बोस्नियाई सर्ब राष्ट्रवादी गैवरिलो प्रिंसिप 'यंग बोस्निया' से जुड़ा था, जिसे सर्बियाई सैन्य अधिकारियों द्वारा संचालित गुप्त संगठन 'ब्लैक हैंड' (*Unification or Death*, प्रमुख: कर्नल ड्रागुटिन दिमित्रिजेविक 'एपिस') का समर्थन प्राप्त था।

अभ्यास प्रश्न #30 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 30. [UGC-NET 2023]

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1916 में मध्य-पूर्व के ऑटोमन अरब प्रांतों को आपस में प्रभाव-क्षेत्रों में बाँटने के लिए ब्रिटेन और फ्रांस के बीच कौन-सा गुप्त समझौता हुआ था, जिसे नवंबर 1917 में बोल्शेविक सरकार ने सार्वजनिक कर दिया?

(A) बाल्फोर घोषणा (Balfour Declaration)

(B) साइक्स-पिकोट समझौता (Sykes-Picot Agreement)

(C) हुसैन-मैकमोहन पत्राचार

(D) सैन रेमो प्रस्ताव

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: मई 1916 में ब्रिटिश राजनयिक मार्क साइक्स और फ्रांसीसी राजनयिक फ्रांस्वा जॉर्ज-पिकोट के बीच हुए गुप्त समझौते के तहत सीरिया व लेबनान को फ्रांसीसी प्रभाव क्षेत्र तथा इराक व ट्रांसजॉर्डन को ब्रिटिश प्रभाव क्षेत्र में बाँटा गया था।

अभ्यास प्रश्न #31 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 31. [UPSC CSE / CDS 2020]

पेरिस शांति सम्मेलन (1919–1920) की संधियों और संबंधित पराजित राष्ट्रों का निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म **सुमेलित नहीं** है?

(A) सेंट जर्मेन की संधि — ऑस्ट्रिया

(B) न्यूइली की संधि — बुल्गारिया

(C) ट्रियानॉन की संधि — हंगरी

(D) सेवर्स की संधि — जर्मनी

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: जर्मनी के साथ 28 जून 1919 को **वर्साय की संधि** हुई थी, जबकि **सेवर्स की संधि (10 अगस्त 1920)** ऑटोमन साम्राज्य (तुर्की) के साथ की गई थी (जिसे बाद में 1923 की लोज़ान संधि ने प्रतिस्थापित किया)।

अभ्यास प्रश्न #32 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 32. **[DSSSB PGT 2021]**

वर्साय की संधि (1919) के किस अनुच्छेद को 'युद्ध अपराध खंड' (*War Guilt Clause*) कहा जाता है, जिसके अंतर्गत प्रथम विश्व युद्ध से हुई समस्त क्षति के लिए अकेले जर्मनी और उसके सहयोगियों को उत्तरदायी ठहराया गया?

(A) अनुच्छेद 10

(B) अनुच्छेद 88

(C) अनुच्छेद 156

(D) अनुच्छेद 231

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: वर्साय की संधि के भाग VIII (Reparations) का प्रथम अनुच्छेद, अर्थात् **अनुच्छेद 231**, जर्मनी को युद्ध के सभी नुकसानों के लिए नैतिक और कानूनी रूप से जिम्मेदार ठहराता था, जो जर्मनी से भारी क्षतिपूर्ति वसूलने का विधिक आधार बना।

अभ्यास प्रश्न #33 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 33. **[UGC-NET 2024]**

1923 में जब जर्मनी द्वारा युद्ध क्षतिपूर्ति की किस्त न चुका पाने के कारण फ्रांस और बेल्जियम की सेनाओं ने जर्मनी के औद्योगिक 'रूर' (Ruhr) क्षेत्र पर कब्ज़ा कर लिया, तो इस संकट को सुलझाने और क्षतिपूर्ति की किस्तों को पुनर्गठित करने के लिए 1924 और 1929 में कौन-सी दो अमेरिकी योजनाएँ लाई गईं?

(A) मार्शल प्लान और ट्रूमैन प्लान

(B) डावेस प्लान (Dawes Plan, 1924) और यंग प्लान (Young Plan, 1929)

(C) हूवर मोरेटोरियम और केलॉग प्लान

(D) स्ट्रेसेमान प्लान और ब्रियांड प्लान

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: चार्ल्स जी. डावेस की अध्यक्षता में 1924 में 'डावेस प्लान' आया जिसके तहत अमेरिकी बैंकों ने जर्मनी को ऋण दिए और रूर से फ्रांसीसी सेना हटी। 1929 में ओवेन डी. यंग के नेतृत्व में 'यंग प्लान' आया जिसने कुल क्षतिपूर्ति राशि घटाई और भुगतान अवधि 1988 तक तय की।

अभ्यास प्रश्न #34 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 34. **[UPPSC / BPSC 2022]**

राष्ट्र संघ (League of Nations, 1920) के प्रसंविदा (Covenant) का कौन-सा अनुच्छेद 'सामूहिक सुरक्षा' (Collective Security) की आत्मा कहलाता था, जिसके कारण अमेरिकी सीनेट (हेनरी कैबोट लॉज के नेतृत्व में) ने वर्साय संधि की पुष्टि करने से इनकार कर दिया?

(A) अनुच्छेद 10

(B) अनुच्छेद 16

(C) अनुच्छेद 22

(D) अनुच्छेद 19

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: राष्ट्र संघ के कवेनेंट का **अनुच्छेद 10** सभी सदस्य राष्ट्रों को बाहरी आक्रमण के विरुद्ध एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता का सम्मान करने एवं रक्षा करने हेतु प्रतिबद्ध करता था। अमेरिकी सीनेटरों को आशंका थी कि इससे अमेरिका कांग्रेस की अनुमति के बिना यूरोपीय युद्धों में फँस जाएगा।

अभ्यास प्रश्न #35 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 35. [NDA/CDS 2023]

अक्टूबर 1929 की वॉल स्ट्रीट दुर्घटना के बाद शुरू हुई 'महान आर्थिक मंदी' (Great Depression) से निपटने के लिए अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने 1933 में 'न्यू डील' (New Deal) शुरू की। निम्नलिखित में से कौन-सा 'न्यू डील' का घटक था?

(A) टेनेसी वैली अथॉरिटी (TVA), ग्लास-स्टीगल बैंकिंग अधिनियम और सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (1935)

(B) केवल स्वर्णमान (Gold Standard) को कठोरता से लागू करना और सरकारी खर्च में 50% कटौती

(C) सभी निजी बैंकों और उद्योगों का सोवियत तर्ज पर स्थायी राष्ट्रीयकरण

(D) स्मूट-हॉले टैरिफ अधिनियम (1930) का विस्तार

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: रूजवेल्ट की 'न्यू डील' 3 R— **Relief (राहत), Recovery (पुनरुद्धार), Reform (सुधार)** तथा केन्सियन अर्थशास्त्र (सार्वजनिक व्यय द्वारा माँग बढ़ाना) पर आधारित थी। इसके तहत TVA, AAA (कृषि समायोजन), CCC, ग्लास-स्टीगल अधिनियम (FDIC जमा बीमा) और सोशल सिक्योरिटी एक्ट (1935) लागू किए गए।

अभ्यास प्रश्न #36 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 36. [DSSSB PGT 2022]

इटली में बेनितो मुसोलिनी के फासीवादी शासन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?

(A) अक्टूबर 1922 — 'मार्च ऑन रोम' और राजा विक्टर इमैनुएल तृतीय द्वारा मुसोलिनी को प्रधानमंत्री नियुक्त करना

(B) 1929 की लैटरन संधि — मुसोलिनी द्वारा वेटिकन सिटी पर सैन्य कब्ज़ा कर पोप को निर्वासित करना

(C) 1935 — मुसोलिनी द्वारा स्पेन पर आक्रमण कर मैड्रिड पर कब्ज़ा

(D) 'ओवरा' (OVRA) — मुसोलिनी द्वारा स्थापित किसानों की सहकारी बैंक संस्था

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: अक्टूबर 1922 में 'ब्लैकशर्ट्स' के रोम मार्च के बाद राजा विक्टर इमैनुएल तृतीय ने मुसोलिनी को सरकार बनाने के लिए आमंत्रित किया। फरवरी 1929 की **लैटरन संधि** द्वारा मुसोलिनी ने पोप के साथ ऐतिहासिक विवाद सुलझाकर वेटिकन सिटी की स्वतंत्र संप्रभुता को मान्यता दी थी। OVRA फासीवादी गुप्त पुलिस थी।

अभ्यास प्रश्न #37 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 37. [UGC-NET 2023]

जर्मनी में एडॉल्फ हिटलर द्वारा 23 मार्च 1933 को राइखस्टाग से पारित किस अधिनियम ने वाइमर संविधान को प्रभावी रूप से समाप्त कर हिटलर की कैबिनेट को संसद की सहमति के बिना चार वर्षों तक कानून बनाने की तानाशाही शक्ति दे दी?

(A) न्यूरमबर्ग अधिनियम (Nuremberg Laws)

(B) इनेबलिंग एक्ट (Enabling Act / *Ermächtigungsgesetz*)

(C) ग्लाइखशाल्टुंग अधिनियम (Gleichschaltung Act)

(D) राइखस्टाग अग्नि अध्यादेश

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: फरवरी 1933 के राइखस्टाग अग्निकांड के बाद नागरिक स्वतंत्रताएँ निलंबित कर दी गईं और 23 मार्च 1933 को पारित **इनेबलिंग एक्ट** ('जनता और राइख के संकट को दूर करने का कानून') ने हिटलर को वैधानिक तानाशाह बना दिया। (न्यूरमबर्ग कानून 1935 में यहूदियों की नागरिकता छीनने के लिए लाए गए थे)।

अभ्यास प्रश्न #38 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 38. **[UPSC CSE / CAPF 2022]**

द्वितीय विश्व युद्ध के आरंभ से ठीक एक सप्ताह पूर्व, 23 अगस्त 1939 को नाजी जर्मनी और सोवियत संघ के बीच हुए अनाक्रमण समझौते (Molotov-Ribbentrop Pact) के गुप्त प्रोटोकॉल में क्या तय किया गया था?

(A) ब्रिटेन पर संयुक्त नौसैनिक आक्रमण करना

(B) पोलैंड और पूर्वी यूरोप (फिनलैंड, एस्टोनिया, लातविया, लिथुआनिया व बेसारबिया) को जर्मन और सोवियत प्रभाव क्षेत्रों में विभाजित करना

(C) जापान के विरुद्ध मंचूरिया में संयुक्त अभियान चलाना

(D) तुर्की के जलडमरूमध्य पर सोवियत कब्ज़े का समर्थन करना

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: मोलोटोव-रिबनट्रॉप संधि के गुप्त प्रोटोकॉल के तहत पोलैंड का पश्चिमी भाग जर्मनी को और पूर्वी भाग, फिनलैंड, बाल्टिक राज्य व बेसारबिया सोवियत प्रभाव क्षेत्र में बाँटे गए। इसके तुरंत बाद 1 सितंबर 1939 को जर्मनी ने पोलैंड पर आक्रमण कर द्वितीय विश्व युद्ध शुरू कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #39 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 39. **[NDA/CDS 2022]**

द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख सैन्य अभियानों और उनके कूट नामों (Code Names) का सही मिलान चुनिए:

1. ऑपरेशन सी लायन (Operation Sea Lion) — ब्रिटेन पर जर्मनी के समुद्री आक्रमण की योजना (1940)
2. ऑपरेशन बारबरोसा (Operation Barbarossa) — सोवियत संघ पर जर्मनी का आक्रमण (जून 1941)
3. ऑपरेशन टॉर्च (Operation Torch) — उत्तरी अफ्रीका में एंग्लो-अमेरिकी लैंडिंग (नवंबर 1942)
4. ऑपरेशन ओवरलॉर्ड (Operation Overlord) — नॉर्मंडी (फ्रांस) में मित्र राष्ट्रों की D-Day लैंडिंग (6 जून 1944)

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4 सभी सही हैं

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: चारों सैन्य अभियानों के कूट नाम और उनके वर्ष ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सही हैं। इसके अतिरिक्त जून 1942 का **'मिडवे का युद्ध'** प्रशांत महासागर में और **'स्टालिनग्राद का युद्ध' (1942–43)** पूर्वी मोर्चे पर युद्ध के निर्णायक मोड़ (Turning Points) थे।

अभ्यास प्रश्न #40 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 40. **[BPSC / UPPSC 2023]**

चीन में अक्टूबर 1911 की 'शिन्हाई क्रांति' (Xinhai Revolution), जिसने मंचू (चिंग/Qing) राजवंश का अंत किया, के बाद डॉ. सन यात-सेन ने अपनी पार्टी कुओमितांग (KMT) की विचारधारा के रूप में किन 'तीन जन-सिद्धांतों' (*San-min Chu-i*) का प्रतिपादन किया?

(A) शांति, भूमि और रोटी

(B) राष्ट्रवाद (Minzu), लोकतंत्र (Minquan) और जन-आजीविका/समाजवाद (Minsheng)

(C) स्वतंत्रता, समानता और भ्रातृत्व

(D) वर्ग संघर्ष, सांस्कृतिक क्रांति और सामूहिकीकरण

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: चीनी गणराज्य के जनक डॉ. सन यात-सेन ने तीन जन-सिद्धांत (*Three Principles of the People*) दिए: (1) **राष्ट्रवाद (Nationalism):** साम्राज्यवादी वर्चस्व से मुक्ति, (2) **लोकतंत्र (Democracy):** संवैधानिक स्वशासन, और (3) **जन-आजीविका (People's Livelihood):** भूमि सुधार और आर्थिक न्याय।

अभ्यास प्रश्न #41 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 41. [UGC-NET 2021]

चीनी गृहयुद्ध के दौरान अक्टूबर 1934 से अक्टूबर 1935 के बीच चियांग काई-शेक की कुओमितांग सेना के घेरे से निकलकर माओ त्से-तुंग और चू तेह के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) द्वारा तय की गई लगभग 6,000 मील (10,000 किमी) की ऐतिहासिक सैन्य यात्रा ('लॉन्ग मार्च' / Long March) कहाँ से कहाँ तक हुई थी?

(A) बीजिंग से शंघाई तक

(B) दक्षिण-पूर्वी चीन के जियांग्शी (Jiangxi) सोवियत से उत्तर-पश्चिमी चीन के यानान (Yan'an, शानक्सी प्रांत) तक

(C) नानजिंग से वुहान तक

(D) कैंटन से मंचूरिया तक

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: जियांग्शी प्रांत से शुरू होकर शानक्सी प्रांत के यानान तक चले 368 दिनों के 'लॉन्ग मार्च' के दौरान जनवरी 1935 के **ज़ुन्यी सम्मेलन (Zunyi Conference)** में माओ त्से-तुंग चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के निर्विवाद सर्वोच्च नेता के रूप में उभरे।

अभ्यास प्रश्न #42 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 42. [DSSSB PGT 2023]

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात आधुनिक तुर्की के निर्माता मुस्तफा कमाल पाशा 'अतातुर्क' द्वारा तुर्की के आधुनिकीकरण हेतु लागू किए गए सुधारों ('कमालवाद' के 6 तीर) के संदर्भ में कौन-सा कथन **असत्य** है?

(A) उन्होंने 1922 में सल्तनत और मार्च 1924 में खिलाफत (Caliphate) को समाप्त कर तुर्की को एक धर्मनिरपेक्ष गणराज्य घोषित किया।

(B) उन्होंने शरियत न्यायालयों को समाप्त कर स्विट्ज़रलैंड की तर्ज पर नई दीवानी संहिता (Civil Code, 1926) लागू की और महिलाओं को मताधिकार (1934) दिया।

(C) उन्होंने तुर्की भाषा के लिए लैटिन लिपि के स्थान पर अरबी-फारसी लिपि को अनिवार्य किया और फेज़ (Fez) टोपी पहनना अनिवार्य बनाया।

(D) उन्होंने तुर्की की राजधानी इस्तांबुल (कुस्तुनतुनिया) से हटाकर अनातोलिया के केंद्र अंकारा में स्थापित की।

सही उत्तर: (C)

व्याख्या: कथन (C) असत्य है क्योंकि कमाल अतातुर्क ने 1925 के 'हैट लॉ' द्वारा पारंपरिक फेज़ टोपी पर प्रतिबंध लगाया और 1928 में अरबी लिपि को हटाकर **लैटिन (रोमन) वर्णमाला** को अपनाया ताकि साक्षरता और पश्चिमी वैज्ञानिक शिक्षा का तेजी से प्रसार हो सके।

अभ्यास प्रश्न #43 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 43. [UPSC CSE / NDA 2021]

शीत युद्ध के प्रारंभिक वर्षों में अमेरिकी राजनयिक जॉर्ज एफ. केनन के 'लॉन्ग टेलीग्राम' (1946) से प्रेरित होकर साम्यवाद के विस्तार को रोकने की नीति (*Policy of Containment*) के तहत मार्च 1947 में घोषित 'ट्रूमैन सिद्धांत' (Truman Doctrine) के अंतर्गत किन दो देशों को तत्काल 40 करोड़ डॉलर की सैन्य व आर्थिक सहायता दी गई?

(A) फ्रांस और इटली

(B) यूनान (ग्रीस) और तुर्की

(C) दक्षिण कोरिया और ताइवान

(D) ईरान और अफगानिस्तान

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: ब्रिटेन द्वारा आर्थिक कमजोरी के कारण ग्रीस और तुर्की से अपनी सहायता वापस लेने पर अमेरिकी राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैन ने 12 मार्च 1947 को कांग्रेस में 'ट्रूमैन सिद्धांत' घोषित किया और साम्यवादी दबाव का सामना कर रहे ग्रीस तथा तुर्की के लिए 400 मिलियन डॉलर की सहायता मंजूर कराई।

अभ्यास प्रश्न #44 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 44. **[UPPSC 2022]**

जून 1947 में अमेरिकी विदेश मंत्री जॉर्ज सी. मार्शल द्वारा प्रस्तावित 'यूरोपीय पुनरुद्धार कार्यक्रम' (Marshall Plan) के जवाब में सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप के समाजवादी देशों के आर्थिक एकीकरण के लिए किस संस्था का गठन किया?

(A) कॉमिनफॉर्म (Cominform, 1947) और कॉमेकॉन (COMECON / CMEA, जनवरी 1949)

(B) वारसॉ संधि संगठन (1947)

(C) शंघाई सहयोग संगठन

(D) यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय (ECSC)

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: मार्शल प्लान को 'डॉलर साम्राज्यवाद' बताते हुए स्टालिन ने सितंबर 1947 में वैचारिक समन्वय हेतु **Cominform** तथा जनवरी 1949 में 'मोलोटोव प्लान' के तहत आर्थिक सहायता परिषद **COMECON (Council for Mutual Economic Assistance)** की स्थापना की।

अभ्यास प्रश्न #45 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 45. **[UGC-NET 2022]**

शीत युद्ध के दौरान पश्चिमी खेमे द्वारा बनाए गए क्षेत्रीय सैन्य गठबंधनों का सही कालानुक्रम क्या है?

1. नाटो (NATO — उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन)
2. एंजस (ANZUS — ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, अमेरिका सुरक्षा संधि)
3. सीटो (SEATO — दक्षिण-पूर्व एशिया संधि संगठन, मनीला पैक्ट)
4. बगदाद पैक्ट / सेंटो (CENTO — केंद्रीय संधि संगठन)

(A) 1 – 2 – 3 – 4

(B) 1 – 3 – 2 – 4

(C) 2 – 1 – 4 – 3

(D) 1 – 4 – 3 – 2

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: NATO (अप्रैल 1949, वाशिंगटन) → ANZUS (सितंबर 1951, सैन फ्रांसिस्को) → SEATO (सितंबर 1954, मनीला) → बगदाद पैक्ट (फरवरी 1955; 1958 की इराकी क्रांति के बाद जब इराक बाहर हुआ तो इसका नाम CENTO पड़ा)।

अभ्यास प्रश्न #46 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 46. **[BPSC / DSSSB PGT 2023]**

अक्टूबर 1962 के क्यूबा मिसाइल संकट के शांतिपूर्ण समाधान के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में अगस्त 1963 में मास्को में हस्ताक्षरित 'आंशिक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि' (PTBT) ने कहाँ पर परमाणु परीक्षणों पर प्रतिबंध लगाया, और किस क्षेत्र को इससे छूट दी गई?

(A) केवल अंतरिक्ष में प्रतिबंध; वायुमंडल और समुद्र के नीचे परीक्षण की छूट

(B) वायुमंडल, बाह्य अंतरिक्ष और पानी के नीचे परीक्षण पर प्रतिबंध; भूमिगत (Underground) परमाणु परीक्षण को छूट

(C) भूमिगत परीक्षण पर प्रतिबंध; वायुमंडल में परीक्षण की छूट

(D) सभी प्रकार के परीक्षणों पर पूर्ण प्रतिबंध

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: अमेरिका, सोवियत संघ और ब्रिटेन द्वारा 5 अगस्त 1963 को हस्ताक्षरित PTBT (Partial Test Ban Treaty) ने वायुमंडल, बाह्य अंतरिक्ष और समुद्र के भीतर परमाणु परीक्षणों को प्रतिबंधित कर दिया, किंतु भूमिगत परीक्षणों को इससे बाहर रखा गया। (फ्रांस और चीन ने इस पर हस्ताक्षर नहीं किए थे)।

अभ्यास प्रश्न #47 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 47. **[UPSC CSE 2022]**

1970 के दशक के 'देतांत' (Détente — तनाव शैथिल्य) काल की निम्नलिखित घटनाओं में से कौन-सी सही सुमेलित है?

1. SALT-I एवं ABM संधि (मई 1972) — निक्सन और ब्रेझनेव के मध्य सामरिक हथियारों और एंटी-बैलिस्टिक मिसाइलों पर सीमा
2. ओस्टपोलिटिक (Ostpolitik) — पश्चिमी जर्मनी के चांसलर विली ब्रांट द्वारा पूर्वी जर्मनी, पोलैंड और USSR के साथ संबंधों का सामान्यीकरण
3. हेलसिंकी समझौता (अगस्त 1975) — द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की यूरोपीय सीमाओं की मान्यता और मानवाधिकारों ('Third Basket') के सम्मान की प्रतिबद्धता

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2 और 3

(C) केवल 1 और 3

(D) 1, 2 और 3 सभी

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: देतांत काल (1969–1979) के ये तीनों मील के पत्थर सही हैं। हेलसिंकी अंतिम अधिनियम (1975) पर 35 देशों ने हस्ताक्षर किए, जिसके मानवाधिकार संबंधी प्रावधानों ने बाद में पूर्वी यूरोप में 'चार्टर 77' जैसे लोकतांत्रिक आंदोलनों को कानूनी संबल दिया।

अभ्यास प्रश्न #48 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 48. **[UGC-NET 2024]**

1980 में पोलैंड के ग्दांस्क स्थित लेनिन शिपयार्ड में किस नेता के नेतृत्व में सोवियत ब्लॉक का पहला स्वतंत्र श्रमिक संघ *'सॉलिडैरिटी' (*Solidarity* / Solidarność)* गठित हुआ, जिसने बाद में 1989 में पोलैंड में पहली गैर-साम्यवादी सरकार बनाई?

(A) वोज्शिएक जारुज़ेल्स्की

(B) लेक वालेसा (Lech Wałęsa)

(C) वाक्लाव हावेल

(D) निकोलाई चाउसेस्कु

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: इलेक्ट्रिशियन लेक वालेसा के नेतृत्व में 1980 में 'सॉलिडैरिटी' आंदोलन शुरू हुआ (जिसे पोप जॉन पॉल द्वितीय का भी नैतिक समर्थन मिला)। जून 1989 के चुनावों में सॉलिडैरिटी की भारी जीत हुई और 1990 में लेक वालेसा पोलैंड के राष्ट्रपति बने। (वाक्लाव हावेल चेकोस्लोवाकिया की 1989 की 'वेलवेट क्रांति' के नेता थे)।

अभ्यास प्रश्न #49 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 49. [NDA/CDS 2021]

8 दिसंबर 1991 को किस समझौते पर रूस (बोरिस येल्तसिन), यूक्रेन (लियोनिद क्रावचुक) और बेलारूस (स्तानिस्लाव शुश्केविच) के नेताओं ने हस्ताक्षर कर घोषणा की कि सोवियत संघ (USSR) का अस्तित्व समाप्त हो गया है और उसके स्थान पर 'स्वतंत्र राज्यों का राष्ट्रमंडल' (CIS) बनाया जा रहा है?

(A) अल्मा-अता प्रोटोकॉल

(B) बेलावेज़ा समझौता (Belavezha Accords)

(C) मिन्स्क संधि

(D) रीगा समझौता

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 1922 की सोवियत संघ संधि के तीन मूल संस्थापक स्लाव गणराज्यों— रूस, यूक्रेन और बेलारूस— ने 8 दिसंबर 1991 को **बेलावेज़ा समझौते** पर हस्ताक्षर कर USSR को भंग घोषित किया। 21 दिसंबर 1991 को कजाखस्तान में **अल्मा-अता प्रोटोकॉल** द्वारा 8 अन्य गणराज्य भी CIS में शामिल हुए और 25 दिसंबर 1991 को गोर्बाचेव ने इस्तीफा दे दिया।

अभ्यास प्रश्न #50 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 50. [UPSC CSE / UPPSC 2023]

अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित देशों और उनके स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं का कौन-सा युग्म **सुमेलित नहीं** है?

(A) घाना (गोल्ड कोस्ट, 1957) — क्वामे एन्क्रूमा (Kwame Nkrumah)

(B) केन्या (1963) — जोमो केन्याटा (Jomo Kenyatta)

(C) तंजानिया/तांगानिका (1961) — जूलियस न्येरेरे (Julius Nyerere)

(D) अल्जीरिया (1962) — मोबुतु सेसे सेको (Mobutu Sese Seko)

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: अल्जीरिया का स्वतंत्रता संग्राम **'नेशनल लिबरेशन फ्रंट' (FLN)** के तहत **अहमद बेन बेला (Ahmed Ben Bella)** और फेत अब्बास के नेतृत्व में लड़ा गया था। मोबुतु सेसे सेको कांगो (ज़ायरे) के सैन्य तानाशाह थे जिन्होंने 1965 में सत्ता हथियाई थी।

अभ्यास प्रश्न #51 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 51. [DSSSB PGT 2023]

मई 1954 में किस प्रसिद्ध घाटी की लड़ाई में हो ची मिन्ह और जनरल वो गुयेन जियाप के नेतृत्व वाली 'वियतमिन्ह' सेना ने फ्रांसीसी सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया, जिसके बाद 1954 के जिनेवा सम्मेलन से हिंद-चीन में फ्रांसीसी औपनिवेशिक शासन समाप्त हुआ?

(A) डिएन बिएन फू की लड़ाई (Battle of Dien Bien Phu)

(B) टेट ऑफेंसिव (Tet Offensive)

(C) माई लाई की लड़ाई

(D) प्लेकु की लड़ाई

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: मार्च से 7 मई 1954 तक चली **डिएन बिएन फू की घेराबंदी** में जनरल जियाप ने पहाड़ियों पर भारी तोपें चढ़ाकर फ्रांसीसी गढ़ को ध्वस्त कर दिया। यह आधुनिक इतिहास में किसी एशियाई उपनिवेशवादी मुक्ति आंदोलन द्वारा यूरोपीय महाशक्ति पर पहली बड़ी पारंपरिक सैन्य विजय थी।

अभ्यास प्रश्न #52 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 52. **[UGC-NET 2022]**

दक्षिण अफ्रीका में नस्लभेदी 'अपार्थाइड' (Apartheid) शासन के विरुद्ध संघर्ष के इतिहास में 21 मार्च 1960 का 'शार्पविल नरसंहार' (Sharpeville Massacre) और 1963–64 का 'रिवोनिया ट्रायल' (Rivonia Trial) किस लिए प्रसिद्ध हैं?

(A) शार्पविल में पास-कानूनों (Pass Laws) के विरुद्ध प्रदर्शन कर रहे अश्वेतों पर गोलीबारी के बाद ANC ने सशस्त्र शाखा *Umkhonto we Sizwe* बनाई, और रिवोनिया ट्रायल में नेल्सन मंडेला को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई।

(B) शार्पविल के बाद दक्षिण अफ्रीका को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाया गया।

(C) रिवोनिया ट्रायल के बाद एफ. डब्ल्यू. डी क्लार्क ने तत्काल रंगभेद समाप्त कर दिया।

(D) शार्पविल नरसंहार अंगोला में पुर्तगाली सेना द्वारा किया गया था।

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: 1948 में नेशनल पार्टी ने आधिकारिक रूप से 'अपार्थाइड' लागू किया था। 1960 के शार्पविल नरसंहार के बाद अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस (ANC) पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसके बाद नेल्सन मंडेला ने *Umkhonto we Sizwe* ('राष्ट्र का भाला') का गठन किया। 1964 के रिवोनिया ट्रायल में मंडेला ने "*I am Prepared to Die*" भाषण दिया और 27 वर्ष जेल (मुख्यतः रॉबेन द्वीप) में बिताने के बाद 1990 में रिहा हुए तथा 1994 में राष्ट्रपति बने।

अभ्यास प्रश्न #53 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 53. **[BPSC 2023]**

अप्रैल 1955 में इंडोनेशिया के राष्ट्रपति सुकर्णो की मेजबानी में आयोजित ऐतिहासिक 'बांडुंग सम्मेलन' (अफ्रीकी-एशियाई सम्मेलन) के पाँच सह-प्रायोजक राष्ट्र ('कोलंबो शक्तियाँ') कौन-कौन से थे?

(A) भारत, इंडोनेशिया, म्यांमार (बर्मा), श्रीलंका (सीलोन) और पाकिस्तान

(B) भारत, चीन, मिस्र, यूगोस्लाविया और घाना

(C) भारत, जापान, फिलीपींस, थाईलैंड और मलेशिया

(D) इंडोनेशिया, वियतनाम, कंबोडिया, लाओस और भारत

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: 1954 के कोलंबो सम्मेलन में शामिल 5 देशों— **भारत, इंडोनेशिया, बर्मा (म्यांमार), सीलोन (श्रीलंका) और पाकिस्तान**— ने अप्रैल 1955 के बांडुंग सम्मेलन को सह-प्रायोजित किया था, जिसमें 29 एशियाई-अफ्रीकी देशों ने भाग लिया। (यूगोस्लाविया एक यूरोपीय देश होने के कारण बांडुंग में नहीं था, वह 1961 के बेलग्रेड NAM सम्मेलन में शामिल हुआ)।

अभ्यास प्रश्न #54 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 54. **[UPSC CSE / CDS 2023]**

अरब-इज़रायल संघर्ष के संदर्भ में निम्नलिखित युद्धों और संधियों का सही कालानुक्रम चुनिए:

1. स्वेज संकट (द्वितीय अरब-इज़रायल युद्ध)
2. छह दिवसीय युद्ध (Six-Day War — जिसमें इज़रायल ने सिनाई, गाजा, वेस्ट बैंक और गोलान हाइट्स पर कब्ज़ा किया)
3. योम किप्पुर युद्ध (चतुर्थ अरब-इज़रायल युद्ध एवं तेल संकट)
4. कैंप डेविड समझौता (मिस्र के अनवर सादात और इज़रायल के मेनाकेम बेगिन के मध्य शांति संधि)

(A) 1 – 2 – 3 – 4

(B) 2 – 1 – 3 – 4

(C) 1 – 3 – 2 – 4

(D) 2 – 3 – 1 – 4

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: स्वेज संकट (1956) → छह दिवसीय युद्ध (जून 1967) → योम किप्पुर युद्ध (अक्टूबर 1973) → अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की मध्यस्थता में **कैंप डेविड समझौता (सितंबर 1978 / मार्च 1979 संधि)**, जिसके तहत मिस्र इज़रायल को मान्यता देने वाला पहला अरब देश बना और सिनाई प्रायद्वीप मिस्र को वापस मिला।

अभ्यास प्रश्न #55 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 55. **[UGC-NET 2023]**

औद्योगिक क्रांति सर्वप्रथम 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ग्रेट ब्रिटेन में ही क्यों प्रारंभ हुई? निम्नलिखित कारणों पर विचार कीजिए:

1. बाड़ाबंदी आंदोलन (*Enclosure Movement*) के कारण कृषि उत्पादकता में वृद्धि और कारखानों हेतु भूमिहीन श्रमिकों की उपलब्धता
2. कोयला और लौह अयस्क के भंडारों की भौगोलिक निकटता तथा नहरों व प्राकृतिक बंदरगाहों का जाल
3. 1688 की गौरवपूर्ण क्रांति के बाद राजनीतिक स्थिरता, बैंक ऑफ इंग्लैंड (1694) की स्थापना और संपत्ति अधिकारों की सुरक्षा
4. महाद्वीपीय यूरोप की तुलना में ब्रिटेन में गिल्ड (Guild) प्रतिबंधों की कमजोरी और औपनिवेशिक बाजारों की उपलब्धता

(A) केवल 1 और 2

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 3 और 4

(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

सही उत्तर: (D)

व्याख्या: अर्नोल्ड टॉयनबी और एरिक हॉब्सबॉम जैसे इतिहासकारों के अनुसार ब्रिटेन की पहली औद्योगिक क्रांति किसी एक कारक का नहीं, बल्कि कृषि क्रांति (बाड़ाबंदी), खनिज संसाधनों, वित्तीय संस्थानों, तकनीकी आविष्कारों (जेम्स हरग्रीव्स, आर्कराइट, जेम्स वॉट) और औपनिवेशिक व्यापार के संयुक्त संयोग का परिणाम थी।

अभ्यास प्रश्न #56 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 56. **[DSSSB PGT 2024]**

19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ब्रिटेन में चले 'लुडाइट आंदोलन' (Luddite Movement, 1811–1816) और 'चार्टिस्ट आंदोलन' (Chartist Movement, 1838–1848) में मुख्य अंतर क्या था?

(A) लुडाइट आंदोलन कपड़ा कारखानों में नई मशीनों द्वारा बेरोजगारी और कम मजदूरी के विरोध में मशीन-तोड़ आंदोलन था, जबकि चार्टिस्ट आंदोलन 'पीपल्स चार्टर' की 6 राजनीतिक माँगों (जैसे वयस्क पुरुष मताधिकार और गुप्त मतदान) के लिए शांतिपूर्ण संसदीय सुधार आंदोलन था।

(B) लुडाइट आंदोलन महिलाओं के मताधिकार के लिए था जबकि चार्टिस्ट आंदोलन दास प्रथा के समर्थन में था।

(C) दोनों आंदोलन फ्रांस में लुई फिलिप के विरुद्ध चले थे।

(D) लुडाइट आंदोलन जमींदारों का आंदोलन था जबकि चार्टिस्ट आंदोलन चर्च पादरियों का था।

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: काल्पनिक नेता 'नेड लुड' के नाम पर चला लुडाइट आंदोलन (1811–16) हथकरघा बुनकरों द्वारा मशीनीकरण के विरुद्ध प्रतिक्रिया थी। इसके विपरीत, 1838 में विलियम लोवेट द्वारा तैयार **'पीपल्स चार्टर'** पर आधारित चार्टिस्ट आंदोलन विश्व का पहला संगठित श्रमिक-वर्गीय राजनीतिक सुधार आंदोलन था, जिसकी 6 माँगें थीं: सार्वभौमिक पुरुष मताधिकार, गुप्त मतदान, संसद सदस्यों के लिए संपत्ति योग्यता की समाप्ति, सांसदों को वेतन, समान चुनावी जिले और वार्षिक संसद।

अभ्यास प्रश्न #57 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 57. **[UPPSC / UGC-NET 2022]**

कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा फरवरी 1848 में लंदन से प्रकाशित 'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' (*The Communist Manifesto*) से पहले के किस समाजवादी चिंतक समूह को मार्क्स ने 'स्वप्नदर्शी समाजवादी' (*Utopian Socialists*) कहा था?

(A) सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिये और रॉबर्ट ओवेन

(B) व्लादिमीर लेनिन, रोजा लक्जमबर्ग और कार्ल काउत्स्की

(C) मिखाइल बाकुनिन और प्योत्र क्रोपोटकिन

(D) एडुआर्ड बर्नस्टीन और फेर्डिनांड लासाल

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: हेनरी डी सेंट साइमन, चार्ल्स फूरिये (जिन्होंने *Phalanstères* सहकारी समुदायों की कल्पना की) और ब्रिटिश उद्योगपति रॉबर्ट ओवेन (*New Lanark* प्रयोग) को मार्क्स ने 'स्वप्नदर्शी समाजवादी' कहा क्योंकि वे वर्ग संघर्ष और ऐतिहासिक भौतिकवाद के वैज्ञानिक नियमों के बिना केवल नैतिक अपील और आदर्श कॉलोनियों से समाज बदलना चाहते थे।

अभ्यास प्रश्न #58 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 58. **[UPSC CSE / NDA 2023]**

अमेरिकी गृहयुद्ध (American Civil War, 1861–1865) के दौरान राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा उठाए गए कदमों के संदर्भ में कौन-सा कथन सही है?

(A) 1 जनवरी 1863 की 'मुक्ति उद्घोषणा' (Emancipation Proclamation) ने विद्रोही दक्षिणी परिसंघीय राज्यों (Confederacy) में दासों को मुक्त घोषित किया, और दिसंबर 1865 के **13वें संविधान संशोधन** ने संपूर्ण संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा को संवैधानिक रूप से समाप्त कर दिया।

(B) लिंकन ने 1861 में ही प्रथम संविधान संशोधन द्वारा दास प्रथा समाप्त कर दी थी।

(C) दक्षिणी राज्यों के परिसंघ (Confederacy) के राष्ट्रपति जनरल यूलिसिस एस. ग्रांट थे।

(D) गृहयुद्ध का एकमात्र कारण उत्तरी राज्यों द्वारा कृषि पर प्रतिबंध लगाना था।

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: दक्षिणी राज्यों (जिनके राष्ट्रपति जेफरसन डेविस और सेनापति रॉबर्ट ई. ली थे) के अलगाव के बाद लिंकन का प्राथमिक लक्ष्य संघ (Union) को बचाना था। सितंबर 1862 की एंटिएटम की लड़ाई के बाद उन्होंने 1 जनवरी 1863 से विद्रोही राज्यों में दासों की मुक्ति की घोषणा की, और **13वें संशोधन (1865)** ने पूरे देश से दासता समाप्त की (14वें ने नागरिकता और 15वें ने मताधिकार दिया)।

अभ्यास प्रश्न #59 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 59. **[DSSSB PGT / BPSC 2024]**

19वीं शताब्दी के यूरोप में 'पूर्वी प्रश्न' (Eastern Question) का संबंध किस भू-राजनीतिक समस्या से था?

(A) चीन के अफीम युद्धों और ताइपिंग विद्रोह से

(B) 'यूरोप के मरीज' कहे जाने वाले पतनोन्मुख ऑटोमन (उस्मानिया) साम्राज्य के बाल्कन क्षेत्रों पर यूरोपीय महाशक्तियों (रूस, ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया, फ्रांस) की प्रतिस्पर्धा और ईसाई राष्ट्रीयताओं के विद्रोह से

(C) जापान द्वारा कोरिया और ताइवान पर अधिकार से

(D) भारत में ब्रिटिश और फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रतिद्वंद्विता से

सही उत्तर: (B)

व्याख्या: 18वीं सदी के अंत से 1914 तक ऑटोमन साम्राज्य के क्रमिक पतन से उत्पन्न शक्ति-शून्य, रूस की भूमध्य सागर (काला सागर जलडमरूमध्य) तक पहुँचने की महत्वाकांक्षा, ब्रिटेन द्वारा अपने भारतीय साम्राज्य के मार्ग की रक्षा और बाल्कन राष्ट्रवाद (ग्रीक स्वतंत्रता संग्राम 1821–29, क्रीमिया युद्ध 1853–56, बर्लिन कांग्रेस 1878, बाल्कन युद्ध 1912–13) को 'पूर्वी प्रश्न' कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #60 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 60. [UGC-NET / UPSC CSE 2024]

द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात यूरोपीय एकीकरण (European Integration) के विकास-क्रम का सही कालानुक्रमिक अनुक्रम कौन-सा है?

(A) शूमान घोषणा व पेरिस संधि (ECSC, 1951) → रोम की संधि (EEC एवं Euratom, 1957) → मास्ट्रिख्ट की संधि (यूरोपीय संघ EU का गठन, 1992/93) → लिस्बन की संधि (2007/2009)

(B) रोम की संधि (1951) → मास्ट्रिख्ट संधि (1957) → पेरिस संधि (1992) → लिस्बन संधि (2007)

(C) मास्ट्रिख्ट संधि (1949) → रोम की संधि (1957) → शेंगेन समझौता (1951) → ब्रेक्सिट (1999)

(D) पेरिस संधि (1945) → ब्रुसेल्स संधि (1992) → रोम संधि (2002) → मास्ट्रिख्ट संधि (2009)

सही उत्तर: (A)

व्याख्या: रॉबर्ट शूमान और जीन मोनेट की पहल पर 1951 की पेरिस संधि से 6 देशों (फ्रांस, प. जर्मनी, इटली, बेल्जियम, नीदरलैंड, लक्जमबर्ग — 'Inner Six') ने **यूरोपीय कोयला और इस्पात समुदाय (ECSC)** बनाया। 1957 की **रोम संधि** से यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC / Common Market) बना। फरवरी 1992 की **मास्ट्रिख्ट संधि** (1993 में प्रभावी) ने औपचारिक रूप से **यूरोपीय संघ (EU)** और एकल मुद्रा (Euro) की नींव रखी, तथा **लिस्बन संधि (2007)** ने इसकी वर्तमान संवैधानिक संरचना (जिसमें अनुच्छेद 50 के तहत ब्रेक्सिट का प्रावधान था) तय की।

1.3 मुख्य परीक्षा उत्तर-लेखन प्रारूप एवं मॉडल उत्तर (Mains Answer-Writing Frameworks — Book 27)

अध्याय के प्रमुख अध्ययन स्तंभ — 1.3 मुख्य परीक्षा उत्तर-लेखन प्रारूप एवं मॉडल उत्तर (Mains Answer-Writing Frameworks — Book 27)

प्रमुख अध्ययन बिंदु 1	प्रमुख अध्ययन बिंदु 2
मॉडल प्रश्न 1 (UPSC CSE GS Paper-I / UPPSC Mains — 15 अंक, 250 शब्द)	**मॉडल प्रश्न 2 (UPSC CSE / BPSC Mains — 15 अंक, 250 शब्द)**

मॉडल प्रश्न 1 (UPSC CSE GS Paper-I / UPPSC Mains — 15 अंक, 250 शब्द)

अभ्यास प्रश्न #61 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न: "वर्साय की संधि (1919) न तो इतनी उदार थी कि जर्मनी को संतुष्ट कर सके और न ही इतनी कठोर कि उसे पुनः महाशक्ति बनने से स्थायी रूप से रोक सके।" इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

• उत्तर संरचना प्रारूप (Answer Structure Blueprint):

1. **प्रस्तावना (Introduction — 30–40 शब्द):** फ्रांसीसी मार्शल फर्डिनेंड फॉश के प्रसिद्ध कथन ("यह शांति नहीं है, यह बीस वर्षों का युद्धविराम है") तथा मैकियावेली के यथार्थवादी सिद्धांत के संदर्भ में पेरिस शांति सम्मेलन के विरोधाभासी लक्ष्यों (विल्सन का आदर्शवाद बनाम क्लीमेंसो का प्रतिशोध) का उल्लेख।

2. **मुख्य भाग - खंड A: संधि जर्मनी को संतुष्ट कर पाने में क्यों विफल रही (Why Not Lenient Enough):**

• एकपक्षीय 'डिक्टैट' (Diktat): जर्मन प्रतिनिधियों को वार्ता में शामिल किए बिना हस्ताक्षर हेतु बाध्य करना।

• राष्ट्रीय अपमान व अनुच्छेद 231: अकेले जर्मनी पर युद्ध का नैतिक दोष और 6.6 अरब पाउंड की अव्यावहारिक क्षतिपूर्ति।

• **आत्मनिर्णय के सिद्धांत का चयनात्मक प्रयोग:** पोलिश कॉरिडोर द्वारा पूर्वी प्रशा को मुख्य भूमि से काटना, सुडेटेनलैंड के 30 लाख जर्मनों को चेकोस्लोवाकिया में रखना और ऑस्ट्रिया के साथ विलय (*Anschluss*) पर रोक।

3. **मुख्य भाग - खंड B: संधि जर्मनी को स्थायी रूप से कुचलने में क्यों विफल रही (Why Not Crushing Enough):**

• **जर्मनी की राजनीतिक व औद्योगिक एकता बरकरार:** बिस्मार्क द्वारा निर्मित जर्मन राज्य का विघटन नहीं किया गया (जबकि ऑस्ट्रिया-हंगरी और ऑटोमन साम्राज्य तोड़ दिए गए)। फ्रांस द्वारा राइनलैंड को अलग बफर राज्य बनाने की मांग को लॉयड जॉर्ज और विल्सन ने अस्वीकार कर दिया।

• **भू-राजनीतिक शक्ति-संतुलन में जर्मनी को लाभ:** जर्मनी के पूर्व में अब शक्तिशाली रूसी व हैब्सबर्ग साम्राज्यों के स्थान पर कमजोर और आपस में लड़ने वाले छोटे-छोटे उत्तराधिकारी राज्य (पोलैंड, चेकोस्लोवाकिया आदि) थे।

• **प्रवर्तन तंत्र की कमजोरी:** अमेरिका का राष्ट्र संघ से बाहर रहना और ब्रिटेन की तुष्टीकरण नीति ने हिटलर को 1935–38 में वर्साय की शर्तों को एक-एक कर तोड़ने का अवसर दिया।

4. **निष्कर्ष (Conclusion — 30–40 शब्द):** इतिहासकार ए.जे.पी. टेलर के मत के साथ संतुलित समापन कि वर्साय की संधि में जन्मजात दोष था—उसने जर्मनी में प्रतिशोध की तीव्र भावना तो जगाई, किंतु उसकी औद्योगिक व जनसांख्यिकीय क्षमता को अक्षुण्ण छोड़ दिया, जिसे 1929 की महामंदी ने द्वितीय विश्व युद्ध में बदल दिया।

मॉडल प्रश्न 2 (UPSC CSE / BPSC Mains — 15 अंक, 250 शब्द)

अभ्यास प्रश्न #62 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न: एशिया और अफ्रीका में वि-उपनिवेशीकरण (*Decolonization*) की प्रक्रिया पर शीत युद्ध की राजनीति ने किस प्रकार प्रभाव डाला? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

• **उत्तर संरचना प्रारूप (Answer Structure Blueprint):**

1. **प्रस्तावना:** 1945 के बाद वि-उपनिवेशीकरण और शीत युद्ध के समानांतर उभार का उल्लेख; दोनों महाशक्तियों (USA और USSR) का सैद्धांतिक रूप से पुराने यूरोपीय उपनिवेशवाद का विरोधी होना, किंतु व्यवहार में नव-स्वतंत्र देशों को अपने वैचारिक प्रभाव क्षेत्र में खींचने की प्रतिस्पर्धा।

2. **मुख्य भाग - सकारात्मक उत्प्रेरक प्रभाव:**

• स्वेज संकट (1956) और इंडोनेशिया (1949) में महाशक्तियों के दबाव ने ब्रिटिश-फ्रांसीसी-डच साम्राज्यवाद को पीछे हटने पर विवश किया।

• मुक्ति आंदोलनों (जैसे वियतनाम, अल्जीरिया, अंगोला, मोज़ाम्बिक और दक्षिण अफ्रीका में ANC) को सोवियत व चीनी कूटनीतिक-सैन्य सहायता मिली।

3. **मुख्य भाग - नकारात्मक एवं विनाशकारी प्रभाव (छद्म युद्ध / Proxy Wars):**

• **राष्ट्रों का कृत्रिम विभाजन:** कोरिया (38वीं समानांतर) और वियतनाम (17वीं समानांतर) में स्वतंत्रता संग्राम महाशक्तियों के विनाशकारी युद्धों में बदल गए।

• **अफ्रीका में गृहयुद्ध और अस्थिरता:** बेल्जियम कांगो संकट (1960–65) में पैट्रिस लुमुम्बा की हत्या और मोबुतु की तानाशाही को पश्चिमी समर्थन; 1975 में पुर्तगाली पलायन के बाद अंगोला में सोवियत/क्यूबा समर्थित MPLA और अमेरिका/दक्षिण अफ्रीका समर्थित UNITA के बीच दशकों लंबा गृहयुद्ध।

• **नव-उपनिवेशवाद (Neo-Colonialism) और सैन्य तानाशाही:** विकासशील देशों के लोकतांत्रिक विकास की अपेक्षा महाशक्तियों ने अपने प्रति वफादार सैन्य शासकों को हथियार और ऋण देकर संस्थागत कमजोरी को बढ़ावा दिया।

4. **निष्कर्ष:** बांडुंग (1955) और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM, 1961) के माध्यम से भारत व अन्य तृतीय विश्व के देशों द्वारा अपनी रणनीतिक स्वायत्तता बचाने के ऐतिहासिक प्रयास का रेखांकन।

1.4 मास्टर एनसाइक्लोपीडिया सारणी (Master Encyclopedia Reference Table — Book *27*)

वर्ष / कालखंड	ऐतिहासिक घटना / क्रांति / संधि	प्रमुख व्यक्तित्व / राष्ट्र	मुख्य वैचारिक / ऐतिहासिक महत्व
1648	वेस्टफेलिया की संधि (Treaty of Westphalia)	यूरोपीय शक्तियाँ	तीस वर्षीय धार्मिक युद्ध का अंत; आधुनिक संप्रभु राष्ट्र-राज्य (Nation-State) प्रणाली का जन्म
1688–1689	गौरवपूर्ण क्रांति एवं बिल ऑफ राइट्स	इंग्लैंड (विलियम ऑफ ऑरेंज, जॉन लॉक)	राजा के दैवीय अधिकार का अंत; संसद की सर्वोच्चता और संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना

वर्ष / कालखंड	ऐतिहासिक घटना / क्रांति / संधि	प्रमुख व्यक्तित्व / राष्ट्र	मुख्य वैचारिक / ऐतिहासिक महत्व
1776 (4 जुलाई)	अमेरिकी स्वतंत्रता का घोषणापत्र	थॉमस जेफरसन (13 अमेरिकी उपनिवेश)	जीवन, स्वतंत्रता और सुख की खोज (*Pursuit of Happiness*) को अहस्तांतरणीय अधिकार घोषित किया
1789 (14 जुलाई)	बास्तील का पतन एवं फ्रांसीसी क्रांति	फ्रांस की तृतीय एस्टेट, राष्ट्रीय सभा	निरंकुश राजतंत्र और सामंती विशेषाधिकारों का अंत; स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व का उद्घोष
1804	नेपोलियन संहिता (*Code Napoléon*)	नेपोलियन बोनापार्ट	जन्मजात विशेषाधिकारों की समाप्ति, कानून के समक्ष समानता, धर्मनिरपेक्ष दीवानी कानून
1815	वाटरलू का युद्ध एवं वियना कांग्रेस	मेटरनिख, कैसलरे, तालेरां, अलेक्जेंडर I	यूरोप में शक्ति संतुलन (*Concert of Europe*) और रूढ़िवादी व्यवस्था की पुनर्स्थापना
1848	यूरोप की क्रांतियों का वर्ष एवं कम्युनिस्ट घोषणापत्र	मार्क्स, एंगेल्स, मेज़िनी, लुई ब्लैंक	मेटरनिख युग का अंत; उदारवादी राष्ट्रवाद और वैज्ञानिक समाजवाद का समानांतर उभार
1861–1871	इटली एवं जर्मनी का एकीकरण, मेइजी पुनर्स्थापना	कावूर, गैरीबाल्डी, बिस्मार्क, सम्राट मेइजी	मध्य यूरोप और पूर्वी एशिया में नए शक्तिशाली औद्योगिक-सैन्य राष्ट्रों का उदय
1914–1918	प्रथम विश्व युद्ध	मित्र राष्ट्र बनाम केंद्रीय शक्तियाँ	चार महान साम्राज्यों (जर्मन, ऑस्ट्रो-हंगेरियन, रूसी, ऑटोमन) का पतन; राष्ट्र संघ का जन्म
1917 (नवंबर)	रूसी बोल्शेविक (अक्टूबर) क्रांति	व्लादिमीर लेनिन, लियोन ट्रॉट्स्की	विश्व के प्रथम समाजवादी-सर्वहारा राज्य (बाद में USSR) की स्थापना
1929–1939	महान आर्थिक मंदी एवं फासीवाद/नाजीवाद का उभार	रूजवेल्ट (न्यू डील), मुसोलिनी, हिटलर	मुक्त-बाजार पूँजीवाद में राज्य हस्तक्षेप (केन्सियन मॉडल) तथा उग्र अधिनायकवाद का उदय
1939–1945	द्वितीय विश्व युद्ध एवं संयुक्त राष्ट्र की स्थापना	मित्र राष्ट्र बनाम धुरी राष्ट्र	फासीवाद की पराजय, परमाणु युग का आरंभ, यूरोपीय वर्चस्व का अंत व द्विध्रुवीय विश्व व्यवस्था
1949 (1 अक्टूबर)	चीनी साम्यवादी क्रांति की सफलता	माओ त्से-तुंग (पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना)	एशिया में शक्ति संतुलन का परिवर्तन; कृषक-आधारित साम्यवादी क्रांति का नया मॉडल
1955 एवं 1961	बांडुंग सम्मेलन एवं बेलग्रेड NAM शिखर सम्मेलन	नेहरू, नासिर, टीटो, सुकर्णो, एन्क्रूमा	वि-उपनिवेशीकरण की लहर और तृतीय विश्व के देशों की स्वतंत्र गुटनिरपेक्ष विदेश नीति
1989–1991	बर्लिन दीवार का पतन एवं सोवियत संघ का विघटन	मिखाइल गोर्बाचेव, बोरिस येल्तसिन	शीत युद्ध की समाप्ति, जर्मनी का एकीकरण और एकध्रुवीय/बहुध्रुवीय विश्व व्यवस्था का संक्रमण

27.1 उच्च-स्तरीय विश्व ऐतिहासिक एवं वैचारिक तथ्य संकलन

एनसीईआरटी के विश्व इतिहास ग्रंथों ('विश्व इतिहास के कुछ विषय' एवं 'भारत और समकालीन विश्व' - ncert.nic.in) के अनुसार आधुनिक विश्व का निर्माण 14वीं–17वीं शताब्दी के यूरोपीय पुनर्जागरण (Renaissance), धर्मसुधार आंदोलन (Reformation), प्रबोधन काल (Age of Enlightenment), औद्योगिक क्रांति (Industrial Revolution), अमेरिकी क्रांति (1776), फ्रांसीसी क्रांति (1789), यूरोप में राष्ट्र-राज्यों के एकीकरण (इटली एवं जर्मनी - 1870–71), रूसी बोल्शेविक क्रांति (1917), दो विश्व युद्धों (1914–18 एवं 1939–45), उपनिवेशवाद के अंत तथा शीतयुद्ध (1945–1991) की युगांतरकारी घटनाओं से हुआ है (www.iucacademy.com)।

- **प्रबोधन काल के प्रमुख विचारक एवं उनकी कृतियां:**
- **जॉन लॉक (John Locke):** 'टू ट्रीटाइजेज ऑफ गवर्नमेंट' (Two Treatises of Government) — जीवन, स्वतंत्रता और संपत्ति के प्राकृतिक अधिकार तथा राजा के दैवीय अधिकार का खंडन।
- **मॉन्टेस्क्यू (Montesquieu):** 'द स्पिरिट ऑफ द लॉज' (The Spirit of the Laws, 1748) — कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के मध्य 'शक्तियों के पृथक्करण' (Separation of Powers) का सिद्धांत।
- **जीन-जैक्स रूसो (Rousseau):** 'द सोशल कॉन्ट्रैक्ट' (The Social Contract, 1762) — 'सामान्य इच्छा' (General Will) और लोकप्रिय संप्रभुता का सिद्धांत ("मनुष्य स्वतंत्र जन्मा है, किंतु वह सर्वत्र जंजीरों में जकड़ा हुआ है")।
- **भारतीय संविधान पर विश्व क्रांतियों का प्रभाव:** अमेरिकी क्रांति से मौलिक अधिकार व न्यायिक पुनरावलोकन; फ्रांसीसी क्रांति से गणतंत्रात्मक व्यवस्था तथा स्वतंत्रता, समता और बंधुता के आदर्श; तथा रूसी क्रांति (1917) से प्रस्तावना में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय के आदर्श ग्रहण किए गए।

27.2 विस्तृत तुलनात्मक सारणियाँ (खंड 27)

तुलनात्मक सारणी 27.1: विश्व की चार महान राजनीतिक क्रांतियों (इंग्लैंड, अमेरिका, फ्रांस एवं रूस) का बहु-आयामी तुलनात्मक विश्लेषण

तुलनात्मक आधार	गौरवपूर्ण क्रांति (इंग्लैंड, 1688)	अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम (1775–1783)	फ्रांसीसी क्रांति (1789–1799)	रूसी बोल्शेविक क्रांति (1917)
तत्कालीन शासक एवं राजवंश	राजा जेम्स द्वितीय (स्टुअर्ट राजवंश)	ब्रिटिश सम्राट जॉर्ज तृतीय (13 अमेरिकी उपनिवेशों पर शासन)	सम्राट लुई सोलहवां (बूर्बों राजवंश - Bourbon Dynasty)	जार निकोलस द्वितीय (रोमानोव राजवंश - Romanov Dynasty)
प्रमुख वैचारिक सूत्रधार एवं नारे	जॉन लॉक; संसदीय संप्रभुता और सीमित राजतंत्र	थॉमस जेफरसन, थॉमस पेन ('कॉमन सेंस'); नारा: **'प्रतिनिधित्व नहीं तो कर नहीं'** (No Taxation without Representation)	रूसो, वोल्टेयर, मॉन्टेस्क्यू; नारा: **'स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व'** (Liberty, Equality, Fraternity)	कार्ल मार्क्स व व्लादिमीर लेनिन; नारा: **'शांति, भूमि और रोटी'** (Peace, Land and Bread) एवं 'सारी सत्ता सोवियतों को'
प्रमुख तात्कालिक घटनाएं	बिना रक्तपात के जेम्स द्वितीय का पलायन और विलियम ऑफ ऑरेंज तथा मैरी का सिंहासनारोहण	बोस्टन टी पार्टी (16 दिसंबर 1773 - सैमुअल एडम्स); 4 जुलाई 1776 को स्वतंत्रता की घोषणा	14 जुलाई 1789 को बास्तील दुर्ग का पतन; टेनिस कोर्ट की शपथ; मानव एवं नागरिक अधिकार घोषणापत्र	फरवरी क्रांति (मार्च 1917 - जार का पतन) एवं अक्टूबर क्रांति (नवंबर 1917 - लेनिन के नेतृत्व में बोल्शेविकों का सत्ता पर अधिकार)
मुख्य ऐतिहासिक संधि / दस्तावेज	'बिल ऑफ राइट्स' (Bill of Rights, 1689)	**पेरिस की संधि (1783)** — ब्रिटेन द्वारा 13 अमेरिकी उपनिवेशों की स्वतंत्रता की मान्यता	1791 का संविधान, जैकोबिन गणतंत्र और बाद में नेपोलियन संहिता (1804)	**ब्रेस्ट-लिटोव्स्क की संधि (मार्च 1918)** — रूस का प्रथम विश्व युद्ध से अलग होना
वैश्विक एवं संवैधानिक विरासत	विश्व में सर्वप्रथम निरंकुश राजतंत्र के स्थान पर 'संवैधानिक राजतंत्र' और संसद की सर्वोच्चता स्थापित हुई	विश्व का **प्रथम लिखित एवं संघात्मक लोकतांत्रिक संविधान** (1787 में फिलाडेल्फिया सम्मेलन, 1789 से लागू) (ncert.nic.in)	यूरोप में सामंतवाद और विशेषाधिकारों का अंत; राष्ट्रवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतांत्रिक गणराज्य का प्रसार	विश्व में प्रथम समाजवादी/साम्यवादी राज्य (USSR - 1922) की स्थापना और श्रमिक-किसान अधिकारों को वैश्विक मान्यता

तुलनात्मक सारणी 27.2: इटली एवं जर्मनी के एकीकरण तथा प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध के कारणों, संधियों व परिणामों का विश्लेषण

ऐतिहासिक परिघटना	कालखंड एवं प्रमुख नेतृत्वकर्ता	प्रमुख कूटनीतिक/सैन्य चरण एवं युद्ध	निर्णायक संधियाँ एवं समझौते	वैश्विक भू-राजनीतिक परिणाम (ncert.nic.in)
इटली का एकीकरण (Unification of Italy)	1815–1870; नेतृत्व: **मेजिनी** (आत्मा - 'यंग इटली'), **काउंट कावूर** (मस्तिष्क) एवं **गैरीबाल्डी** (तलवार - 'लाल कुर्ती' दल)	सार्डिनिया-पीडमॉन्ट के राजा विक्टर इमैनुअल द्वितीय के नेतृत्व में ऑस्ट्रिया से लोम्बार्डी (1859), सिसिली व नेपल्स (1860), वेनेशिया (1866) की प्राप्ति	विलाफ्रांका की संधि (1859), प्राग की संधि (1866); **1870 में रोम पर अधिकार** के साथ एकीकरण पूर्ण	पोप की राजनीतिक सत्ता वेटिकन तक सीमित हुई और रोम एकीकृत इटली की राजधानी बना
जर्मनी का एकीकरण (Unification of Germany)	1862–1871; नेतृत्व: प्रशा के सम्राट विलियम प्रथम और चांसलर **ऑटो वॉन बिस्मार्क** ('रक्त और लौह की नीति')	बिस्मार्क द्वारा तीन निर्णायक युद्ध: (1) डेनमार्क युद्ध (1864), (2) ऑस्ट्रिया-प्रशा युद्ध (सेडोवा का युद्ध, 1866), (3) फ्रांस-प्रशा युद्ध (सेडान का युद्ध, 1870)	**फ्रैंकफर्ट की संधि (मई 1871)** — फ्रांस को अल्सास और लॉरेन प्रांत जर्मनी को सौंपने पड़े	18 जनवरी 1871 को वर्साय के 'शीश महल' (Hall of Mirrors) में विलियम प्रथम का जर्मन सम्राट के रूप में राज्याभिषेक
प्रथम विश्व युद्ध (First World War)	28 जुलाई 1914 से 11 नवंबर 1918; मित्र राष्ट्र (ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, अमेरिका, इटली, जापान) बनाम केंद्रीय शक्तियां (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, ऑटोमन तुर्की)	तात्कालिक कारण: 28 जून 1914 को साराजेवो में ऑस्ट्रिया के आर्चड्यूक फ्रांज फर्डिनेंड की हत्या; खाई युद्ध (Trench Warfare) और 1917 में अमेरिका का प्रवेश	**वर्साय की संधि (28 जून 1919 - जर्मनी के साथ)**, सेंट जर्मेन की संधि (ऑस्ट्रिया), सेव्रेस की संधि (तुर्की - 1920)	चार विशाल साम्राज्यों (जर्मन होहेनजोलर्न, ऑस्ट्रियाई हैब्सबर्ग, रूसी रोमानोव और ऑटोमन) का पतन तथा 10 जनवरी 1920 को **राष्ट्र संघ (League of Nations)** की स्थापना
द्वितीय विश्व युद्ध (Second World War)	1 सितंबर 1939 से 2 सितंबर 1945; मित्र राष्ट्र (ब्रिटेन, सोवियत संघ, अमेरिका, फ्रांस, चीन) बनाम धुरी राष्ट्र (जर्मनी, इटली, जापान)	1 सितंबर 1939 को जर्मनी का पोलैंड पर आक्रमण; ऑपरेशन बारबरोसा (1941); पर्ल हार्बर हमला (7 दिसंबर 1941); स्टालिनग्राद और नॉर्मंडी (D-Day, जून 1944)	अटलांटिक चार्टर (1941), याल्टा सम्मेलन (फरवरी 1945), पोट्सडैम सम्मेलन (जुलाई-अगस्त 1945)	6 व 9 अगस्त 1945 को हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम; **24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO)** की स्थापना और द्वि-ध्रुवीय शीतयुद्ध का प्रारंभ

तुलनात्मक सारणी 27.3: औद्योगिक क्रांति के चरणों, प्रमुख आर्थिक विचारधाराओं (पूंजीवाद, समाजवाद, फासीवाद) एवं शीतयुद्धकालीन संगठनों का विश्लेषण

ऐतिहासिक / वैचारिक आयाम	कालखंड / प्रवर्तक	मुख्य तकनीकी / दार्शनिक विशेषताएं	प्रमुख ऐतिहासिक संस्थाएं / दस्तावेज	विश्व व्यवस्था एवं समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव
प्रथम एवं द्वितीय औद्योगिक क्रांति	प्रथम: 1760–1840 (ब्रिटेन से प्रारंभ); द्वितीय: 1870–1914 (यूरोप, अमेरिका व जापान)	प्रथम: कोयला, भाप का इंजन (जेम्स वाट), वस्त्र उद्योग (स्पिनिंग जेनी - जेम्स हरग्रीव्स, पावरलूम - कार्टराइट) व लोहा; द्वितीय: इस्पात (बेसेमर प्रक्रिया), विद्युत, टेलीग्राफ, रसायन और आंतरिक दहन इंजन	कारखाना प्रणाली का उदय, नहर व रेलवे नेटवर्क का विस्तार (जॉर्ज स्टीफेंसन का रॉकेट इंजन)	शहरीकरण में तीव्र वृद्धि, पूंजीपति (बुर्जुआ) और औद्योगिक श्रमिक (सर्वहारा) वर्ग का उदय तथा एशिया-अफ्रीका में कच्चे माल व बाजार हेतु उपनिवेशवाद (ncert.nic.in)
अहस्तक्षेप पूंजीवाद बनाम वैज्ञानिक समाजवाद	पूंजीवाद: **एडम स्मिथ** (1776); समाजवाद: **कार्ल मार्क्स** एवं **फ्रेडरिक एंगेल्स** (1848)	एडम स्मिथ: 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand), मुक्त बाजार व अहस्तक्षेप (Laissez-faire); मार्क्स: ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग संघर्ष और अतिरिक्त मूल्य का सिद्धांत	एडम स्मिथ: द वेल्थ ऑफ नेशंस (1776); कार्ल मार्क्स: कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो (1848) एवं दास कैपिटल (1867)	कल्याणकारी राज्य (Welfare State), श्रम कानूनों, ट्रेड यूनियनों और मिश्रित अर्थव्यवस्था मॉडल के विकास को वैचारिक आधार मिला
फासीवाद (इटली) एवं नाजीवाद (जर्मनी)	फासीवाद: **बेनिटो मुसोलिनी** (1922 में रोम मार्च); नाजीवाद: **एडॉल्फ हिटलर** (1933 में चांसलर)	उग्र अंध-राष्ट्रवाद, सर्वाधिकारवादी राज्य ("सब कुछ राज्य के भीतर, राज्य के बाहर कुछ नहीं"), लोकतंत्र व साम्यवाद का विरोध, सैन्यीकरण और नस्लीय श्रेष्ठता (नाजीवाद में आर्य नस्लवाद)	मुसोलिनी का 'फासिस्ट दल' (काली कुर्ती); हिटलर का 'नेशनल सोशलिस्ट जर्मन वर्कर्स पार्टी' और आत्मकथा मीन कैम्फ (मेरा संघर्ष)	राष्ट्र संघ की सामूहिक सुरक्षा प्रणाली की विफलता (अबिसीनिया संकट, स्पेन का गृहयुद्ध, म्यूनिख समझौता 1938) और द्वितीय विश्व युद्ध का विस्फोट

ऐतिहासिक / वैचारिक आयाम	कालखंड / प्रवर्तक	मुख्य तकनीकी / दार्शनिक विशेषताएं	प्रमुख ऐतिहासिक संस्थाएं / दस्तावेज	विश्व व्यवस्था एवं समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव
शीतयुद्ध (Cold War) एवं गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)	शीतयुद्ध: 1945–1991; गुटनिरपेक्ष आंदोलन: बांडुंग सम्मेलन (1955) और बेलग्रेड शिखर सम्मेलन (1961)	अमेरिका के नेतृत्व वाले पूंजीवादी पश्चिमी गुट (NATO - 1949) और सोवियत संघ के नेतृत्व वाले साम्यवादी पूर्वी गुट (वारसॉ पैक्ट - 1955) के बीच वैचारिक व भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता	ट्रूमैन सिद्धांत व मार्शल प्लान (1947); बर्लिन की दीवार (1961–1989); क्यूबा मिसाइल संकट (1962); NAM के संस्थापक: नेहरू, नासिर, टीटो, सुकर्णो, नक्रूमा	नव-स्वतंत्र विकासशील देशों को सैन्य गुटों से स्वतंत्र विदेश नीति मिली; दिसंबर 1991 में मिखाइल गोर्बाचेव के सुधारों (ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका) के पश्चात USSR के विघटन से शीतयुद्ध समाप्त (www.iucacademy.com)

27.3 उच्च-स्तरीय व्याख्या सहित बहुविकल्पीय प्रश्न (खंड 27: प्रश्न 1 से 20)

अभ्यास प्रश्न #1 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 1. यूरोपीय पुनर्जागरण (Renaissance) का प्रारंभ 14वीं शताब्दी में सर्वप्रथम इटली के नगर-राज्यों (विशेषकर फ्लोरेंस, वेनिस और मिलान) से ही होने के पीछे निम्नलिखित में से कौन-सा कारण उत्तरदायी था?

(A) भूमध्यसागरीय व्यापार के कारण समृद्ध व्यापारी वर्ग (जैसे फ्लोरेंस का मेडिसी परिवार) का उदय, प्राचीन रोमन सभ्यता के अवशेषों की उपस्थिति तथा 1453 ई. में ऑटोमन तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया (Constantinople) पर अधिकार किए जाने के बाद यूनानी विद्वानों का पांडुलिपियों सहित इटली पलायन करना।

(B) इटली में औद्योगिक क्रांति और भाप के इंजन का आविष्कार सबसे पहले हुआ था।

(C) इटली उस समय एक एकीकृत साम्यवादी राष्ट्र था।

(D) इटली का अटलांटिक महासागर के पश्चिमी तट पर स्थित होना।

सही उत्तर: (A) भूमध्यसागरीय व्यापार के कारण समृद्ध व्यापारी वर्ग (जैसे फ्लोरेंस का मेडिसी परिवार) का उदय, प्राचीन रोमन सभ्यता के अवशेषों की उपस्थिति तथा 1453 ई. में ऑटोमन तुर्कों द्वारा कुस्तुनतुनिया (Constantinople) पर अधिकार किए जाने के बाद यूनानी विद्वानों का पांडुलिपियों सहित इटली पलायन करना।

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी विश्व इतिहास ('बदलती हुई सांस्कृतिक परंपराएं' - ncert.nic.in) के अनुसार इटली के नगर पूर्व और पश्चिम के मध्य भूमध्यसागरीय व्यापार के केंद्र थे।
- यहाँ सामंती प्रथा कमजोर थी और स्वतंत्र नगर-राज्यों में मेडिसी परिवार जैसे कला-संरक्षकों ने लियोनार्डो दा विंची, माइकलएंजेलो और राफेल को आश्रय दिया।
- साथ ही, 1453 ई. में पूर्वी रोमन (बाइजेंटाइन) साम्राज्य की राजधानी कुस्तुनतुनिया के पतन के बाद प्लेटो और अरस्तू के मूल यूनानी ग्रंथों के साथ अनेक विद्वान इटली आए और पेट्रार्क एवं इरास्मस जैसे विचारकों ने 'मानवतावाद' (Humanism) को जन्म दिया।

अभ्यास प्रश्न #2 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 2. 16वीं शताब्दी के यूरोपीय 'धर्मसुधार आंदोलन' (Protestant Reformation) के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं और व्यक्तित्वों का कौन-सा मिलान सही है?

(A) मार्टिन लूथर द्वारा 1517 ई. में जर्मनी के विटेनबर्ग गिरजाघर के द्वार पर पोप के 'पाप-मोचन पत्रों' (Indulgences) की बिक्री के विरुद्ध '95 थीसिस' (Ninety-Five Theses) लगाना और बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करना।

(B) मार्टिन लूथर द्वारा सोसाइटी ऑफ जीसस (जेसुइट संघ) की स्थापना करना।

(C) जॉन केल्विन द्वारा ट्रेंट की परिषद (Council of Trent) की अध्यक्षता करना।

(D) हेनरी अष्टम द्वारा जर्मनी में लूथरवाद की शुरुआत करना।

सही उत्तर: (A) मार्टिन लूथर द्वारा 1517 ई. में जर्मनी के विटेनबर्ग गिरजाघर के द्वार पर पोप के 'पाप-मोचन पत्रों' (Indulgences) की बिक्री के विरुद्ध '95 थीसिस' (Ninety-Five Theses) लगाना और बाइबिल का जर्मन भाषा में अनुवाद करना।

विस्तृत व्याख्या:

• धर्मसुधार आंदोलन की औपचारिक शुरुआत 31 अक्टूबर 1517 को जर्मन धर्मशास्त्री मार्टिन लूथर द्वारा विटेनबर्ग विश्वविद्यालय के चर्च पर '95 थीसिस' टांगने से हुई (ncert.nic.in)।

• लूथर ने प्रतिपादित किया कि मोक्ष के लिए चर्च के कर्मकांड या पाप-मोचन पत्र (Indulgence) खरीदने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि ईश्वर में आस्था (Justification by Faith alone) और बाइबिल ही सर्वोच्च प्रमाण है।

• जॉन केल्विन ने स्विट्जरलैंड (जिनेवा) में इसे आगे बढ़ाया, इंग्लैंड में राजा हेनरी अष्टम ने 'एक्ट ऑफ सुप्रीमेसी' (1534) द्वारा एंग्लिकन चर्च स्थापित किया, जबकि कैथोलिक चर्च के आंतरिक सुधार ('प्रति-धर्मसुधार' - Counter-Reformation) के लिए इग्नेशियस लोयोला ने 1540 में 'सोसाइटी ऑफ जीसस' की स्थापना की और 'ट्रेंट की परिषद' (1545–63) आयोजित हुई।

अभ्यास प्रश्न #3 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 3. फ्रांसीसी क्रांति (1789) से पूर्व फ्रांस के समाज के तीन स्टेट्स (Three Estates) और तत्कालीन कर प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?

(A) प्रथम स्टेट (पादरी वर्ग) और द्वितीय स्टेट (कुलीन/सामंत वर्ग) को जन्मना विशेषाधिकार प्राप्त थे और वे प्रत्यक्ष कर से मुक्त थे, जबकि संपूर्ण करों—जैसे राज्य को दिया जाने वाला प्रत्यक्ष भूमि/संपत्ति कर 'टाइल' (Taille) और चर्च को दिया जाने वाला धार्मिक कर 'टाइद' (Tithe)—का भार केवल तृतीय स्टेट (किसान, कारीगर, व्यवसायी, वकील आदि) पर था।

(B) प्रथम और द्वितीय स्टेट ही राज्य को 100% कर देते थे और तृतीय स्टेट कर-मुक्त था।

(C) स्टेट्स जनरल में प्रत्येक सदस्य को व्यक्तिगत मत (One Person, One Vote) देने का अधिकार शुरू से ही प्राप्त था।

(D) फ्रांसीसी क्रांति के समय फ्रांस का सम्राट लुई चौदहवां था।

सही उत्तर: (A) प्रथम स्टेट (पादरी वर्ग) और द्वितीय स्टेट (कुलीन/सामंत वर्ग) को जन्मना विशेषाधिकार प्राप्त थे और वे प्रत्यक्ष कर से मुक्त थे, जबकि संपूर्ण करों—जैसे राज्य को दिया जाने वाला प्रत्यक्ष भूमि/संपत्ति कर 'टाइल' (Taille) और चर्च को दिया जाने वाला धार्मिक कर 'टाइद' (Tithe)—का भार केवल तृतीय स्टेट (किसान, कारीगर, व्यवसायी, वकील आदि) पर था।

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी इतिहास ('फ्रांसीसी क्रांति' - ncert.nic.in) के अनुसार 1789 से पूर्व फ्रांस की 'प्राचीन राजव्यवस्था' (Old Regime) में कुल जनसंख्या का लगभग 90% किसान थे, किंतु 60% से अधिक भूमि पर कुलीनों, चर्च और तृतीय स्टेट के अमीरों का अधिकार था।

• प्रथम स्टेट (Clergy) और द्वितीय स्टेट (Nobility) को करों से छूट प्राप्त थी।

• तृतीय स्टेट को ही चर्च द्वारा वसूल किया जाने वाला कृषि उपज के दसवें हिस्से के बराबर कर **'टाइद' (Tithe)** तथा सीधे राज्य को दिया जाने वाला कर **'टाइल' (Taille)** और नमक व तंबाकू जैसी दैनिक वस्तुओं पर अप्रत्यक्ष कर चुकाने पड़ते थे।

• मई 1789 में सम्राट लुई सोलहवें द्वारा 175 वर्षों बाद बुलाई गई 'स्टेट्स जनरल' की बैठक में जब तृतीय स्टेट की प्रति सदस्य एक वोट की मांग ठुकरा दी गई, तो उन्होंने 'नेशनल असेंबली' का गठन कर क्रांति का सूत्रपात किया।

अभ्यास प्रश्न #4 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 4. नेपोलियन बोनापार्ट द्वारा 1804 ई. में लागू की गई 'नेपोलियन की संहिता' (Napoleonic Code / Civil Code of 1804) में निम्नलिखित में से कौन-सा प्रावधान शामिल था?

(A) जन्म पर आधारित सभी विशेषाधिकारों को समाप्त करना, कानून के समक्ष समानता स्थापित करना, संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाना तथा सामंती व्यवस्था और श्रेणी-संघों (Guild restrictions) के नियंत्रण को समाप्त करना।

(B) फ्रांस में सामंती प्रथा और भू-दासत्व को पुनः लागू करना।

(C) महिलाओं को पुरुषों के बराबर मताधिकार और संपत्ति पर पूर्ण स्वतंत्र अधिकार प्रदान करना।

(D) चर्च को राज्य की सर्वोच्च न्यायिक संस्था घोषित करना।

सही उत्तर: (A) जन्म पर आधारित सभी विशेषाधिकारों को समाप्त करना, कानून के समक्ष समानता स्थापित करना, संपत्ति के अधिकार को सुरक्षित बनाना तथा सामंती व्यवस्था और श्रेणी-संघों (Guild restrictions) के नियंत्रण को समाप्त करना।

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी ('यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय' - ncert.nic.in) के अनुसार 1804 की नागरिक संहिता (जिसे नेपोलियन की संहिता कहा जाता है) ने जन्म आधारित विशेषाधिकार समाप्त कर दिए, कानून के समक्ष बराबरी और संपत्ति के अधिकार को सुदृढ़ किया।

• नेपोलियन ने डच गणतंत्र, स्विट्जरलैंड, इटली और जर्मनी में प्रशासनिक विभाजनों को सरल बनाया, सामंती व्यवस्था खत्म की, किसानों को भू-दासत्व और जागीरदारी शुल्कों से मुक्त किया, तथा माप-तौल की एकसमान दशमलव प्रणाली लागू की (यद्यपि इस संहिता में महिलाओं को अवयस्क के समान दर्जा देकर पिता व पति के अधीन रखा गया था और उन्हें मताधिकार नहीं दिया गया था)।

अभ्यास प्रश्न #5 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 5. 1815 ई. में वाटरलू के युद्ध में नेपोलियन की अंतिम पराजय के पश्चात आयोजित 'वियना कांग्रेस' (Congress of Vienna, 1815) की मेजबानी किसने की थी और इसका मुख्य राजनीतिक उद्देश्य क्या था?

(A) ऑस्ट्रिया के चांसलर ड्यूक मैटरनिख ने; इसका उद्देश्य यूरोप में नेपोलियन के युद्धों के दौरान हुए बदलावों को उलटना, फ्रांस में अपदस्थ 'बूर्बों राजवंश' को सत्ता में बहाल करना और यूरोप में एक नई रूढ़िवादी व्यवस्था (Conservative Order) तथा शक्ति-संतुलन स्थापित करना था।

(B) प्रशा के चांसलर बिस्मार्क ने; इसका उद्देश्य जर्मनी का लोकतांत्रिक एकीकरण करना था।

(C) अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने; इसका उद्देश्य राष्ट्र संघ की स्थापना करना था।

(D) ब्रिटेन के प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने; इसका उद्देश्य उपनिवेशों को स्वतंत्र करना था।

सही उत्तर: (A) ऑस्ट्रिया के चांसलर ड्यूक मैटरनिख ने; इसका उद्देश्य यूरोप में नेपोलियन के युद्धों के दौरान हुए बदलावों को उलटना, फ्रांस में अपदस्थ 'बूर्बों राजवंश' को सत्ता में बहाल करना और यूरोप में एक नई रूढ़िवादी व्यवस्था (Conservative Order) तथा शक्ति-संतुलन स्थापित करना था।

विस्तृत व्याख्या:

• 1815 में ब्रिटेन, रूस, प्रशा और ऑस्ट्रिया जैसी यूरोपीय शक्तियों—जिन्होंने मिलकर नेपोलियन को हराया था—के प्रतिनिधि वियना में मिले, जिसकी अध्यक्षता ऑस्ट्रिया के चांसलर **ड्यूक मैटरनिख** ने की (ncert.nic.in)।

• वियना संधि (1815) द्वारा 'वैधता के सिद्धांत' के तहत फ्रांस में बूर्बों राजवंश (लुई अठारहवां) को पुनः गद्दी पर बैठाया गया, भविष्य में फ्रांस के विस्तार को रोकने के लिए उसकी सीमाओं पर राज्य (उत्तर में नीदरलैंड का राज्य, दक्षिण में पीडमॉन्ट में जेनोआ) स्थापित किए गए, किंतु नेपोलियन द्वारा गठित 39 राज्यों के जर्मन महासंघ को बरकरार रखा गया।

अभ्यास प्रश्न #6 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 6. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जापान को एक सामंती समाज से आधुनिक, औद्योगिक और सैन्य महाशक्ति में रूपांतरित करने वाली 1868 ई. की प्रसिद्ध घटना को किस नाम से जाना जाता है, और इसका मुख्य नारा क्या था?

(A) मेइजी पुनर्स्थापना (Meiji Restoration, 1868 — तोकुगावा शोगुनशाही का अंत और सम्राट मुत्सुहितो/मेइजी की सत्ता की बहाली); मुख्य नारा था: **'फुकुओकु क्योहेई' (समृद्ध देश, मजबूत सेना / Rich Country, Strong Army)**

(B) बॉक्सर विद्रोह (1900); नारा था: 'विदेशियों को बाहर निकालो'

(C) ताइपिंग विद्रोह (1850); नारा था: 'स्वर्गीय शांति का साम्राज्य'

(D) सांस्कृतिक क्रांति (1966); नारा था: 'महान छलांग'

सही उत्तर: (A) मेइजी पुनर्स्थापना (Meiji Restoration, 1868 — तोकुगावा शोगुनशाही का अंत और सम्राट मुत्सुहितो/मेइजी की सत्ता की बहाली); मुख्य नारा था: **'फुकुओकु क्योहेई' (समृद्ध देश, मजबूत सेना / Rich Country, Strong Army)**

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी विश्व इतिहास ('आधुनिकीकरण के रास्ते' - ncert.nic.in) के अनुसार 1853 में अमेरिकी कमोडोर मैथ्यू पेरी के 'काले जहाजों' के आगमन के बाद जापान में तोकुगावा शोगुन (सैन्य शासक) के विरुद्ध असंतोष भड़का और 1868 में 'मेइजी पुनर्स्थापना' (मेइजी का अर्थ है 'प्रबुद्ध शासन') हुई।

• राजधानी क्योटो से एदो (आधुनिक टोक्यो) स्थानांतरित की गई, सामंती जागीरदारी (Daimyo और Samurai विशेषाधिकार) समाप्त कर दी गई, अनिवार्य स्कूली शिक्षा (1872), आधुनिक बैंकिंग व 'जाइबात्सु' औद्योगिक घराने और पश्चिमी तर्ज पर सेना का गठन किया गया।

• इसी आधुनिकीकरण के बल पर जापान ने 1894–95 में चीन और 1904–05 में रूस जैसे विशाल यूरोपीय साम्राज्य को पराजित किया।

अभ्यास प्रश्न #7 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 7. प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात 28 जून 1919 को जर्मनी के साथ हस्ताक्षरित 'वर्साय की संधि' (Treaty of Versailles) के प्रावधानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(A) संधि के 'युद्ध-दोष खंड' (War Guilt Clause - अनुच्छेद 231) के तहत जर्मनी को युद्ध के लिए पूर्णतः उत्तरदायी ठहराया गया, उस पर 6.6 अरब पाउंड (132 अरब गोल्ड मार्क) का युद्ध हर्जाना लगाया गया, राइनलैंड का विसैन्यीकरण किया गया, सार (Saar) कोयला क्षेत्र 15 वर्ष के लिए राष्ट्र संघ के अधीन फ्रांस को दिया गया और जर्मनी की सेना को 1 लाख सैनिकों तक सीमित कर दिया गया।

(B) जर्मनी को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्रदान की गई।

(C) अल्सास और लॉरेन प्रांत फ्रांस से छीनकर जर्मनी को दे दिए गए।

(D) जर्मनी को पनडुब्बियां और विशाल वायुसेना रखने की पूर्ण छूट दी गई।

सही उत्तर: (A) संधि के 'युद्ध-दोष खंड' (War Guilt Clause - अनुच्छेद 231) के तहत जर्मनी को युद्ध के लिए पूर्णतः उत्तरदायी ठहराया गया, उस पर 6.6 अरब पाउंड (132 अरब गोल्ड मार्क) का युद्ध हर्जाना लगाया गया, राइनलैंड का विसैन्यीकरण किया गया, सार (Saar) कोयला क्षेत्र 15 वर्ष के लिए राष्ट्र संघ के अधीन फ्रांस को दिया गया और जर्मनी की सेना को 1 लाख सैनिकों तक सीमित कर दिया गया।

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी इतिहास ('नात्सीवाद और हिटलर का उदय' - ncert.nic.in) के अनुसार वर्साय की संधि जर्मनी के लिए एक कठोर और अपमानजनक 'थोपी गई संधि' (Diktat) थी।
- इसमें जर्मनी से उसके सारे विदेशी उपनिवेश, 13 प्रतिशत भूभाग, 75 प्रतिशत लौह भंडार और 26 प्रतिशत कोयला भंडार छीन लिए गए।
- अल्सास-लॉरेन फ्रांस को लौटा दिए गए, पोलिश कॉरिडोर बनाकर पूर्वी प्रशा को मुख्य जर्मनी से अलग कर दिया गया और जर्मनी पर वायुसेना, टैंक व पनडुब्बी रखने पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया गया।
- इसी संधि के अपमान और 1929 की महामंदी ने जर्मनी में वाइमर गणराज्य के पतन और हिटलर के उदय की पृष्ठभूमि तैयार की।

अभ्यास प्रश्न #8 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 8. 1917 ई. की रूसी क्रांति के दौरान व्लादिमीर इल्यिच उल्यानोव (लेनिन) द्वारा अप्रैल 1917 में निर्वासन से लौटने पर प्रस्तुत की गई प्रसिद्ध 'अप्रैल थीसिस' (April Theses) की तीन मुख्य मांगें क्या थीं, और 1921 में युद्ध-साम्यवाद की विफलता के बाद लेनिन ने कौन-सी आर्थिक नीति लागू की थी?

(A) तीन मांगें: युद्ध समाप्त किया जाए, सारी जमीन किसानों के हवाले की जाए और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाए; 1921 में 'नई आर्थिक नीति' (New Economic Policy - NEP) लागू की गई जिसमें किसानों को अनाज की जबरन वसूली के स्थान पर एक निश्चित कृषि कर देने के बाद अपना अतिरिक्त उत्पाद खुले बाजार में बेचने और छोटे निजी व्यापार की सीमित छूट दी गई।

(B) तीन मांगें: प्रथम विश्व युद्ध जारी रखा जाए, जार को वापस बुलाया जाए और विदेशी बैंकों को बुलाया जाए।

(C) 1921 में लेनिन ने पूर्ण पूंजीवाद और शेयर बाजार लागू कर दिया।

(D) अप्रैल थीसिस जोसेफ स्टालिन द्वारा 1939 में लिखी गई थी।

सही उत्तर: (A) तीन मांगें: युद्ध समाप्त किया जाए, सारी जमीन किसानों के हवाले की जाए और बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया जाए; 1921 में 'नई आर्थिक नीति' (New Economic Policy - NEP) लागू की गई जिसमें किसानों को अनाज की जबरन वसूली के स्थान पर एक निश्चित कृषि कर देने के बाद अपना अतिरिक्त उत्पाद खुले बाजार में बेचने और छोटे निजी व्यापार की सीमित छूट दी गई।

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी इतिहास ('यूरोप में समाजवाद एवं रूसी क्रांति' - ncert.nic.in) के अनुसार फरवरी 1917 में जार निकोलस द्वितीय के गद्दी छोड़ने के बाद बनी केरेंस्की की अंतरिम सरकार के विरुद्ध अप्रैल 1917 में बोल्शेविक नेता लेनिन ने 'अप्रैल थीसिस' प्रस्तुत की, जिसमें तीन मांगें थीं—युद्ध की समाप्ति, किसानों को भूमि का हस्तांतरण और बैंकों का राष्ट्रीयकरण।
- अक्टूबर क्रांति (नवंबर 1917) और गृहयुद्ध के बाद जब 'युद्ध साम्यवाद' (War Communism) से उत्पादन गिर गया, तो मार्च 1921 में लेनिन ने pragmatic कदम उठाते हुए **'नई आर्थिक नीति' (NEP)** लागू की (जिसे लेनिन ने "दो कदम आगे बढ़ने के लिए एक कदम पीछे हटना" कहा)।

• लेनिन की मृत्यु (1924) के बाद स्टालिन ने 1928 से पंचवर्षीय योजनाओं और कृषि के 'सामूहिकीकरण' (Collectivisation - कोलखोज़) की नीति शुरू की।

अभ्यास प्रश्न #9 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 9. वर्ष 1929 की वैश्विक आर्थिक महामंदी (Great Depression) से उबरने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट द्वारा 1933 ई. में प्रारंभ किए गए आर्थिक सुधार कार्यक्रम को किस नाम से जाना जाता है, और यह किन तीन 'R' (Three Rs) के सिद्धांत पर आधारित था?

(A) न्यू डील (New Deal); इसके तीन स्तंभ थे—राहत (Relief), पुनरुत्थान (Recovery) और सुधार (Reform)

(B) मार्शल प्लान; इसके तीन स्तंभ थे—युद्ध, शांति और व्यापार

(C) ग्रेट लीप फॉरवर्ड; इसके तीन स्तंभ थे—इस्पात, कोयला और अनाज

(D) ब्रेटन वुड्स समझौता; इसके तीन स्तंभ थे—डॉलर, सोना और चांदी

सही उत्तर: (A) न्यू डील (New Deal); इसके तीन स्तंभ थे—राहत (Relief), पुनरुत्थान (Recovery) और सुधार (Reform)

विस्तृत व्याख्या:

• 24 अक्टूबर 1929 ('ब्लैक थर्सडे') को न्यूयॉर्क के वॉल स्ट्रीट शेयर बाजार के धराशायी होने से शुरू हुई विश्वव्यापी महामंदी (ncert.nic.in) का मुकाबला करने के लिए 1933 में राष्ट्रपति बने फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट ने ब्रिटिश अर्थशास्त्री जॉन मेनार्ड कीन्स (J.M. Keynes) के 'राजकोषीय प्रोत्साहन और सार्वजनिक व्यय' के सिद्धांत के अनुरूप **'न्यू डील' (New Deal)** नीति लागू की।

• इसके तीन 'R' थे: (1) बेरोजगारों और गरीबों को तत्काल **राहत (Relief)**, (2) टेनेसी घाटी प्राधिकरण (TVA) जैसी वृहद सार्वजनिक निर्माण परियोजनाओं से अर्थव्यवस्था का **पुनरुत्थान (Recovery)**, तथा (3) भविष्य में बैंकिंग व शेयर बाजार संकट रोकने हेतु सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (1935) और बैंकिंग **सुधार (Reform)**।

अभ्यास प्रश्न #10 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 10. जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर में आयोजित 'ब्रेटन वुड्स सम्मेलन' (Bretton Woods Conference) के परिणामस्वरूप किन दो अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का जन्म हुआ, जिन्हें 'ब्रेटन वुड्स की जुड़वां संतानें' (Bretton Woods Twins) कहा जाता है?

(A) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (IBRD / विश्व बैंक)

(B) विश्व व्यापार संगठन (WTO) तथा संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP)

(C) एशियाई विकास बैंक (ADB) तथा न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)

(D) अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (ICJ) तथा अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)

सही उत्तर: (A) अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) तथा अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण और विकास बैंक (IBRD / विश्व बैंक)

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी इतिहास ('भूमंडलीकृत विश्व का बनना' - ncert.nic.in) के अनुसार युद्धोत्तर अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था की रूपरेखा तय करने के लिए जुलाई 1944 में अमेरिका के न्यू हैम्पशायर के ब्रेटन वुड्स नामक स्थान पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक एवं वित्तीय सम्मेलन आयोजित हुआ।

• इसमें सदस्य देशों के बाह्य व्यापार में घाटे और भुगतान संतुलन (BoP) संकट से निपटने के लिए **अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF)** तथा युद्ध से तबाह अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण और विकास के वित्तपोषण के लिए **अंतरराष्ट्रीय पुनर्निर्माण एवं विकास बैंक (IBRD - जिसे विश्व बैंक कहा जाता है)** की स्थापना हुई।

• इसी कारण इन दोनों (मुख्यालय: वाशिंगटन डी.सी.) को 'ब्रेटन वुड्स ट्विन' कहा जाता है।

अभ्यास प्रश्न #11 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 11. चीनी क्रांति के इतिहास में डॉ. सन यात-सेन (जिन्हें आधुनिक चीन का जनक कहा जाता है) द्वारा प्रतिपादित 'तीन जन-सिद्धांत' (Three Principles of the People / San-min-chu-i) कौन-से थे, और 1934–35 में माओ त्से-तुंग (माओ ज़ेदोंग) के नेतृत्व में साम्यवादी लाल सेना की 6,000 मील लंबी ऐतिहासिक पदयात्रा को क्या कहा जाता है?

(A) सन यात-सेन के तीन सिद्धांत: राष्ट्रवाद (Minzu), लोकतंत्र (Minquan) और जन-आजीविका/समाजवाद (Minsheng); माओ की ऐतिहासिक यात्रा: **'लॉन्ग मार्च' (Long March, 1934–35)**

(B) तीन सिद्धांत: राजतंत्र, सामंतवाद और साम्राज्यवाद; यात्रा: 'दांडी मार्च'

(C) तीन सिद्धांत: धर्म, युद्ध और व्यापार; यात्रा: 'सिल्क रोड मार्च'

(D) तीन सिद्धांत: पूंजीवाद, निजीकरण और उदारीकरण; यात्रा: 'पेकिंग मार्च'

सही उत्तर: (A) सन यात-सेन के तीन सिद्धांत: राष्ट्रवाद (Minzu), लोकतंत्र (Minquan) और जन-आजीविका/समाजवाद (Minsheng); माओ की ऐतिहासिक यात्रा: **'लॉन्ग मार्च' (Long March, 1934–35)**

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी विश्व इतिहास (ncert.nic.in) के अनुसार 1911 की चीनी क्रांति द्वारा मांचू (चिंग) राजवंश का अंत कर गणतंत्र स्थापित करने वाले डॉ. सन यात-सेन (कुओमिन्तांग पार्टी) का कार्यक्रम 'तीन सिद्धांतों' (San-min-chu-i) पर आधारित था: (1) **राष्ट्रवाद (सन्निहित मांचू व विदेशी साम्राज्यवाद से मुक्ति)**, (2) **लोकतंत्र (गणतांत्रिक सरकार)**, और (3) **जन-आजीविका/समाजवाद (पूंजी का नियमन और भूमि अधिकार में बराबरी)**।

• बाद में च्यांग काई-शेक के घेराबंदी अभियानों से बचने के लिए माओ त्से-तुंग के नेतृत्व में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP, स्थापना 1921) ने 1934–35 में ज्यांग्शी से येनान (शानक्सी) तक लगभग 6,000 मील का कठिन **'लॉन्ग मार्च'** किया और अंततः 1 अक्टूबर 1949 को 'पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना' की स्थापना की।

अभ्यास प्रश्न #12 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 12. द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अगस्त 1941 में अमेरिकी राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट और ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल द्वारा हस्ताक्षरित किस ऐतिहासिक दस्तावेज ने युद्धोत्तर विश्व व्यवस्था, आत्मनिर्णय के अधिकार और बाद में संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) के घोषणापत्र की वैचारिक आधारशिला रखी?

(A) अटलांटिक चार्टर (Atlantic Charter, अगस्त 1941)

(B) म्यूनिख समझौता (1938)

(C) मोलोटोव-रिबेनट्रॉप समझौता (1939)

(D) कैंप डेविड समझौता (1978)

सही उत्तर: (A) अटलांटिक चार्टर (Atlantic Charter, अगस्त 1941)

विस्तृत व्याख्या:

• 14 अगस्त 1941 को न्यूफाउंडलैंड के पास अटलांटिक महासागर में युद्धपोत पर रूजवेल्ट और चर्चिल ने 8-सूत्रीय **'अटलांटिक चार्टर'** जारी किया (www.iucacademy.com)।

• इसमें क्षेत्रीय विस्तार न करने, सभी लोगों को अपनी सरकार का स्वरूप चुनने का आत्मनिर्णय का अधिकार (Right to Self-determination), मुक्त व्यापार, समुद्री स्वतंत्रता, निशस्त्रीकरण तथा भय और अभाव से मुक्ति की घोषणा की गई।

• इसी के अनुसरण में 1 जनवरी 1942 को 26 मित्र राष्ट्रों ने 'संयुक्त राष्ट्र घोषणापत्र' पर हस्ताक्षर किए और सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन के पश्चात 24 अक्टूबर 1945 को संयुक्त राष्ट्र संघ अस्तित्व में आया।

अभ्यास प्रश्न #13 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 13. शीतयुद्ध (Cold War) के कालखंड (1945–1991) से संबंधित निम्नलिखित महत्वपूर्ण घटनाओं को उनके सही कालानुक्रम (Chronological Order) में व्यवस्थित कीजिए:

1. उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (NATO) की स्थापना
2. क्यूबा मिसाइल संकट (Cuban Missile Crisis)
3. बर्लिन की दीवार का निर्माण
4. बर्लिन की दीवार का पतन

सही कूट का चयन कीजिए:

(A) 1 → 3 → 2 → 4

(B) 1 → 2 → 3 → 4

(C) 2 → 1 → 3 → 4

(D) 3 → 1 → 2 → 4

सही उत्तर: (A) 1 → 3 → 2 → 4

विस्तृत व्याख्या: एनसीईआरटी समकालीन विश्व राजनीति ('शीतयुद्ध का दौर' एवं 'दो ध्रुवीयता का अंत' - ncert.nic.in) के अनुसार इन घटनाओं का सटीक कालानुक्रम है:

1. **NATO की स्थापना:** 4 अप्रैल **1949** (वाशिंगटन संधि द्वारा 12 संस्थापक पश्चिमी देशों द्वारा सामूहिक सुरक्षा गठबंधन)।

3. **बर्लिन की दीवार का निर्माण:** अगस्त **1961** (पूर्वी और पश्चिमी बर्लिन के बीच 150 किमी से अधिक लंबी दीवार खड़ी की गई जो शीतयुद्ध के विभाजन का सबसे बड़ा प्रतीक बनी)।

2. **क्यूबा मिसाइल संकट:** अक्टूबर **1962** (निकिता ख्रुश्चेव द्वारा फिदेल कास्त्रो शासित क्यूबा में परमाणु मिसाइलें तैनात करने और अमेरिकी राष्ट्रपति जॉन एफ. कैनेडी द्वारा नौसैनिक नाकेबंदी करने से उत्पन्न शीतयुद्ध का चरम बिंदु)।

4. **बर्लिन की दीवार का पतन:** 9 नवंबर **1989** (पूर्वी जर्मनी की जनता द्वारा दीवार गिराया जाना और अक्टूबर 1990 में जर्मनी का पुनः एकीकरण)।

अभ्यास प्रश्न #14 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 14. 19वीं शताब्दी के अंतिम दशकों में यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों द्वारा अफ्रीका महाद्वीप के आपसी बंटवारे ('अफ्रीका के लिए छीना-झपटी' - Scramble for Africa) को औपचारिक और वैधानिक रूप देने के लिए 1884–1885 ई. में कौन-सा प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था?

(A) बर्लिन सम्मेलन (Berlin Conference, 1884–85 — ऑटो वॉन बिस्मार्क की अध्यक्षता में)

(B) जिनेवा सम्मेलन (1954)

(C) पेरिस शांति सम्मेलन (1919)

(D) बांडुंग सम्मेलन (1955)

सही उत्तर: (A) बर्लिन सम्मेलन (Berlin Conference, 1884–85 — ऑटो वॉन बिस्मार्क की अध्यक्षता में)

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी इतिहास ('भूमंडलीकृत विश्व का बनना' - ncert.nic.in) के अनुसार 1885 में यूरोप के बड़े साम्राज्यवादी देशों ने बर्लिन में बैठक कर अफ्रीका महाद्वीप को आपस में बांट लेने के लिए मानचित्र पर सीधी रेखाएं खींचकर अपनी-अपनी सीमाएं तय कर लीं।
- इसी कारण अफ्रीका के अधिकांश देशों की वर्तमान सीमाएं एकदम सीधी रेखाओं जैसी दिखाई देती हैं।
- इसमें ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम (राजा लियोपोल्ड द्वितीय का कांगो), जर्मनी, पुर्तगाल, इटली और स्पेन ने अफ्रीका के प्राकृतिक संसाधनों और भूभागों का बंटवारा किया।

अभ्यास प्रश्न #15 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 15. वियतनाम के उपनिवेशवाद-विरोधी संघर्ष और शीतयुद्धकालीन इतिहास के संदर्भ में, 1954 ई. में किस ऐतिहासिक युद्ध में हो ची मिन्ह और जनरल वो गुयेन जियाप के नेतृत्व वाली 'वियतमिन्ह' सेना ने फ्रांसीसी सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया, और किस अक्षांश रेखा द्वारा वियतनाम का अस्थायी विभाजन हुआ था?

(A) दियन बियन फू का युद्ध (Battle of Dien Bien Phu, मई 1954); जिनेवा समझौते (1954) द्वारा **17वीं समानांतर अक्षांश रेखा (17th Parallel)** के सहारे उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम का विभाजन हुआ

(B) वाटरलू का युद्ध; 38वीं समानांतर रेखा द्वारा विभाजन

(C) सेडान का युद्ध; 49वीं समानांतर रेखा द्वारा विभाजन

(D) प्लासी का युद्ध; 24वीं समानांतर रेखा द्वारा विभाजन

सही उत्तर: (A) दियन बियन फू का युद्ध (Battle of Dien Bien Phu, मई 1954); जिनेवा समझौते (1954) द्वारा **17वीं समानांतर अक्षांश रेखा (17th Parallel)** के सहारे उत्तरी और दक्षिणी वियतनाम का विभाजन हुआ

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी इतिहास (ncert.nic.in) के अनुसार हिंद-चीन (वियतनाम, लाओस, कंबोडिया) पर फ्रांस का औपनिवेशिक शासन था।
- 7 मई 1954 को **दियन बियन फू (Dien Bien Phu)** के किले में वियतमिन्ह बलों ने 16,000 से अधिक फ्रांसीसी सैनिकों को आत्मसमर्पण करने पर विवश कर दिया।
- तत्पश्चात 1954 के जिनेवा शांति समझौते के तहत **17वीं समानांतर रेखा** द्वारा वियतनाम को दो भागों (उत्तर में हो ची मिन्ह की सरकार और दक्षिण में अमेरिका समर्थित बाओ दाई/नगो दिन्ह दियम शासन) में बांटा गया।
- लंबे अमेरिकी-वियतनाम युद्ध के पश्चात 30 अप्रैल 1975 को साइगॉन के पतन के साथ वियतनाम का पूर्ण एकीकरण हुआ।
- (नोट: 38वीं समानांतर रेखा उत्तर और दक्षिण कोरिया के मध्य तथा 49वीं समानांतर रेखा अमेरिका और कनाडा के मध्य है)।

अभ्यास प्रश्न #16 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 16. दक्षिण अफ्रीका में श्वेत अल्पसंख्यक सरकार द्वारा लागू की गई नस्लीय भेदभाव की क्रूर व्यवस्था 'रंगभेद' (Apartheid) के विरुद्ध नेल्सन मंडेला और अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस (ANC) के संघर्ष के संबंध में कौन-सा कथन सत्य है?

(A) 1948 से 1994 तक लागू रंगभेद प्रणाली के विरुद्ध संघर्ष करने के कारण नेल्सन मंडेला को 28 वर्षों (मुख्यतः रॉबेन द्वीप की जेल में) तक कारावास में रखा गया, और 26 अप्रैल 1994 की मध्यरात्रि को दक्षिण अफ्रीका एक बहु-नस्लीय लोकतांत्रिक गणराज्य ('इंद्रधनुषी राष्ट्र' - Rainbow Nation) बना जिसका संविधान विश्व के सबसे प्रगतिशील लोकतांत्रिक संविधानों में से एक माना जाता है।

(B) दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद व्यवस्था 1815 में समाप्त हो गई थी।

(C) नेल्सन मंडेला की आत्मकथा का नाम 'मीन कैम्फ' है।

(D) दक्षिण अफ्रीका में कभी भी लोकतांत्रिक चुनाव नहीं हुए।

सही उत्तर: (A) 1948 से 1994 तक लागू रंगभेद प्रणाली के विरुद्ध संघर्ष करने के कारण नेल्सन मंडेला को 28 वर्षों (मुख्यतः रॉबेन द्वीप की जेल में) तक कारावास में रखा गया, और 26 अप्रैल 1994 की मध्यरात्रि को दक्षिण अफ्रीका एक बहु-नस्लीय लोकतांत्रिक गणराज्य ('इंद्रधनुषी राष्ट्र' - Rainbow Nation) बना जिसका संविधान विश्व के सबसे प्रगतिशील लोकतांत्रिक संविधानों में से एक माना जाता है।

विस्तृत व्याख्या:

- एनसीईआरटी राजनीति विज्ञान ('संविधान निर्माण' - ncert.nic.in) के अनुसार दक्षिण अफ्रीका में 1948 में नेशनल पार्टी द्वारा रंगभेद (Apartheid) को सरकारी नीति बनाया गया था, जिसमें अश्वेतों, भारतीयों और रंगीन चमड़ी वाले लोगों को मताधिकार से वंचित कर अलग-अलग बस्तियों में रहने पर बाध्य किया गया था।
- अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस (ANC) के नेता नेल्सन मंडेला को 1964 में राजद्रोह के आरोप में आजीवन कारावास दिया गया और उन्होंने 28 वर्ष (रॉबेन द्वीप सहित) जेल में बिताए।
- 1990 में उनकी रिहाई और राष्ट्रपति एफ.डब्ल्यू. डी क्लर्क के साथ वार्ता के बाद अप्रैल 1994 में पहले सर्व-नस्लीय चुनावों में नेल्सन मंडेला राष्ट्रपति चुने गए।
- उनकी प्रसिद्ध आत्मकथा का नाम 'लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम' (*Long Walk to Freedom*) है।

अभ्यास प्रश्न #17 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 17. आधुनिक तुर्की के निर्माता मुस्तफा कमाल पाशा ('अतातुर्क') द्वारा प्रथम विश्व युद्ध के बाद ऑटोमन साम्राज्य के विघटन के पश्चात किए गए सुधारों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कदम उठाया गया था?

(A) 1920 की अपमानजनक सेव्रेस की संधि को अस्वीकार कर 'लोज़ान की संधि' (1923) द्वारा तुर्की की संप्रभुता बचाना, 1923 में तुर्की को गणतंत्र घोषित करना, 1924 में ऑटोमन खिलाफत (खलीफा पद) को समाप्त करना तथा तुर्की को एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाकर पश्चिमी कानून, ग्रेगोरियन कैलेंडर, रोमन लिपि और महिलाओं के मताधिकार को लागू करना।

(B) तुर्की में पुनः मध्यकालीन ऑटोमन राजतंत्र और शरिया न्यायालयों को मजबूत करना।

(C) तुर्की को सोवियत संघ का एक प्रांत घोषित करना।

(D) इस्तांबुल के स्थान पर काहिरा को तुर्की की राजधानी बनाना।

सही उत्तर: (A) 1920 की अपमानजनक सेव्रेस की संधि को अस्वीकार कर 'लोज़ान की संधि' (1923) द्वारा तुर्की की संप्रभुता बचाना, 1923 में तुर्की को गणतंत्र घोषित करना, 1924 में ऑटोमन खिलाफत (खलीफा पद) को समाप्त करना तथा तुर्की को एक आधुनिक, धर्मनिरपेक्ष राज्य बनाकर पश्चिमी कानून, ग्रेगोरियन कैलेंडर, रोमन लिपि और महिलाओं के मताधिकार को लागू करना।

विस्तृत व्याख्या:

- प्रथम विश्व युद्ध में ऑटोमन तुर्की की हार के बाद मित्र राष्ट्रों ने 1920 में 'सेव्रेस की संधि' थोपी जिससे तुर्की का विभाजन हो गया था।
- मुस्तफा कमाल पाशा ने राष्ट्रवादी आंदोलन खड़ा कर यूनानी सेनाओं को खदेड़ा और 1923 की **'लोज़ान की संधि'** से आधुनिक तुर्की की सीमाओं को मान्यता दिलाई (www.iucacademy.com)।
- उन्होंने राजधानी इस्तांबुल से अंकारा स्थानांतरित की, अक्टूबर 1923 में तुर्की को गणराज्य घोषित किया, मार्च 1924 में खलीफा का पद समाप्त कर दिया, तथा गणतंत्रवाद, धर्मनिरपेक्षता, राष्ट्रवाद, लोकवाद, राज्यवाद और सुधारवाद के 'छह तीरों' (Six Arrows of Kemalism) के सिद्धांत पर तुर्की का आधुनिकीकरण किया।

अभ्यास प्रश्न #18 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 18. पश्चिम एशिया (Middle East) के आधुनिक इतिहास में वर्ष 1917 की 'बाल्फोर घोषणा' (Balfour Declaration), 1967 का 'छह दिवसीय युद्ध' (Six-Day War) और 1978 का 'कैंप डेविड समझौता' (Camp David Accords) किस ऐतिहासिक संघर्ष और शांति प्रक्रिया से संबंधित हैं?

(A) अरब-इज़राइल संघर्ष एवं फिलिस्तीन मुद्दे से (1917 में ब्रिटेन द्वारा फिलिस्तीन में यहूदियों के लिए राष्ट्रीय गृह के समर्थन की बाल्फोर घोषणा; 1967 के युद्ध में इज़राइल द्वारा सिनाई, गाजा, वेस्ट बैंक और गोलान हाइट्स पर नियंत्रण; तथा 1978 के कैंप डेविड समझौते द्वारा मिस्र और इज़राइल के मध्य ऐतिहासिक शांति संधि)

(B) ईरान-इराक युद्ध (1980–88) से

(C) क्रीमिया के युद्ध (1854–56) से

(D) बाल्कन युद्धों (1912–13) से

सही उत्तर: (A) अरब-इज़राइल संघर्ष एवं फिलिस्तीन मुद्दे से (1917 में ब्रिटेन द्वारा फिलिस्तीन में यहूदियों के लिए राष्ट्रीय गृह के समर्थन की बाल्फोर घोषणा; 1967 के युद्ध में इज़राइल द्वारा सिनाई, गाजा, वेस्ट बैंक और गोलान हाइट्स पर नियंत्रण; तथा 1978 के कैंप डेविड समझौते द्वारा मिस्र और इज़राइल के मध्य ऐतिहासिक शांति संधि)

विस्तृत व्याख्या:

- 2 नवंबर 1917 को ब्रिटिश विदेश मंत्री आर्थर बाल्फोर ने लॉर्ड रोथ्सचाइल्ड को पत्र लिखकर फिलिस्तीन में यहूदी लोगों के लिए एक 'राष्ट्रीय गृह' (National Home) की स्थापना का समर्थन किया, जिसे 'बाल्फोर घोषणा' कहा जाता है (www.iucacademy.com)।
- 1947 के संयुक्त राष्ट्र विभाजन प्रस्ताव के बाद 14 मई 1948 को इज़राइल की स्थापना हुई।
- जून 1967 के 'छह दिवसीय युद्ध' में इज़राइल ने मिस्र से सिनाई प्रायद्वीप व गाजा पट्टी, जॉर्डन से वेस्ट बैंक व पूर्वी यरुशलम और सीरिया से गोलान हाइट्स छीन लिए।
- बाद में सितंबर 1978 में अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर की मध्यस्थता में मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात और इज़राइली प्रधानमंत्री मेनाकेम बेगिन के बीच **कैंप डेविड समझौता** हुआ, जिसके तहत इज़राइल ने सिनाई प्रायद्वीप मिस्र को लौटा दिया और मिस्र इज़राइल को मान्यता देने वाला पहला अरब देश बना।

अभ्यास प्रश्न #19 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 19. अमेरिकी गृहयुद्ध (American Civil War, 1861–1865) का केंद्रीय मुद्दा क्या था, और राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन द्वारा किस संविधान संशोधन के माध्यम से संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा (Slavery) को सदा के लिए वैधानिक रूप से समाप्त कर दिया गया?

(A) दक्षिणी राज्यों में दास प्रथा के विस्तार का विरोध और संघ (Union) की अखंडता बनाए रखना; 1863 की 'मुक्ति उद्घोषणा' (Emancipation Proclamation) के पश्चात ***13वें संविधान संशोधन (1865)*** द्वारा अमेरिका में दास प्रथा को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया

(B) ब्रिटेन से स्वतंत्रता प्राप्त करना; प्रथम संविधान संशोधन द्वारा

(C) महिलाओं को मताधिकार देना; 19वें संविधान संशोधन द्वारा

(D) कनाडा का अमेरिका में विलय करना; 5वें संविधान संशोधन द्वारा

सही उत्तर: (A) दक्षिणी राज्यों में दास प्रथा के विस्तार का विरोध और संघ (Union) की अखंडता बनाए रखना; 1863 की 'मुक्ति उद्घोषणा' (Emancipation Proclamation) के पश्चात **13वें संविधान संशोधन (1865)** द्वारा अमेरिका में दास प्रथा को पूर्णतः समाप्त कर दिया गया

विस्तृत व्याख्या:

• 1861 से 1865 के बीच अमेरिकी गृहयुद्ध उत्तरी औद्योगिक राज्यों (Union - दासता विरोधी) और दक्षिणी बागानी राज्यों (Confederacy - कपास बागानों में दास श्रम के समर्थक, जिन्होंने संघ से अलग होने की घोषणा कर दी थी) के मध्य लड़ा गया (ncert.nic.in)।

• राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने 1 जनवरी 1863 को 'मुक्ति उद्घोषणा' जारी की, नवंबर 1863 के प्रसिद्ध 'गेटिसबर्ग संबोधन' में लोकतंत्र को "जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन" (Government of the people, by the people, for the people) परिभाषित किया, और 1865 में पारित **13वें संविधान संशोधन** द्वारा पूरे संयुक्त राज्य अमेरिका में दास प्रथा को संवैधानिक रूप से गैर-कानूनी घोषित कर समाप्त कर दिया।

अभ्यास प्रश्न #20 परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्रश्न 20. शीतयुद्ध के अंतिम चरण में सोवियत संघ (USSR) के अंतिम राष्ट्रपति मिखाइल गोर्बाचेव द्वारा वर्ष 1985 के बाद शुरू की गई दो प्रसिद्ध सुधार नीतियों —'पेरेस्त्रोइका' (Perestroika) और 'ग्लासनोस्त' (Glasnost)—का सटीक शाब्दिक और राजनीतिक अर्थ क्या है?

(A) 'पेरेस्त्रोइका' का अर्थ है **पुनर्रचना** (Restructuring — राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था का विकेंद्रीकरण व आर्थिक सुधार) तथा 'ग्लासनोस्त' का अर्थ है **खुलापन** (Openness — राजनीतिक पारदर्शिता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस से सेंसरशिप हटाना)

(B) पेरेस्त्रोइका का अर्थ है परमाणु युद्ध और ग्लासनोस्त का अर्थ है सामूहिक खेती

(C) पेरेस्त्रोइका का अर्थ है अंतरिक्ष कार्यक्रम और ग्लासनोस्त का अर्थ है गुप्तचर पुलिस

(D) दोनों शब्द नाजी जर्मनी की सैन्य रणनीतियों के नाम हैं

सही उत्तर: (A) 'पेरेस्त्रोइका' का अर्थ है **पुनर्रचना** (Restructuring — राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था का विकेंद्रीकरण व आर्थिक सुधार) तथा 'ग्लासनोस्त' का अर्थ है **खुलापन** (Openness — राजनीतिक पारदर्शिता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और प्रेस से सेंसरशिप हटाना)

विस्तृत व्याख्या:

• एनसीईआरटी समकालीन विश्व राजनीति ('दो ध्रुवीयता का अंत' - ncert.nic.in) के अनुसार मार्च 1985 में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव बने मिखाइल गोर्बाचेव ने जड़ हो चुकी सोवियत अर्थव्यवस्था और प्रशासनिक प्रणाली में सुधार के लिए दो नीतियां चलाईं: (1) **पेरेस्त्रोइका (पुनर्रचना):** आर्थिक और प्रशासनिक ढांचे का पुनर्गठन एवं सीमित बाजार प्रोत्साहन; तथा (2) **ग्लासनोस्त (खुलापन):** शासन में पारदर्शिता, नागरिकों को सरकार की आलोचना करने और सूचना प्राप्त करने की स्वतंत्रता।

• इन सुधारों से सोवियत गणराज्यों (विशेषकर बाल्टिक देशों—लिथुआनिया, एस्टोनिया, लातविया—और रूस, यूक्रेन, बेलारूस) में राष्ट्रवादी आकांक्षाएं तीव्र हो गईं और 25 दिसंबर 1991 को सोवियत संघ के 15 स्वतंत्र गणराज्यों में विघटन के साथ ही शीतयुद्ध की समाप्ति हो गई।

क्वालिटी ऑडिट, त्रुटि-निवारण एवं 2024–2026 विश्व इतिहास महत्वपूर्ण परीक्षा तथ्य (World History Quality Audit)

1. विश्व इतिहास में छात्रों द्वारा की जाने वाली शीर्ष 15 सामान्य गलतियाँ (Exam Trap Alerts)

क्र.	सामान्य भ्रम / परीक्षा जाल (Exam Trap)	100% सटीक ऐतिहासिक तथ्य (Verified Fact)	लक्षित परीक्षा संदर्भ
1	फ्रांसीसी क्रांति (1789) के समय फ्रांस का शासक लुई XIV था	**लुई XVI (सोलहवाँ)** था; लुई XIV ने कहा था— 'मैं ही राज्य हूँ' (NCERT World History)	UPSC GS-I / State PCS
2	बोस्टन टी पार्टी (1773) का नेतृत्व जॉर्ज वॉशिंगटन ने किया था	**सैमुअल एडम्स** ('सन्स ऑफ लिबर्टी') ने 16 दिसंबर 1773 को किया था; वॉशिंगटन सेनापति थे	NDA / CDS / PGT History
3	'रक्त और लौह (Blood and Iron)' की नीति हिटलर की थी	**ऑटो वॉन बिस्मार्क** (जर्मनी के एकीकरण के शिल्पकार, प्रशिया के चांसलर) की थी	UPSC / UPPSC / BPSC
4	इटली के एकीकरण में 'यंग इटली' की स्थापना कावूर ने की थी	**जोसेफ मेजिनी** ने 1831 में मार्सेई में की थी; गैरीबाल्डी ने 'रेड शर्ट्स (लाल कुर्ती)' दल बनाया	UGC-NET / DSSSB PGT
5	प्रथम विश्व युद्ध के बाद वर्साय की संधि (1919) ऑस्ट्रिया के साथ हुई थी	वर्साय की संधि (28 जून 1919) **जर्मनी** के साथ हुई; ऑस्ट्रिया के साथ **सेंट जर्मेन की संधि** हुई	UPSC Mains / NDA
6	रूसी क्रांति (1917) में बोल्शेविक दल का नेता करेंस्की था	बोल्शेविक (बहुमत) के नेता **व्लादिमीर लेनिन** थे; करेंस्की मेन्शेविक (अल्पमत) सरकार के प्रमुख थे	UPSC / CUET PG
7	'न्यू डील (New Deal)' आर्थिक नीति विंस्टन चर्चिल ने लागू की थी	अमेरिकी राष्ट्रपति **फ्रैंकलिन डी. रूजवेल्ट (FDR)** ने 1929 की महामंदी से उबरने हेतु 1933 में लागू की	UPSC GS-I / PCS
8	संयुक्त राष्ट्र (UN) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग वुडरो विल्सन ने किया था	वुडरो विल्सन ने 'राष्ट्र संघ (League of Nations)' दिया; 'United Nations' नाम **एफ.डी. रूजवेल्ट** ने 1942 में दिया	SSC / Railway / PCS
9	शीत युद्ध के दौरान 'ट्रूमैन सिद्धांत' सोवियत संघ के समर्थन में था	**साम्यवाद के प्रसार को रोकने (Containment of Communism)** के लिए मार्च 1947 में घोषित किया गया था	UGC-NET / UPSC
10	बर्लिन की दीवार 1991 में सोवियत विघटन के बाद गिराई गई	बर्लिन की दीवार **9 नवंबर 1989** को गिराई गई थी, जबकि सोवियत संघ का विघटन **25 दिसंबर 1991** को हुआ	NDA / CDS / SSC

2. विश्व की प्रमुख संधियाँ, क्रांतियाँ एवं कालानुक्रमिक मास्टर सारणी

संकल्पनात्मक प्रवाह आरेख (Step-by-Step Process Flow)

चरण 1
पुनर्जागरण व प्रबोधन (14वीं-18वीं सदी)

चरण 2
अमेरिकी (1776) व फ्रांसीसी क्रांति (1789)

चरण 3
औद्योगिक क्रांति व जर्मनी-इटली एकीकरण (1870-71)

चरण 4
दोनों विश्व युद्ध (1914-45) व शीत युद्ध (1945-91)

★ **स्मृति ट्रिक (फ्रांसीसी क्रांति के 3 एस्टेट्स): "पा-कु-सा (पादरी, कुलीन, सामान्य जन)"** — प्रथम एस्टेट (पादरी/Clergy), द्वितीय एस्टेट (कुलीन/Nobility), तृतीय एस्टेट (किसान, मजदूर, मध्यम वर्ग - 98% जनसंख्या जो सभी कर चुकाती थी: टाइद धार्मिक कर व ताय प्रत्यक्ष कर)।

★ **स्मृति ट्रिक (प्रथम विश्व युद्ध के धुरी बनाम मित्र राष्ट्र):** मित्र राष्ट्र = **"अ-फ्रा-रू-ब्रि-जा" (अमेरिका, फ्रांस, रूस, ब्रिटेन, जापान व इटली 1915 से)**; केंद्रीय शक्तियाँ = **"ज-ऑ-तु-बु" (जर्मनी, ऑस्ट्रिया-हंगरी, तुर्की/ऑटोमन, बुल्गारिया)**।